Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
उपन्यास साहित्य

नास्तिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167924

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नास्तिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नास्तिक

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store

लेखक

गुरुदत्त

081
167924

Central Library
167924
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन

नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-N

© : भारती साहित्य सदन

मो० 7055618655, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बरस, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य : 85 रुपये
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
30/90 पी, कनाट सर्कस
नई दिल्ली-110001
संस्करण : प्रस्तुत रूप से प्रथम बार 1999
मुद्रक : मंगलम प्रौसेरा, शाहदरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

"पिताजी ! प्रज्ञा कहां है ?"

"अपनी ससुराल में।"

"तो आपने उसका विवाह कर दिया है ?"

"नहीं, मैंने नहीं किया। उसने स्वयं कर लिया है, इसी कारण तुम्हें सूचना नहीं दी।"

पुत्र उमाशंकर यह सुन विस्मय में पिता का मुख देखने लगा। फिर उसने कहा, "परन्तु उसके पत्र तो आते रहे हैं। कल जब मैं 'लौज' से एयर-पोर्ट को चलने लगा था, उस समय भी उसका एक पत्र मिला था।"

"क्या लिखा था उसने ?"

"यही कि वह बहुत प्रसन्न होगी यदि मैं वहाँ से एक गोरी बीवी लेकर आऊंगा।"

"तो फिर लाये हो क्या ?"

"हाँ, पिताजी ! मेरे सन्दूक में है। एयर-पोर्ट पर उस पर इम्पोर्ट-ड्यूटी भी लगी है।"

"और उसको उत्तर किस पते पर भेजते थे ?"

"पता यहां ग्रेटर कैलाश का ही था, परन्तु कोठी का नम्बर दूसरा था। मैं समझता था कि हमारी कोठी के दो नम्बर हैं। उसकी कोठी कहां है ?"

उमाशंकर कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से 'औषध-विज्ञान' में डॉक्टरेट कर लौटा था। वह दिल्ली हवाई-पत्तन से अभी-अभी घर पहुंचा था। पिता अपनी मोटरगाड़ी में अपनी पत्नी और छोटे लड़के शिवशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ ह[illegible] और उमाशंकर उसे साथ ले आया था ।

कोठी के बाहर मोटर से उतरते ही उमाशंकर ने अपनी बहन प्रज्ञा के विषय में पूछा था । मार्ग-भर वह विचार करता रहा था कि उसे एक अमरीकन 'डौल' दिखाकर उसका परिचय उसकी भाभी कहकर करायेगा । यही कारण था कि कोठी में पहुँचते ही उसे उपस्थित न देख उसने प्रश्न कर दिया था ।

उमाशंकर के प्रश्न का कि प्रज्ञा की कोठी कहाँ है, उत्तर माँ ने दिया, "यहीं, इसी कालोनी में । उसके पति का मकान यहाँ से चौथाई किलो-मीटर के अन्तर पर है ।"

इस समय पूर्ण परिवार मकान के ड्राइंग-रूम में पहुँच गया । वहाँ एक कोने में टेलीफोन रखा देख उमाशंकर ने पूछ लिया, "उसके घर पर टेलीफोन है ?"

"हाँ ! किसलिये पूछ रहे हो ?"

"मैं उसे बताना चाहता हूँ कि मैं उसकी भाभी को भी साथ लाया हूँ ।"

इस पर पिता रविशंकर हँस पड़ा । हँसकर वह बोला, "पहले हमें तो उसे दिखाओ ?"

"तो आप उसको शकुन देंगे ?"

"हाँ ! वह मुँह दिखायेगी तो उसे शकुन देना ही होगा और उसपर न्यौछावर भी करूँगा ।"

"तब तो उसे सूटकेस में से निकालना पड़ेगा । वह बेचारी अपने नये बने श्वसुर और उसके शकुन से वंचित क्यों रह जाये ?" इतना कह वह सोफा से उठने लगा तो उसके छोटे भाई ने कह दिया, "दादा ! चाबी मुझे दो । मैं यह कल्याण का कार्य कर देता हूँ । आपने मुझे सहबाला नहीं बनाया तो भी मैं प्रज्ञा बहन की भाँति बलपूर्वक सहबाला बन पुरस्कार पा जाऊँगा ।"

चारों हँसने लगे । उमाशंकर ने पैंट की जेब से सूटकेस की चाबी निकाली और अपने छोटे भाई को देते हुए कहा, "देखो ! आदर से निकालना । कहीं हाथ पकड़ खेंचा तो उसकी कलाई इत्यादि में मोच भी आ सकती है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सेवक मोटर से उमाशंकर का सामान ले आया था। उसने एक सूटकेस और एक ब्रीफकेस ड्राइंग-रूम के एक कोने में रख दिया था। शिवशंकर ने चाबी ली और सूटकेस खोला। उसमें से एक प्लास्टिक की अमेरिकन ढंग की पोशाक पहने 'डौल' निकालकर ले आया।

इस समय उमाशंकर माँ से बहन के घर का टेलीफोन नम्बर पूछ टेलीफोन के सामने जा बैठा था। माता-पिता लड़के की ओर देख रहे थे। वे सुनना चाहते थे कि क्या बातचीत होती है।

शिवशंकर ने प्लास्टिक के पारदर्शक डिब्बे में 'डौल' को सामने सैंटर-टेबल पर रख दिया और टेलीफोन पर बड़े भाई की बात सुनने समीप आ गया।

जब दूसरी ओर से चोंगा उठाया गया तो उमाशंकर ने प्रश्न किया, "प्रज्ञा हो ?"

दूसरी ओर से उत्तर आया तो उमाशंकर ने कहा, "मैं उमाशंकर बोल रहा हूँ और अभी-अभी यहाँ पहुँचा हूँ।"

उधर से कुछ कहा गया। इधर से भाई ने कहा, "मैंने अपने पहुँचने की सूचना पिताजी को भेज दी थी। मेरा विचार था कि तुम यहाँ होगी और तुम्हें भी पता लग गया होगा।"

उधर की बात सुनकर उमाशंकर ने पुनः कहा, "परन्तु तुमने अपने विवाह का समाचार अपने अन्तिम पत्र में भी नहीं लिखा था। मैं कैसे जान सकता था कि तुम पिताजी के घर में नहीं हो ? मैं तो दोनों नम्बर एक ही मकान के समझता था।

"देखो प्रज्ञा ! तुमने कहा था कि कोई गोरी अमरीकन बीवी लेकर आऊँ। मैंने तुम्हारा कहा मान लिया है, परन्तु उसकी अगवानी के लिए तुमको यहाँ आना चाहिए।"

"...।"

"भला माँ लड़की को घर आने से कैसे रोक सकती है ?"

"...।"

"देखो प्रज्ञा ! तुमको तो विवाह कर सबसे पहले अपने माता-पिता से आशीर्वाद लेने आना चाहिए था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"...।"

"डर किस बात का ? तुमने कुछ पाप किया है क्या ?"

"...।"

"हाँ, आ जाओ ! मुझे विश्वास है कि तुम्हारा और तुम्हारे पति का यहाँ अनादर नहीं होगा।"

"...।"

"हाँ, तुरन्त चली आओ। तुम्हारी भाभी उत्सुकता से तुम्हारे दर्शनों की प्रतीक्षा कर रही है।"

उमाशंकर ने चोंगा रखा तो पिता ने पुत्र से पूछ लिया, "तो वह आ रही है ?"

"हाँ !"

"और उसने बताया है कि क्यों उसने हमें अपने विवाह की सूचना नहीं दी ?"

"कहती है कि उसे कुछ लज्जा, कुछ झिझक, कुछ भय और संशय था, इस कारण बताए बिना उसने विवाह किया और फिर अभी तक बताने नहीं आयी। मैंने उसे कहा है कि चली आओ, मैं उसका मार्ग साफ कर दूंगा।"

इस समय पाचक सबके लिए चाय, बिस्कुट और कुछ मिठाई एक ट्रे में रख कर ले आया। जनवरी मास मध्याह्नोत्तर का समय था। हवाई-पत्तन पर जहाज तीन बजे उतरा था। टैक्सी इत्यादि से आते-आते चार बज गए थे। इस कारण माँ ने आते ही पुत्र और दूसरों के लिए चाय लाने के दिया था। अब यह जान कि लड़की भी आ रही है, उसने पाचक को कह दिया, "दो प्याले और ले आओ। चाय का पानी भी और बना लाओ।"

प्रज्ञा अपने पति के साथ ही आई। उसने विवाह किया था बम्बई के एक खोजे के लड़के मुहम्मद यासीन से। मुहम्मद यासीन के पिता का नाम था अब्दुल हमीद। यह बम्बई का एक सौदागर था। उसकी तीन बीवियाँ थीं और मुहम्मद यासीन पहली बीवी से, माँ का एकमात्र पुत्र था। इस कारण पिता ने पुत्र को दिल्ली कनाट प्लेस में एक दुकान ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दी थी और रहने को मकान ग्रेटर कैलाश में बनवाकर दोनों को दिल्ली भेज दिया था।

प्रज्ञा और मुहम्मद यासीन वयस्क थे और उन्होंने कोर्ट में विवाह किया था। मुहम्मद यासीन की माँ सरवर ने बहू को आशीर्वाद देकर घर पर रख लिया था।

विवाह की सूचना प्रज्ञा के माता-पिता को नहीं दी गई थी। विवाह कर पति-पत्नी, दोनों हनीमून मनाने कश्मीर चले गए थे।

लड़की के एकाएक लापता हो जाने पर रविशंकर और प्रज्ञा की माँ महादेवी को बहुत चिन्ता लगी। पुलिस में रिपोर्ट लिखाई गई थी, परन्तु खोज नहीं हो सकी। पीछे जब एक महीना भ्रमण कर पति-पत्नी लौटे तो किसी पड़ोसी ने दोनों को इकट्ठे घूमते देख पंडित रविशंकर को बता दिया कि उसकी लड़की कनाट प्लेस के एक दुकानदार मुहम्मद यासीन के साथ घूमती हुई देखी गई है।

इस पर रविशंकर ने पता किया और जब इस सूचना का समर्थन मिला तो उसने लड़की को मन से निकाल दिया। इस घटना को हुए छः मास से ऊपर व्यतीत हो चुके थे। अब लड़का अमरीका से डॉक्टरी पढ़कर आया तो माता-पिता, उसको रोक नहीं सके कि बहन को न बुलाए।

कदाचित् वे आशा कर रहे थे कि लड़की ही यहाँ आकर अपना मुख दिखाने से इंकार कर देगी अथवा वह अपने पति से आने की स्वीकृति नहीं पा सकेगी। वह कह देगी कि अपने पति से पूछकर कल मिलने आएगी।

परन्तु उनकी आशा के विपरीत उमाशंकर ने बताया कि वह पति सहित आ रही है। माँ मन-ही-मन प्रसन्न थी, यद्यपि उसने मुख से कुछ कहा नहीं। जब उसने पाचक को कहा कि दो प्याले और लगा दो तो यह स्पष्ट हो गया कि दोनों का यहाँ स्वागत होगा और किसी प्रकार का झगड़ा नहीं होगा। पिता तो भौंचक्क मुख देखता रह गया था। वह समझ नहीं सका था कि लड़की और दामाद के आने पर क्या व्यवहार स्वीकार करे।

उमाशंकर को यह विदित नहीं था कि प्रज्ञा का पति एक मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुदाय का घटक है। वास्तव में यही मुख्य कारण था प्रज्ञा का, अपने माता-पिता को मुख न दिखाने का। परन्तु उमाशंकर के मन में प्रज्ञा के विवाह के उपरान्त माता-पिता के घर में न आने का कारण यह प्रतीत हुआ था कि उसने विवाह माता-पिता से पूछे बिना किया है और फिर हिन्दू रीति-रिवाज से करने के स्थान कचहरी में जाकर किया है।

माँ का विचार था कि यदि प्रज्ञा मोटरगाड़ी में आएगी तो दो-तीन मिनट में पहुंच जाएगी और हुआ भी ऐसे ही। पाचक अभी नये प्याले लाकर रख ही रहा था कि प्रज्ञा आई और हाथ जोड़ माता-पिता को प्रणाम कर भाई के समीप सोफा पर बैठ गई।

प्रज्ञा के पति मुहम्मद यासीन ने पहले प्रज्ञा की माताजी की कदम-बोसी की और फिर उसके पिता रविशंकर की ओर हाथ जोड़ नमस्ते कर सामने खड़ा हो गया। अब रविशंकर ने उसे कहा, "हजरत ! तशरीफ रखिए...।" वह कुछ कहना चाहता था, परन्तु उसके लिए उचित शब्द नहीं पा रहा था।

महादेवी ने ही उसे समीप सोफा पर बैठ जाने का संकेत कर कह दिया, "भले मनुष्य ! यदि किसी जगह से कोई चीज उठाकर अपने पास रखी है तो चीज के मालिक से पूछे बिना ऐसा करना चोरी कहाता है।"

"माताजी !" मुहम्मद यासीन ने कहा, "यह कानून की बात तो मैं जानता हूँ, परन्तु मैंने ऐसा कुछ किया नहीं। मैं उस चीज को लेने के लिए उसकी जगह पर गया नहीं और न ही उसे उठाकर अपने घर ले गया हूँ। वह चीज अपने को लावारिस समझ, वहाँ चली गई है।

"मैंने उस चीज से पता किया है। वह कहती है कि वह लावारिस थी। उसका मतलब यह है कि वह बालिग हो चुकी थी और कानून से लावारिस मानी जाती थी।

"और माताजी ! वह तो अभी भी अपने को किसी की मलकीयत नहीं समझती। मेरे घर में तो वह अपनी मर्जी से रह रही है और वहाँ वह मालकिन बन रहती है।"

महादेवी इस संक्षिप्त से वार्तालाप से यह समझ गई कि गिला लड़के से नहीं करना चाहिए। यह तो उसकी लड़की है जो अपने माता-पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का अपने पर कोई अधिकार नहीं समझती।

इस कारण वह निरुत्तर हो गई और उसने प्याले तथा प्लेटें सबके सम्मुख रख, उनमें मिठाई डालनी आरम्भ कर दी। मुहम्मद यासीन मुस्कराता हुआ साथ की कुर्सी पर बैठा अपने श्वसुर पण्डित रविशंकर से बातें करने लगा।

उसने श्वसुर को कहा, "कुछ गलती हमसे हुई है। यह मैं अब महसूस करता हूँ, मगर उस समय जब गलती हुई थी, मैं यह समझा था कि आप भी उसे गलती नहीं मानते। उसे हमारा ठीक अमल ही मानते हैं। आज का यह दावतनामा सुन मेरे ख्यालों में तबदीली हो गई है। मैं अपने और आपकी लड़की के ख्यालातों में गलती समझ गया हूँ। इसीलिए दावत की खबर पाते ही मैं चला आया हूँ।

"आज मेरी तबीयत कुछ अलील थी। इसलिए मैं दुकान पर नहीं गया था और घर पर ही था। इस वजह से आपके दावतनामे को फौरन मंजूर करने में आपकी लड़की को दिक्कत नहीं हुई।"

रविशंकर ने कुछ कहने के लिए कह दिया, "यह सब उमाशंकर की करनी का फल है।" और उसने अपने अमरीका से आए लड़के की ओर संकेत कर दिया।

मुहम्मद यासीन ने उमाशंकर को देखकर कह दिया, "भाई साहब! आदाब अर्ज है। आपके दीदार आज पहली बार ही हुए हैं। आपकी बहन से पता चला है कि आप छः वर्ष से मुल्क से बाहर थे। मैं तो इस कालोनी में दो वर्ष से ही आया हूँ।"

"आप पीछे कहाँ के रहने वाले हैं?"

"मेरे वालिद शरीफ बम्बई फोर्ट एरिया में सौदागरी की दुकान रखते हैं। मैंने दो साल हुए बी. ए. फाइनल किया तो वालिद शरीफ ने उसी वक्त यह फरमाया कि मुझे अपनी अम्मी को लेकर दिल्ली चले जाना चाहिए।

"मेरी अम्मी उनकी पहली बीवी हैं। वालिद साहब की दो और बीवियाँ हैं। उनसे मेरे सात भाई-बहन हैं। अपनी अम्मी की मैं अकेली ही औलाद हूँ। शायद यही वजह है कि वालिद शरीफ ने मुझे घर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अलॉट्मा कर दिया है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे लिए उन्होंने इस कालोनी में हमारा मौजूदा मकान और मेरे लिए भारी पगड़ी देकर कनाट प्लेस में एक दुकान ले दी और मैं यहाँ चला आया।"

"आपका शुभनाम ?"

"वालिद और अम्मी ने मुहम्मद यासीन रखा हुआ है और आपकी बहन ने मेरा एक दूसरा नाम रखा है।"

उमाशंकर यह सुन कि उसके पिता की तीन पत्नियाँ हैं, समझ गया था कि उसका बहनोई मुसलमान है और अब नाम सुन उसको अपने अनुमान का समर्थन मिल गया। साथ ही, पिताजी के विचारों को जानते हुए, वह दोनों परिवारों में वैमनस्य का कारण भी समझ गया। इस पर भी उसने इस विषय पर अपनी सम्मति प्रकट नहीं की। उसने पूछ लिया, "तो प्रज्ञा ने आपका क्या नाम रखा है ?"

"उसने मेरा नाम ज्ञानस्वरूप रखा है।"

"और आपने यह नाम स्वीकार कर लिया है ?"

"इन्कार कैसे कर सकता था ? प्रज्ञाजी बोलीं, 'मैं आपको ज्ञानस्वरूप मानती हूँ। आप अपने को जो चाहें, मानिए, मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं।'

"वह मेरे घर में जब आई थीं तो मैंने उनका एलाउन्स दो सौ रुपये महीना तय किया था। यह उनका पाकेट-खर्च है। घर के खर्च के लिए मैं अम्मी को एक हजार रुपये महीना देता हूँ।

"प्रज्ञाजी हर महीने जो कुछ बचाती हैं, वह बैंक में जमा करा देती हैं। बैंक खाते में उन्होंने अपना नाम लिखाया है, प्रज्ञादेवी वाइफ ऑफ ज्ञानस्वरूप।"

"और आपकी अम्मी मान गई हैं ?"

"पहले तो नहीं मानी थीं। मगर पीछे प्रज्ञाजी ने अम्मी को इस नाम के मायने समझाए तो वह राजी हो गईं और अब वह भी, जब किसी नाम से बुलाना होता है तो 'ज्ञान' कहकर पुकारती हैं। उन्हें यह नाम लेना आसान लगता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और आप जानते हैं कि ज्ञानस्वरूप के क्या मायने हैं ?"

"हाँ ! मैंने शौकिया बी० ए० तक ओप्शनल मजबून हिन्दी लिया था। ज्ञान के मायने हैं इल्म; और ज्ञानस्वरूप के मायने हुए इल्म रखने वाला।

"प्रज्ञाजी का कहना है कि वह हैं बुद्धि और मैं हूँ ज्ञान। इस प्रकार एक का दूसरे से मेल है। इसीलिए हम खाविन्द-बीवी हैं।"

"मगर आप जुबान तो फारसी बोलते हैं।"

"मैं इसके लिए शर्मिन्दा हूँ। वालिद शरीफ के घर में फारसी बोली जाती है। मेरी अपनी अम्मी पंजाब की रहने वाली हैं और दूसरी अम्मियों में एक अलमोड़ा की और एक कश्मीर की हैं। ये तीनों ही अनपढ़ औरतें वही जुबान बोलने लगी हैं जो मेरे वालिद साहब बोलते हैं। वह फारसी के आलम-फाजिल हैं। इसलिए हमारे घर की बोली फारसी है।"

इस समय तक चाय खत्म हो चुकी थी। प्रज्ञा ने अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही कहा, "दादा ! तुम विवाह कर भाभी को नहीं लाए, इसका मुझे अजहद अफसोस है।"

"लाया तो हूँ। मैंने फोन पर बताया था न ?"

"कहाँ है वह, मेरा मतलब भाभी ?"

"वह देखो ! शिव ने उसे मेज पर बैठा दिया है।" उमाशंकर ने प्लास्टिक के डिब्बे में रखी गुड़िया की ओर संकेत कर दिया। प्रज्ञा ने उस ओर देखा तो उमाशंकर ने कह दिया, "अभी बीवी का मॉडल लाया हूँ। मतलब यह कि वैसी ही सुन्दर बीवी लाऊँगा।"

सब हँस पड़े। शिवशंकर अपने स्थान से उठा और गुड़िया का प्लास्टिक का डिब्बा उठा लाया।

प्रज्ञा ने देखा और कह दिया, "मॉडल तो पसन्द है। परन्तु ऐसी लड़की तो शायद यहाँ मिल नहीं सकेगी।"

"क्यों नहीं मिल सकेगी ?" ज्ञानस्वरूप ने कह दिया, "अगर भाई उमाशंकर इजाज़त दें तो मैं ऐसी, शायद इससे इक्कीस इनके लिए ला सकता हूँ।"

"तो जीजाजी, दिखा दीजिए ! मगर एक बात कहे देता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उमाशंकर ने कहा।

"क्या ?"

"मैं परमात्मा को मानता हूँ।"

"वह तो मैं भी मानता हूँ। मेरी जुबान में उसका नाम कुछ दूसरा है। मैं और मेरे घरवाले उसे खुदा कहते हैं।"

इस पर रविशंकर ने कह दिया, "मगर वह तो सातवें आसमान पर बैठा है ?"

"जी हां ! और वह सातवां आसमान यहीं तो है।"

"और फरिश्ते कहां से आते-जाते हैं ?"

"वे यहीं से आते हैं और यहीं को जाते हैं।"

अब प्रज्ञा ने बात बदलने के लिए कहा, "पिताजी ! परमात्मा कहीं भी रहे, उसको सब-कुछ पता चलता रहता है। फरिश्तों के द्वारा अथवा किसी अन्य उपाय से, इसमें क्या अन्तर पड़ जाता है ? जब परमात्मा है और उसको सबका ज्ञान है, यह माना जाए तो हम आस्तिक ही हैं।

"इसलिए मैं समझती हूं कि यह आपके दामाद मुसलमान हैं अथवा ईसाई हैं, इससे क्या फरक पड़ता है ? जब तक यह सच बोलते हैं, चोरी नहीं करते, शरीर, मन और बुद्धि में सफाई रखते हैं तथा क्रोध नहीं करते, तब तक ये वही हैं जो दादा हैं, माताजी हैं अथवा आप हैं।"

इसने बात समाप्त कर दी। शिव ने पूछा, "और दीदी ! अब फिर कब आओगी ?"

"जब दादा अथवा माता-पिता बुलायेंगे ?"

"दादा ने तो माता-पिता की मंजूरी से बुला लिया है। अब तुम्हें स्वयं आना चाहिए अथवा हमें अपने घर बुलाना चाहिए।"

ज्ञानस्वरूप ने कहा, "शिव ठीक कहता है। प्रज्ञादेवी ! अब आप इन सबको अपने घर बुलाइए।"

"तो अम्मी से पूछकर निमंत्रण दूंगी।"

"हाँ !" उमाशंकर ने कहा, "देखें ! कब देती हो ?

"और हाँ, अपनी भाभी का मॉडल तुम ले जाओ। जीजाजी इस नमूने की तुम्हारी भाभी लाने का वायदा कर चले हैं। इसलिए मुकाबला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने के लिए इसकी जरूरत पड़ेगी। यही विचार कर मैं दस हजार मील के अन्तर से इसे अपने साथ लाया हूँ।"

सब हंसने लगे।

: २ :

प्रज्ञा ने गुड़िया का डिब्बा उठाया और अपने पति के साथ चल दी। मोटर ज्ञानस्वरूप चला रहा था। प्रज्ञा उसके पास बैठी थी। गाड़ी चलाते हुए ज्ञानस्वरूप ने कहा, "तुम्हें घर पर छोड़ मैं दुकान की सुध लेने जाना चाहता हूँ।"

"आपकी तबीयत कैसी है?"

"वह तो तुम्हारी संगत का फल था।"

"हां, अब ठीक है।"

"क्या ठीक है?"

"यही कि आप माताजी के घर में जाकर हिन्दी बोलना सीख आए हैं।"

"प्रज्ञा डियर! मैं और भी बहुत कुछ सीख आया हूँ।"

"क्या-क्या सीखा है?"

"माता, पिता, दीदी और दादा।"

"तो एक दिन के लिए यह पर्याप्त है।"

"पर्याप्त के क्या मायने हैं?"

"एक दिन के लिए यह काफी है, उचित से अधिक है।"

ज्ञानस्वरूप इस नए शब्द को स्मरण करने लगा।

प्रज्ञा ने पुनः कहा, "मैं अम्मी से पूछूंगी कि इनको निमंत्रण दूं अथवा न?"

"रात के खाने के वक्त बात करेंगे।"

परन्तु वे घर पहुंचे तो वहां चहल-पहल मची हुई थी। ज्ञानस्वरूप के वालिद शरीफ अब्दुल हमीद साहब और उनकी दूसरी दोनों बेगमें हमीदा और सालिहा तथा उन दोनों के सात बच्चे आए हुए थे।

सात बच्चों में तीन लड़कियां थीं और चार लड़के थे। ये सब मुहम्मद यासीन से छोटे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी बेगम की बड़ी लड़की नगीना अभी घर के बाहर ही खड़ी थी कि मुहम्मद यासीन और प्रज्ञा मोटर से उतरे। नगीना ने इन्हें देखा तो भाईजान कह लपककर उससे मिली। मुहम्मद यासीन ने कसकर उसे गले लगाया और फिर सिर पर प्यार देकर कहा, "कब आई हो?"

"भाईजान! आई नहीं, आए हैं। हम सब आए हैं।"

"सबसे क्या मतलब?"

"जो भी अपने बम्बई में थे। अब्बाजान, अम्मियाँ और हम सब।"

"आओ, भीतर चलें। अब्बाजान और अम्मियों की कदम-बोसी कर लूं।"

मुहम्मद यासीन प्रज्ञा और नगीना को पीछे छोड़ आगे निकल गया।

"और तुम यहाँ किसलिए खड़ी हो?" प्रज्ञा ने अपनी ननद से पूछ लिया।

"भाईजान और भाभी की इंतजार में। बड़ी अम्मी ने बताया था कि आप अपने माता-पिता के घर पहली बार भाईजान को लेकर गई हैं।"

प्रज्ञा भी अन्दर जाने लगी तो लड़की ने साथ-साथ चलते हुए पूछा, "भाभीजान! यह माँ के घर से लाई हैं?"

"हाँ! बड़े भाई अमरीका से आए हैं और मेरे लिए यह खिलौना लाए हैं।"

नगीना हँस पड़ी। हँसते हुए पूछने लगी, "तो भाभीजान! अब आप गुड़ियों से खेला करेंगी?"

"नहीं! यह मॉडल है।"

"किस बात का?"

"मेरी बनने वाली भाभीजान का।"

"क्या मतलब?"

"तनिक मेरी तरफ देखो।" प्रज्ञा ने खड़ी हो नगीना को भी खड़ा कर कहा।

नगीना देखने लगी तो प्रज्ञा उसकी सूरत और डौल की सूरत को एक-दूसरे से मिलाने लगी।

एकाएक उसने नगीना की बाँह पकड़ी और कहा "चलो भीतर!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी पेशी होगी।"

"क्यों ? मैंने क्या जुर्म किया है ?"

दोनों भीतर चल पड़ीं।

ड्राइंग-रूम में पहुंच प्रज्ञा ने नगीना को छोड़ पहले गुड़िया को चिमनी पर रखा और फिर बम्बई से आईं अपनी दोनों सासों के और पीछे अपने श्वसुर के चरण स्पर्श किए और फिर सोफा पर तीनों सासों के बीच घुसकर बैठ गई।

नगीना की माँ सालिहा ने प्रज्ञा के गले में बाँह डालते हुए कहा, "यह ठीक है। यहाँ बैठकर मिलने का लुत्फ ज्यादा आएगा।"

"अम्मी ! एकदम दो-दो अम्मियों से मिलने का स्वाद जो है।"

प्रज्ञा के एक ओर हमीदा थी। हमीदा के दूसरी ओर यासीन की माँ सरवर बैठी थी। उसने कह दिया, "यह लड़की माँ के प्यार की भूखी यहाँ आई मालूम होती है। हर रोज सुबह कदम-बोसी के बाद गले मिलने के लिए इसरार करती है।"

"यह तुम्हारे लड़के में खामी है। वह इससे काफी प्यार नहीं करता मालूम होता।"

प्रज्ञा ने इसका उत्तर नहीं दिया। अब्दुल हमीद बता रहा था, "आज सुबह सालिहा कहने लगी कि उसे ख्वाब में मुहम्मद यासीन बुला रहा महसूस हुआ है। मैं उसे मिलने जा रही हूँ।

"मैंने पूछा, 'अकेली ही जाओगी क्या ?'

"इस पर बेगम बोली, 'जो चाहे मेरे साथ चल सकता है। मैं किसी को साथ चलने से मना नहीं करूँगी।'

"मैंने कहा, 'मैं साथ चलूंगा।' अपनी अम्मी के साथ नगीना खड़ी थी। वह बोल उठी, 'मैं भी चलूंगी। मुझे भी हर रोज ख्वाब में भाई-जान के दीदार होते हैं।'

"हमने जब दूसरों को बताया तो सब तैयार हो गए। दस सीटें एक साथ अढ़ाई बजे की फ्लाईट में मिलीं और हम यहाँ आ गए।"

मुहम्मद यासीन अपने पिता से इज़ाज़त ले दुकान को चला गया और अन्य सब चाय लेने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यासीन रात के साढ़े आठ बजे दुकान से लौटा तो सब खाने की मेज पर जा बैठे। मेज छोटी पड़ गई थी। इस कारण एक लड़की और दो छोटे लड़कों के लिए एक छोटी मेज अलहदा लगा दी गई।

मुहम्मद यासीन ने अपनी ससुराल की बात बता दी, "चार बजे के करीब प्रज्ञा ने बताया कि इसके भाई अमरीका से आए हैं और मुझे मिलने के लिए बुला रहे हैं।

"मैंने पूछा, 'तुम अकेली को बुलाया है क्या ?'

"इसने कहा, 'उन्होंने दावत 'प्लूरल' इल्फाज़ में दी है।' उन्होंने पूछा था कि हम कब आयेंगे ? मैंने उत्तर दिया, हम दोनों अभी आ रहे हैं। इस पर वह कहने लगे, 'जल्दी आ जाओ ! चाय ठण्डी हो रही है।'

"अब्बाजान ! इस तरह यह शुरुआत हो रही है मेरी उस घर में आने-जाने की। यह इस वास्ते कह रहा हूँ क्योंकि वहाँ से दावतनामा ले आया हूँ अपनी अम्मी के लिए भी। मुझे उनके सलूक से यह समझ आया है कि अगर उनको मालूम होता कि आप सब बम्बई से आए हुए हैं तो आप सब को दावत देते।

"कुछ ऐसा लग रहा है कि इनकी माँ अपनी लड़की को शादी के मौके पर कुछ देना चाहती थीं। वह इसे अब देने का विचार रखती हैं।

"अगर आप कहें तो मैं टेलीफोन पर प्रज्ञा के भाई को बता दूं कि आप सब यहाँ हैं और कल हम आ रहे हैं। कल 'सण्डे' है और दुकान बन्द होगी।"

"नहीं ! इस तरह नहीं।" अब्दुल हमीद ने कह दिया, "अब तुम उनको दावत दो और कहो कि तुम उन सबको अपने घर पर दोपहर के खाने पर दावत देते हो। साथ ही कह दो कि हम सब आए हुए हैं और हमें उनसे मिल कर अजहद खुशी हासिल होगी।"

मुहम्मद यासीन मेज पर से उठा और ड्राइंग-रूम में टेलीफोन करने चला गया। टेलीफोन कर लौटा तो उसने बताया, "बात प्रज्ञा के पिताजी से हुई है और वह आना मंजूर कर रहे हैं। वे सब चार प्राणी आयेंगे।"

सालिहा ने कह दिया, "वे चार हम तेरह में, आटे में नमक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह हो जायेंगे।"

"तो आटा कड़वा हो जाएगा।" सरवर ने हँसते हुए कहा, "तेरह किलो आटे में चार किलो नमक तो बहुत ज्यादा होता है।"

"मगर," अब्दुल हमीद ने कह दिया, "यासीन! तुम्हारी ज़ुबान हिन्दवी हो रही महसूस हो रही है।"

"ओह हाँ, अब्बाजान! यह संगत का फल है। यह ऐसे ही है जैसे आप गुजराती और मराठी के कई इल्फाज सीख गए हैं।"

"मगर वह तो दुकानदारी है।"

"हाँ, अब्बाजान! और यह खानादारी है। प्रज्ञा तो फारसी बोल सकती ही नहीं। यह शुद्ध हिन्दी ही बोलती है और अब्बाजान इसने एक और बात की है।"

"क्या?"

"मेरा नाम भी अपनी ज़ुबान में रख लिया है और खूबी यह है कि वह नाम इसके अपने नाम से बिल्कुल फिट बैठ रहा है।"

सरवर हंस पड़ी। हँसते हुए बोली, "इस लड़की ने मुझे समझाया है कि यह ऐसे ही है जैसे चाँदी के प्याले में दूध भर दिया जाए।"

"कौन दूध है और कौन प्याला?" सालिहा ने पूछ लिया।

उत्तर सरवर ने ही दिया, "यह कहती है कि अक्ल एक बर्तन है। उसमें इल्म भरा जाए तो अक्ल खूबसूरत हो उठती है। इसलिए इसने खाविन्द का नाम इल्म रख दिया है। इसकी ज़ुबान में इल्म को ज्ञान कहते हैं। यासीन इसके लिए ज्ञान हो गया है। इसका पूरा नाम रखा गया है, ज्ञानस्वरूप। मतलब यह कि मुजस्सम इल्म।"

अब्दुल हमीद ने कह दिया, "मगर हमारे लिए तो यह यासीन ही रहेगा।"

"यह कहती है कि हमें यह मना नहीं करती। न ही ऐसा करने की यह तौफीक रखती है।"

"मगर यासीन! तुम किस नाम से बोलोगे?"

"जिससे आप बुलायेंगे। यह तो बुलाने वाले की मर्जी के मुताबिक है। प्रजा कहती है कि उसकी ज़ुबान बहुत मीठी है। इस वास्ते मैं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के नए-नए शब्द सीखने लगा हूँ। कालेज में ऑप्शनल सब्जेक्ट हिन्दी था, मगर हिन्दी बोलने का अभ्यास नहीं था और अब अभ्यास कर रहा हूँ।

"और अब्बाजान ! एक बात और सीखी है। कहें तो बताऊँ ?"

"हाँ, हाँ ! सब बता दो, जो कुछ आज तक बीवी के मकतब में तुमने सीखा है।"

"अभी कुछ बहुत नहीं। हिन्दी ज़ुबान के अलावा नमाज पढ़ने का नया ढंग सीखा है। अब मैं भूमि पर गद्दा बिछा, उस पर पलथी मार-कर नमाज पढ़ता हूँ। वह खुद भी मेरे साथ पलथी मार बैठ जाती है और अपनी ज़ुबान में नमाज पढ़ती है। हम दोनों एक-दूसरे की नमाज में खलल नहीं डालते।"

इस पर तो सब यासीन का मुख देखते रह गए। बात यासीन ने ही आगे चलाई। उसने कहा, "अब मैंने प्रज्ञा को नमाज हिन्दी के लफ्ज़ों में लिखा दी है और इसने मुझे बताया है कि अरबी बोलने में तो कष्ट होता है जबकि उससे इसकी ज़ुबान सरल है।"

"यह क्या होती है ?"

"बोलने में आसान है।"

"यह सब मशक से ठीक हो जाता है।"

खाना खाया जा रहा था। सबके लिए मीट बना था और प्रज्ञा भी सबके साथ ले रही थी। अब्दुल हमीद ने पूछा, "तो यह गोश्त खाने लगी है ?"

"यह खा तो रही है।"

"इसे मोटा मांस नहीं चखाया ?" हमीद ने पूछ लिया।

"एक दिन मैंने इसे कहा था। इसने कुछ मुझे समझाया। तब से वह घर में हमने नहीं मँगवाया।"

"और यह बताओ," अब्दुल हमीद ने पूछा, "तुम मेरे कुनबे में इजाफा क्यों नहीं कर रहे ?"

"अब्बाजान ! कोशिश कर रहा हूँ। औलाद तो ख़ुदा के हाथ में है।"

"देखो ! तुम्हारी माँ ने तुम्हें पैदा कर जब तीन साल तक तुम्हारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कोई बहन-भाई नहीं बनाया तो मैंने दूसरी और तीसरी शादी कर ली थी।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R089 91143 GUR-N

"अब्बाजान ! मुझे औलाद के लिए कुछ खास इच्छा महसूस नहीं होती। जब होगी तो फिक्र करूँगा।"

"तुम आजकल के पढ़े-लिखे बेवकूफों की तरह वह रबड़ की टोपियाँ तो इस्तेमाल नहीं करते ?"

"नहीं अब्बाजान ! उसे मैं गुनाह समझता हूँ। जब औलाद जरूरत से ज्यादा होने लगेगी तब हम सोच लेंगे।"

"हकीकत में मैं यही देखने आया था। मैं देखना चाहता था कि यहाँ सिर्फ अक्ल ही है या अन्य कुछ मतलब की बात भी हो रही है ?"

"अब्बाजान ! हो जाएगा, अभी जल्दी नहीं है।"

खाना समाप्त हुआ तो सब ड्राइंग-रूम में चले आये। यासीन ने अब्बाजान को वहीं कमरे में रोक लिया। जब सब चले गए तो उसने कहा, "कल प्रज्ञा का बड़ा भाई आयेगा। जरा उसे गौर से देखिएगा। मैं अपने ख्याल में उसे नगीना के लिए सोच रहा हूँ।"

"तो नगीना को प्रज्ञा के बदले में दे रहे हो ?"

"बदले में तो तब होता, जब मेरी शादी हुई थी। उसे छः महीने से ऊपर हो चुके हैं और यह ख्याल तो अभी मैंने प्रज्ञा से भी नहीं कहा। वहाँ बैठे-बैठे उसे देखकर ही मुझे सूझा है। मैंने उसकी अम्मी से कहने और उसकी इजाजत लेने के लिए अभी किसी से नहीं कहा।"

"तो अभी किसी से मत कहना। जब तक तुम्हारे कोई औलाद नहीं हो जाती, तब तक मैं इस खानदान से और गहरे ताल्लुकात बनाना नहीं चाहता।"

"कल लड़के को देख लीजिए। पीछे बात करेंगे।"

परन्तु रात यासीन और उसकी पत्नी प्रज्ञा में बात हुए बिना नहीं रही। बात प्रज्ञा ने ही की। उसने कहा, "दादा ने जो गुड़िया मुझे दी है, उसकी सूरत-शक्ल तो नगीना से बहुत कुछ मिलती है। अगर वैसी ही उसे पोशाक पहना दी जाए तो वह एक बड़ी सवा पाँच फुट की गुड़िया ही दिखाई देगी।"

Central Library 167924 Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस पर यासीन ने कह दिया, "मैंने इस बाबत अब्बाजान की राय जानी है। वह इस शादी के हक में नहीं हैं।"

"मगर मेरी शादी के वक्त तो आपने अब्बाजान से राय नहीं की थी?"

"तो यह नगीना भी कर सकती है। मगर वह अभी नाबालिग है।"

"मैंने उसकी अम्मी से बात की है। वह कहती हैं कि वह लड़की आपके लिए मुकर्रर है।"

"क्या मतलब?"

"आपकी बीवी बनने के लिए।"

"यह कैसे हो सकता है?" यासीन ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया।

"मैंने यही बात अम्मी से कही थी। मैंने कहा था कि आप तो उसके भाई हैं। इस पर वह कहने लगीं कि हम मुसलमानों में यह होता है और यह लड़की आपके वालिद शरीफ से भी नहीं है।"

इस पर यासीन चिन्ता में पत्नी का मुख देखता रह गया।

: ३ :

अगले दिन मध्याह्नोपरान्त साढ़े बारह बजे रविशंकर अपने परिवार के साथ लड़की के घर आ गया। प्रज्ञा की की माँ महादेवी, लड़की और लड़के के लिए एक-एक जोड़ा पोशाक और साथ में सोने की चार चूड़ियाँ तथा पाँच हजार रुपये लाई थीं। जब ये लोग आए तो अब्दुल हमीद का पूर्ण परिवार उनके स्वागत के लिए तैयार था। अब्दुल हमीद का सबसे छोटा लड़का रहमान अली इस समय पाँच वर्ष का था। वह भी सबके साथ अपने भाई की बीवी के माता-पिता तथा आने वालों को देखने द्वार पर आ खड़ा हुआ था। परिचय वहाँ ही हो गया। परिचय के उपरान्त सब ड्राइंग-रूम में आ बैठे।

बैठते ही महादेवी ने हाथ में पकड़ी हुए कपड़ों की गठरी सब के सम्मुख सेण्टर टेबल पर रखी तो रविशंकर ने कह दिया, "लड़की के घर पहली बार आने के मौका पर हमारा कुछ देना बनता है। जल्दी-जल्दी में यही ला सके हैं। इसमें लड़की और लड़के के कपड़े हैं। लड़की के लिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहनने की चूड़ियाँ हैं और फिर आप सबके लिए कुछ नकद है। आप परस्पर उचित ढंग से इसका प्रयोग कर लें।"

अब्दुल हमीद ने देखे बिना उठा ले जाने के लिए नौकर रज्जाक को आवाज दे दी, परन्तु यासीन की माँ सरवर ने नौकर के आने से पहले ही गठरी को उठा माथे से लगाया और लेकर भीतर चली गई। अब्दुल गनी मुख देखता रह गया।

अब्दुल हमीद पहले तो अपनी बड़ी बेगम को मना करने लगा था, परन्तु जब तक वह विचार कर कुछ कहता, सरवर ड्राइंग-रूम से निकल गयी थी। इस कारण वह कुछ कहने से रुक गया। नौकर आया तो उसे कहना पड़ा, "कुछ नहीं, जाओ।"

इसके उपरान्त अब्दुल हमीद यह बताने के लिए कि वह रविशंकर की भेंट की कुछ परवाह नहीं करता, बोल उठा, "हम कल दस जने बम्बई से हवाई जहाज में आये हैं और अढ़ाई हजार रुपये भाड़े पर खर्च हो गया है।"

महादेवी ने कह दिया "आप जैसे धनी-मानी व्यक्ति के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है।"

"आपके साहबजादे अमेरिका में कितना कुछ खर्च कर आये हैं ?"

उत्तर रविशंकर ने दिया। उसने कहा, "मेरा एक मकान करोलबाग में है। उसका भाड़ा पाँच सौ रुपये महीना आता है। मेरा विचार था कि वह धन लड़के को प्रतिमास भेज दिया जाएगा। मगर इसने वहाँ जाते ही एक फर्म में काम करना शुरू कर दिया था। इससे वह अपना खर्चा चलाता रहा है। मुझे यहाँ से भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ी। यहाँ तक कि यह वहाँ से हवाई जहाज में अपनी मेहनत से पैदा किए धन से ही आया है।"

इस पर अब्दुल हमीद नाक-मुख सिकोड़ समीप बैठे यासीन से बातें करने लगा।

पिता ने पुत्र से पूछा, "क्या बीवी भी बाप की भाँति कंजूस है ?"

"अब्बाजान ! मैं खुद ही उसे बहुत कुछ नहीं देता। दूँ तो वह खुले-हाथ मेरी कमाई लुटाने में हम लोगों से पीछे नहीं रहेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता इस व्यंग को नहीं समझा । वास्तव में यासीन पिता के स्वभाव को जानता था । वह कट्टर मुसलमान नहीं था । परन्तु वह हिन्दुओं और निर्धनों से घृणा करता था । इस कारण उसने प्रज्ञा के बचाव के लिए व्यंग कसा था । परन्तु पिता इसका अर्थ नहीं समझा । उसने कह दिया, "ठीक करते हो । इस क्लर्क की बीवी के हाथ में बहुत कुछ नहीं देना चाहिए ।"

"परन्तु अब्बाजान ! वह मेरी दुकान का हिसाब-किताब रखती है और उसे सब मालूम है कि मेरी कितनी पूँजी है ।"

"परन्तु वह बैंक से निकालने अथवा जमा कराने तो नहीं जाती ?"

"नहीं, वह दुकान पर नहीं जाती । परन्तु मैं नित्य दुकान से किताबें ले आता हूँ और वह मेरी किताबों की खाना-पूरी कर छोड़ती है ।"

"तो फिर क्या हुआ ? अपने बैंक और कैश पर अपना कब्जा रखो ?"

"ठीक है । यह मैं रखता हूँ ।" यासीन ने कह दिया । फिर उसने बात बदल कर कहा, "प्रज्ञा का भाई सब घरवालों से ज्यादा खूबसूरत और तन्दुरुस्त दिखाई देता है ।"

"तो फिर क्या किया जाए ? मगर उसकी बहन ने तुमसे शादी की है । यह उसने तुम्हें पसन्द कर की है ।"

"वह मेरे जिस्मानी औसाफ की वजह से नहीं, बल्कि मेरे इल्मी औसाफ की वजह से है ।"

"वह क्या पढ़ी है ?"

"मुझसे ज्यादा पढ़ी है । वह डबल एम० ए० है ।"

"मैं इसका क्या करूँ ? तुम्हारे पाँच-छः बच्चे हुए तो मैं उसकी इज्जत करूंगा ।"

"पर अब्बाजान ! आप बच्चों का अचार डालेंगे ? क्या आपके अपने कम हैं ?"

"जितने अधिक हों उतनी मुसलमानों की तादाद बढ़ेगी ।"

"इससे आपको क्या मिलेगा ?"

"यह तुम अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग नहीं समझ सकते । एक जबरदस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौड़ हमारे और ईसाइयों के भीतर लगी हुई है। दुनिया में सबसे ज्यादा बौद्ध थे। मगर अब उनकी तवज्जो मजहब की तरफ नहीं रही। कम्यूनिज्म ने उनके मजहबी जोश को ठण्डा कर रखा है। हाँ, ईसाई दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। उनके मुकाबिले में हम ही कुछ ताकतवर हैं। हमारे आलमों का कहना है कि अगली सदी के शुरू में मुसलमानों की तादाद दुनिया की आबादी की आधी से ज्यादा हो जायेगी। तब हम सब मुसलमान मिल कर दुनिया पर हुकूमत करेंगे।"

"मगर अब्बाजान ! आपको क्या मिलेगा ?"

"इसी से कहता हूँ कि तुम अंग्रेजी पढ़े-लिखे उलटी खोपड़ी रखते हो।"

मुहम्मद यासीन मुस्कराता हुआ चुप कर रहा। इसी समय नगीना अपने भाई-बहनों के साथ डॉ० उमाशंकर को घेरे हुए उससे अमरीका के विषय में पूछ रही थी। सबसे अधिक पूछने वाली नगीना ही थी। उसने पूछा था, "सुना है, वहाँ सब औरत-मर्द गोरे रंग के हैं ?"

"नहीं ! उस मुल्क में हबशी आबनूस की भाँति काले रंग के लोग भी रहते हैं।"

"मगर वह तो गुलाम कौम है ?"

"नहीं। अब अमरीका में सब लोग बराबर हक-हकूक रखते हैं। गोरे लोग उनसे नफरत तो करते हैं, इस पर भी सरकार की ओर से उनके साथ अन्य सब के बराबर सलूक किया जाता है।"

"मगर जो भी यहाँ का नौजवान वहाँ जाता है, वहाँ की गोरी लड़की को ही विवाह कर लाता है। कोई नीग्रो या रैड-इण्डियन से विवाह नहीं कर लाता ?"

"रैड-इण्डियन तो तादाद में बहुत कम हैं। साथ ही नीग्रो लोगों के नाक चपटे होते हैं और चपटी नाक हिन्दुस्तान के लोगों को पसन्द नहीं।"

"तो यह नाक की वजह से शादी की जाती है क्या ?"

सब बच्चे हँसने लगे। इस पर उमाशंकर ने कह दिया, "औरतों और मर्दों की खूबसूरती उनकी खाल के रंग की वजह से नहीं होती यह उनके मुख और जिस्म के नख्श की वजह से होती है। जब हम किसी को देखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं तो सबसे पहले उसका मुख और उसमें भी उसकी नाक देखते हैं और अगर नाक बदसूरत हो तो सब-कुछ ही बदसूरत समझा जाता है।"

"मगर," नगीना ने कह दिया, "नक्श के साथ रंग भी हो तो सोने पर सुहागा नहीं हो जाता क्या ?"

उमाशंकर ने बात बदलने के लिए कह दिया, "तुम तो बहुत ही समझदार मालूम होती हो। किस जमायत में पढ़ती हो ?"

"मैं पढ़ती नहीं। जितना पढ़ना चाहिए था, मैं पढ़ चुकी हूँ। मैंने हायर सैकण्डरी पास किया तो अब्बाजान ने कह दिया कि ज्यादा अंग्रेजी पढ़ी तो दिमाग खराब हो जाएगा। इसलिए पढ़ाई छोड़े दो साल हो चुके हैं।"

"और दिन-भर क्या करती हो ?"

"मैं फोटोग्राफी करती हूँ। घर पर मैंने अपना एक स्टूडियो बनाया हुआ है और जब भी जहाँ कोई खूबसूरत चीज दिखाई देती है, उसकी तस्वीर उतार लेती हूँ।"

"तो यहाँ भी अपना कैमरा लाई हो ?"

"हाँ !"

"और यहाँ कोई खूबसूरत चीज दिखाई दी है या नहीं ?"

"दो बहुत खूबसूरत जानवर दिखाई दिए हैं। खाने के बाद उनके फोटो लूँगी।"

"ओह ! वे जानवर कहाँ बँधे हुए हैं ?"

"वे बँधे हुए नहीं, आजाद हैं। जब फोटो लूँगी तो आपको पता चल जाएगा। आपने आज मेरे मन की बात कही है।"

"क्या ?"

"यही कि खूबसूरती रंग के अलावा भी होती है। मैं भी यही मानती हूँ। इस पर भी गोरा रंग अच्छा मालूम होता है। मेरा रंग कुछ गन्दमी है।"

"मगर तुम्हारे 'फीचर्स' रंग की कमी को पूरा ही नहीं कर रहे, बल्कि खूबसूरती में इजाफा भी कर रहे हैं ?"

"ओह ! यह कैसे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रंग और फीचर्स के अलावा एक चीज और भी है जिससे इंसान की खूबसूरती को चार-चाँद लग जाते हैं।"

"वह क्या है ?"

"उसका संस्कृत नाम मैं जानता हूँ, मगर फारसी ज़ुबान में उसका नाम नहीं जानता। इसलिए तुम समझ नहीं सकोगी ?"

"आप बता दीजिए। मैं समझने की कोशिश करूँगी ?"

"इसे ओज कहते हैं। इसको रखने वाला ओजस्वी कहलाता है। यह परमात्मा यानी खुदा का दिया हुआ होता है।"

"मैं समझ गयी हूँ।"

"क्या समझी हो ?"

"उसे नूर कहते हैं, खुदाई नूर।"

"मैं इसकी बाबत कुछ नहीं जानता, मगर इसे पहचानता हूँ और वह मुझे तुम में दिखाई दे रहा है। इसलिए तुम्हारा रंग गन्दमी होने पर भी तुम यहाँ सब बच्चों में खूबसूरत हो।"

नगीना का मुख लाल हो गया। उमाशंकर समझ गया कि इसे अपने सुन्दर कहे जाने पर लज्जा लग गयी है। कदाचित् यह इसका अर्थ यह समझी है कि वह इससे विवाह का प्रस्ताव कर रहा है।

इस विचार के आते ही उसने ध्यान से उसके मुख पर देखा। इस पर तो नगीना घबराकर वहाँ से उठी और अपनी अम्मियों के पास जा बैठी। वे प्रज्ञा को घेरे हुए उससे परिचय बढ़ा रही थीं।

सरवर महादेवी से दिए कपड़े इत्यादि उठा भीतर अपने सोने के कमरे में रख पुनः वहाँ आकर बैठ गई थी। प्रज्ञा बता रही थी—"मैं हिन्दुओं में ब्राह्मण समाज में उत्पन्न हुई हूँ। शुरू से ही हमारा समाज पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी लेता रहा है। इस समाज में नालायक से नालायक भी पैदा होते रहते हैं और आज जब सब समाजों में आबादी बहुत बढ़ गई है, ब्राह्मणों की तादाद में भी बेहद इजाफा हुआ है और इसमें भी सब किस्म के अच्छे-बुरे लोग पैदा हुए हैं और हो रहे हैं। इस पर भी जो कुछ खुददार हैं और अपनी जाति के गुणों को पहचानते हैं, वे अपनी मजहबी किताबों को पढ़ कर विद्वान् बन जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे खानदान में यह रिवाज रहा है कि हम रोटी कमाने के लिए दूसरों की खिदमत करते हैं, मगर अपनी जात-बिरादरी के औसाफ रखने के लिए अपने शास्त्र पढ़ते रहते हैं। हमारी धर्म पुस्तकें एक खास जुबान में हैं। मैंने कुछ पढ़ी हैं। कालिज की पढ़ाई भी उसी जुबान में की है। अब तो मैं खुद ही अपनी पुस्तकें पढ़कर उनके मायने समझने लगी हूँ।"

जब प्रज्ञा यह बता रही थी, नगीना उमाशंकर के पास से उठ उसके पास आ बैठी।

नगीना की माँ सालिहा ने पूछ लिया, "क्या हुआ है ? क्या किसी ने चुटकी काटी है जो लाल हो यहाँ भाग आई हो ?"

"हाँ," नगीना ने उत्तर दिया, "वह कुछ कह रहे हैं, जिस वजह से मैं वहाँ से चली आई हूँ।"

अब प्रज्ञा ने ही पूछना आरम्भ कर दिया, "क्या कह रहे हैं ?"

नगीना झिझकी और फिर आँखें झुका बोली, "वह कहते हैं कि मेरे मुख पर खुदाई नूर दिखाई देता है जिससे मैं सब बच्चों से ज्यादा खूबसूरत हूँ।"

"तो यह चुटकी काटना समझी हो ?"

नगीना वहाँ से भी उठने लगी, परन्तु प्रज्ञा ने उसकी बाँह पकड़ कर उसे पुनः अपने पास बैठाकर कहा, "देखो बहन नगीना ! ऐसा कहना गाली नहीं है। वह तो मुझे भी कहा करते थे कि मैं एक ओजस्वी लड़की हूँ और अवश्य किसी बहुत ऊँचे पद पर पहुँचूंगी।"

"तो भाभीजान ! आप उस पद पर पहुँच गई हैं क्या ?"

"हाँ ! उसकी राह पर चल रही हूँ। कुछ महीनों की कसर प्रतीत होती है।"

"तो मैं अब यहाँ ही रहूँगी ?" नगीना ने अपनी भावज के मुख पर ओज देखने का यत्न करते हुए कह दिया।

उसकी माँ ने पूछा, "किस वास्ते ?"

"अम्मी ! मैं देखना चाहती हूँ कि भाभीजान कैसे और क्या ऊँचा पद पाती हैं ?"

"मगर बम्बई में तुम्हारी कमी कैसे पूरी होगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्बाजान एक दिन कह रहे थे कि लड़कियाँ अपने कुनबे का जुज़ नहीं होतीं। वे किसी दूसरे के घर की रौनक बनने वाली होती हैं।"

"मगर वह घर तो तुम्हारे अब्बाजान बनायेंगे।"

"अम्मी! मैं वह घर नहीं बना रही। मैं तो बम्बई वाले घर की बात कह रही हूँ। तुमने कहा है न कि मेरे चले आने से वहाँ कमी हो जाएगी। मैंने कहा कि यह तो होनी ही है। मगर मेरे इल्म में इजाफा यहाँ रहने से होगा।"

नगीना की माँ सालिहा ने बात बदल दी। उसने प्रज्ञा से पूछा, "और बहूरानी! तुम क्या रुतबा पाने की कोशिश कर रही हो और उसे पाने से तुम्हें क्या तरक्की होने वाली है?"

"अम्मी! उसकी डुग्गी नहीं पीटी जा सकती। जब वह रुतबा पा जाऊँगी तो आप सब खुद-ब-खुद जान जायेंगी।"

इस पर सरवर ने एक सूचना अपनी सौतनों को दे दी। उसने कहा, "यह कह रही है कि यह सात-आठ महीने में माँ का रुतबा पानेवाली है।"

"और यह कोई बहुत बड़ा रुतबा है?" नगीना की सबसे छोटी अम्मी हमीदा ने पूछ लिया।

प्रज्ञा मुस्कराती हुई सबकी ओर देख रही थी। नगीना उत्तर की प्रतीक्षा में प्रज्ञा का मुख देखने लगी थी। एकाएक उसे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि प्रज्ञा का मुख किसी आलौकिक प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है। इस कारण उसने पूछ लिया, "भाभीजान! आपको क्या हुआ है?"

"अम्मीजान के कहने से मेरे दिल में एक खास किस्म की खुशी, जिसे हम आनन्द कहते हैं, पैदा हो उठी है।"

इस समय खानसामा आया और खाना तैयार होने की सूचना देने लगा। अब्दुल हमीद उठा और बोला, "चलिए! थोडा यह काम भी कर लें।"

भोजन हुआ। सबके लिए मुर्ग-मुसल्लम, साग-भाजी और टोमाटो सॉस इत्यादि था। प्रज्ञा के माता-पिता तथा भाइयों के लिए चावल, सादी रोटी, उड़द और चने की दाल तथा सब्जी बनी थी।

उमाशंकर प्रज्ञा के एक ओर बैठा था और मुहम्मद यासीन उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी ओर। प्रज्ञा तो वही खा रही थी जो उसका पति ले रहा था अर्थात् बिर्यानी इत्यादि। इस पर भी अब्दुल हमीद देख रहा था कि प्रज्ञा का भाई उमाशंकर हँस-हँस कर बातें कर रहा है। उसकी अगल-बगल बम्बई से आयी उसकी दोनों पत्नियाँ बैठी थीं। सरवर बच्चों के बीच में बैठी थी।

अब्दुल हमीद ने सालिहा से कहा, "बहू का भाई तो बहन को गोश्त खाता देख बुरा नहीं मान रहा मालूम होता।"

"वह अमरीका में रहकर आया है। वहाँ सब-कुछ खाता-पीता रहा होगा।"

इस पर अब्दुल हमीद ने पण्डित रविशंकर और उसकी बगल में बैठी महादेवी की ओर देखा। वे प्रसन्न और निःसंकोच भाव में खाना खा रहे थे। महादेवी की बगल में हमीदा का छोटा लड़का रहमान हाथ में मुर्गे की टाँग पकड़ मुख से मांस उखाड़-उखाड़ कर मज़े में खा रहा था। इस पर भी अब्दुल हमीद को पण्डित और पण्डितायिन के मुख पर किसी किस्म की अरुचि के लक्षण दिखाई नहीं दिये।

इससे वह सन्तुष्ट था। उसने हमीदा से कहा, "एक बात से मुझे खुशी हासिल हुई है। वह यह है कि यह हिन्दू खानदान दूसरे हिन्दुओं से कुछ मुख्तलिफ है। मैं उम्मीद करता हूँ कि जल्दी ही ये सबके सब इस्लामी मिल्लत में इजाफा करेंगे।"

इस पर हमीदा ने अपने खाविन्द को बताया, "एक इजाफा तो यासीन की बीवी करने वाली है। वह हामला है।"

"ओह! मैं अभी कह रहा था कि यह हिन्दू की बेटी जब कोई मोमिन पैदा करेगी, तब जानूंगा।"

"तो वह पैदा कर रही है। मगर अभी दूसरे महीने में मालूम होती है।"

"मैं समझता हूँ कि तुम यहीं रह जाओ। तुम्हें सरवर से ज्यादा तजुरबा है।"

"मगर मैं आपके बिना यहाँ एक रात नहीं रह सकती।"

"बेगम! मगर मैं तो अब बूढ़ा हो रहा हूँ और तुम भी पाँच साल से बाँझ ही रही हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर मैं इसकी बात नहीं कह रही। मैं तो आपकी सोहबत, जो इस काम के अलावा है, की बाबत कह रही हूँ।"

"हाँ! अब तो तुम हमारे पलँग पर आने से परहेज करती हो।"

"मगर हजरत! आपके दीदार जो हर रात हासिल होते हैं। बस, इसी की तमन्ना रहती है।"

"तब ठीक है।"

"मगर," हमीदा ने कह दिया, "नगीना तो इस डॉक्टर के जर-असर आ गई मालूम होती है।"

"क्यों, क्या हुआ है?"

"हुआ नहीं, पर हो सकता है। वह यह कि दोनों की शादी हो सकती है।"

"मगर उसे तो मैंने मुहम्मद यासीन के लिए चुना हुआ है।"

"यह नहीं हो सकेगा।"

"क्यों?"

"कह नहीं सकती। नगीना उसे भाईजान कहती है और उसे ऐसा ही समझती है।"

"मैं इसके लिए कोशिश करूँगा। जब उसक। बीवी चौथे-पाँचवें महीने में जायेगी तो उसकी नगीना से शादी हो सकेगी।"

"करिये! नहीं तो यह काफिर का बच्चा उसे उड़ा ले जायेगा। वह उसे कह रहा था कि उसके मुख पर खुदाई नूर बरसता है। इसलिये वह अपने सब भाई-बहनों से ज्यादा खूबसूरत मालूम होती है।"

: ४ :

खाने के बाद नगीना अपना कैमरा ले आयी और सबके फोटो लेने लगी। उसने प्रज्ञा और उसके भाई के तथा परिवार के भिन्न-भिन्न सदस्यों के साथ चित्र लिये।

इसके उपरान्त ड्राइंग-रूम में बैठे हुए अब्दुल हमीद और रविशंकर बातें करने लगे। अब्दुल हमीद ने कहा, "आप लोग खालिस वैजिटेरियन मालूम होते हैं!"

"जी! हममें से कोई भी मांस खाने की जरूरत नहीं समझता। न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो जिस्मानी ताकत के लिए, न ही दिमागी ताकत के लिए।"

"मैं समझता हूँ कि औलाद पैदा करने के लिए यह बहुत जबरदस्त मददगार है।"

"हम ज्यादा तादाद में औलाद के हक में नहीं हैं। हम औलाद के अच्छे और साफ होने की ज्यादा फिक्र करते हैं।"

"मगर आजकल तो जमहूरियत का जमाना है। तादाद का सब मामलों में बहुत असर होता है।"

"मैं जमहूरियत को जहालत समझता हूँ। यह कुछ अर्सा के लिए चल सकती है, मगर आखिर में यह फेल होगी।"

"क्यों ?"

"सिर्फ इसलिए कि इन्सानों में भी ज्यादा तादाद में लोग हैवानी वसफ (स्वभाव) रखते हैं और हैवान कुछ अर्सा के लिए ही जबरदस्त हो सकते हैं, मगर आखिर में दानिशमन्दों (बुद्धिमानों) की ही फतह होती है।"

"मगर अब तो सब दुनिया में इसका रिवाज हो रहा है और जिस कौम में तादाद ज्यादा होगी, वह कौम हुकूमत करेगी।"

"हमारी फिलोसोफी इससे उलट है। एक अक्लमन्द हजार जाहिलों पर हावी होता है।"

अब्दुल हमीद ने बात बदल दी। उसने कहा, "एक से ज्यादा बीवियाँ रखने में एक लुत्फ यह है कि बीवियाँ मातहत रहती हैं। हाँ, मगर यह तब ही हो सकता है, जब खाविन्द को एक से ज्यादा बीवियाँ रखने की और फिर उन्हें तलाक देने की इजाजत हो और बीवी को न तलाक देने की इजाजत हो, न एक से अधिक खाविन्द रखने की।"

"यह हमारे समाज में ठीक नहीं समझा जाता। हम औरत-मर्द के बराबर हक-हकूक चाहते हैं।"

"मगर हिन्दुओं में भी तो आदमी एक से ज्यादा शादी कर सकते हैं ?"

"अब यह रिवाज नहीं रहा। एक आदमी कानून से एक ही बीवी रख सकता है। जब एक से ज्यादा बीवियाँ रखने की इजाजत थी, तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरतों को गुजारा देने का रिवाज भी था। वह खाविन्द के पास न रहती हुई गुजारा माँग सकती थी। अब कानून बदल गया है।''

''और इस बदलते कानून से आपका हिन्दू मजहब कमजोर नहीं हुआ क्या ?''

''इसका मजहब, जिसे हम धर्म कहते हैं, से कोई ताल्लुक नहीं। धर्म विवाह करने, न करने से कोई ताल्लुक नहीं रखता।

''विवाह की रस्म, रिवाज के साथ सम्बन्ध रखती है और रिवाज वक्त-वक्त पर बदलता रहता है। धर्म है औलाद पैदा करना। चाहे किसी भी रस्म से शादी हुई हो, औलाद पैदा करना धर्म है।

''रस्म जमाने के साथ बदलती रहती है। जब एक हिन्दू एक से अधिक बीवियाँ रख सकता था, तब भी औलाद पैदा करता था और अब सिर्फ एक से शादी कर सकता है, तब भी औलाद पैदा करता है।''

अब्दुल हमीद को यह बात भी समझ नहीं आई। वह तो यह समझा था कि यदि चार के बजाए एक बीवी रखने का कानून हो जाये तो इस्लाम नहीं रहेगा, क्योंकि हजरत मोहम्मद ने चार तक रखने के लिए कहा है। जब रविशंकर ने यह बताया कि इन रस्मों से धर्म अलहदा है तो वह समझ नहीं सका और बात बदलने पर मजबूर हो गया। उसने पूछ लिया, ''अब आप अपनी लड़की को क्या समझते हैं, वह हिन्दू है या मुसलमान ?''

''मैं तो उसे अभी भी हिन्दू समझता हूँ। मगर वह अपने को क्या समझती है, यह वह खुद ही बता सकती है।''

''अगर वह अपने को मुसलमान माने तो क्या कहेंगे ?''

''कुछ नहीं। यह उसकी अपनी मर्जी है। वह बालिग है और अपने को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, मतलब यह कि कुछ भी कह सकती है।''

''मान लीजिए कि वह अपने को मुसलमान कहे तो आप उसे क्या कहेंगे ?''

''कुछ नहीं। यह उसके अपने इख्तयार की बात है। वह हिन्दू हो या मुसलमान, वह मेरी लड़की तो हर हालत में ही रहेगी।''

''मगर मैंने सुना है कि आप उससे नाराज थे ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ ! मगर इसलिए नहीं कि वह मुसलमान बनी है । हम इसलिए नाराज थे कि उसने शादी की और हमें बताया ही नहीं । न शादी के पहले, न शादी के पीछे । उसने शादी की और खाविन्द के साथ कश्मीर चली गई । आखिर मैं उसका पिता हूँ । फिर उसकी माँ भी है । उसने उसे भी बताया नहीं ।

"जब उमाशंकर ने टेलीफोन किया और वह हमारे घर अपने खाविन्द को लेकर आई तो हमने उसे माफ कर दिया । उसने वह गलती बचपने की वजह से की थी ।"

एकाएक अब्दुल हमीद ने प्रज्ञा को बुला लिया । उसने कहा, "ए बहू ! जरा इधर आना तो ।"

प्रज्ञा बच्चों में बैठी, उन्हें कहानी सुना रही थी । जब उसके श्वसुर ने बुलाया तो वह उठकर आई और अपने पिता तथा श्वसुर के समीप कुर्सी खिसका बैठ बोली, "हुक्म करिए ।"

"मैंने तुम्हारे वालिद साहब से पूछा था कि तुम हिन्दू हो या मुसलमान ? यह कहते हैं कि वह तो तुम्हें हिन्दू समझते हैं और तुम अपने को क्या समझती हो, यह तुम जानो । इसलिए मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम क्या हो ?"

"अब्बाजान !" प्रज्ञा ने सहज भाव से कह दिया, "यह मजहब हर एक का अपनी मर्जी पर है । इस कारण यह किसी को बताने की जरूरत नहीं होती । किसी दूसरे का इससे कोई ताल्लुक भी नहीं । इस पर भी आप अब्बाजान हैं । इस कारण आपको बताती हूँ । मैं इन्सान हूँ, खुदा-दोस्त इन्सान ।"

"मैं समझा नहीं । यह खुदा-दोस्त इन्सान कहाँ का मजहब है ?"

"यह सब दुनिया में है । हमारी एक किताब में लिखा है कि दुनिया-भर के इन्सानों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है···।"

प्रज्ञा को रोककर अब्दुल हमीद ने कहा, "तुम किस जुबान में बात कर रही हो ? मुझे कुछ समझ नहीं आई ?"

"क्या समझ नहीं आया ?"

"तुम कह रही हो कि इन्सानों की दो हैं, क्या दो हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी ! मेरा मतलब है जमायतें। दुनिया-भर के इन्सान दो जमायतों में बँटे हुए हैं। एक परमातमा, मेरा मतलब है खुदा को मानने वाले और दूसरे खुदा को न मानने वाले।"

"हिन्दू बुत-परस्त तो खुदा-दोस्त नहीं हो सकते ?"

"कुछ बुत-परस्त भी खुदा को मानते हैं। इससे वे खुदा-परस्तों में ही होंगे। हाँ, उनका खुदा उस पत्थर की तस्वीर में होता है। एक मुसलमान का खुदा कैसा है, मैं नहीं जानती। मगर वे भी जाहिरा तौर पर कहते हैं कि खुदा को मानते हैं। इसलिए मैं दोनों में फरक नहीं समझती। मैं खुदा को मानने वालों में हूँ।"

अब्दुल हमीद इस दलील को समझ नहीं सका। इस कारण रविशंकर ने लड़की की बात को समझ कर समझाने के लिए कह दिया, "भाई-साहब ! यह लड़की कह रही है कि इन्सान दो जमायतों में बँटे हुए हैं खुदा-दोस्त और खुदा को न मानने वाले। एक इन्सान खुदा-दोस्त न होता हुआ भी, झूठ-मूठ ही अपने को खुदा-दोस्त कह सकता है। वैसे कुछ इन्सान ऐसे भी हो सकते हैं जो अपने को 'एगनास्टिक' (नास्तिक) कहते हैं। हकीकत में वे खुदा को मानते होते हैं। यह उनकी ना-समझी के कारण है।

"इस अपने को गलत समझने की बात छोड़कर इन्सान की दो ही जमायतें हैं।"

"तो मैं क्या हूँ ?" अब्दुल हमीद ने प्रज्ञा से पूछ लिया।

"जो आप सच्चे दिल से कहेंगे, मैं मान जाऊँगी। वैसे मैं नहीं जानती कि आप खुदा को मानते हैं या नहीं मानते।"

"पर मैं मुसलमान हूँ। इस वास्ते खुदा को मानता हूँ। मैं हर रोज कम-से-कम दो वक्त नमाज पढ़ता हूँ।"

"मगर अब्बाजान !" उत्तर प्रज्ञा ने ही दिया, "खुदा को मानना एक बात है और नमाज वगैरहा पढ़ना दूसरी बात है। नमाज पढ़ते हुए भी खुदा से इन्कार हो सकता है।"

"यह कैसे ?"

"उसके हुक्म को न मानने से। यह ऐसे ही जैसे कई लोग पार्लियामेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में पहुँचते हैं कांग्रेस के टिकट पर मेम्बर बनकर, मगर कांग्रेस के उसूलों को नहीं मानते और मनमानी करते हैं।

"इसी तरह कोई कहे कि मैं खुदा को मानता हूँ और झूठ बोले, चोरी करे, खुदा के बेटों से नफरत करे, किसी बे-गुनाह को तंग करे तो उसके कहने से वह खुदा-दोस्त नहीं कहा जा सकता। वह अपने को धोखा दे रहा होता है और लोगों को भी धोखा दे रहा माना जायेगा।

"कहने मात्र से कोई खुदा-दोस्त नहीं कहा जा सकता। जैसे कोई गांधीजी की जय-जयकार करने वाला कांग्रेसी नहीं भी हो सकता।"

प्रज्ञा के इस कथन ने तो अब्दुल हमीद को परेशान कर दिया। एक व्यापारी होने से वह इस किस्म की सब बातें करता था। झूठ बोलता था, टैक्सों में चोरी भी करता था। बिना जाने कि कोई परमात्मा को मानता है या नहीं मानता, खासतौर पर हिन्दुओं से नफरत करता था।

इस कारण उसने बात बदल दी। उसने प्रज्ञा को कहा, "मैंने सुना है कि तुम माँ बनने वाली हो?"

"अब्बाजान! आपको किसने कहा है?"

"यासीन की अम्मी ने कहा है।"

"उन्होंने यह ठीक नहीं किया। मगर वह मुझसे बड़ी हैं। इस कारण मैं उनसे गिला नहीं कर सकती।"

"मगर इसको छुपाने की जरूरत क्या थी?"

"यह बात औरतें मर्दों को नहीं कहतीं। यह रिवाज है।"

"मगर तुम्हारे वालिद साहब कह रहे हैं कि रिवाज तो बदलते रहते हैं?"

"जी! इसलिए कहा है कि मैं गिला नहीं कर सकती। अगर उन्होंने रिवाज बदला है तो वह बड़ी हैं। वह बदलने की तौफीक रखती हैं।"

अब्दुल हमीद इस प्रकार की बातों से घबरा रहा था। उसकी हर बात को काटा जा रहा था। इस समय महादेवी ने आकर अपने पति से कहा, "मैं समझती हूँ कि आपको भाई साहब का धन्यवाद कर इनसे छुट्टी लेनी चाहिए। घर पर तीन बजे कुछ लोग उमाशंकर से मिलने के लिये आने वाले हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविशंकर उठ खड़ा हुआ। अब्दुल हमीद ने भी यही ठीक समझा। वह भी रविशंकर के उठते ही उठ खड़ा हुआ और फिर ड्राइंग-रूम की मजलिस बर्खास्त हो गई। रविशंकर, महादेवी, उमाशंकर तथा शिवशंकर जाने के लिए घर से निकले तो अब्दुल हमीद और मुहम्मद यासीन उनको छोड़ने बाहर तक आए।

रविशंकर इत्यादि को विदा कर ये ड्राइंग-रूम में आये तो अम्मियाँ अपने-अपने कमरों में, जहाँ पिछली रात वे सोईं थीं, चली गईं। बच्चे बाहर बरामदे में रखी कुर्सियों पर बैठ ताश खेलने लगे। नगीना अपने कैमरे को रखने अपने कमरे में जाने लगी तो प्रज्ञा उसके साथ ही चली गई। पीछे रह गए अब्दुल हमीद और मुहम्मद यासीन।

दोनों सोफा पर बैठे तो पिता ने कह दिया, "जरा पता करो, बम्बई के लिए एक ही प्लेन में दस सीटें कब मिलेंगी ?"

"अब्बाजान ! दस में कौन-कौन हैं ?"

"तो तुम नहीं जानते ? हम दस ही तो बम्बई से आए थे।"

"मगर नगीना कह रही थी कि वह नहीं जाएगी।"

"क्यों ?"

"यह मैं क्या जानूं ? उसने अभी-अभी अपने कमरे को जाते हुए कहा है कि वह इस घर में ही रहना चाहती है। मुझसे पूछ रही थी कि मैं उसे रहने दूंगा या नहीं।"

"तो तुमने क्या कहा है ?"

"मैंने कहा है कि वह आपसे पूछ ले। मेरी तरफ से उसे इजाजत है।"

"तो बुलाओ उसे। मैं अभी सीटें बुक कराने के लिए हवाई जहाज के दफ्तर में जाना चाहता हूँ।"

मुहम्मद यासीन नगीना को देखने उसके कमरे में गया तो प्रज्ञा और नगीना वहाँ गम्भीर मुख बनाए बातें कर रही थीं। मुहम्मद यासीन ने प्रज्ञा से पूछा, "क्या बात है ?"

"यह कह रही है कि यहाँ हमारे घर में रहना चाहती है। मैंने कारण पूछा तो यह कहती है कि दादा से शादी करेगी। मैंने इसे कहा है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह अभी नाबालिग़ है, यह अपने वालिद की इजाज़त के बिना शादी नहीं कर सकती। जो भी बिना उनकी मर्जी के इसके साथ विवाह करेगा, अपराधी हो जाएगा।

"इस पर यह बहुत परेशान है और वालिद साहब से बगावत करने की सोच रही है।"

"देखो नगीना ! अभी तुम दो साल तक अपनी मर्जी से शादी नहीं कर सकतीं और अगर तुम यह बात अब्बाजान से कहोगी तो वह तुम्हें यहाँ रखने के लिए भी तैयार नहीं होंगे।

"इसलिए मेरा कहा मानो। शादी की बात मत करो और यहाँ इसलिए रहो कि तुमने अपनी भाभी से इल्म हासिल करना है। तब तुम्हें यहाँ रहने का मौका मिल सकेगा। फिर तुम कोशिश करना कि तुम्हारे बालिग होने तक उमाशंकर तुम्हारा इन्तजार करे। अगर तुम इसमें कामयाब हो गईं तो फिर शादी दो साल बाद हो सकेगी।"

नगीना मुख देखती रह गई। इस पर मुहम्मद यासीन ने कहा, "चलो, अब्बाजान तुम्हें बुला रहे हैं। इसकी ही बाबत तुमसे बात करना चाहते हैं।"

नगीना उठी और भाई के साथ बाहर ड्राइंग-रूम में आ गई। उसके आने पर अब्दुल हमीद ने लड़की को कहा, "इधर आओ। यहाँ बैठो।"

वह बैठी तो अब्दुल हमीद ने पूछा, "यासीन मियां कह रहे हैं कि तुम यहाँ दिल्ली में रहना चाहती हो ?"

"हाँ, अब्बाजान !"

"मैं पूछ रहा हूँ किसलिए रहना चाहती हो ?"

"भाभीजान से कुछ सीखने का इरादा है। सुना है कि उसने दो मजबूनों में एम० ए० पास किया हुआ है। मैं एक मजबून उनसे पढ़ूंगी।"

"क्या पढ़ोगी ?"

"वह कह रही हैं कि वह मुझे दुनिया की तवारीख पढ़ा सकती हैं। कुछ पढ़ाएँगी और कुछ उन्होंने एक जखीरा किताबों का इकट्ठा कर रखा है और हर महीने दो-तीन किताबें खरीदती हैं। मैं उनसे पढ़कर आलम-फाज़िल बनना चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुहम्मद यासीन बहन को इतनी सरलता से बात करते सुन चकित रह गया। प्रज्ञा इतिहास नहीं पढ़ी थी और वह दुनिया की तवारीख के विषय में कुछ जानती है, यह उसे भी पता नहीं था। उसने एम०ए० किया था फिलौसोफी और संस्कृत में। परन्तु नगीना के मिथ्या कथन को उसने प्रकट नहीं किया। अब्दुल हमीद तो कुछ भी नहीं पढ़ा था। वह तो अपने व्यापार की बात जानता था और उसमें ही उसकी सब दुनिया थी।

वैसे तो बाप भी चाहता था कि नगीना वहीं रह जाए और यदि किसी तरह उसका मुहम्मद यासीन से विवाह हो जाए तो बहुत ठीक है। इस कारण उसने लड़की को कह दिया, "इसके लिए यासीन से इजाजत ले लो। तब मैं मान जाऊँगा।"

इतनी आसानी से बात बनती देख लड़की बहुत प्रसन्न हुई और बोली, "भाईजान! आप इजाजत दे देंगे न?"

"अगर अब्बाजान तुम्हें यहाँ छोड़ने पर राजी हैं तो मैं इन्कार कैसे कर सकता हूँ?"

"मगर मेरी एक शर्त है?" अब्दुल हमीद ने कहा।

"किसके साथ?" यासीन ने पूछा।

"तुम्हारे साथ।"

"फरमाइये।"

"यह पीछे अलहदा में बताऊँगा।"

"तो मैं नगीना को रहने की इज़ाज़त भी तब ही दे सकूँगा।"

"परन्तु भाईजान! भाभीजान ने तो इजाजत दे दी है।"

"तो भाभीजान के घर तुम रह सकती हो। मगर मैं तो अब्बाजान की शर्त सुनकर ही बात करूँगा।"

"तो मैं भाभीजान के घर रहूँगी। अब्बाजान! अब मैं जाऊँ?"

"हाँ! जा सकती हो।"

नगीना ने समझा कि यहाँ रहने की इजाजत मिल गई है। वह उठी और भीतर प्रज्ञा के कमरे में चली गई।

उसके जाने पर पिता ने पुत्र को कहा, "देखो यासीन! यह लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे लिए मैंने मुकर्रर की हुई है। यह तुम्हारी बीवी बनने वाली है।"

"अब्बाजान ! वह तो हमशीरा है।"

"नहीं ! यह मेरी लड़की नहीं है। इसकी अम्मी हामला थी जब मेरे घर में आई थी। तब उसने मुझसे शादी कर ली। इसकी पैदायिश तो मेरे घर में ही हुई है, मगर यह मेरी औलाद नहीं है। शरअ की रूह से तुम इससे शादी कर सकते हो। यह तुम्हारी हमशीरा नहीं है।"

"मगर अब्बाजान ! मैं शरअ की बात नहीं कर रहा। मैं तो अपनी प्रज्ञा से शादी की बात कर रहा हूँ। मैंने उससे कोर्ट में शादी की है। उसके बाद मैं दूसरी शादी नहीं कर सकता।"

"ओह ! मगर तुमने ऐसा क्यों किया है ?"

"जब हमने शादी का फैसला किया तो वह बोली कि आर्यसमाज में चलकर वेदमंत्रों से शादी कर लेते हैं। मैंने कहा, मुल्ला को बुलाकर कुरान की आयतें पढ़ा कर शादी कराएँगे।

"इस पर समझौता हो गया कि न हिन्दू तरीके से शादी हो और न मुसलमानी तरीके से शादी हो और वह कोर्ट में जाकर हो।"

"तुम भी गधे हो ! अब उसको तलाक कैसे दोगे ?"

"वह जब कोई बेवफाई करेगी।"

"वह बेवफाई क्यों करेगी ? उसको तुम-जैसा गधा खाविन्द मिल गया है तो वह बेवफाई क्यों करेगी ?"

"तो गधे से बेवफाई नहीं की जाती ?" यासीन ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

अब्दुल हमीद जब से दिल्ली में आया था, वह जिससे बात करता था, वह उसे निरुत्तर कर देता था। इस कारण वह झुंझलाकर बोला, "देखो यासीन ! मैं तुम्हारे जितना पढ़ा हुआ नहीं और बहस नहीं कर सकता। इस पर भी मैं यह उम्मीद करता हूँ कि तुम मेरा कहा मानोगे।"

"अब्बाजान ! मुझे मानने में इन्कार नहीं। परन्तु आपने पहले यह कभी बताया भी तो नहीं था। अगर मेरे दिमाग में यह बात पहले होती तो मैं उसे हमशीरा नहीं मानता। न ही मैं किसी दूसरी से कचहरी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाकर शादी करता।"

"अब उससे लड़ पड़ो और फिर तलाक दे दो।"

"अब्बाजान ! आप कानून नहीं जानते। लड़ने से तलाक मंजूर नहीं हो सकता। इसमें कुछ शर्तें हैं जिनके मुताबिक ही तलाक हो सकता है। लड़ाई उनमें नहीं है।"

"तुम उसे हर रोज पीटना शुरू करो। बस, वह खुद तलाक की अर्जी कर देगी।"

"बेकसूर पीटना शुरू कर दूं ?"

"बस, पीटने के लिए ही पीट दिया करो।"

"मगर यह तो खुदा के हुक्म के खिलाफ होगा। वह हमको इन्साफ करने को कहता है।"

"अच्छा ! अपनी अम्मी को मेरे पास भेज दो। मैं उसे समझाऊँगा। वह तुमसे ज्यादा समझदार है। वह समझ जाएगी।"

मुहम्मद यासीन उस कमरे में गया, जिसमें अम्मियाँ बैठी बातें कर रही थीं। यासीन ने अब्बाजान की आज्ञा सुना दी और सरवर बाहर ड्राइंग-रूम में आ गई।

सरवर से तो पहले ही बात हो चुकी थी। इस कारण अब्दुल हमीद ने कहा, "देखो बेगम ! मैं नगीना को यहाँ छोड़े जा रहा हूँ। यह अब तुम्हारा काम है कि यासीन और उसकी बीवी में अनबन पैदा कर दो और उसकी जगह पर नगीना को बैठा दो।"

सरवर ने एक क्षण तक आँखें मूंद विचार किया और कह दिया, "मैं कोशिश करूँगी।"

"हाँ ! मैंने इस यासीन की बीवी से बातचीत की है। वह मुसलमान नहीं है। वह अपने को इन्सान कहती है। इसलिए वह एक मोमिन की कमाई पर नहीं पल सकती है।

"तुम्हारा बेटा गधा है, जो उसने इसके साथ कोर्ट में शादी की है। इस शादी को तुड़ा देना चाहिये।"

'कोशिश करूँगी।"

"हाँ ! मैं इस आलीशान मकान की मलिका एक मोमिन को बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देखना चाहता हूँ ।"

"देखिये हजरत ! वैसे मैं चाहती तो नहीं जो आप चाहते हैं मगर आपके हुक्म की तामील करने की कोशिश करूँगी ।

"अगर जो मेरे तलाक देने की बात होती तो मैं आपका कहना मान, जैसा आप कहते, कर देती । मगर आप तो क़िसी दूसरे की बाबत कह रहे हैं । मैं कोशिश करूँगी कि आपका साहबजादा मान जाये ।"

"ठीक है । नगीना को अपने इस सवाब के काम में इस्तेमाल कर सकती हो ।"

: ५ :

रात प्रज्ञा ने मुहम्मद यासीन को पूछ लिया, "अब्बाजान कुछ नाराज मालूम होते हैं ?"

"मैं इसमें कारण जानता हूँ, परन्तु तुम्हें इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए । यह मकान और कनाट प्लेस वाली दुकान मेरे नाम है । हमारे रहने और गुजारे के साधन मेरे कब्जे में हैं । इसलिए तुम्हें निश्चिन्त हो अपने काम में लगा रहना चाहिए ।"

प्रज्ञा इस काम की बात को समझती थी । उसने कहा, "मुझसे भूल हो गई मालूम होती है जो मैंने इनको अपनी अवस्था का जिक्र कर दिया था ।

"मैं तो यह समझी थी कि मेरी इस अवस्था की बात सुन इनको प्रसन्नता होगी । मगर आपके अब्बाजान को तो इसकी फिक्र लग गई मालूम होती है ।"

"देखो डिअर ! तुम चिन्ता न करो । मैं अपने वालिद साहब का अनादर नहीं करना चाहता । परन्तु मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ और उसकी माँग को भलीभाँति समझता हूँ ।"

प्रज्ञा हँस पड़ी । हँसते हुए बोली, "आपके कथन में दिन-प्रतिदिन हिन्दी बहुत अधिक घुसने लगी है ।"

"हाँ ! कुछ दिन हुए मैं अपने एक परिचित विश्वानाथन से मिलने गया था । वह मेरे साथ पढ़ता था । अब सरकार की 'ला-मिनिस्ट्री' में नौकर है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसने मुझे बताया है कि जुबान जो हम बोलते हैं, हमारे ख्यालात के इजहार करने का जरिया हैं। यदि यह ठीक हो तो ख्यालात भलीभाँति प्रकट हो सकते हैं।"

पति की आज की बातचीत की भाषा में खिचड़ी पकती अनुभव कर प्रज्ञा हंस पड़ी। उसने बताया, "आपका मित्र ठीक कहता है और आप तुरन्त ही उसकी सम्मति पर व्यवहार आरम्भ करने लगे हैं। इससे मुझे प्रसन्नता हुई है। हमें इस मुल्क की प्राचीन भाषा की ओर चलना चाहिए। वह भाषा अधिक सुन्दर, अधिक मधुर और सशक्त है। उसके शब्दों में रस और भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है।"

"अब मैंने मन में यह निश्चय किया है कि कम-से-कम तुम्हारे साथ शुद्ध हिन्दी भाषा में बात करूँगा।"

"और मैं विश्वास से कहती हूँ कि आप अपने भावों को अधिक सुगमता और सुन्दरता से व्यक्त कर सकेंगे। कहें तो मैं इसमें आपकी सहायता कर सकती हूँ।"

"कैसे ?"

"कुछ उपन्यास आपके पढ़ने के लिए ले आऊंगी। उनके पढ़ने से बोलचाल की हिन्दी का अभ्यास हो जाएगा।"

अगले दिन, बम्बई के काफिले को हवाई-पत्तन पर विदा कर, अपनी गाड़ी में जब पति-पत्नी, सरवर और नगीना लौट रहे थे तो प्रज्ञा को अम्मी का व्यवहार एकदम बदला हुआ प्रतीत हुआ। उसने मोटर में ही बात कर दी, "अम्मीजान ! कल आप जब हमें दिल्ली दिखाने जा रही थीं, तो कुछ नाराज लग रही थीं।"

"हाँ ! मैं ऐसा ही जाहिर कर रही थी।"

"पर अम्मी ! क्यों ? मैंने कुछ अपराध किया था क्या ?"

"बस यही कि तुम इतने बड़े-बड़े हिन्दी ज़बान के इल्फाज़ अपने श्वसुर के सामने बोलती रही हो। यही तुम्हारा सबसे बड़ा कसूर था और मुझे हुक्म हो गया था कि मैं तुम्हारे साथ सख्ती का सलूक करूं।

"अब हुक्म देने वाला सामने नहीं और मैं अपने हकीकी जज़बात का इज़हार करने लगी हूँ। मैं तुम से अजहद मुहब्बत करती हूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह खुद-ब-खुद फूट-फूटकर निकलने लगी है ।"

"पर अम्मी !" नगीना जो यह बातचीत समझ रही थी, बोल उठी, "तुम वालिद साहब से भी ज्यादा भाभीजान से मुहब्बत करती हो ?"

"बेटी ! उनसे मुहब्बत तो कभी भी नहीं थी । बीवी के फरायज के मुताबिक उनका आदर करती हूँ । वह अब भी कर रही हूँ । मगर कल वह बीवी के फरायज से कुछ ज्यादा के लिए हुक्म सादर कर रहे थे । कल मैं बीवी के फरायज से मान रही थी, मगर आज इन्सानी हक-हकूक की वजह से इनकार कर रही हूँ ।"

"मतलब यह कि बिल्ली नजर से ओझल हुई तो चुहिया फुदकने लगी है ?"

नगीना की बात सुन सरवर ने पूछ लिया, "कौन बिल्ली है ?"

"अब्बाजान, जो सबके मालिक हैं ।"

"नहीं ! वह मालिक नहीं हैं । खाविन्द जरूर हैं, मगर कल वह खाविन्द के हक-हकूक से कुछ ज्यादा को तवक्को करने लगे थे । वह ऐसे हुक्म देने लगे थे, मानो मेरे मालिक हैं और मैं उनकी जरखरीद लौण्डी हूँ ।"

"तो वह तुम्हारे मालिक नहीं हैं ?"

"नहीं, मेरा मालिक मेरा खुदा है, सिर्फ खुदा ।"

"और अम्मी ! तुम्हारा मालिक खुदा कैसे है ?"

"सब खलकत का वही मालिक है । उसे सबका पालन करने वाला कहा जाता है । वह परवरदिगार है ।"

मुहम्मद यासीन गाड़ी चला रहा था और प्रज्ञा उसके साथ आगे बैठी हुई मां-बेटी की बातें सुन रही थी । उसने पूछ लिया, "मगर अम्मी-जान ! अब्बाजान क्या करने को कह रहे थे जो उनको नहीं कहना चाहिए था ।"

"यह नहीं बताऊँगी । यह खाविन्द और बीवी के बीच की बात है । उसे बताऊँगी नहीं, मगर एक नाजायज बात को मानूंगी भी नहीं ।

"मैं खुदा को मानती हूँ और उसके हुक्म को सब इन्सानी हुक्मों से ऊपर समझती हूँ ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब फिर नगीना ने बातों में दखल देते हुए पूछा, "मगर अम्मी ! खुदा को तो अब्बाजान भी मानते हैं। मैं जानती हूँ कि वह हर रोज दो वक्त नमाज पढ़ते हैं। वह मुझे भी नमाज रोज पढ़ने को कहते हैं।"

"खुदा को मानने की बात कहनी और उसको मानना दो मुख्तलिफ बातें हैं। नमाज पढ़ने से भी कोई खुदा को मानने वाला नहीं कहा जा सकता। उसके हुक्म मानना ही उसको मानना कहते हैं।"

"उसके हुक्म क्या हैं ?" नगीना का प्रश्न था।

"यह प्रज्ञा मुझसे ज्यादा अच्छी तरह समझा देगी। इसने एक दिन मुझे भी बताया था। मैं समझ तो गयी थी, मगर अब याद नहीं रहा। मैं तो इतना ही जानती हूँ कि खुदाई हुक्मों को मानना ही खुदा को मानना है।"

घर पहुँच सरवर ने पुत्र को पृथक् में अपने कमरे में बैठाकर कहा, "देखो बेटा ! तुम्हारी बीवी के हमल ठहरा हुआ है। इसलिए उससे अब बीवी का काम लेना बन्द कर दो और उसे आराम करने दो।

"तुम्हारे अब्बाजान ने नगीना को यहाँ एक मक्सद से छोड़ा है। वह चाहते हैं कि तुम उससे शादी कर लो।"

"हाँ, अम्मी ! मुझे यह मालूम है। मगर मैं यह नहीं चाहता। उसके लिए मेरे मन में हमशीरा का ख्याल बना हुआ है। मैंने अब्बाजान को इनकार कर दिया है।"

"बस, यही बात मेरे साथ भी है। मगर मैं इनकार नहीं कर सकी। हाँ, मैं उनकी राय मान नहीं सकी।"

मुहम्मद यासीन ने इसी विषय पर प्रज्ञा से भी बात की और उसे बताया, "मैंने मन-ही-मन अब अब्बाजान से सम्बन्ध न रखने का फैसला कर लिया है।

"वैसे उन्होंने यहाँ का मकान और दुकान मेरे नाम लिख कर देते समय मुझे कहा था कि अब मेरा उनसे कुछ भी लेना-देना नहीं रहा, अपना कमाओ और खाओ। परन्तु यहाँ आकर उनकी कल की हरकत से मैं अब उनको मन से भी निकाल चुका हूँ।"

प्रज्ञा से बातचीत रात के समय हो रही थी। रात का खाना खाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे अपने कमरे में बैठे सोने की तैयारी कर रहे थे। नगीना को अभी पृथक् कमरा नहीं मिला था। वह अपनी बड़ी अम्मी के कमरे में ही सो रही थी। मगर उसने दो बातों की माँग की थी। एक तो रहने और सोने के लिए पृथक् कमरा और दूसरे, बजाने के लिए एक विचित्र-वीणा तथा सिखाने के लिए एक उस्ताद।

ज्ञानस्वरूप ने नगीना की माँग के विषय में प्रज्ञा को बताया तो प्रज्ञा ने कह दिया, "कल तो वह कह रही थी कि फोटोग्राफी के लिए उसे एक पृथक् कमरा चाहिए। मैंने उसे समझा दिया था कि इसके लिए झंझट नहीं करे। वह अपनी फिल्में किसी भी फोटोग्राफर से धुलवा सकती है।"

"इस लड़की को पर लग गए हैं। यह वैसे ही उड़ जाएगी जैसे तुम उड़कर यहाँ आ गई थीं।"

"इसमें भी अन्तर है।" प्रज्ञा ने कहा, "मैं परमात्मा पर अगाध विश्वास रखती हुई अपार आत्मबल रखती थी। यह नास्तिक की बेटी, परमात्मा के विषय में अ-आ भी न जानती हुई, किसी के भी चंगुल में फंस सकती है। इसकी अम्मी ने ही बताया था कि वह किसी के आगे-पीछे भागती फिरती थी। कुछ महीने हुए इसको ऐक्ट्रेस बनने की रुचि हो गई। यह एक फिल्म डायरेक्टर के चक्कर में पड़ गई। मगर जब अब्बाजान को पता चला तो उन्होंने उस फिल्मी डायरेक्टर महोदय को डरा-धमका कर भगा दिया था।

"यदि यह पसन्द करे और दादा चाहें तो मैं दोनों में कौल-इकरार करा देना चाहती हूँ। परन्तु शादी तो दो वर्ष उपरान्त ही हो सकेगी। दोनों में यदि कौल-इकरार हो गया तो फिर दोनों बँध जायेंगे और मैं समझती हूँ कि अपना व्यवहार ठीक रख सकेंगे।"

"मगर यह नगीना तो ज्वालामुखी पर्वत है। कहीं फटा तो विनाश भी खूब कर सकता है।"

"मैं समझती हूँ कि यदि एक बार दोनों की मानसिक सगाई हो सकी तो फिर इसको सन्मार्ग पर लाना सुगम हो जाएगा।"

"मगर यह करोगी कैसे?"

"मैं कल अपनी माताजी से मिलने जाना चाहती हूँ। जरा देखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती हूँ कि कल की दावत में हुए वार्त्तालाप की उनके मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई है। यदि नगीना ने कुछ भी रुचि मेरे साथ वहाँ जाने की प्रकट की तो उसे साथ ले जाऊँगी और फिर दोनों की प्रकृति को कार्य करने दूँगी। मैंने सुना है कि उस दिन दादा कह रहे थे कि नगीना एक ओजस्वी लड़की है और वह इसकी ओर आर्कषित अनुभव करता है।

"देखना यह है कि माता-पिता के व्यवहार और विचारों की इसके मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई है।"

: ६ :

अगले दिन प्रातःकाल अल्पाहार लेते हुए प्रज्ञा ने नगीना से कह दिया, "नगीना बहन ! तुम्हारे लिए अभी तो अपने बगल का कमरा तय किया है। कमरा कुछ बड़ा है, मगर उसका प्रयोग तुम न कर सको तो मुझे बताना। मैं उसका प्रयोग तुम्हें बता दूँगी।

"शेष काम तुम्हारे भाईजान ने अपने जिम्मे ले लिया है। वह तुम्हें सायंकाल बता देंगे।"

नगीना इस प्रबन्ध से सन्तुष्ट थी; परन्तु वह बोली, "भाभीजान ! आप हमारी जबान में बात क्यों नहीं करतीं ?"

"इसलिए कि मैं चाहती हूँ कि आप सब मेरी जबान सीख जायें। तुम्हारे भाईजान तो मेरी जबान जानते हैं। उनको बोलने का अभ्यास नहीं था। अब यह अभ्यास कर रहे हैं।"

"मगर यह क्यों ?"

"इसलिए कि हम उस जबान को देव-भाषा समझते हैं अर्थात् यह खुदा की ज़बान है। मेरा मतलब यह है कि यह ज़बान देव-भाषा के बहुत नज़दीक है।

"देखो नगीना ! मैंने इसी ज़बान में एम० ए० किया है और मैं इसके गुणों को जानती हूँ।"

"क्या सिफत है इस ज़बान में ?"

"एक तो यह है कि दुनिया में सबसे पुरानी किताबों के साथ हमारा सम्पर्क बनाती है। उसे समझने की सामर्थ्य देती है। दूसरे, इस ज़बान के ग्रन्थों में वह गुण है जो अन्य किसी ज़बान के ग्रन्थों में नहीं है। ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ अध्यात्म विद्या से भरे हुए हैं। खुदा को तो जानती हो ?"

"नाम सुना है, कभी देखा नहीं।"

"बस, इस ज़बान के ग्रन्थ में उसको दिखाने की ताकत है।"

"भाभीजान ! आपने परमात्मा को देखा है ?"

"मैं तो सब समय देखती हूँ। अब भी देख रही हूँ।"

"कहाँ ?"

"तुम में, अपने में, तुम्हारे भाईजान में और अम्मीजान में।"

"तो मुझे भी दिखा दो।"

"हाँ दिखा सकती हूँ। मैंने उसके दीदार तुम्हारे भाईजान को कराए हैं।"

मुहम्मद यासीन ननद-भाभी में यह वार्त्तालाप सुन मुस्करा रहा था। प्रज्ञा के इस कहने पर कि उसने परमात्मा के दर्शन अपने पति को कराए हैं, वह पूछने लगी, "भाईजान ! आपने खुदा को देखा है ?"

"हाँ, नगीना ! इसको देखने का एक तरीका है। वह मैंने तीन महीने के अभ्यास से सीखा है। तुम भी प्रज्ञा की संगत में आओगी तो सीख जाओगी।"

सरवर ने कह दिया, "हाँ, खुदा को देखा जा सकता है। मगर इन आँखों से नहीं, उसको देखने की आँख दूसरी है।"

"तो भाभीजान ! मुझे भी दिखा दो। मैं तो सब खुदा-दोस्तों को ज़ाहिल समझती हूँ। अब्बाजान को सबसे ज्यादा। मैंने कभी ऐसा कहा नहीं, यह इस वास्ते कि वह अब्बाजान हैं। उनकी इज्जत करनी चाहिए।"

"यह ठीक है। वह बड़े हैं। मगर खुदा के दर्शन के लिए रोज मेरे कमरे में प्रातःकाल के समय कम-से-कम एक घण्टा के लिए आना होगा।"

"आज दोपहर को नहीं।"

"नहीं ! वैसे भी आज मैं दो बजे अपनी माताजी से मिलने जा रही हूँ।"

"तो मैं भी आपके साथ चलूंगी।"

प्रज्ञा यही तो चाहती थी। इस कारण उसने कह दिया, "अपनी अम्मी से पूछ लो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों अम्मी ? भाभीजान के साथ जाऊँ या अकेली घूमने जाऊँ ?"

"भाभी के साथ ही जाना चाहिए। बहू ! कब तक लौटोगी ?"

"रात खाने से पहले लौट आऊँगी।"

"देख लो ! यह बेलगाम लड़की वहाँ तुम्हारे माता-पिता और भाईयों को तंग भी कर सकती है।"

"अम्मीजान ! वे कोई बच्चे तो हैं नहीं। यदि इसने कुछ नावाजिब हरकत की तो वे इसके कान पकड़ इसे ठीक राह पर कर देंगे। उनको कोई मना नहीं कर सकता।"

"नहीं बेटी ! तुम इस पर निगाहबानी रखोगी तो ठीक रहेगा। वे लोग तो रिश्तेदारी का ख्याल कर इसकी बेहूदगियों पर आँखें मूंद भी सकते हैं। मगर दिल में तो इसके और इसके खानदान के विषय में बुरे ख्याल बना लेंगे।"

"क्यों नगीना बहन ! तुम बेलगाम हो या नहीं और फिर वह अपनी लगाम मेरे हाथ में दे सकोगी ?"

"भाभीजान ! इन तीन दिनों में मैंने देखा है कि आप गाड़ीवान नहीं हैं, जो मुझे घोड़े की तरह लगाम लगाकर रखेंगी। वैसे मैं अमल में अपने पर मुकम्मल काबू रखती हूँ।"

"यही कह रही हूँ।" प्रज्ञा ने कहा, "मैं तुम्हें अपने रथ के साथ घोड़े की भाँति जोतकर नहीं ले जा सकती। यह इसलिए कि मैं रथवान् नहीं। न ही तुम रथ की घोड़ी हो। तुम एक इन्सान की बच्ची हो और इन्सान की भाँति ही अपने को नियन्त्रण में रख सकोगी।"

"यह क्या होता है ? क्या रख सकूँगी ?"

"अपने पर काबू।"

"तो यह नियन्त्रण होता है ?"

"हाँ, यही अपने पर काबू करना है।"

इस प्रकार मध्याह्न के खाना खाने के पन्द्रह-बीस मिनट के बाद ननद-भाभी पैदल ही चल पड़ीं।

मार्ग में नगीना ने बताया, "आज से दो-तीन साल पहले की बात है, हम सब औरतों को कशमकश करनी पड़ी थी बाजार में बिना बुर्के के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घूमने के लिए। अब्बाजान और मेरी अम्मी इसके खिलाफ थीं।

"इस पर छोटी अम्मी ने हमारी शिकायत की और हम भूख-हड़ताल कर बैठीं। तीन दिन की भूख-हड़ताल के बाद हमें बिना बुर्के के वम्बई की सड़कों पर घूमने-फिरने की इज़ाज़त मिल गई। मैं तब नवीं जमायत में पढ़ती थी। यह बगावत मेरे लिए बुर्का बनवाने के वक्त शुरू हुई थी। मुझे याद है, उस दिन मैं स्कूल से घर आयी तो एक दर्जिन आई हुई थी। वह दूसरी वेगमों का नाप ले रही थी। अम्मी ने दर्जिन से कहा, 'इस लड़की के बुर्के का भी नाप ले लो।

"वह मेरा नाप लेने लगी तो मैं भागकर कमरे में जा भीतर से कमरा बन्द कर बैठी रही।

"बस, मेरा यह प्रोस्टेस्ट ऐलान हो गया। मेरी अम्मी, मैं और बड़ी अम्मी तीनों ने भूख-हड़ताल कर दी थी।

"हमीदा अम्मी ने हमारी शिकायत अब्बाजान के पास की। उन्होंने तीनों को डाँटा, मगर हम अपने इरादे पर मुस्तकिल रहीं।

"नतीजा यह हुआ कि तीसरे दिन अब्बाजान ने हमको बुलाकर बिना बुर्के के घूमने-फिरने की इजाजत देते हुए कहा, 'मेरी इज्जत तुम सब के हाथो में है। इस पर कोई धब्बा नहीं लगना चाहिए।'

"अब तो मैं वम्बई-भर की तस्वीरें लेती हुई घूमा करती थी। मेरे कुछ फोटोग्राफ वहाँ की 'इलस्ट्रेटिड वीकली' में भी छप सके हैं।"

नगीना की बात खत्म होते-होते ये प्रज्ञा के पिता के घर जा पहुँचीं। इनके आने की सूचना मिली तो महादेवी घर से निकल आई। इनको ड्राइंग-रूम में बैठा वह कहने लगी, "प्रज्ञा! आने से पहले टेलीफोन कर देतीं तो उमाशंकर घूमने न जाता।"

"माताजी! लड़की को माँ के घर में आने के लिए स्वीकृति लेने की जरूरत नहीं होती।"

"मैं स्वीकृति-अस्वीकृति की बात नहीं कह रही। मैं तो उमाशंकर के घर पर रहने की बात कह रही हूँ।"

"माताजी! मैं रात भोजन के समय पर ही जाऊँगी। तब तक तो दादा आ ही जायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह कह गया है कि सायंकाल चाय के समय लौटेगा। वह अपना क्लीनिक यहाँ शुरू करना चाहता है।"

"यह तो ठीक करेंगे। डॉक्टर यहाँ कोई है भी तो नहीं।"

"है, एक मार्केट में। मगर सुना है पिछले पाँच वर्ष से उसका काम कुछ चल नहीं सका। उमा के पिताजी यह चाहते थे कि यह कनाट प्लेस के आस-पास कहीं जगह ले। मगर उमाशंकर ने यहीं क्लीनिक बनाने का निश्चय किया है।

"बरामदे में तुम्हारे पिताजी का दफ्तर और उसके पीछे जो कमरा है, वे दोनों इस काम के लिए उसने माँगे हैं। उमाशंकर उसके फर्नीचर का प्रबन्ध करने गया हुआ है।"

अब प्रज्ञा ने अपने साथ आई अपनी ननद का परिचय दे दिया, "मेरे श्वसुर की मँझली पत्नी की लड़की है। इसके तीन भाई और हैं। वे सब छोटे हैं। वे अपने अब्बाजान के साथ बम्बई चले गए हैं।"

"तुम्हारे पिता ने इससे उस दिन दावत के समय होने वाली गुफ्तगू को पसन्द नहीं किया।"

प्रज्ञा ने इस बात की ओर ध्यान न देकर पूछ लिया, "पिताजी कहाँ हैं ?"

"वह खाने के बाद सोया करते हैं। अभी पन्द्रह-बीस मिनट में बाहर आयेंगे।"

"माँ ! मैं उस दिन की दावत से सर्वथा सन्तुष्ट हूँ।"

"क्या संतोष की बात हुई है ?"

"एक तो यह कि पिताजी को अब्बाजान के स्वरूप का ठीक-ठीक ज्ञान हो गया है। वह संतोषजनक नहीं है। जो कुछ मैंने उनके विषय में समझ रखा था, वही पिताजी को समझ आया प्रतीत होता है।"

"क्या समझ आया है ?"

"यही कि वह एक गंवार व्यक्ति हैं। दूसरे यह कि वह 'मॉडर्न' नास्तिक हैं। तीसरे यह कि इनका मुख्य कार्य, बम्बई में तस्करी का माल बेचना है। चौथे यह कि वह मुतअस्सिब मुसलमान हैं।

"मेरी सास से वह झगड़ा इस बात पर करते रहे हैं कि उसने हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शादी शरम्र के मुताबिक क्यों नहीं कराई ग्रौर मैं उनकी फारसी छोड़ हिन्दी भाषा में क्यों बात करती हूँ।

"ग्रम्मी बता रही थीं कि मेरे नाम पर भी उनको बहुत भारी ग्रापत्ति है।"

"इसी प्रकार की, परन्तु इससे उलट बात तुम्हारे पिताजी भी कह रहे थे। वह कहते थे कि तुमने ग्रपना विवाह हिन्दू तरीके से क्यों नहीं कराया ?"

"ग्रौर माँ ! तुम क्या कहती हो ?"

"मैंने भी कुछ कहा है। मगर वह तुम्हें नहीं बताऊँगी।"

"क्यों माँ ? कुछ गाली दी है मुझे ?"

"नहीं, गाली नहीं। किसी प्रकार का ग्रपशब्द भी नहीं। बस इतना ही बताऊंगी।"

"ग्रच्छा माँ ! यह बता दो, किसलिए नहीं बताना चाहतीं।"

"यह बताने से तो बात का भाव पता चल जाएगा ग्रौर वही तो बताना नहीं चाहती।"

"ग्रच्छा, यह बताग्रो, तुम्हें उस दिन दावत कैसी लगी है ?"

"दावत तो जैसी उम्मीद थी, वैसी ही थी। एक मुसलमान के घर में जो खाया जाता है, वही कुछ था। विस्मय इस बात पर हुग्रा था कि तुम भी माँस खाने लगी हो।"

"वह तो मैं पहले भी खाती थी। मैं समझती हूँ ग्राप लोग भी खाते हैं। फर्क सिर्फ यह है कि पहले मैं ग्रौर ग्राप सब उन जीवों का माँस खाते थे जो जिबह किए जाने पर चीख-पुकार नहीं कर सकते थे।"

"माँ ! यह ऐसे हैं ही जैसे काली माँ के सामने बलि के बकरे का मुख बाँध कर उसको चीख-पुकार करने नहीं दिया जाता। फरक यह है कि बलि के बकरे का मुख पुजारी बाँध देता है ग्रौर वनस्पतियों का मुख परमात्मा ने बन्द किया हुग्रा है।

"मगर माँ ! पुजारी ने तो बलि का मुख इसलिए बाँधा होता है, जिससे उसके यजमान दया ग्रनुभव कर बलि वापस ही न कर लें ग्रौर परमात्मा ने वनस्पतियों का मुख इस कारण बन्द कर रखा है कि उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वजन्म के कर्मों से उनकी ज़बान छीन ली गई है। मगर जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है दोनों काम समान रूप में बढ़िया अथवा घटिया हैं।

"इस कारण मैं न तो माँस खाने की लालसा करती हूँ, न ही इससे अब अरुचि रखती हूँ।"

माँ ने बात बदल दी, "क्यों नगीना बेटी ! बम्बई क्यों नहीं गईं ?"

"अम्मी ! मुझे यह समझ आया है कि मुझे अब दिल्ली में ही रहना है। इस वास्ते यहाँ के तौर-तरीके सीखने के लिए भाभीजान की सोहबत में रहना मुनासिब लगा है।"

"दिल्ली में क्यों रहना है ?"

"वह वजह है जो सब लड़कियों को घर बदलने में होती है।"

"ओह ! तो कोई घर तुम्हारी अम्मी ने तजवीज़ किया है ?"

"जी नहीं। मैं अपना घर चुनने खुद आई हूँ और अब्बाजान की राय नहीं मानूंगी। वैसे अब्बाजान भी मुझे दिल्ली के लिए बुक किए हुए हैं, मगर उनकी बुकिंग को मैं मंजूर नहीं कर रही।"

"वह कहाँ के लिए कह रहे हैं ?"

"माताजी ! यह बताने का हुक्म नहीं है।"

"तो मैं अम्मी से एक ही क्षण में माताजी हो गयी हूँ।"

"बात यह है कि हमारे घर में अम्मियों की भरमार है। इसलिए छोटी अम्मी, बड़ी अम्मी कहना पड़ता है। इससे बचने के वास्ते मैं कल ही सोच रही थी कि बुलाने का कोई मुख्तसिर तरीका बनाना चाहिए। जब भाभीजान आपको माताजी कह रही थीं तो मैंने भी आपके लिए यही नाम मंजूर कर लिया। अपनी अम्मी के लिए मैंने माँ का इलफाज़ मुकर्रर किया है। दूसरी बम्बई वाली अम्मियों के वास्ते भी मैं गौर कर रही हूँ।"

प्रज्ञा और महादेवी हँस रही थीं। इस पर भी नगीना गम्भीर भाव ही कह रही थी। जब वह कह चुकी तो प्रज्ञा ने कहा, "इसकी बातें सुन मुझे यह बहुत ही प्यारी लगने लगी है।"

"मेरी कौन-सी बात प्यारी लगी है, भाभीजान ?" नगीना ने मुस्कराकर पूछा।

"तुम पूछो, कौन-सी प्यारी नहीं लगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह ही बता दो। इससे इसके उलट का इल्म हो जाएगा ?"

"एक बात ठीक प्रतीत नहीं हुई। वह यह कि तुम अब्बाजान की बात नहीं मानोगी।"

"भाभीजान ! वह मान सकती ही नहीं। इसलिए अपने इरादे का अभी से ऐलान कर रही हूँ। कल मैंने अब्बाजान को भी अपने मन की बात कह दी थी।"

प्रज्ञा को समझ तो आ रहा था कि वह किस विषय में कह रही है, परन्तु वह अपनी जानकारी बताना नहीं चाहती थी। इस पर जानकारी का स्रोत बताना पड़ता। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने कहा, "देखो ! यदि कहो तो माताजी से कहूँ कि एक प्याला कॉफी पहले आ जाए। नहीं तो दादा के आने पर माताजी चाय पूछेंगी।"

नगीना चाय से इनकार करने वाली थी कि शिवशंकर कालिज से आ गया। वह बी० ए० में पढ़ता था। उसे आते हुए पहले नगीना ने ही देखा। वह ड्राइंगरूम की ओर मुख किए बैठी थी। उसने शिवशंकर को देख कह दिया, "लो, यहाँ के एक वली-अहद तो आ गए।"

माँ और बेटी दोनों ने घूमकर देखा तो शिव को देख हँस पड़ीं। शिव अपनी पुस्तकें अपने कमरे में रखकर ही आया था। माँ ने उसे आते देख पूछ लिया, "बताओ, चाय अभी पीओगे अथवा दादा के आने पर ?"

"माँ ! आज मैंने अपनी श्रेणी के साथियों को दावत दी थी। दादा को भी वहाँ बुलाया हुआ था। कालिज के कुछ प्राध्यापक भी वहाँ थे। खूब खाया है। इस कारण अभी कुछ लेने की इच्छा नहीं हो रही।"

"कितना कुछ खर्च आए हो ?"

"कुछ अधिक नहीं। तीस के लगभग मित्र तथा प्राध्यापक थे। केवल एक सौ अस्सी रुपये खाने-पीने पर और बीस रुपये बैयरों को टिप, बस यही खर्च हुए हैं।"

"तो इतने रुपये तुम्हारी जेब में थे ?"

शिव हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "जब सब खा चुके और कैण्टीन वाला बिल लाया तो मैंने दादा से कह दिया, 'दादा ! दो हरे रंग के नोट जरा देना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"दादा ने दिए तो मैंने कैण्टीन वाले को दे दिए।

"दादा कालिज से तीन बजे चले गए थे, कह रहे थे साढ़े चार बजे तक घर पहुँच जायेंगे।"

इस समय रविशंकर भी आ गया। उसने नगीना को प्रज्ञा के साथ बैठे देख पहले तो चिन्ता अनुभव की, पीछे शीघ्र ही अपने को सम्हाल कर कहा, "तो यह है बम्बई वाली लड़की?"

"जी!"

"तो तुम्हारे पिता अभी गए नहीं?"

"पिताजी! उनको तो कल ही हवाई जहाज पर चढ़ा आई थी।"

"कैसे चढ़ाया था?"

नगीना ने उठ, खड़े हो, अपना रूमाल निकाल सिर से ऊँचा कर हिलाते हुए कहा, "इस प्रकार बाई-बाई कह आई हूँ।"

सब हँसने लगे। रविशंकर के मन का क्षोभ भी शान्त होने लगा था।

महादेवी ने बताया,"यह कहती है कि यह दिल्ली में 'हस्बैण्ड हंटिंग' के लिए ठहरी है।"

"ओह! यह तो बहुत मुश्किल काम है। दिल्ली बहुत बड़ी और आजकल बहुत बिगड़ी हुई है। किसकी हंटिंग कर रही हो?"

"अब्बाजान किसी को तो इस काम पर तैनात नहीं कर गए। हाँ, भले लोगों का अपना दायरा बढ़ा रही हूँ। आप भी अब उसमें शामिल हो जायें तो बहुत मश्कूर रहूँगी।"

"यह ठीक ही कर रही हो। तुम अपनी भाभी प्रज्ञा से भी ज्यादा समझदार मालूम होती हो।"

"नहीं पिताजी! भाभी बहुत ही लायक हैं। यह डब्बल एम० ए० हैं। इनको किसी की मदद की जरूरत नहीं रही होगी। पर मैं तो सिर्फ हायर सैकेण्डरी तक पढ़ी हूँ। मुझे दूसरों की मदद की जरूरत पड़ेगी।"

इस समय बाहर मोटर का हार्न बजा तो शिव उठकर बाहर चला गया। वह समझ गया था कि दादा आ गया है। दो मिनट में दोनों भाई भीतर आ गए। उमाशंकर ने जब नगीना को देखा तो पूछ लिया, "तो तुम बम्बई नहीं गईं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"वहाँ कुछ मजेदार नहीं रहा। मैंने पूर्ण नगर को बीसियों बार छान डाला है। अब दिल्ली देखने ठहर गई हूँ।"

"हमारे फोटो का क्या हुआ?" उमाशंकर ने बात बदलते हुए पूछा।

"रील आज यहाँ फोटोग्राफर को दे आई हूँ। कल तक उनके प्रिन्ट देगा।"

"मैं अपनी फोटो देखना चाहता हूँ।"

"चौबीस 'शौट्स' लिए हैं। देखें, कितने ठीक आते हैं।"

महादेवी ने सेवक को आज्ञा दी थी कि उमाशंकर के आते ही चाय और उसके साथ खाने को ले आना। अतः सेवक इस समय चाय ले आया।

चाय सेण्टर टेबल पर रखी गई तो सब समीप-समीप हो गए और प्रज्ञा सबके लिए चाय बनाने लगी।

उमाशंकर ने कहा, "पिताजी! मैं अपने नाम का नामपट्ट लिखा लाया हूँ और उसे कोठी के बाहर लगा दूंगा। उचित फर्नीचर का आदेश भी दे आया हूँ और साथ ही अपने लिए कुछ पुस्तकों इत्यादि का भी आर्डर दिया है। आशा है कि इस महीने के आखिर तक सब ठीक करवाकर मैं नियम से यहाँ बैठने लगूंगा।"

"मगर तुमसे तो राय करने लोग आज से ही आने लगे हैं। एक हमारे पड़ोस का साधूराम आया था। मैंने उसे डॉक्टर के पास भेजना चाहा था, मगर वह तुमसे ही राय करना चाहता है। मैंने सायंकाल छः बजे बुलाया है। अभी दो घण्टे हैं।"

चाय समाप्त हुई तो रविशंकर ने अपनी छड़ी उठाई और घूमने चल दिया। शिव अपने कमरे में अपनी पढ़ाई करने चला गया। महादेवी प्रज्ञा को लेकर पृथक् कमरे में चली गई और नगीना उमाशंकर के पास रह गई।

पहले तो वह भी उठकर अपने नियत क्लीनिक में जाने वाला था। फिर यह विचार कर कि नगीना अकेली रह जाएगी, बहन तथा माताजी के आने तक वहीं बैठने का विचार कर, वह नगीना से बातें करने लगा।

उसने कहा, "उस दिन मैंने एक खिलौना प्रज्ञा को लाकर दिया था। वह मैंने शिकागो में खरीदा था। मुझे बहुत सुन्दर प्रतीत हुआ था। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देखता हूँ कि उस खिलौने से तुम बहुत कुछ मिलती हो।

"यह तो आपने उस दिन भी कहा था कि मैं आपको बहुत खूबसूरत दिखाई देती हूँ।"

"हाँ, याद आ गया है। तुम हो ही ऐसी।"

"तो ऐसा करिए, इस खिलौने को यहाँ अपनी कोठी में कहीं टिका दीजिए।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"जैसे दुनिया-भर के लोग कर रहे हैं।"

"ओह! तुम तो मुझे 'प्रोपोज' कर रही हो?"

"यह तो उस दिन आपने किया था और आज भी उस दिन कहे की ताईद कर रहे हैं। मैं तो तजवीज़ की मंजूरी दे रही हूँ।"

"मगर तुम्हारे अब्बाजान और अम्मी नहीं मानेंगे?"

"हां, वे दोनों इसकी मंजूरी नहीं देंगे। वे दे सकते भी नहीं। इतने बड़े काम की उनमें तमीज नहीं।"

"तो फिर यह कैसे हो सकता है?"

"मैं आपसे कहने आई हूँ कि आप मेरे बालिग होने तक इन्तजार करें। इसमें सिर्फ दो साल बाकी हैं।"

"पर मेरी माताजी तो अभी से अपने पड़ोसियों, परिचितों और सम्बन्धियों में छानबीन करने लगी हैं?"

"यही मैं सोच रही हूँ। इसी वास्ते तो मैंने पहला मौका मिलते ही आपसे अर्ज कर दी है कि मैं आपकी तजवीज़ को मंजूर कर रही हूँ।"

"मगर कुछ और बातें भी तो हैं।"

"फरमाइये।"

"तुम अपनी इस मंजूरी का पत्र लिखोगी तो अपनी बनने वाली बीवी के गुण लिख कर भेजूंगा। अभी इतना मंजूर है कि तुम सुन्दर हो, युवती हो, सही दिमाग रखती हो। मगर कुछ दूसरी बातें भी हैं।

"देखो, मैं तुम्हें अभी एक चिट्ठी लिखकर दे देता हूँ। तुम उसका उत्तर लिखना। तब पत्र-व्यवहार आरम्भ हो जाएगा। और मेरी कुछ बातें समझ तुम मंजूर करोगी और उनका उत्तर सन्तोषजनक होगा तो मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दो-तीन वर्ष तक इन्तजार कर सकता हूं।

"तो ऐसा करिए कि भाभीजान के बाहर आने से पहले लिख कर दे दीजिए। मैं उनसे यह बात अभी चोरी रखना चाहती हूँ।"

"क्यों?"

"यह आपको पीछे पता चल जायेगा। पहले देखूं कि आप मुझे लिखते क्या हैं?"

डॉक्टर उठा और नगीना को वहीं ड्राइंग-रूम में बैठे छोड़ अपने स्टडी-रूम में चला गया। उसने अपना लैटर-फार्म निकाला और एक फार्म पर पत्र लिखने लगा। उसने लिखा—

"डीयर नगीना! मैंने जबसे तुम्हें देखा है, तुम्हें अपने साथ रखने के लिए पसन्द किया है। मैं अपने को सब प्रकार से तुम्हारे योग्य समझता हूँ। मुझे आशा है कि तुम मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार करोगी।

"मैं तुम्हें श्रीमती शुक्ला की उपाधि देना चाहता हूं। तुम अपने बड़ों से सम्मति कर, अपना निर्णय बता सको तो मैं कृतज्ञ रहूँगा।

उत्तराकांक्षी—

उमाशंकर।"

उमाशंकर ने पत्र अंग्रेज़ी में लिखा था। उसे विदित नहीं था कि नगीना हिन्दी पढ़ सकती है अथवा नहीं। उसने पत्र को तह किया और अपने छपे लिफाफों में से एक में बन्द कर उसको जेब में रखकर ड्राइंग-रूम में आ गया। इस समय तक प्रज्ञा और महादेवी वहाँ आ चुकी थीं। उमाशंकर को आया देख माँ ने कहा, "हम समझ रहे थे कि तुम यहाँ नगीना के पास बैठे हो। तुम कहाँ चले गए थे? यह यहाँ अकेली बैठी मक्खियाँ मार रही थी।"

"पर माताजी! कमरे में मक्खियाँ तो हैं नहीं।" नगीना ने कहदिया।

"मैं यह कह रही हूं कि इसको मक्खियाँ भी नहीं मिल रही थीं मारने के लिए।"

"मैं जरा बाहर गया था।"

नगीना समझ रही थी कि डॉक्टर पत्र लिख लाया है, मगर माँ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सामने नहीं दे रहा। वह भी यही चाहती थी, यद्यपि पत्र पाने के लिए
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बहुत उत्सुक थी।

: ७ :

रात आठ बजे तक प्रज्ञा माँ के घर पर रही। ठीक आठ बजे वह उठी और अपने घर को चली तो उमाशंकर उनको छोड़ने जाने के लिए तैयार हो गया। उसने कहा, "प्रज्ञा ! आओ, तुम्हें मोटर में छोड़ आता हूँ।"

"बहुत खूब ! चलिए, मैं आपका धन्यवाद करूँगी।"

वे उठे ही थे कि ज्ञानस्वरूप अपनी मोटर में पत्नी और बहन को लेने आ पहुँचा।

वह सीधा दुकान से आ रहा था। उसे विदित था कि ये दोनों यहाँ हैं। इस कारण लौटते हुए वह उनको घर ले जाने के विचार से आया था।

उमाशंकर, प्रज्ञा और नगीना इत्यादि ड्राइंग-रूम से निकले तो ज्ञानस्वरूप घर में प्रवेश करता दिखाई दे गया।

"तो आप आ गये हैं ?" प्रज्ञा ने पूछा।

"हाँ, मैंने सोचा मैं भी जरा माताजी की कदम-बोसी कर लूँ।"

"हाँ ! चरण-स्पर्श करने ही चाहिएँ।"

वे दोनों ड्राइंग-रूम में वापस जा पहुँचे। बाहर रह गये उमाशंकर और नगीना। इसे ठीक अवसर देख उमाशंकर ने जेब से लिफाफा निकाल नगीना को दिया तो नगीना ने उसे तुरन्त अपने पर्स में रख लिया।

इस प्रकार नगीना मन में यह समझी कि उसने अपने दिल्ली में ठहरने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रथम पग उठाया है।

रात का भोजन कर अम्मी सरवर, ज्ञानस्वरूप, प्रज्ञा और नगीना कॉफी लेने के लिए बैठे हुए थे। सरवर ने पूछ लिया, "माता-पिता खुश हैं न ?"

"अम्मीजान ! माताजी ने उस दिन भी बहुत स्नेहमय व्यवहार किया था। आज भी वह सदा की भाँति मिली थीं। दादा तो इस पुनर्मिलन में सहायक ही हुए हैं। पिताजी की बर्फ पहले से तो पिघली मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होती है, परन्तु अभी बहुत कुछ कमी है।

एकाएक प्रज्ञा ने नगीना की ओर देखकर कहा, "तुम्हारा कमरा अब तैयार हो गया है।"

"हाँ, भाभीजान ! मैं जाने से पहले देख गई थी।"

"और देखो, यदि परमात्मा के दर्शन करने हैं तो ठीक चार बजे उठ, स्नानादि से छुट्टी पाकर पाँच बजे से पहले मेरे पूजा के कमरे में आ जाना। तुम्हें वही शिक्षा दूंगी जो तुम्हारे भाई साहब को दे रही हूँ। वह भी वहाँ होंगे।"

"तब तो मैं अभी सो जाना चाहती हूँ। नहीं तो उस समय तक जाग नहीं सकूंगी।"

यूं भी नगीना उत्सुक थी अपने सोने के कमरे में जाने के लिए। उसकी पर्स में पड़ी चिट्ठी की याद उसे बेताब कर रही थी। वह उसको पढ़ने के लिए उत्सुक थी।

वह वहाँ से उठी और पर्स को कन्धों पर डाले हुए अपने कमरे में चली गई।

सूटकेस खाली कर उसके कपड़े वार्डरोब में रख दिये गए थे। उसका कैमरा और पुस्तकें अलमारी में रखी हुई थीं। उसके गुसल के लिए साबुन-तेल इत्यादि सोने के कमरे के साथ वाले बाथरूम में रख दिया गया था।

यह सब प्रबन्ध देख वह प्रसन्न थी। उसे समझ आया कि बम्बई से यहाँ अधिक सुख-सुविधा प्राप्त होगी।

उसने द्वार भीतर से बन्द किया और उमाशंकर का पत्र निकाल पढ़ने लगी। पत्र पढ़ा और उसी समय चिट्ठी लिखने के लिये कागज निकाल वह उत्तर लिखने बैठ गयी।

उसने चिट्ठी फारसी अर्फ़ों में लिखी। हिन्दी वह नहीं जानती थी। अंग्रेज़ी में लिखने से डरती थी कि कहीं कोई शब्द गलत न लिखा जाये। उसने लिखा—

"जनाब आली ! आपका मेरे नाम आपके घर आकर रहने का दावत-नाम मिला और पढ़ कर दिल में बहुत खुशी हासिल हुई।

"मैं इससे यह समझी हूँ कि हम दोनों में कशश एकदम होने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इसमें कुछ गैबी वजूहात है। मेरी तालीम यह बताती है कि हम दोनों के दिल और दिमाग की तरबीयत एक-जैसी है। इसी वजह से हम इकट्ठे ही एक दूसरे को पसन्द करने लगे हैं।

"मगर यहाँ कुछ रुकावटें हैं। पहली रुकावट है वालिद शरीफ की। उन्होंने बिना मुझसे राय किये मुझे किसी दूसरे के लिये मुकर्रर कर रखा है। मैं उसके पास जाकर रहना नहीं चाहती, मगर वालिद साहब इस पर इसरार कर रहे हैं।

"दूसरी रुकावट है मेरी बम्बई वाली अम्मी! वह समझती हैं कि मुझे किसी मोमिन के घर को रोशन करना चाहिए और आप उसकी नजर में काफिर हैं, खुदा को न मानने वाले ज़ाहिल हैं।

"तीसरी रुकावट है मेरी उम्र की। मैं इस समय उन्नीस साल की हूँ। मुझे अभी दो साल तक अपनी मर्जी से शादी करने की अक्ल नहीं है।

"अब इन तीनों रुकावटों को कैसे पार किया जाये, इस पर मैं गौर कर रही हूँ। इनमें से पहली दो मैं खुद समझ लूंगी और तीसरी रुकावट आपके दूर करने की है। आप अगर जनवरी पन्द्रह सन् १९७२ तक मेरा इन्तज़ार करें तो मैं दूसरी दो रुकावटों को पार कर आपके घर स्वयं पैदल चल कर चली आऊँगी।

"खुदा का शुक्र है कि आपका घर यहाँ से दूर नहीं। बम्बई और दिल्ली दोनों हिन्दुस्तान में ही हैं और मैं दिल्ली में पहुंच गयी हूँ। बकाया सफर पैदल कर सकती हूँ।

"बस, यह जनवरी पन्द्रह सन् १९७२ की इन्तजार का मसलह है। इसका इलाज आप कर सकते हैं। आप बताइये, क्या आप कर सकते हैं? मैं आपकी निहायत मश्कूर रहूँगी।

दीदार के लिए बेताब
नगीना।"

यह चिट्ठी लिख उसे लिफाफे में बन्द कर ड्रेसिंग-टेबल की दराज में रख वह इत्मीनान से सो गयी। वह प्रातः चार बजे उठने के इरादे से लेटी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी नींद खुली पाँच बजने से पाँच मिनट पहले। जब नींद खुली तो उसे स्मरण हो आया कि उसने भाभी के पूजा-गृह में जाना है। इस पर वह भागी गुसलखाने में। मुख-हाथ धो, कपड़े पहन वह प्रज्ञा के पूजा-गृह में जा पहुँची।

कमरे में दस-बारह अगरबत्ती सुलग रही थीं और कमरा सुगन्धि से भरा हुआ था।

प्रज्ञा अभी आसन पर बैठने के लिए आसन के समीप खड़ी थी कि नगीना पहुँच गयी। ज्ञानस्वरूप तो उसके पीछे आया। उसने नगीना को वहाँ देखा तो कहा, "यह तुम्हारा नया शागिद मुझसे ज्यादा कामयाब हो गया है।"

"देखना है कि यह कहाँ तक पहुँची हुई है। आप में एक गुण आपके घरवालों से अधिक है। वह यह कि आप संस्कारों, मेरा मतलब है कि आदत के अधीन न रह कर बुद्धि के अधीन अपने व्यवहार को बनाए हुए हैं।

"मजहब मनुष्य को संस्कारों के अधीन दास बनाकर रखना चाहते हैं, परन्तु मानव की मानवता उसकी अक्ल की वजह से ही है।"

"देखो नगीना!" प्रज्ञा ने बात बदल कर नगीना से पूछा, "नमाज जानती हो?"

"बचपन में याद की थी। अब बहुत कुछ भूल चुकी हूँ।"

"तो ऐसा करो, कागज और कलम लेकर यहाँ बैठ जाओ और उसे याद कर लिखो। तब तक हम अपने पाठ का अभ्यास करेंगे। देखो, हमें बुलाना नहीं। चुपचाप अपना काम करते रहना। चाहे हमें देखते रहना, मगर बात नहीं करना। हमें बीस मिनट लगेंगे।"

नगीना अपने कमरे में गयी और कागज-कलम ले आई। वह फारसी हरूफ में अरबी की नमाज लिखने लगी। प्रज्ञा और उसके पति प्राणायाम कर रहे थे।

वे श्वाँस को नियमपूर्वक भीतर लेते थे और फिर बाहर निकालते थे। नगीना ने तो नमाज, जो उसे स्मरण थी, छः मिनट में ही लिख ली थी। बकाया समय वह भाभी और भाई को पलथी मारे सीधी कमर किये धीरे-धीरे श्वाँस भीतर-बाहर करते देखती रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक बीस मिनट में दोनों इस काम से फारिग हुए तो प्रज्ञा ने कहा, "इसी प्रकार पलथी मारे हुए नमाज मन में ही पढ़ो। पढ़ते हुए मन में इसके मायने भी समझने का यत्न करो।

"और देखो ! हमसे बात नहीं करना। हम अपनी नमाज पर उसके अर्थ समझने की कोशिश कर रहे होंगे।"

इसमें पन्द्रह मिनट और व्यतीत हो गये। नगीना अपनी नमाज के इल्फाज मन में तीन बार दुहरा चुकी थी। वह उनके अर्थ तो समझती नहीं थी, इस कारण तीसरी बार पढ़कर भाई-भावज को आँखें मूंदे पलथी मारे बैठा देख मन-ही-मन मुस्कराने लगी थी।

अब प्रज्ञा ने कहा, "मैं अपनी नमाज का अर्थ आपको समझाती हूँ। आज मैंने अपनी ज्ञान की एक पुस्तक का एक मन्त्र पढ़ा है और उसके अर्थों पर चिन्तन किया है। वह मन्त्र है—

ओं हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक असीत् सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।

इसका अर्थ इस प्रकार है—

"परमात्मा ने हिरण्यगर्भ बनाया है। हिरण्यगर्भ क्या है ? सृष्टि बननी शुरू हुई थी 'मैटर' से, जिसे हम वेद की भाषा में प्रकृति अथवा स्वधा कहते हैं। यह प्रकृति कणदार अर्थात् बहुत बारीक-बारीक जर्रों में थी। जैसे रेत के बारीक-बारीक जर्रे होते हैं। परन्तु उस प्रकृति के कण रेत के कण से भी बहुत ही बारीक थे। इतने बारीक कि तेज़-से-तेज खुर्दबीन से भी अभी तक देखे नहीं जा सके। हमारी आजकल की खुर्दबीन एक वस्तु को एक करोड़ गुना बढ़ाकर देख सकती है। मगर वह भी अभी तक इस कण को देख नहीं सकी। मगर जब ये कण कई-कई मिलकर गुट्ट बना लेते हैं, तब दिखाई देने लगते हैं।

"ये बड़े-बड़े गुट्ट कैसे बनते हैं ? इसका ढंग यह बताया है कि प्रत्येक प्रकृति का कण, जिसे ऐटम कहते हैं, अपने में तीन प्रकार की ताकतें रखता है। वे तीनों ताकतें एक-दूसरे की विरोधी होने से एक-दूसरे को शान्त अर्थात् 'न्यूट्रलाईज़' करती रहती हैं। इस कारण प्रत्येक परमाणु शान्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ये तीन शक्तियाँ हैं नेगेटिव विद्युत्; इसे वेद की भाषा में रजस् कहते हैं। दूसरी शक्ति है पॉजिटिव विद्युत्। इसे अपनी भाषा में सत्त्व कहा है और तीसरी न्यूट्रल है। इसे तमस् कहा है। ये तीनों शक्तियाँ प्रत्येक परमाणु में इस प्रकार सन्तुलित अर्थात् बैलेंस होती हैं कि परमाणु पर किसी भी बिजली का आवेश अर्थात् चार्ज नहीं होता।

"सृष्टि-रचना के समय एक बहुत जबरदस्त ताकत पैदा होती है और वह प्रत्येक परमाणु से सम्पर्क बना उसके भीतर तीनों ताकतों का मुख बाहर को कर देती है। शक्तियाँ बाहर को मुख किए अपने पड़ोस के परमाणुओं पर प्रभाव जमाने लगती हैं।

"एक परमाणु की ऋण विद्युत् पड़ोस के परमाणु की धन विद्युत् को अपनी ओर आकर्षित करने लगती है। इसी प्रकार एक की धन शक्ति दूसरे की ऋण अथवा शून्य शक्ति वाली तरफ को अपनी ओर खेंचने लगती है। इससे परमाणुओं में गति अर्थात् हरकत पैदा हो जाती है। गति से गरमी पैदा होती है। इतनी अधिक कि परमाणु गरम हो चमकने लगते हैं। यह हिरण्यगर्भ कहाता है।

"ऐसे चमकने वाले परमाणुओं के बादल तो अभी भी आसमान में घूम रहे हैं। उन्हें वैज्ञानिक 'नेबुला' कहते हैं। यह नेबुला ही हिरण्यगर्भ है।

"बस, दस मिनट हो गये हैं। आज की बात समाप्त कर रही हूँ।"

"मगर भाभी ! इसमें खुदा कहाँ है ?" नगीना ने पूछ लिया।

"वह शक्ति जो करोड़ों, अरबों और पद्मों परमाणुओं में शक्ति के सन्तुलन को भंग कर उनका मुख बाहर को करती है, उसका वृत्तान्त इसमें बताया है।

"वह शक्ति जिसके पास है, बस, वही परमात्मा है। पृथिवी पर रहने वाले किसी भी प्राणी में वह शक्ति नहीं है। इस कारण परमात्मा मनुष्यों से ऊपर है। वह आसमान में चमकने वाले तारों और कड़कने वाली बिजली से भी अधिक बलशाली है। घर में प्रकाश करने वाली बिजली तो उस शक्ति का एक नगण्य अंश है। जिस किसी के पास उतनी शक्ति है, यह परमात्मा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात समाप्त हुई तो ज्ञानस्वरूप उठ पड़ा और अपने स्टडीरूम में चला गया। प्रज्ञा उसके पीछे-पीछे चली गई। नगीना इस प्रथम पाठ पर विचार करती हुई अपने कमरे में आ गई। वह विचार कर रही थी कि यदि वह शक्ति आसमान में चमकने वाली बिजली से भी सहस्रों और लाखों गुना बलवान है तो वह कहाँ है? 'नेबुला' के विषय में तो उसने भी सुन रखा था, परन्तु ये बनते कैसे हैं, आज उसकी भाभी ने बताया था।

मध्याह्न के भोजन के उपरान्त वह प्रज्ञा के साथ ही उसके कमरे में चली गई। प्रज्ञा ने उसको अपने पीछे-पीछे आते हुए देखा तो बोली, "आओ नगीना बहन! किसलिए आई हो?"

"भाभीजान! कुछ काम कर रही हैं इस वक्त?"

"मैं खाली तो एक क्षण के लिए भी नहीं बैठती। बैठ सकती भी नहीं। कोई भी इन्सान खाली नहीं बैठता। जब तक वह जागता रहता है, उसका मन कुछ-न-कुछ करता रहता है। मन निश्चल नहीं बैठ सकता।"

"मगर आपकी सुबह की बात मुझे ठीक समझ नहीं आई।"

"यह इसलिए कि तुम पहले दिन आई हो और तुम अभी बहुत-सी बातें नहीं जानतीं जो तुम्हारे भाईजान जानते हैं। इसलिए उनकी जानी हुई बातों को उस समय दुहराया नहीं गया।

"तुम बताओ, क्या पूछना चाहती हो?"

"मैं यह जानना चाहती हूँ कि यदि हम खुदा को न मानें तो उसे कुछ नुकसान होगा?"

"उसे कुछ भी नुकसान नहीं होगा। नुकसान तो हमें होगा।"

"क्या नुकसान होगा?"

दोनों उस कमरे में रखी आरामकुर्सियों पर बैठ गयी थीं।

प्रज्ञा बता रही थी, "मैं जो बता रही थी और जो बताऊँगी, उससे उसके सनातन, मेरा मतलब है सदा एक सार चलने वाले उसूलों (नियमों) का पता चलेगा। उन उसूलों को जानना ही परमात्मा को जानना है और उसकी परस्तिश (पूजा) करना है। यही मैं तुम्हारे भाईजान को पिछले छः मास से बता रही हूँ। वह तो बहुत कुछ समझ गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो ! मैं तुम्हें एक और बात बताती हूँ । तुम इस कुर्सी पर बैठी हो और यह देखो ।"

इतना कह प्रज्ञा ने अपने सिर के बालों से एक सूई निकालकर उसके हाथ पर चुभोने के लिए आगे बढ़ाई तो नगीना ने अपना हाथ पीछे हटा लिया ।

इस पर प्रज्ञा ने पूछा, "क्यों, क्या हुआ है ?"

"आप सूई चुभोने लगी थीं न ?"

"हाँ !"

"इस वास्ते मैंने हाथ पीछे कर लिया था ।"

"मगर इस कुर्सी को मैं सूई चुभोती हूँ तो यह अपना बाजू पीछे नहीं कर रही ।" उसने सूई कुर्सी के बाजू पर चुभो कर दिखा दी ।

"उसमें जान नहीं है । मुझमें तो जान है ।"

"जान क्या होती है ?" प्रज्ञा ने प्रश्न कर दिया ।

नगीना मन में शब्द ढूंढने लगी । वह बताना चाहती थी कि कुर्सी का शरीर वैसा नहीं जैसा उसका है । परन्तु क्या अन्तर है और क्यों है, वह जानती नहीं थी । प्रज्ञा उसके कहने की प्रतीक्षा करने लगी । जब वह मौन बैठी रही तो प्रज्ञा ने कहा, "देखो, तुम कुर्सी से भिन्न प्रकार की शै हो । कुर्सी जबसे बनी है, इतनी ही बड़ी रहेगी, मगर तुम तो दिन-ब-दिन बढ़ रही हो । कुर्सी इसे महसूस नहीं करती । तभी सूई चुभोने पर इसने हाथ पीछे नहीं किया ।"

"भाभी ! यह फरक तो मैं समझ रही हूँ ।"

"और यदि तुम अपने चारों ओर देखोगी तो इस दुनिया में दो प्रकार के पदार्थ दिखाई देंगे । एक जानदार, जिनको अंग्रेजी में 'लिविंग बीइंग' अथवा प्राणी कहते हैं और दूसरे बेजान अथवा जड़ पदार्थ । ये अप्राणी कहाते हैं ।

"इस बाहर की दुनिया में हम दो प्रकार के ही पदार्थ देखते हैं । जीवधारी और बेजान ।"

"यह तो मैं समझती हूँ । मगर दोनों में क्या फर्क है ? मजहबी लोग कहते हैं कि कुछ में रूह है । मैं कहती हूँ, वह दिखाई तो देती नहीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अन्तर तो तुम समझती हो। मगर तुम इस फर्क की वजह नहीं बता सकतीं। मैं बताती हूँ। जो जानदार हैं, उनमें कुछ अधिक है जो बेजानदार चीजों में नहीं है। उसका नाम रखा गया है रूह। इसे हम अपनी भाषा में कहते हैं जीवात्मा।"

"वह कहाँ है ? दिखाई क्यों नहीं देता ?"

"यह तुम कल आना तो बताऊँगी। देखो बहन ! उस समय जो कुछ बताऊँ उस पर तुम चिन्तन किया करो। आज के लिए इतना काफी है।"

: ८ :

नगीना उठकर जाने लगी तो फिर बैठ गई। प्रज्ञा ने पूछा, "हाँ ! अब क्या है ?"

"भाभी ! एक बात आपको बताना चाहती हूँ।"

"क्या ?"

"मगर अम्मी से नहीं कहियेगा।"

"यह तो बहुत मुश्किल है। अगर वह मुझसे पूछेंगी तो सच-सच बता दूँगी।"

"मगर अपने आप नहीं कहना ?"

"हाँ, स्वयं नहीं कहूँगी। मगर तुम अम्मी से कुछ चोरी किसलिए रखना चाहती हो ?"

"इस वास्ते कि वह बात बहुत अच्छी है, मगर यहाँ अम्मी और बम्बई वाले सब लोग पसन्द नहीं करेंगे।"

"क्यों नहीं करेंगे ? जब बात अच्छी है तो वे क्यों पसन्द नहीं करेंगे ?"

"मुझे शक है कि वे पसन्द नहीं करेंगे। कम-से-कम अब्बाजान तो पसन्द नहीं करेंगे।"

प्रज्ञा को सन्देह होने लगा था कि कुछ अपने विवाह की बात करना चाहती है। उसने भी पहले दिन इसके विवाह की बात अपनी माँ से कही थी, जब वह नगीना को उमाशंकर के पास छोड़ माताजी से बात करने कमरे में गई थी।

प्रज्ञा ने कहा था, "माँ ! आप लोग इस नगीना को दादा की पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में कैसा पसन्द करेंगी ?"

महादेवी का कहना था, "देखने में तो सुन्दर है। इसकी बुद्धि भी प्रखर है। मगर यह एक मुसलमान की बेटी है। इस कारण एक हिन्दू के घर में खप नहीं सकेगी। क्या इसके अब्बा स्वीकार कर लेंगे ?"

"इसका विवाह दो वर्ष से पहले नहीं हो सकेगा, क्योंकि यह बालिग नहीं और इसके अब्बाजान एक हिन्दू से इसका विवाह मंजूर नहीं करेंगे।"

"मैं समझती हूँ कि उमा दो वर्ष तक प्रतीक्षा नहीं करेगा।"

"माँ ! यह तुम उस पर छोड़ दो। यदि वह प्रतीक्षा करना चाहेगा तो तुम क्या कहोगी ?"

"मैं कुछ नहीं कहूँगी। तुम्हारे पिताजी ही आपत्ति करेंगे।"

"अच्छा ! पिताजी से बात करना।"

"जब तुम्हारे विवाह का यहाँ पता चला था तो तुम्हारे पिताजी बहुत नाराज हुए थे। उन्होंने एक समय खाना छोड़ दिया था और जीवन से उचाट हो जीवन का धीरे-धीरे अन्त करना चाहते थे।

"यह तो मैंने बहुत यत्न से समझाया था कि मनुष्य अपने ही कर्मों का फल भोगता है। दूसरे, भले ही वह अपना लड़का हो अथवा लड़की, अपने कर्मफल के जिम्मेदार हैं।

"दो महीने लगे थे, उनको सामान्य जीवन पर लाने के लिए। इसलिए मुझे भय है कि वह इसे पसन्द नहीं करेंगे।"

बस, यहाँ तक ही बात हो सकी थी। इसी कारण प्रज्ञा इस विषय में कुछ और कहना नहीं चाहती थी। रात उसने अपने पति से भी कहा था, "मेरी नगीना के विषय में योजना सफल होती दिखाई नहीं देती।"

ज्ञानस्वरूप का कहना था, "कोशिश कर दो। काम नहीं बनेगा तो उसकी किस्मत है।"

अब जब नगीना कहने लगी कि कुछ बात है, जिसे वह अपनी अम्मियों तथा अब्बाजान से छुपाकर रखना चाहती है तो प्रज्ञा ध्यान देकर उसकी बात सुनने लगी। उसने इतना वचन दे दिया, "मैं अपने आप किसी से कुछ नहीं कहूँगी। हाँ, कोई किसी अन्य स्रोत से बात जानकर मुझसे पूछेगा तो सब बता दूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगीना ने कुछ विचार किया और फिर कह दिया, "भाभी! ठीक है। यह देखिए।" इतना कह उसने अपनी अंगिया के भीतर से एक चिट्ठी निकाल कर दिखा दी। यह उमाशंकर की लिखी चिट्ठी थी। चिट्ठी अंग्रेजी में लिखी थी। प्रज्ञा ने पढ़ी तो पूछ लिया, "यह कब मिली है?"

"भाभी! मिली नहीं, मैंने यह माँग कर ली है।"

'कैसे और कब?"

"कल जब आप हमें इकट्ठे छोड़कर अपनी माताजी से बात करने गई थीं, तब उनसे बात हुई थी। उन्होंने यह जबानी कहा तो मैंने कहा कि वह मुझे लिखकर 'प्रोप्रोज' करें। यह उन्होंने तुरन्त अपने कमरे में जा लिखी और लिफाफे में बन्द कर मुझे दे दी।

"यह रात मैंने पढ़ी थी और उसके जवाब में एक चिट्ठी लिखी है। उसमें मैंने तीन रुकावटों का जिक्र किया है। एक अब्बाजान, दूसरे मेरी अम्मी और तीसरे मेरा नाबालिग होना। इन रुकावटों को दूर करने का तरीका भी बताया है। वह यह कि वह दो साल तक मेरा इन्तज़ार करें।"

"और वह चिट्ठी भेज दी है?"

"नहीं, अभी नहीं। मैं अब कोठी से बाहर जाकर यहाँ डाकखाना ढूंढने वाली हूँ। वहाँ से स्टैम्प्स लगाकर आपके भाईसाहब को भेजना चाहती हूँ।"

"वह मुझे दे दो, मैं भेज दूंगी।"

"कैसे भेज देंगी?"

"मेरे पास डाक के टिकट हैं। वह चिट्ठी पर चिपकाकर रहमान को दे दूंगी। वह डाकखाने में डाल आयेगा। इससे तुम्हारी बात घर में कोई जान नहीं सकेगा। वह मेरी चिट्ठी पहले भी ले जाया करता है।"

नगीना इससे बहुत प्रसन्न थी। वह अपने कमरे में गई और अपना लिखा पत्र लिफाफे में बन्द कर ले आई।

प्रज्ञा मन में विचार कर रही थी कि जो वह चाहती थी, वह स्वयमेव हो रहा है। इस पर भी वह समझ रही थी कि दोनों परिवारों में यह बम्ब फटने के समान होगा।

परन्तु बात छुपी न रह सकी। उमाशंकर को पत्र गया और उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाब आदि । प्रायः घर की डाक प्रज्ञा के पास आती थी, परन्तु उस दिन घटनावश डाक सरवर के हाथ में चली गयी । वह एक लिफाफे पर नगीना का नाम पढ़ विचार करने लगी कि चिट्ठी बम्बई से उसकी माँ की होगी । इस कारण उसने नगीना की चिट्ठी पृथक् कर शेष तीन चिट्ठियाँ प्रज्ञा के पास भेज दीं ।

उस समय नगीना 'विचित्र वीणा' पर अभ्यास कर रही थी । वह वीणा की झंकार में लीन अपने कमरे में भूमि पर बैठी हुई थी कि सरवर आई और बोली, "लो, तुम्हारी अम्मी की चिट्ठी है ।"

नगीना को इस घर में रहते हुए एक सप्ताह हो चुका था और उसे अभी तक अपनी अम्मी को पत्र लिखने की इच्छा अनुभव नहीं हुई थी । इस कारण अपनी अम्मी के पत्र की बात सुन वह मन-ही-मन विस्मय अनुभव करती हुई हाथ बढ़ा पत्र लेने लगी । सरवर ने पत्र देते हुए कहा, "तनिक पढ़ो ! वहाँ की क्या खैर-खबर है ?"

नगीना ने चिट्ठी पर पता पढ़ते ही समझ लिया कि पत्र कहाँ से आया है । इस कारण उसने पत्र खोले बिना अपने सामने रख कह दिया, "अम्मी ! यह खत बम्बई से नहीं आया ।"

नगीना पत्र को अम्मी के सम्मुख खोलना और पढ़ना नहीं चाहती थी ।

"तो फिर कहाँ से आया है ?"

"यहीं दिल्ली से ।"

"यहाँ किससे चिट्ठी-पत्री करने लगी हो ?"

आज मध्याह्नोत्तर ही प्रज्ञा उसे बता रही थी कि परमात्मा के नियमों का पालन करना की परमात्मा ही परस्तिश (पूजा) है और उन नियमों में सच बोलना प्रथम नियम है ।

नगीना परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करने के अतिरिक्त भी सत्य बोलना ठीक समझती थी । इस पर भी पहले वह यह नियम पालन करने में कभी ढील भी कर देती थी और समझा करती थी कि सत्य बोलना, सत्य बोलने की ख्याति प्राप्त करने के लिए ही होता है । यहाँ पिछले आठ-दस दिन के प्रज्ञा के उपदेश से वह परमात्मा, जो सबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरात्मा की बात जानता है, [illegible] बुद्धि से [illegible] लगी थी ।

इस कारण माँ को यह कहते हुए उसकी जबान लड़खड़ा गई । उसने कहा, "अम्मी ! मेरे जान-पहचान का यहाँ एक है । उसको मैंने एक खत लिखा था । यह उसका जवाब है ।"

इतना कहते-कहते तीन बार उसको अटकते देख सरवर समझ गई कि वह कुछ छुपा रही है । वह अपने अनुभव से जानती थी कि नगीना बहुत ही चुस्त बात करने वाली है । तुरन्त उसके मुख से निकल गया, "तो अपनी अम्मी के सामने झूठ बोल रही हो ?"

इस पर नगीना झेंप गई और अब अधिक सरलता से बोली, "अम्मी ! झूठ नहीं बोल रही । इस पर भी कुछ छुपा रही हूँ । छुपाना तो झूठ नहीं होता ।"

"तो यह तुम्हारी भाभी ने तुम्हें सिखाया है कि दोनों में फर्क नहीं होता । दूसरों को गलत राह पर डालने के लिए कहना, छुपाना ही नहीं झूठ भी है ।"

सरवर ने सामने रखी चिट्ठी उठा ली और आगे कहा, "तुम्हारे गुरू से जाकर पूछती हूँ, यह छुपाना है या झूठ बोलना है ?"

इस पर तो नगीना घबरा उठी । उसने पत्र वापस लेने के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा, "अम्मी ! कभी हम बच्चों की कुछ बातें बड़ों से छुपाने की हो सकती हैं ।"

"मगर," सरवर ने मुस्कराते हुए और पत्र को नगीना के हाथ से दूर करते हुए कहा, "बेटी ! शादी के बाद खाविन्द की बात तो छुपाने की हो सकती है । हाँ, आजकल के जमाने में शादी से पहले भी कई बातें हो सकती हैं ।"

सरवर नगीना के सामने से उठी और कमरे से निकल गई । नगीना परेशानी में उसे जाते देखती रह गई ।

सरवर सीधी प्रज्ञा के कमरे में गई । प्रज्ञा एक पुस्तक पढ़ रही थी । उसने अपनी सास को आते देखा तो प्रश्नभरी दृष्टि में उसका मुख देखने लगी । सरवर मुस्कराते हुए बोली, "जरा इस चिट्ठी को पढ़ना ।"

प्रज्ञा ने चिट्ठी पर पता देखा तो पहचान गई कि उसके भाई की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। इस कारण उसने कहा, "ग्रम्मी ! यह तो नगीना के नाम है। ग्रापको किसने दी है ?"

"दी नहीं ! डाक से ग्राई है। मैं समझी थी कि बम्बई से ग्राई है और नगीना से वहाँ के हालात जानने के लिए उससे सुनने गई। मगर वह कहती है कि उसके किसी जान-पहिचान वाले की दिल्ली से ग्राई है। ऐसा कहते-कहते उसकी जबान लड़खड़ा रही थी ग्रौर गालों पर लाली ग्रा गई थी। इससे मुझे दाल में कुछ काला समझ ग्राया है।"

"पर ग्रम्मी ! किसी दूसरे की चिट्ठी बिना उसके कहे, पढ़ना मैं ठीक नहीं समझती।"

"मगर वह किसी को मुहब्बत की चिट्ठियाँ भी तो लिख सकती है। मुझे यही समझ ग्राया है। वह मेरी सरपरस्ती में है। इस वास्ते मैं ग्रपनी जिम्मेदारी समझती हूँ।"

"इन हालात में उसे मजबूर करना चाहिए कि वह स्वयं ही चिट्ठी खोलकर सुना दे।"

"यह कैसे किया जा सकता है ? ग्राजकल की जवान लड़कियाँ काबू से बाहर हो सकती हैं।"

"पर ग्रम्मी ! जबरदस्ती करने से तो बगावत भी कर सकती हैं। उनसे मुहब्बत से इसरार किया जा सकता है।"

नगीना सरवर को पत्र लेकर वहाँ ग्राते देख पीछे-पीछे चली ग्राई थी। कमरे के द्वार के बाहर ग्रोट में खड़ी वह सुन रही थी कि क्या बातें हो रही हैं। वह प्रज्ञा की युक्ति को सुन सुख ग्रनुभव कर रही थी।

प्रज्ञा ने उसे कहा था कि वह झूठ नहीं बोलेगी। हाँ, ग्रपने ग्राप उसके रहस्य की डुग्गी नहीं पीटेगी।

इस कारण वह समझ रही थी कि बात खुलने ही वाली है। इस समय उसे सरवर यह कहती सुनाई दी, "तो तुम ही उससे मुहब्बत से इसरार कर जानने की कोशिश करो। वह तुम्हारी शागिर्द तो है।"

पूर्व इसके कि प्रज्ञा कहे कि वह जानती है, पत्र कहाँ से ग्राया है, नगीना द्वार का पर्दा एक ग्रोर हटाकर भीतर ग्रा गई ग्रौर बोली, "ग्रम्मी ! लाइये, मैं पढ़कर सुना देती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम इसरार मान गई हो ?"

नगीना मुस्कराई। उसने सरवर के कहने का उत्तर नहीं दिया और पत्र लेकर खोल डाला और फिर सरवर के समीप बैठ पत्र पढ़ने लगी।

पत्र उर्दू में था। लिखा था—"प्यारी नगीना ! उस दिन तुम्हारे यहाँ से चले जाने के बाद माताजी ने पिताजी के सामने तुम्हारे साथ मेरी शादी की बात की तो पिताजी ने फौरन कह दिया, पहले ही इस खान-दान से हमारे सम्बन्ध बहुत गहरे हो चुके हैं। अब और गहरे नहीं होने दूंगा।

"बिना इस बात को बताए कि मैंने तुम्हें अपने पत्र में तजवीज़ किया है, मैंने पिताजी से कहा, 'मैं समझता हूँ कि रंग इतना गहरा हो चुका है कि इससे और गहरा नहीं हो सकता, भले ही उस घर की सब लड़कियों से मेरा विवाह हो जाये।'

'यह कैसे कर सकोगे ?' पिताजी का प्रश्न था।

'शादी करने पर भी अभी एक से और करने की गुंजायिश होगी।' कहते-कहते मेरी हंसी निकल गई।

"इन मुसलमानों से मैं किसी किस्म का ताल्लुक नहीं रखना चाहता।'

"मेरा कहना था, 'इस पर भी वे खुदापरस्त तो हैं !'

"पिताजी ने कहा, 'उनकी खुदापरस्ती तो और भी बुरी ह। वे गाय का दूध पीते हैं और उसका मांस भी खाते हैं। इसी तरह लड़का अपने चाचा की लड़की यानी बहन से शादी कर सकता है। यहाँ तक कि अगर एक माँ के दो खाविन्दों से भाई-बहन हों तो उनमें भी शादी हो सकती है।'

"मैंने कहा, 'यह नास्तिकता का लक्षण नहीं है। न ही यह आस्तिकता का लक्षण है कि एक लम्बे पत्थर को शिव मान उस पर जल चढ़ाया जाये।'

"मेरी इस तुलना पर पिताजी के माथे पर त्यौरी चढ़ गई। माताजी समझ गयीं कि झगड़ा होने वाला है। इस कारण उन्होंने कह दिया, 'तुम दोनों दाढ़ी-मूंछ वाले सज्ञान पुरुष, किसी विषय पर बात भी नहीं कर सकते। तुम्हारे पढ़े-लिखे पर मुझे आश्चर्य होता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"पिताजी ने अभी भी गुस्से में कहा, 'कर तो रहे हैं। तुम करने भी दो।

'देखो उमा ! मैं तुम्हारा विवाह उस लड़की से पसन्द नहीं करता !'

'पिताजी !' मैंने अब शान्ति से कहा, 'वह बहुत सुन्दर है।'

"उनका सवाल था, 'तो तुमने उसे मंज़ूर कर लिया है ?'

"मैंने कहा, 'मेरे कहने का अर्थ यह नहीं कि सब सुन्दर लड़कियों से विवाह ही किया जाता है। हाँ, सुन्दर लड़कियों में से ही पत्नी को चुनूंगा। इसी कारण उसकी बाबत भी विचार हो सकता है।'

'मगर वह मुसलमान है ?'

'इसका विवाह के साथ क्या सम्बन्ध है ? मैं यदि अमेरिका से कोई विवाह कर ले आता तो फिर उसके ईसाई होने से शादी नाजायज हो जाती क्या ?'

"इस पर माताजी ने हंसते हुए कहा, 'वह अक्लमंद भी बहुत है।'

'खाक अक्लमंद है !' पिताजी ने कहा, 'अब इस विषय पर बात बन्द करो।'

"मैंने बात बदल दी और अपने प्रोफेशन की बात कर दी। मैंने कहा, 'आपके पड़ोसी चिकित्सा-सम्बन्धी राय करने आए थे। मैंने उन्हें नुस्खा लिख दिया है। वह दस रुपये फीस दे गए हैं। मैंने कहा भी था, रहने दें। परन्तु उन्होंने रुपये मेज पर रखे और चल दिए।'

"सो, नगीना ! मेरे कारोबार की बातें होने लगीं और उसके उपरान्त अभी तक न तो तुम्हारी, न ही किसी अन्य लड़की के विषय में बात हुई है।

"अब तुम्हारी चिट्ठी आई है और मेरा उत्तर यह है कि मैं तुम्हारे वयस्क होने तक इन्तज़ार करूँगा।"

जब नगीना चिट्ठी पढ़ चुकी तो सरवर ने पूछा, "यह तो तुमने बताया ही नहीं कि यह खत है किसका ?"

"अम्मी ! जो आपका दामाद बनने की उम्मीद कर रहा है। पहले यह बताइए कि आप अपनी बेटी की इल्तजाह मानेंगी या नहीं ? तब उनका नाम बताऊँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या बहू ! तुम समझ गई हो ?"

"हाँ ! मैं तो लिफाफे पर लिखा खत भी पहिचान गई हूँ ।"

"कौन है ?"

"क्यों नगीना बहन ! बता दूं ?"

"भाभी ! अब चोरी रखने में कुछ भी वजह नहीं रही । मगर मैं उनका नाम नहीं लूँगी ।"

"क्यों ?" सरवर ने ही पूछा ।

"मैंने उन्हें खाविन्द के तौर पर मान लिया है और उनकी जाति-बिरादरी में औरतें अपने खाविन्दों का नाम नहीं लेतीं ।"

प्रज्ञा ने कहा, "नगीना ! अब तो यह रोक हम पर से उठ रही है। इस पर भी माँ जी, बताती हूँ । हमारी इस कालोनी में एक पंडित रविशंकर शुक्ल रहते हैं । उनके बड़े लड़के से यह रिश्ता करना चाहती है ।"

"मतलब यह है कि तुम्हारे भाई से ?"

"हाँ !"

"और तुम क्या चाहती हो ?"

"मैं निष्पक्ष हूँ । मेरा मतलब है कि न हक में हूँ, न खिलाफ हूं । मैं समझती हूँ कि ये इन दोनों के फैसला करने की बात है । मैंने अपनी शादी के वक्त किसी से राय नहीं की थी और मैं समझती हूँ कि ये भी खुद ही फैसला करें ।"

"मगर अम्मी !" नगीना ने कह दिया, "अभी तो दो साल तक शादी होगी नहीं । तब तक फिक्र करने की जरूरत नहीं ।"

रात मुहम्मद यासीन से सरवर ने उसकी बीवी से अलहदा में बात की । खाने के उपरान्त प्रज्ञा और नगीना बातें कर रही थीं । मुहम्मद ड्राइंगरूम में बैठा कॉफी का प्याला ले रहा था । सरवर उसके पास आ बैठी और बोली, "आज तुम्हारी बीवी के बड़े भाई की एक चिट्ठी नगीना के नाम से आयी है । वह उससे शादी करना चाहता है । ऐसा मालूम होता है कि कम से कम एक दौर चिट्ठियों का पहले चल चुका है । उसने अपनी चिट्ठी में लिखा है कि उसकी चिट्ठी के जवाब में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह खत है ।"

"तो यह चिट्ठी उसने तुम्हें दिखाई है ?"

"नहीं ! इत्तफाकिया डाकिया मेरे हाथ में डाक दे गया था । उसमें नगीना के नाम की चिट्ठी भी थी । मैं समझी थी कि बम्बई से आयी है ।

"नगीना ने पढ़कर सुनाने में हिचकिचाहट ज़ाहिर की तो मैं तुम्हारी बीवी के पास पहुँच गयी । वह बताने ही वाली थी कि नगीना आयी और उसने चिट्ठी पढ़कर सुना दी । वह जानती थी कि उसकी भाभी इस चिट्ठी लिखने वाले को जानती है और वह झूठ कभी नहीं बोलेगी ।

"उसने लिखा है कि वह नगीना के बालिग होने तक उसका इन्तज़ार करेगा ।"

"और अम्मी ! आप क्या चाहती हैं ?"

"मेरे चाहने की बात नहीं । यह उसके माता-पिता के चाहने की बात है । मैं यह बात चोरी-चोरी अपने साये में नहीं होने देना चाहती ।"

"तो ऐसा करो, अम्मी ! तुम यहाँ के हालात बम्बई लिख दो ।"

"मैं चाहती थी कि तुम लिखो ।"

"मैं नहीं लिखूंगा । जब तक दोनों में से कोई लिखने को नहीं कहता, तब तक मैं नहीं लिखूंगा ।"

"और यदि लड़की ने वैसे ही शादी कर ली जैसे तुमने की है तो ?"

"उसे बालिग होने तक नहीं करनी चाहिये । मैं प्रज्ञा को कहूँगा कि वह इस पर नजर रखे । यही तो हम कर सकते हैं । यह नजर रखने की बात भी तो दो साल तक है । पीछे तो वह आज़ाद है ।"

"मगर यह शरअ नहीं है । शरअ की रूह से तो एक औरत सारी उम्र किसी न किसी मर्द के मातहत रहती है ।"

"मगर इस मुल्क के कानून ने शरअ के दायरे को महदूद कर रखा है । अतः शरअ की यह बात यहाँ नहीं मानी जाती । अगर कोई खाविन्द अपनी बीवी को पीटे तो वह खाविन्द से पृथक् रहने और अपने लिये गुजारे का दावा कर सकती है । शादी टूट नहीं सकती, और वह बीवी को वस्ल के लिये मजबूर नहीं कर सकता ।"

"मगर···।" वह कहती-कहती रुक गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर क्या ?"

"अब नहीं बताऊँगी। मैं समझती थी कि बीवी को पीटना खाविन्द के हकहकूक में है।"

सरवर ने आगे कहा, "देखो यासीन ! इस लड़की की शादी तुम्हारे अब्बाजान यहाँ मंजूर नहीं करेंगे।"

"पर अम्मी ! उनका मना करने का हक महदूद है। वह लड़की अथवा लड़के के नाबालिग रहने तक ही है। इसीलिये तो अब्बाजान मेरी शादी पर एतराज नहीं कर सके। छः महीने तक उन्होंने मेरी चिट्ठियों का जवाब नहीं दिया। अब एक खास वजह पैदा हो गई है जिससे वे सब यहाँ आए थे। वे यहाँ रहे हैं और मुझे इस बात का हुक्म दे गये हैं।"

"क्या हुक्म दे गये हैं ?"

"यही कि मुझे नगीना से शादी करनी है और इसके लिये मुझे प्रज्ञा को पीट-पीटकर घर से निकाल देना है। जब वह तलाक के लिये कहे तो मैं मान जाऊँ।

"अम्मी ! मैंने कहा था कि बिना वजह के मैं पीट नहीं सकता। वह बोले कि वजह तो है। उसे घर से निकालना है और यह काफी वजह है।"

"और तुम्हारे वालिद अपने को खुदा से ऊपर मानते हैं ?'

"मैंने उन्हें खुदापरस्त कभी भी तसव्वर नहीं किया।"

"और तुम खुदा को मानते हो ?"

"यकीनन मानता हूँ। अम्मी ! जो नक्शा खुदा का प्रज्ञा ने मेरे दिमाग में बैठाया है, वह उस खुदा से मुख्तलिफ है जो मेरे दिमाग में था।"

"क्या नक्शा बना है अब ?"

"वह यह कि खुदा यहाँ और सब जगह पर हाज़िर-नाजिर है और सबके मन के भीतर मौजूद है। वह उन सब में है जो दिखाई देते हैं और उनमें भी है जो दिखाई नहीं देते। मैं उससे चोरी कुछ भी काम नहीं कर सकता। प्रज्ञा ने कुछ भी कसूर नहीं किया। इसलिए उसे पीटूंगा नहीं और वह मुझे छोड़कर क्यों जायेगी ? मैं उससे मुहब्बत करता हूँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिन-ब-दिन मैं अपने अब्बाजान के मजहब से दूर और दूर हो रहा हूँ।"

"मतलब यह कि तुम इस्लाम को छोड़ रहे हो ?"

"नहीं अम्मी ! मैं मुसलमान हूँ। मगर मैं अब्बाजान वाले मज़हब को नहीं मानता।"

"तो वह मुसलमान नहीं हैं ?"

"खुदा जाने, वह क्या हैं ? मैं अपने को मुसलमान मानता हूँ, मगर मेरा खुदा मुझे किसी बेकसूर को पीटने को नहीं कहता।"

सरवर उठ पड़ी। उसे इस प्रकार एकाएक उठते देख यासीन ने मां के मुख पर देखा तो उसे समझ आया कि उसकी आँखें भीग रही हैं और माँ उनको छुपाने के लिए भागी जा रही है।

वह कुछ कहना चाहता था मगर वह कमरे से निकल गई थी।

प्रज्ञा भी पृथक् कमरे नगीना से बातचीत कर रही थी।

: ९ :

रात का खाना खाते हुए नगीना ने कहा, "भाभी ! आपके भाई साहब ने चिट्ठी में ऐसे इल्फाज लिखे हैं, जिनका मैं ठीक-ठीक मतलब नहीं समझ सकी।"

"तो," प्रज्ञा ने कह दिया, "खाने के बाद मेरे कमरे में आना और मैं तुम्हें समझा दूंगी। मगर इसका मतलब यह नहीं कि मैं तुम्हें किसी अमल की राय दे रही हूँ।"

उस समय तो नगीना चुप रही, मगर खाने से उठते ही वह भाभी के साथ उसके कमरे में चली गई। प्रज्ञा का पति समझ रहा था कि कुछ अपने भाई के विषय में कहने के लिए वह नगीना को अपने कमरे में ले गई है। इसलिए वह उन दोनों की, बातचीत से अवकाश पाने की प्रतीक्षा करने लगा। इस समय उसकी माँ उसके पास आकर नगीना के विषय में बात करने लगी थी।

प्रज्ञा को पीटने की बात जब चली तो अम्मी रोनी सूरत बना वहाँ से भागी थी। यासीन विचार कर रहा था कि अब तक प्रज्ञा और नगीना को आ जाना चाहिए था। मगर वे नहीं आ रही थीं। उनको अपनी वार्त्तालाप समाप्त करने में एक घंटा लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब वे दोनों कमरे में से निकल ड्राइंगरूम में आईं तो उसे नगीना ज्यादा प्रसन्न प्रतीत हुई और प्रज्ञा कुछ चिन्तित दिखाई दी।

उसने दोनों को देख कहा, "ऐसा मालूम होता है कि तुम नगीना को मिठाई खिलाती रही हो।"

"हाँ, मगर सिर्फ दिमागी मिठाई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इसको मिठाई अनुकूल बैठ रही है।"

इस पर नगीना ने कहा, "भाईजान! मैं बताऊँ, क्या मिठाई खिलाई है भाभी ने?"

"हाँ, चाहो तो बता सकती हो।"

"इन्होंने मेरा नया नाम रख दिया है और कहा है कि उस नाम से मैं अब अपने को बुलाये जाने की आदत डालूँ।"

"ओह! क्या नाम है तुम्हारा अब?"

"भाभी ने मेरा नाम रखा है, कमला। यह कहती हैं कि नगीना से कमला ज्यादा खूबसूरत नाम है।"

"तो तुम्हें यह मंजूर है?"

"भाभी कहती हैं कि आपका भी नया नाम रखा गया है?"

"हाँ, मगर वह नाम अभी घर और बाहर में मशहूर नहीं हुआ। यह इसलिए कि मुझे उस नाम से कोई बुलाता ही नहीं। सब मुझे मेरे पुराने नाम से बुलाते हैं।"

"अब मैं आपको उस नाम से बुलाया करूँगी।"

"कैसे बुलाया करोगी?"

"ज्ञान भैया कहा करूँगी।"

"और मैं तुम्हें कमला बहन कहा करूँगा।"

तीनों हँसने लगे। नगीना ने ही कहा, "मैं अब कमला नाम से मशहूर होना चाहूँगी।"

"खुदा हाफिज़।"

"भाभी! इसके लिए आपकी ज़बान में क्या इल्फाज़ हैं?"

"परमात्मा भला करे।"

"यह कहना तो आसान है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ !"

"ज्ञान भैया !" कमला ने कहा, "मैं अब सोने ज़ा रही हूँ। नहीं तो सुबह नींद नहीं खुलेगी।"

वह गई तो ज्ञानस्वरूप ने पूछा, "इतनी देर तक क्या करती रही हो ?"

"आज दादा का इसके नाम पत्र आया है। उसमें उसने अपनी ज़बान के शब्द ही लिखे थे और उन सबका अर्थ इसे समझाती रही हूँ। मैंने इसे बताया कि कुछ ऐसा करना चाहिए कि जिससे माता-पिता का विरोध कम हो जाए। उसके लिए मैंने उसे कहा कि वह अपना नाम बदल दे। जब उसने मंज़ूर किया तो मैंने इसका नाम कमला रख दिया है।

"मैं समझती हूँ कि नाम बदलने से पिताजी का विरोध नरम पड़ जाएगा।"

"मुझे अम्मी ने इसकी चिट्ठी के विषय में बताया है, मगर मैंने उसे कहा है कि मैं असली मुसलमान हूँ और मेरे वालिद शरीफ तो धोखा हैं। वे इसलाम खुदा मजहब का अर्थ ही नहीं समझते।

"मैंने उनको बताया कि अब्बाजान ने मुझे तुम्हारे साथ क्या सलूक करने के लिए कहा है। यह सुन उनकी आँखें भीग गईं और वह उठकर अपने कमरे में भाग गईं। मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि अम्मी ने अपने कमरे का द्वार भीतर से बन्द कर लिया है।"

"यह तो चिन्ता की बात है। वह जिन्दगी से निराश हो गई प्रतीत होती हैं।"

"मेरा ख्याल है कि ऐसा नहीं है। उनको कुछ अपने पिछले जीवन की बात स्मरण आ गई है। इसी कारण वह दुःख अनुभव करती हुई कमरे में चली गई हैं और मैं समझता हूँ, वह अवश्य रो रही होंगी।"

"अब यह लड़की कह रही है कि अपना नाम यह अम्मी को बताएगी और पीछे मेरे दादा को लिखेगी।"

"मैं समझती हूँ, इससे घर में विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।"

"मैं कभी-कभी विचार करता हूँ कि तुम ज़बान और नाम बदलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर क्यों इतना ज़ोर देती हो ?

"इसका प्रभाव समय पाकर होगा। तब वह प्रभाव आपकी संतान पर भी चलेगा। यह सिर्फ इसलिए कि मैं अपने परिवार का संबंध उनसे जोड़ना चाहती हूँ जो आदि सृष्टि में थे। उस वक्त हिन्दू-मुसलमान वगैरह कोई नहीं थे। मनुष्य थे और ऋषि थे। ऋषि का मतलब है विद्वान् लोग। सामान्यजन को उस वक्त जो भाषा मिली थी, उसकी ओर यह मेरा पहला पग है। मैंने नाम उस भाषा में रख दिए हैं।"

"मगर यह नाम तो हिन्दुओं का ही है।"

"कोई हिन्दू का लड़का अपना नाम डिप्टी अथवा इक़बाल चन्द रख ले तो अंग्रेज या ईरानी नहीं हो जाता।

"हाँ, प्रातः प्रार्थना के बाद जो मैं व्याख्या करती हूँ, वह आपको सच्चा इनसान बना देगी। नाम तो केवल निशान है उस परिवर्तन का जो मैं लाना चाहती हूँ। इसी कारण मैंने धर्म की व्याख्या पहले शुरू की थी और नाम तो अभी कुछ दिन हुए ही बदले हैं।

"इसी तरह इस लड़की को उपदेश करते हुए आज दस दिन हो गये हैं और नाम आज उसके ख्यालों में परिवर्तन होता देख दिया है।"

"मैं तो अपने में कोई तबदीली नहीं देखता।"

"मुझे तो दिखाई दी है। यदि न हुई होती तो आप मुझे पीट-पीटकर घर से निकालने के लिए तैयार हो जाते।"

"मगर यह मनोभाव तो उस दिन से बने हैं जिस दिन से मैं तुमसे मुहब्बत करने लगा हूँ। मेरा मतलब है जिस वक्त हम पहली बार मिले थे।"

"यह तो मैं भी अनुभव करती हूँ। मगर यह पुरुष-स्त्री में कशिश भी एक तरह की प्रेरणा है। जैसे लोहे की चुम्बक के साथ होती है। इस कशिश से दोनों में से एक और कभी-कभी दोनों अपने स्थान से खिसककर एक-दूसरे की ओर खिच जाते हैं।

"कौन कितना खिसकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन दूसरे से कितना भारी अथवा हलका है। अगर चुम्बक भारी है तो लोहा खिच जाता है और अगर लोहा भारी हो तो चुम्बक खिचता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि मैं आपसे अधिक भारी हूँ। इसलिए मेरी ओर आप ज्यादा खिंच रहे हैं।"

"तो तुम भी अपने स्थान से खिंच रही हो!"

"जी, मैं यह अनुभव कर रही हूँ। आपसे बातचीत करने के पहले मैं जो थी, उसमें फर्क पड़ रहा है।"

"क्या फरक पड़ा है तुममें?"

"देखिए, यह फरक मुझे खुद दिखाई नहीं दिया मगर मेरी माताजी ने देख लिया था।

"उन्होंने मुझे कहा था, 'तुम वह प्रज्ञा नहीं रहीं जो शादी से पहले थीं। तुम्हारी दिमागी हालत बदल गई है। तुम मांस खाने लगी हो। तुम हिन्दू-मुसलमान में भेदभाव भूल रही हो। तुम्हें अब हिन्दुओं के आचार-विचार की ओर रुचि नहीं रही।'

"मैं उस वक्त तो चुप रही थी। मगर पीछे विचार करने पर मैं समझ रही हूँ कि फर्क तो आ रहा है। हिन्दुओं में कुछ अमानवता आई है। वह मैं छोड़ती अनुभव कर रही हूँ।

"मेरे लिए हिन्दू की औलाद और मुसलमान की औलाद में फरक नहीं रहा। एक ब्राह्मण और एक मुसलमान की सन्तान में फर्क नहीं रहा। दोनों एक ही जमायत के घटक समझ आने लगे हैं।

"माँ ने यह बात समझी थी क्योंकि मैंने आपके अब्बाजान की लड़की को अपने पिता के लड़के से शादी के लिए कहा था। मुझे दोनों के मजहब में फर्क दिखाई नहीं दिया था। मुझे दोनों में मानवता दिखाई दी थी।

"पिताजी को नगीना एक मुसलमान की लड़की समझ आई है। मुझे वह एक इंसान की लड़की समझ आई थी।

"यह ऐसा ही है, जैसे आप दुकान पर जाने वाला सूट पहन हों अथवा रात सोने की पोशाक पहने हों। तब भी मुझे आप एक से ही दिखाई देते हैं। पोशाक से आप में फरक दिखाई नहीं देता।

"इसलिए जब मैंने नगीना के मन, बुद्धि और शरीर का विचार किया तो भाई के लिए उसकी लालसा करने लगी थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात इतनी युक्तियुक्त थी कि इसका उत्तर ज्ञानस्वरूप को समझ नहीं आया। वह इस युक्ति को ठीक समझ चुपकर गया और बोला, "अब सोना नहीं चाहिए क्या ?"

"ओह !" प्रज्ञा के मुख से विस्मय में निकल गया। उसने कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा और उठ खड़ी हुई।

अगले दिन अल्पाहार के समय सरवर खाने की मेज पर प्रज्ञा और ज्ञानस्वरूप की प्रतीक्षा कर रही थी। नगीना उसके पास ही बैठी हुई थी।

जब पति-पत्नी आए तो उनके आते ही सरवर ने कहा, "यह लड़की क्या कह रही है ?"

प्रज्ञा समझ गई कि नगीना ने नाम की बात अम्मी को बता दी है और वह डाँट बताने वाली है। इस कारण उसने नज़र उठा माँ की ओर देखा। माँ मुस्कराती हुई दिखाई दी। इससे कुछ आश्वस्त हो उसने पूछा, "अम्मीजान ! क्या कहती है यह ?"

"यह कहती है कि तुमने इसका नाम कमला रख दिया है।"

"तो आपको यह नाम पसन्द नहीं है ?"

"मेरी बात नहीं। मैं तो इसकी अम्मी और इसके वालिद की बात कह रही हूँ।"

"तो वह इसे जिस नाम से चाहें, बुलाएँ। मैंने उनको मना नहीं किया। मैं कर सकती भी नहीं।"

"मगर यह तो मुझे कह रही है कि मैं इसे कमला नाम से बुलाया करूँ।"

"क्यों कमला ! तुमने अम्मी को क्या कहा है ?"

"भाभी ! मैंने तो यह कहा है कि रात आपने मेरा नाम कमला रख दिया है और अम्मी भी अगर इसी नाम से बुलाएँ तो मुझे अच्छा मालूम होगा।"

"अम्मीजान ! अगर आपको या अब्बाजान को यह नाम अच्छा मालूम नहीं होता तो वह इसे इस नाम से नहीं भी बुला सकते। यह तो मैंने अपनी सहूलियत के लिए रखा है। जैसे मेरे माता-पिता ने बचपन के समय मेरा नाम लटूनी रखा हुआ था, अब वह प्रज्ञा कहते हैं। मुझे लटूनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के नाम पर आपत्ति तो नहीं, मगर प्रज्ञा नाम से खुशी होती है।"

"और जानती हो, अब्बाजान ने तुम्हारा क्या नाम रखा है ?"

"जी ! मालूम है। आपके सुपुत्र ने बताया है। आप मुझे उस नाम से बुला सकती हैं। मगर मुझे प्रज्ञा अधिक पसन्द है।"

"तो मैं तुम्हें उस नाम से ही बुलाती हूँ जो तुम्हें ज्यादा पसन्द है ?"

"तो अम्मी !" प्रज्ञा अपने स्थान से उठकर सरवर के चरणस्पर्श कर बोली, "मैं आपका धन्यवाद करती हूँ।"

"मैं तो यह पूछ रही हूँ कि मेरा नाम कब बदलोगी ?"

"यह जब आप इस नाम को नापसन्द करेंगी और किसी नए नाम की इच्छा करेंगी। नगीना ने यही किया था। मैंने इसका नाम कमला रख दिया है।"

"मुझे क्या नाम दोगी ?"

प्रज्ञा ने आँखें मूंद कुछ विचार किया और कह दिया, "आप अगर पसन्द करें तो मैं सरस्वती नाम ज्यादा पसन्द करूँगी।"

"मगर यह तो एक दरिया का नाम है ?"

"नहीं ! सरस्वती श्रेष्ठ, सुन्दर, सुलभवाणी, मेरा मतलब है बोली को कहते हैं। नदी का नाम सरस्वती तो पीछे पड़ा है, जब इस बोली को बोलने वाले वहाँ उस दरिया के किनारे जाकर बस गए थे।"

"कौन-सी बोली है ?"

"जब आप इस ओर चलने लगी हैं तो आप उसे भी सीखने तथा समझने लगेंगी।"

"बहुत खूब ! तुम हो प्रज्ञा, यह तो मुझे याद हो गया है और यासीन का क्या नाम रखा है ?"

"ज्ञानस्वरूप !"

"हाँ, ज्ञानस्वरूप और यह लड़की है कमला और मैं हूँ...सरस्वती। देखो ! मैं अपनी किताब पर लिख लूंगी जिससे भूल न जाऊँ।"

"हाँ; आपको तो लिखकर ही स्मरण करना पड़ेगा। हम तो आपको अम्मी कहकर बुलाते हैं। हम उसी प्रकार बुलाएँगे। मगर आपको दिमाग में यह नया नाम याद करने के लिए लिख लेना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पाहार के बाद कमला ने उमाशंकर को पत्र लिखा। उसमें नई सूचना दे दी कि उसने अपना नाम बदल लिया है। उसने लिखा, "अब मैं कमलिनी यानी कमला हूँ। यह भाभी की मेहरबानी का नतीजा है।"

पत्र लिखकर कमला प्रज्ञा के पास आई और चिट्ठी उसके सामने रख बोली, "इसे डाक में डलवा दीजिए।"

"तो लिफाफे में बन्द कर उस पर पता लिखकर लाओ।"

"आप पढ़ेंगी नहीं?"

"मैं इसकी जरूरत नहीं समझती। अब तुम शाही सड़क पर चल पड़ी हो। इसलिए चलना, न चलना तुम्हारा काम है।"

कमला भी यही चाहती थी। इस कारण उसने पत्र उठाया और अपने कमरे में चली गई तथा लिफाफे में बन्द कर ले आई। उस पर अब उमाशंकर का नाम लिखा था।

प्रज्ञा ने अपने ब्रीफकेस में से टिकट निकाले और लिफाफे पर चिपकाकर एक तरफ रख लिया और कहा, "नौकर को भेज डलवा दूंगी।"

प्रज्ञा देख रही थी कि उसकी योजना सफल हो रही है। वह समझ रही थी कि पशुओं के परिवार में मानवता के विकास में वह सफल हो रही है। मानवता का उसका अपना एक मापदण्ड था। यह उसने अपने पति को अपने विवाह के दो मास बाद बताया था।

तब वह इतना ही समझ पाई थी कि उसका पति बुद्धिशील व्यक्ति है। वह यह जान गई थी कि वह प्रत्येक काम करने से पहले एक क्षण तक आँखें मूंद विचार करता था और फिर काम कर देता था।

परन्तु बम्बई में विवाह की सूचना भेजने पर आई डाँट-डपट का भी उसे ज्ञान था। वह समझी थी कि इस परिवार में यदि उसने अपना जीवन सुखमय बनाना है तो उसे इनके स्तर को ऊँचा करना होगा। इसी विषय में वह यत्न करने लगी थी। उसने एक योजना बनाई और इस योजना के अनुसार उसने सर्वप्रथम अपने पति को ऊपर उठाने का यत्न किया।

एक दिन प्रातःकाल उसने पति से कहा, "मैं समझती हूँ कि आप खुशहाल हैं, खाते-पीते हैं, सुख भोग करते हैं, परन्तु भोगों को देने वाले का कभी शुक्रिया अदा नहीं करते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रोज करता हूँ।" पति अभी पलंग पर लेटा हुआ था। इस समय तक प्रज्ञा उठ स्नानादि कर संध्योपासना कर चुकी थी। उसने पूछ लिया, "किस समय करते हैं? कभी शुक्रिया अदा करते देखा नहीं।"

"जब भी दुकान पर कोई ग्राहक आता है और कुछ खरीदता है तो मैं उसे रसीद देता हूँ। हमारी प्रत्येक रसीद के नीचे 'थैंक्यू' छपा रहता है। हमारे अन्नदाता वे ही तो हैं।"

"परन्तु वे तो केवल 'मिडल-मैन' हैं। उनको भी तो कोई देता है, तभी वे आपको दे जाते हैं।"

"कौन देता है उनको?"

"जो इस जमीन-भर के सब मनुष्यों को देता है। देखिये, असली धन है जमीन, हवा, पानी वगैरह सब पदार्थ। मेरा मतलब है यह जमीन, पानी, खनिज पदार्थ, सूर्य की किरणें, बादल, मेघ इत्यादि। इनसे ही सब धन-दौलत पैदा होती है और ये कोई इनसान नहीं देता। किसी इनसान में वह ताकत नहीं कि इनको बना सके। जो हमें यह सब देता है, हमें उसका शुक्र-गुज़ार होना चाहिए।"

"मैं समझ रहा था कि तुम रुपये-पैसों की बात कर रही हो।"

"मगर हज़रत! रुपया-पैसा तो एक 'टोकन' है जो इन वस्तुओं के एवज़ में हम बदलते रहते हैं। वास्तव में ये उन वस्तुओं को ही ज़ाहिर करते हैं जो हम नित्य इस्तेमाल करते हैं और जिन्हें परमात्मा देता है। कोई इनसान उनको बना नहीं सकता।"

"तो यह किसान जो अनाज पैदा करते हैं?"

"कहाँ से पैदा करते हैं?"

"करते तो जमीन से हैं, मगर मेहनत तो वे करते ही हैं।"

"और मेहनत करने की ताकत कहाँ से आती है? अन्न से। और इन सबका मूल कारण परमात्मा जिसे आप खुदा कहते हैं, वह ही है।"

मुहम्मद यासीन मुख देखता रह गया। कुछ सोचकर बोला, "हाँ! बचपन में वालिद शरीफ ने नमाज सिखाई थी। वह अदा किया करता था। अब ठीक-ठीक याद नहीं रही।"

"वह किस किताब में लिखी रहती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"है तो कुरान-शरीफ में। मगर मैं अरबी नहीं पढ़ा। पहले तो तोते की भाँति याद कर रखी थी।"

"मगर उसे अपनी ज़बान में क्यों नहीं पढ़ते ? अरबी में पढ़ने की क्या जरूरत है ?"

यासीन मुस्कराया और कहने लगा, "अब्बाजान कहते थे कि खुदा दूसरी कोई ज़बान नहीं जानता।"

प्रज्ञा मुस्कराई और बोली, "आपके अब्बाजान का खुदा बहुत ही ला-इल्म है ?"

"परन्तु तुम रोज उठकर किस ज़बान में पूजा किया करती हो ?"

"संस्कृत भाषा में करती हूँ, मगर मैं तो उसके एक-एक शब्द के अर्थ समझती हूँ।"

"तो फिर ?" मुहम्मद यासीन ने पूछ लिया।

"मेरी राय है कि कल से सवेरे-सवेरे उठा करिए और गुसल कर मेरे साथ बैठकर खुदा को याद किया करिए।"

"कैसे किया करूँ ? मुझे बता दो।"

"अब तो आठ बज रहे हैं और आपको नौ बजे दुकान पर पहुंचना है। अगर कल मेरे साथ चार बजे उठे तो मैं आपको बता दूंगी।"

"ठीक है। मैं आज एक अलार्म वाला 'टाईम पीस' ले आऊँगा और तुम्हारे साथ ही उठने की कोशिश करूँगा।"

अगले दिन जब अलार्म बजने लगा तो यासीन विवश आँखें मलता हुआ उठा और फिर स्नानादि से अवकाश पा प्रज्ञा के साथ पूजागृह में चला गया। इस प्रकार अब वहाँ एक के स्थान दो प्राणी पूजा में जुष्ट होने लगे।

प्रज्ञा ने पति को एक सरल और छोटा-सा मन्त्र लिखाया। मुहम्मद यासीन ने लिखा—

'ओं भूः, ओं भुवः, ओं स्वः, ओं महः, ओं जनः, ओं तपः, ओं सत्यम्॥'

इसके नीचे प्रज्ञा ने इसके अर्थ लिखा दिए—"खुदा ज़माना-ए-मा जी है। खुदा जमानाए हाल है और खुदा मुस्तकबिल है। वह बहुत बड़ा है। वह सबको उत्पन्न करने वाला है। वह हमें मेहनत की ताकत देनेवालाहै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सत्य है।"

जब मुहम्मद यासीन लिख चुका तो उसने पूछा, "आगे।"

"बस, और कुछ नहीं। इसमें सब-कुछ आ गया है।"

"मगर इसमें खुदा से कुछ माँगा तो है नहीं ?"

"माँगने से कुछ नहीं मिलता। माँगने से तो भीख भी नहीं मिलती।"

"तो फिर इसका क्या फायदा है ?"

"आज इसको आप याद कर लीजिए और समझ लीजिए। फायदा बाद में बताऊँगी।"

: १० :

मुहम्मद यासीन को मन्त्र स्मरण कर उसके अर्थों को मन में बैठा जप करते हुए कई दिन व्यतीत हो गए थे कि प्रज्ञा ने पूछा, "मन्त्र और मायने स्मरण हो गए हैं ?"

"हाँ !"

"देखिए ! मैं अपनी पूजा का रहस्य बताती हूँ। मैं समझती हूँ कि परमात्मा की तारीफ करने से कुछ नहीं मिलता। वह खुशामद-पसन्द नहीं है। उससे माँगने से भी कुछ नहीं मिलता। वह किसी के साथ रियायत नहीं करता। इसलिए मेरी प्रार्थना न तो खुशामद है, न कुछ माँगने की वात है।"

"तो यह क्या है ?"

"यह परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव का चिन्तन है। आप इन लफ्ज़ों के मायनों पर गौर करेंगे तो आपको पता चलेगा कि परमात्मा ने इस दुनिया को और उस पर मखलूक को पैदा किया था, कर रहा है और करेगा। हम में जो ताकत है, उसका देने वाला वह है। वह बहुत बड़ा है। इतना कि हम उसकी लम्बाई-चौड़ाई को दिमाग में भी नहीं ला सकते। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

"जब हम इस प्रकार परमात्मा की बनाई दुनिया को जान जात हैं, तो हकीकत में हम उसकी तारीफ ही करते हैं।

"इस तारीफ के लिए हमारी जबान में एक लफ्ज है स्तुति। इसका मतलब है किसी शै के गुण और उसके कर्म तथा स्वभाव का वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना। बहुत ही मुख्तसिर में इस मन्त्र में सब कह दिया गया है। इसका चिन्तन करने से ही पूजा हो जाती है।"

"इससे लाभ क्या होगा ?"

"यह मैं अब हर रोज आपको बताया करूँगी। पहले इन इल्फाज के एक-एक के मायने खुलासे में बताऊँगी। फिर इसके लाभ बताऊँगी।

"एक बात आज बताती हूँ। वह इस मन्त्र का एक लफ्ज़ है, ओं महः। इसके मायने हैं वह सबसे बड़ा है। यहाँ तक कि जहाँ-जहाँ तक यह बना हुआ जगत् है, वहाँ-वहाँ वह मौजूद है। वह हर जर्रे में मौजूद है और सब जर्रों से जुड़ा हुआ, उनके ताल्लुक में आता है।

"इससे यह मानना पड़ता है कि वह सब जगह पर हाज़िर है और सबकी सब बातों को देखता तथा समझता है।

"जब यह बात हमारे मन में बैठ जाती है तो हमें उसके बनाए कायदे-कानूनों का पता चल जाता है। तब हम उसके कायदे-कानूनों का पालन करते हैं।

"इससे अच्छे नतायज पैदा होते हैं। इससे हमें सुख और शान्ति मिलती है। यह कायदे-कानून जान कर उनके मुताबिक अमल करने का फल ही है, जो मिलता है।"

"वैसे वह न तो किसी से रियायत करता है, न ही किसी की मिन्नत खुशामद पर खुश होता है। उसके उसूलों को पालन करना ही परमात्मा की अबादत है।"

"तो उसके कायदे-कानून कैसे पता चलते हैं ?"

"उसकी बनाई मखलूक को देखने, समझने और जानने से। वे मैं आपको हर दिन थोड़ा-थोड़ा कर बताऊँगी।"

एक अन्य दिन उसने कहा, "एक जबान है, उसे वैदिक भाषा कहते हैं। उसे ही यूरोप और एशिया की जबानों की माँ कहा जाता है। उसको जानना चाहिए।"

"कैसे जानी जाएगी ?" यासीन ने पूछा।

"सबसे पहले अपना नाम उस ज़बान में रख लें। फिर मैं उस ज़बान को बोलूं तो उसको सुना करिए। इससे ज़बान आ जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या नाम रख लूं ?"

प्रज्ञा ने कुछ क्षण विचार किया और कह दिया, "देखिए ! मेरा नाम है प्रज्ञा। इसके मायने हैं अक्ल और अक्ल इल्म के सहारे काम करती है। मैं हूं आपके सहारे। इस कारण आप हैं इल्म। उस जबान में इल्म का मतलब है ज्ञान। इसलिए आप हैं ज्ञानस्वरूप।"

"बहुत खूब ! तुम अक्ल हो जो मुझ इल्म के सहारे है।"

"जी !"

"तब ठीक है। क्या नाम बताया है ?"

"ज्ञानस्वरूप।"

"तो इसको भी लिखकर याद कर लूं ?"

"जरूरत नहीं। अब मैं आपको इसी नाम से बुलाया करूँगी तथा आपका दूसरों से परिचय इसी नाम से दिया करूँगी। कुछ ही दिनों में यह नाम आपको याद हो जाएगा।"

फिर एक दिन यह भी बात हुई कि क्यों इसी जबान में बातचीत और नाम रखे जाएँ ? जब यह बात चली तो प्रज्ञा ने इस जबान के बनने की कहानी बता दी।

उसने बताया कि यह जबान सबसे पहले पैदा हुई। इसमें वस्तुओं के जो नाम हैं, वे उनके कार्यों से सम्बन्ध रखते हैं। कोई भी नाम ऐसा नहीं जो मायने न रखता हो। इससे हकीकी इल्म (ज्ञान) इसी जबान को जानने से पता चलता है। बाकी जबानें इसी में से बिगड़कर निकली हैं। उनसे अक्सर मायने भी गलत समझ आने लगते हैं।"

"तो ?"

"तो यह कि अब आप हैं ज्ञानस्वरूप। मैं अब आपसे इस इल्म वाली, मेरा मतलब है ज्ञानमयी वाणी में ही बात किया करूँगी। इससे मुझे तो लाभ होगा ही, साथ ही आपके ज्ञान में भी वृद्धि होगी। जब भी कोई बात समझ में न आए तो फौरन उसके मायने पूछ लिया करिए। यही तरीका है जिससे माँ-बाप बच्चों को जबान सिखाते हैं और बच्चे ज्ञानवान होते हैं। अच्छी जबान के प्रयोग से उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।"

यही बात प्रज्ञा ने उस दिन नगीना को समझाई थी, जिस दिन उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम कमला रखा था। प्रज्ञा ने बताया था, "तुम कमल फूल की तरह सुन्दर ग्रौर खिली हुई हो। इसी से कमला हो।"

"ग्रगर कोई दूसरी भी ऐसी हो तो ?"

"तो वह भी कमल हो सकती है। एक ही नाम के एक से ग्रधिक शख्स हो सकते हैं। तब एक को दूसरे से पृथक् जानने के लिए कुछ विशेषण लगाने पड़ेंगे। उदाहरण के रूप में मैं प्रज्ञा हूँ। कोई दूसरी भी प्रज्ञा हो सकती है। इसलिए मैं हूँ प्रज्ञा पत्नी श्रीमान् ज्ञानस्वरूप।

"इसी प्रकार तुम्हारी भी तारीफ हो जाएगी। मगर कमल नाम से ही तुम्हारे गुणों का प्रदर्शन होगा।"

ग्रब समस्या ग्राई सरवर की। प्रज्ञा ने उसका नाम सरस्वती रख दिया ग्रौर बताया कि इसका ग्रर्थ है सरस्वती। मतलब यह कि एक लुभायमान तरीके से वर्णन करने वाली। यह भाषा भी हो सकती है।

प्रज्ञा ने ग्रागे कहा, "जब ग्रापने ग्रपने लिए नाम पूछा तो तुरन्त मेरा दिमाग सोचने लगा कि ग्रापके किस ग्रमल पर ग्रापका नाम रखा जाए। ग्रापके मेरे साथ व्यवहार ग्रौर पिछली रात की बातचीत से जो देखा है, उससे यही मन में ग्राया है। ग्राप बहुत ही सरल स्वभाव हैं ग्रौर सदा मीठी बोलती हैं। इसीलिए इसके मुताबिक ही शब्द मन में प्रस्फुटित हो गया। ग्राप हैं सरस्वती। मैं हर रोज स्वाध्याय करने बैंठती हूँ तो पहले सरस्वती देवी, मेरा मतलब है इल्म की देवी को नमस्कार कर ही बैंठती हूँ।"

इस समय ज्ञानस्वरूप बोल उठा, "ग्रम्मी ! प्रज्ञा ठीक कहती है। तुम्हारे में यह ग्रौसाफ न होता तो तुम मुझे घर से निकाल दिए होतीं।"

सरवर हँस पड़ी। प्रज्ञा ने कहा, "कमला ! ग्राज ग्रपने 'कैमरे' से ग्रम्मी की एक बहुत ग्रच्छी तस्वीर उतारो। फिर उसको बड़ा बनवाकर ग्रौर बढ़िया फ्रेम लगवाकर ड्राइंगरूम में लगवा दूंगी।"

कमला उठी ग्रौर ग्रपने कमरे में जाकर ग्रपना कैमरा ले ग्राई। उसने एक के स्थान दो फोटो लिए। एक ग्रकेली ग्रम्मी का ग्रौर एक सबका। उसने कैमरा सैंट करके बटन दबा दिया ग्रौर फिर स्वयं भी सामने ग्राकर बैठ गई। दस सैकिण्ड बाद 'क्लिक' हुई ग्रौर चारों का चित्र खिंच गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात भोजन करते समय ज्ञानस्वरूप ने पूछा,"अम्मी ! जब इनसान पैदा होता है, तो उसका क्या मजहब होता है ?"

"मजहब तो जब उसे कलमा पढ़ाया जाता है, तब बनता है।"

"और वह कौन पढ़ाता है ?"

माँ मुख देखती रह गई। कुछ विचार कर बोली, "तुम्हें तुम्हारे अब्बाजान ने तुम्हारे कान में पढ़ाया था।"

"मगर अब्बाजान तो परमात्मा को मानते ही नहीं ?"

"मैं समझती हूँ कि वह कट्टर दीनदार मुसलमान हैं और···।" माँ कहते-कहते रुक गई।

"हाँ ! और क्या ?"

"कुछ नहीं !" इतना कहते-कहते वह खाना छोड़ उठ खड़ी हुई और खाने के कमरे से निकल गई। पति-पत्नी और लड़की तीनों देखते रह गए। एकाएक ज्ञानस्वरूप के मुख से निकल आया,"आज फिर अम्मी रोने अपने कमरे में चली गई हैं।"

प्रज्ञा ने भी खाना छोड़ दिया और भागकर माँ के पीछे-पीछे गई। यदि वह एक क्षण पीछे रह जाती तो सरस्वती द्वार बन्द कर लेती। वह द्वार बन्द करने से पहले कमरे के बाहर खड़ी हो आँचल से आँखें पोंछ रही थी कि प्रज्ञा वहाँ जा पहुँची। उसने माँ की बाँह पकड़ कमरे के भीतर ले जाते हुए पूछा, "अम्मीजान ! तबियत कैसी है ? क्या तकलीफ है ?"

सरस्वती के मन में आया कि कमरे का दरवाजा बन्द कर अपने मन में उठ रहे उद्‌गारों को खुद ही खुदा का नाम लेकर शान्त कर ले, मगर प्रज्ञा ने उसे पलंग पर ले जाकर बैठाया। वह चिन्ता में माँ के मुख पर देखने लगी थी।

सरस्वती ने कहा, "मुझे तकलीफ कुछ नहीं। सिर्फ मन में कुछ पुरानी याद उठ पड़ी थी।"

"मगर अम्मी ! दुःखद याददाश्तों को भूलाने के दो ही तरीके हैं। एक तो उनको अपने किसी पहले जन्म के बुरे कर्मों का फल समझ परमात्मा का उसके लिए शुक्र-गुजार होना कि उसने वह कर्मफल दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया है और अब वैसे बुरे काम से बचाए।

"एक दूसरा भी तरीका है। अगर मालूम हो कि किस कर्म का वह फल है तो उसे अपने प्रियजनों को बताकर उसके लिए अफसोस जाहिर कर दिया जाए। इससे फिर वैसा बुरा काम करने से बचा जा सकता है।"

"मगर मुझे तो याद नहीं कि मैंने कुछ भी वैसा किया हो, जिसका नतीजा वह हो सकता था।"

"तब तो अक्ल यही कहती है कि वह किसी पिछले जन्म में किया कर्म ही था जिसका फल इतना दुःखदायी हुआ है कि उसकी याद से भी रोना आ जाता है। मगर अम्मी, वह तो हो गया। उसका फल भोग लिया गया और आगे खुदा से दुआ करनी चाहिए कि फिर वैसा कोई काम करने की ख्वाहिश भी न हो।"

"यह ठीक है, मगर मैं तब ही तो इस किस्म का अमल नहीं कर सकती, जब पता चले कि पहले मैंने क्या किया था?"

"नतीजे पर गौर कर उसकी वजह का इल्म हो सकता है, जैसे भूख लगने पर खाने का इल्म हो जाता है। अन्धेरा हो जाने पर सूरज के गायब हो जाने का इल्म होता है। इस तरह अगर परमात्मा को न्याय-कर्त्ता मानें तो हुई तकलीफ को देखकर उसकी वजह का भी अन्दाज लगाया जा सकता है।

"देखिए अम्मी! इस दुनिया में बिना वजह कुछ नहीं होता। जब यह है तो हमारी तकलीफों और खुशियों की भी वजह होती है और नतीजों को देख उसके होने में भी वजहों का इल्म हो जाता है।"

"अच्छा देखो बेटी! मैं बताती हूँ। जब यह यासीन अभी डेढ़-दो साल की उम्र का था कि एक दिन इसके अब्बाजान शाम के वक्त घर पर आये। आते ही मेरे मुँह पर एक चपत लगा, लातों से मेरी मरम्मत करने लगे। मैं तो इसे तूफान बदतमीजी की वजह सोचती रही और वह मेरी पिटाई करते रहे।

"आखिर मैं जमीन पर मुख-सिर टाँगों में छुपा बैठ गई। वह पीटते-पीटते थक गये तो मुझे छोड़कर सामने कुर्सी पर बैठ गये। उस वक्त तक मेरे सिर से खून बहने लगा था और कमर बेहद दर्द करने लगी थी। मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी थप्पड़ों से लाल हो रहा था।

"मैंने पूछा, 'क्या कसूर हुआ है मुझसे :

"वह कहने लगे, 'मैं चाहता हूँ कि तुम्हें तलाक दे दूं।'

"तब से उन्होंने मुझे अपने से अलहदा कर रखा है। मकान के पिछवाड़े के कमरे में मुझे रहने की मन्जूरी मिल गई। साथ ही खाने-पीने का इन्तजाम कर दिया।

"मैं समझ नहीं सकी कि इस सब के लिए मुझे पीटने की क्या जरूरत थी ? हजरत का कहना था कि इसके बिना मैं न मानती।

"मेरे कमरे में तुम्हारे अब्बाजान नगीना की माँ सालिहा को ले आये। खुदा उसका भला करे। उसने मेरे लिए पलंग, फर्नीचर वगैरह उस कमरे में लगवा दिया। मैं तब से एक बेवा की-सी जिन्दगी बसर कर रही हूँ।

"अब बताओ ! यह मेरे किन अमालों का नतीजा हो सकता है ?"

"अम्मी ! यह तो सरल-सी बात है। जरूर आपने इस जिन्दगी में या किसी पहले की जिन्दगी में किसी बच्चे को बेकसूर पीटा होगा जिसका नतीजा आपको पीटना हुआ।"

सरस्वती प्रज्ञा का मुख देखती रह गई। फिर एकाएक कहने लगी, "उस दिन यासीन ने मुझे बताया था कि उसके अब्बाजान ने उसे कहा था कि तुम्हें पीट-पीटकर घर से निकाल दे, क्योंकि नगीना को तुम्हारी जगह बैठाना है।

"बस, इस बात को सुनकर मुझे उस दिन अपनी पिटाई की बात याद आ गई और मेरी आँखों में आँसू भर आए थे। आज भी तुम्हारे घर वाले ने अपने वालिद को खुदा-दोस्त मानने पर शक किया था। मैं खुदा की बेइन्साफी पर दुःखी हो रोने लगी थी और इसी कारण खाना छोड़ भाग आई हूँ।"

"माँ," प्रज्ञा ने कहा, "एक बात समझी हूँ कि अब्बाजान ने अपने पहले जन्म में कुछ बहुत ही अच्छे कर्म किए हैं जिनका नतीजा यह धन, दौलत और सुख-आराम उन्हें मिल रहा है। मगर यह उस तरह है, जैसे कुछ जमा किये खजाने में से खर्च कर रहे हों। एक दिन वह सब पहले का जमा किया खर्च हो जायेगा, तब बहुत मुश्किल होगी। मुझे डर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि तब उनका क्या बनेगा।

"इस पर भी अम्मी! परमात्मा का शुक्र-गुजार होना चाहिए कि आपका लड़का आपकी सब किस्म की खिदमत करने के लिए हाजिर रहता है। हम सबका पालन करने वाले ने खाने, पहनने और रहने के सुख तथा आराम के साधन हमें दिये हैं।"

सरस्वती को प्रज्ञा के इस प्रकार के कथन को सुन सन्तोष और शान्ति मिली। वह बोली, "हाँ! उस परवरदिगार की इतनी तो मेहर है कि इस समय किसी प्रकार का दुःख-दर्द नहीं।"

इसके उपरान्त दिन शान्ति और सुख से व्यतीत होने लगे। प्रायः सप्ताह में एक पत्र उमाशंकर का कमला के नाम आ जाता था। उसका उत्तर जाता था। प्रज्ञा इस सब से परिचित थी। कमला प्रज्ञा के भाई के पत्र उसको दिखा देती थी।

Central Library
167924
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

उमाशंकर को अमेरिका से लौटे तीन महीने के लगभग हो चुके थे। जब उसका क्लीनिक तैयार हुआ तो उसका उद्घाटन बहुत धूमधाम से किया गया। आस-पड़ोस में सबको आमन्त्रित किया गया।

एक निमन्त्रण-पत्र प्रज्ञा के पति मुहम्मद यासीन को भी भेजा गया, परन्तु वहाँ से कोई भी नहीं आया। यहाँ तक कि निमन्त्रण-पत्र डाक से लौट आया था। लिफाफे पर लिखा था 'अन-नोन।'

अतः जब उद्घाटन हो चुका और मेहमानों को मिठाई दे विदा किया जा चुका तो पिता पुत्र उस दिन के समारोह का मूल्यांकन करने कोठी के ड्राइंगरूम में आ बैठे। एक बजे का समय था और वे भोजन की प्रतीक्षा में थे। एकाएक उमाशंकर को प्रज्ञा की याद आ गयी। उसने पिता से पूछ लिया, "पिताजी ! प्रज्ञा को निमन्त्रण भेजा था ?"

"भेजा था, परन्तु पत्र बिना डिलिवर किये वापस आ गया है। सम्भव है, वे सब लोग बम्बई चले गये हों।" रविशंकर का कहना था।

उमाशंकर का पत्र-व्यवहार कमला से चलता था और कमला का पत्र दो दिन पूर्व आया था। इस कारण निमन्त्रण पत्र ठिकाने पर न पहुँच सकने पर उसे विस्मय हुआ। इस पर भी वह बताना नहीं चाहता था कि वह ज्ञानस्वरूप की बहन से पत्र-व्यवहार कर रहा है। उसने पिताजी से कहा, "आपने प्रातः बताया होता तो मैं टेलीफोन कर पता करता।"

"तो अब कर लो। बात यह है कि प्रज्ञा उस छोकरी को साथ लिये घूमती फिरती है। वह बातें करने में बहुत शोख है, परन्तु मुझे उस प्रकार की लड़की बिल्कुल पसन्द नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमाशंकर पिता के नगीना के विषय में विचारों को जानता था, परन्तु उस पर बहस करने से बचते हुए उसने पूछा, "तो करूँ उसको टेलीफोन ?"

"कर दो ! और बता देना कि पत्र भेजा था, परन्तु वापस आ गया है।"

उमाशंकर उठा और क्लीनिक में जाकर नम्बर घुमाने लगा। दूसरी ओर से प्रज्ञा बोली। इस पर उमाशंकर ने उस दिन के समारोह की बात बताकर कह दिया कि एक निमन्त्रण-पत्र आप सबके लिये भी था, परन्तु आपमें से कोई भी नहीं आया।

"हमें निमन्त्रण-पत्र नहीं मिला। किस पते पर भेजा था ?" प्रज्ञा ने पूछा।

"मुहम्मद यासीन और 'खोजा लौज़' के पते पर।'

प्रज्ञा हँस पड़ी और बोली, "दादा ! नगीना ने आपको बताया तो था कि यहाँ सबने अपने नाम बदल लिए हैं। यहाँ तक कि कोठी के बाहर नामपट्ट पर भी नाम बदल दिया है। कोठी का नाम भी हमने 'अरुणांचल' लिख दिया है।"

"ओह !" उमाशंकर ने कहा, "शायद इसीलिए पत्र लौट आया है।"

"दादा ! आप तो जानते थे कि यहाँ नामों में परिवर्तन हो चुका है ?"

"मुझे यह पता नहीं था कि तुम लोग इस सीमा तक जा चुके हो। अच्छा, एक बात करो। शीघ्र परिवार सहित यहाँ चली आओ। यहाँ हमने हवन-यज्ञ किया है और लगभग पाँच सौ व्यक्तियों को मिठाई बाँटी है।"

"मगर आपके जीजाजी तो दुकान पर चले गये हैं।"

"मैं उनको दुकान पर टेलीफोन कर देता हूं कि आप सब लोग यहाँ पर आये हुए हैं और आप उनकी यहाँ पर रात के खाने तक इन्तज़ार करेंगे। सबका भोजन यहीं होगा।"

"तो ठीक है, कर दो। मैं आ रही हूं।"

उमाशंकर ने कनाट प्लेस ज्ञानस्वरूप को भी फोन कर निमंत्रण दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया और फिर ड्राइंगरूम में चला आया। उसके यहाँ पहुँचते ही पिता ने पूछा, "तो हुआ टेलीफोन ?"

उमाशंकर ने मुस्कराते हुए कहा, "उन लोगों ने अपने नाम बदल लिए हैं। कोठी का नामपट्ट भी बदल दिया है। इसी कारण पत्र लौट आया है।"

"क्या नाम रख लिया है ?"

"बहन तो प्रज्ञा ही है। अब सुना है कि जीजाजी ने अपना नाम ज्ञानस्वरूप रख लिया है, उनकी माताजी सरस्वती हो गई हैं और जीजाजी की बहन का नाम हो गया है कमला।"

"यह सब हमको धोखा देने के लिए किया जा रहा है ?"

"किस बात का धोखा देने के लिए ?" उमा का प्रश्न था।

"यही कि वे हमारे सामने हिन्दू बन रहे हैं जिससे उनकी लड़की यहाँ इस ब्राह्मण परिवार में घुस आये।"

"नाम बदलने से इसका क्या सम्बन्ध हो सकता है ? मैं तो नगीना के नाम से भी उससे विवाह करने को तैयार हूं। फिर नाम बदलने से मेरी राय में परिवर्तन नहीं हुआ।"

"परन्तु लोगों में तुम्हारी इज्जत बिगड़ सकती थी। अब हिन्दू लड़की का लबादा ओढ़ वह समझती है कि बिना रोक-टोक यहाँ आ सकेगी।"

"पिताजी ! यदि यह कारण है नाम बदलने का तो उन्होंने मेरा घोर अपमान किया है। मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि नाम सुन उसके विचार और मान्यताओं का अनुमान लगाने लगूंगा।"

पूर्ण उद्घाटन समारोह में रविशंकर प्रसन्नता से भरा रहा था। अब भी वह पन्द्रह-बीस मिनट पूर्व अति प्रसन्न था, परन्तु ज्यों ही प्रज्ञा की बात आरम्भ हुई थी कि उसका मुख गम्भीर होने लगा था।

अब यह जान कि मुहम्मद यासीन के परिवार ने नाम बदल लिए हैं, वह और भी अधिक बेचैन हो उठा था।

उमाशंकर देख रहा था कि पिता का मुख एकदम गम्भीर हो गया है। उसे भय लग रहा था कि बाप-बेटी में तूं-तूं, मैं-मैं न हो जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसने इतना ही कहा, "पिताजी ! अब तो वह आ रही है। वह और उसके घर के लोग चालाक हैं और छलना खेल रहे हैं, यह अब विचारणीय नहीं है। वह भाई को अपना काम आरम्भ करने पर बधाई और आशीर्वाद देने आयी है। इस कारण मतभेद की बात नहीं करनी चाहिए।"

"परन्तु बेटा ! बच्चों को मार्गदर्शन तो कराना ही चाहिए। मैं नाराज नहीं हूँ। केवल उसे बताना चाहता हूँ कि इस प्रकार धोखा देने के क्या-क्या परिणाम हो सकते हैं। इनका ज्ञान तो उनको कराना ही चाहिए।"

"समझाने की बात ठीक है, परन्तु मैं तो डाँटने से मना कर रहा हूँ। वह अपनी ससुराल चली गयी है और प्रत्यक्ष रूप में वहाँ प्रसन्न है। इस कारण हमें उससे नाराज होने में कोई कारण नहीं है।"

"मगर तुमको जो वहाँ की छूत लग रही है ? तुम भी हमारे साथ वैसे ही छलना खेल सकते हो, जैसी वह अपने ससुराल वालों से खेल रही है।"

इस युक्ति को उमाशंकर समझा नहीं। इस पर भी वह चुप रहा। उसने बात बदल दी, "मैं समझता हूँ कि माताजी को बता देना चाहिए कि प्रज्ञा परिवार सहित आ रही है और मध्याह्न तथा रात का खाना यहाँ लेगी।"

"मगर मैं तो आज एक कार्य से रमण अय्यर के घर जा रहा हूँ। मेरी पेंशन का एक झगड़ा उठ खड़ा हुआ है। उसे मैं समझाना चाहता हूँ।"

"आप किस समय जा रहे हैं ?"

"मैं सायंकाल चाय पर जाऊँगा और फिर भोजनोपरान्त लौटूंगा।"

"तो जाने से पहले प्रज्ञा को समझा दीजिएगा कि आपकी पहले की एंगेजमैण्ट है, उसे आप रद्द नहीं कर सकते।"

पिता कुछ उत्तर देने ही लगा था कि प्रज्ञा अपनी सास और ननद के साथ आ गई। उमाशंकर ने ड्राइंगरूम के बाहर जा बहन के परिवार का स्वागत करते हुए कमला से पूछा, "सुनाओ, वीणा कैसे बज रही है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत बढ़िया। कभी वहा घर पर आइए तो आपको सुनाऊँगी। मेरे मास्टर कहते हैं कि दिल्ली में 'नौन-प्रोफेशनल' में मेरा कोई मुकाबिला नहीं कर सकता।"

"तब तो सुननी पड़ेगी। तुम्हारे भैया किसी दिन बुलायेंगे तो सुनने आऊँगा।"

यह कहता हुआ उमाशंकर मेहमानों के साथ ड्राइंगरूम में अन्दर आ गया। पिता ने उसके कथन में 'आऊँगा' सुन लिया था।

पिता ने पूछ लिया, "कहाँ जाओगे ?"

"नगीनाजी को विचित्र वीणा बजाते सुनने के लिए।"

कमला अपने कन्धे से कैमरा लटकाए हुए थी। उसने पिताजी की सूरत देखी तो वहीं खड़ी हो गई और कैमरा खोल देखने लगी।

इस पर तो प्रज्ञा गम्भीर हो गई। उमाशंकर पिता से डाँट सुनने की आशा कर रहा था कि कमला ने कह दिया, "पिताजी! तनिक मुख इधर कर मुस्कराइए।"

रविशंकर हाथ उठा 'शौट' लेने से मना करने लगा था कि 'क्लिक' हुआ और चित्र खिच गया।

कमला ने कैमरा छोड़ माताजी की कदम-बोसी की और फिर पिताजी को हाथ जोड़कर कहा, "यह तस्वीर तो अच्छी नहीं आएगी। कुछ ठहरकर और लूंगी।"

"क्यों ?"

"बस, इसीलिए जिसके लिए यह कैमरा बना है।" इतना कहते हुए कमला दोनों माताओं के बीच में बैठ गई। महादेवी ने उसके इस प्रकार बीच में घुसड़ने को पसन्द नहीं किया, परन्तु मना भी नहीं कर सकी। सरस्वती ने एक ओर हटकर कमला के लिए स्थान बनाया तो वह बैठकर हँसती हुई बोली, "पिताजी! यह फोटो आपको दिखाऊँगी। फोटो तो बहुत सुन्दर आया है। मगर आपका हाथ उठा हुआ आपके आँखों और मुख पर आ गया है।

"आज की यादगार में यह दृश्य मेरी एलबम का बहुत ही आकर्षक पन्ना बना रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला पूर्ववत् ऐसे आई थी जैसे किसी पहाड़ी स्थान से 'बबलिंग स्ट्रीम' लुढ़कती हुई समतल भूमि पर आती है। उमाशंकर कमला के इस व्यवहार से बहुत प्रसन्न था और मन्त्र मुग्ध हुआ उसके मुख पर देख रहा था।

प्रज्ञा के उत्तर देने से पहले ही कमला ने कह दिया, "पिताजी! आपने हमें बुलाया क्यों नहीं?"

"बात यह है कि आपका लिफाफा 'अन-डिलिवर्ड' आज दस बजे की डाक से लौट आया है।"

"परन्तु पिताजी! आपने पता गलत जो लिखा था?"

"पता तो ठीक ही लिखा था। हाँ, यह विदित नहीं था कि मुहम्मद यासीन उस चक्कर में इतनी दूर तक सम्मिलित हो चुका है कि चिट्ठियाँ भी वापस आने लगी हैं।"

"पिताजी! बात यह है कि कुछ दिन हुए, उनको पिताजी का एक पत्र बहुत डाँट-डपट का आया था। इस कारण उन्होंने यही उचित समझा कि अपना बदला हुआ नाम विख्यात करना शुरू कर दें।

"हमने कोठी का नाम 'खोजा लौज' से बदलकर 'अरुणांचल' रख लिया है और अपने नाम कोठी के बाहर लिखवा दिए हैं।"

"मगर हमें बताया तो होता?"

"आपको मालूम होना चाहिए था। दादा अपने जीजाजी का बदला नाम तो जानते थे।" प्रज्ञा पिताजी को समझा रही थी।

पिता के विस्मय प्रकट करने से पूर्व ही उमाशंकर ने कह दिया, "मगर मुझे यह विदित नहीं था कि आपके नाम अब पब्लिक में इतने विख्यात हो चुके हैं कि डाकिया भी पहला नाम भूल गया है।"

"कोई नया डाकिया रहा होगा और वह मकान और मकान में रहने वाले का नाम पढ़ चिट्ठी वापस ले गया होगा!"

"परन्तु इस सब 'फ्राड' की आवश्यकता क्या थी?" रविशंकर ने पूछ लिया।

"पिताजी! यह फ्राड नहीं है। हमने वास्तव में नाम बदला है।"

"मगर भेड़ का नाम सिंह रख देने से वह सिंह कैसे हो जाएगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु भेड़ और सिंह में पहचान करने वाले को पता चल सकता है कि यह सिंह ही है, भेड़ नहीं है।"

कमला फिर कुछ उद्गार प्रकट करने वाली थी कि प्रज्ञा ने उसे मना कर स्वयं ही बात करनी उचित समझी। प्रज्ञा ने कहा, "देखिए पिताजी! यह प्रज्ञा, दादा उमाशंकर की बहन है। यदि, उमाजी शेर हैं तो बहन सिंहनी क्यों नहीं?"

"परन्तु तुम दोनों एक ही माँ की सन्तान होने से दोनों सजातीय हो?"

अब कमला से नहीं रहा गया। उसने कहा, "पर पिताजी! आप भी तो वही हैं जो भाभी हैं, यद्यपि आपकी माताजी दूसरी हैं।"

इस हाजिर-जवाबी पर तो रविशंकर का मुख बन्द हो गया और वह मुख देखता रह गया.

कमला ने एक बात और कह दी, "आपमें और मुझमें क्या अन्तर है? दोनों दो टाँग के जानवर हैं। दोनों इन्सान की रूप-राशि रखते हैं। तब एक शेर और दूसरा भेड़ कैसे हो गया?"

इस पर रविशंकर ने कह दिया, "तुम मुसलमान हो और हम हिन्दू हैं।"

"पैदा होते वक्त तो हम में से किसी के शरीर पर मुसलमान लिखा नहीं था और मैं समझती हूँ कि आप में से भी किसी के शरीर पर हिन्दू नहीं लिखा होगा।

"आपके पण्डित ने आपको हिन्दू बनाया था और अब हमारे पण्डित ने हम को हिन्दू बना दिया है।"

रविशंकर इस प्रकार की युक्ति सुनने के लिए तैयार नहीं था। निरुत्तर हो वह क्रोध के घोड़े पर सवार हो गया परन्तु उमाशंकर की बात स्मरण कर उसने कुछ नरम हो कहा, "किस पण्डित ने तुम्हें हिन्दू बनाया है?"

"भाभी प्रज्ञा देवी ने! हम समझते हैं कि भाभी से अधिक योग्य पण्डित दिल्ली में नहीं है।"

"तो यह तुम्हारी पुरोहित बन गई है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला रविशंकर के पुरोहित शब्द का संशोधन करना चाहती थी, परन्तु प्रज्ञा ने कमला के मुख पर हाथ रख उसे चुप करा दिया। इस पर भी कमला हँस पड़ी। बात प्रज्ञा ने अपने हाथ में लेकर कहा, "पिताजी! यह ठीक है कि मैंने इन सब को दीक्षा दी है, परन्तु हिन्दू बनने की नहीं?"

"तो क्या बनने की दीक्षा दी है?"

"मानव बनने की। हम तीनों अब मानव जाति में हैं। वास्तव में हम पहले मानव से कम ही थे। जैसे मैं अपने संस्कारों के कारण अपने को हिन्दू कहती थी, वैसे ये अपने को मुसलमान कहते थे।

"संस्कार स्वभाव से चलते हैं। हमने उन संस्कारों को बुद्धि की भट्टी में तपाकर अब बुद्धिगम्य व्यवहार स्वीकार कर लिया है। अब हम 'अरुणांचल' के रहने वाले मानव हैं।"

"तुम परमात्मा को मानती हो अथवा खुदा को?"

"ये भाषा-भेद की बात की जा रही है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है।"

"पर मैं तो हनुमानजी पर लड्डू चढ़ाता हूँ।"

"पिताजी! दिल्ली में अनेक हैं जो दिनानुदिन सरकारी अफसरों को रिश्वत देते रहते हैं। आप भी तो यही कुछ कर रहे हैं। परमात्मा से सीधा सम्पर्क न रखकर परमात्मा के भक्त के द्वारा यश और कीर्ति की इच्छा करते हैं।

"हमारा सम्बन्ध सीधा परमात्मा से होने लगा है। इस कारण इन बीच-बिचौलों की आवश्यकता नहीं रही।"

"परन्तु यह तो सब जानते हैं कि मिनिस्टर साहब को मिलने के लिए उनके सैक्रेटरी को 'टिप' करना पड़ता है।"

"पिताजी! वह इसलिए कि अफसर कमरे से बाहर नहीं होता। वह परमात्मा की भाँति सब स्थान पर उपस्थित नहीं होता। इस कारण परमात्मा को बीच-बिचौले की आवश्यकता नहीं होती। यह तो आप भी मानते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापक है। जब वह मन्दिर से बाहर भी है तो फिर मन्दिर में जाने की क्या आवश्यकता है?"

"तुम कहाँ से हमारे घर में नास्तिक पैदा हो गई हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देह तो माताजी ने ही बनाई है। अक्ल कुछ आपने दी है, कुछ स्कूलों कालिजों के मास्टरों और प्राध्यापकों ने सिखाई है और सबसे अधिक सांख्य और वेदान्त दर्शनों से सीखी है।"

ये सब बातें रविशंकर की पहुँच से दूर थीं। इस कारण उसने पत्नी को कहा, "तुम्हारी बेटी मेरे वस की बात नहीं है। इनको भीतर ले जाओ और खूब खिला-पिलाकर विदा करना। मैं तनिक मिस्टर बोस से एक राय करने जा रहा हूँ।"

बोस उनका पड़ोसी ही था। इस कारण रविशंकर उठा और कमरे से निकल गया। उमाशंकर तथा महादेवी मुख देखते रह गए। सरस्वती तो जबसे आई थी, अवाक् बैठी थी।

एक बात का उसे सन्तोष था कि बहस में बाप पराजित हुआ था। इससे उसे पतोहू की इल्मीयत पर गर्व था। वह और उसका लड़का सब प्रकार से सम्पन्न थे और माँ-पुत्र ने कभी भी बहू के माता-पिता से कुछ पाने की आकांक्षा नहीं की थी। इस कारण वह इससे प्रसन्न थी कि भारत सरकार के गृहविभाग का रिटायर्ड चीफ सैक्रेटरी उसकी बहू से निरुत्तर कर दिया गया है।

उसका ध्यान भंग हुआ जब प्रज्ञा ने माँ को सम्बोधित कर कहा, "तो माताजी! हम भी चलें?"

"नहीं बेटी! वह वृद्ध हो गए हैं। कुछ भी बात उनके मन के विपरीत होने लगती है तो वह अपने मन का सन्तुलन खो देते हैं। तुम तो बूढ़ी नहीं हुईं। तुम्हें नाराज नहीं होना चाहिए।"

"परन्तु माताजी! मैं नाराज नहीं हूँ। इस पर भी पिताजी घर से निकल गये और वह भी मेरी वजह से, इसलिए मुझे भूख नहीं रही।

"अच्छा, अब मैं चलती हूँ। कभी किसी अन्य अवसर पर आऊँगी तो क्षमा माँग उनको राजी कर लूँगी।"

इतना कह वह उठी और माँ को प्रणाम करने लगी तो माँ ने देखा कि उसकी आँखें भरी हुई हैं। वह लड़की के मुख पर देखने लगी, परन्तु प्रज्ञा ने उमाशंकर की ओर घूमकर पूछ लिया, "शिव दिखाई नहीं दिया?"

"उसकी बी० ए० की परीक्षा चल रही है। आज चौथा पर्चा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा ! उसे मेरी नमस्ते कहना ।"

इस समय तक महादेवी को अपना कर्त्तव्य स्मरण हो आया । वह क्लीनिक में रखे मिठाई के डिब्बे लेने के लिए भागी । परन्तु उमाशंकर प्रज्ञा के साथ चलते-चलते बोला, "मुझे इसी बात की आशंका थी, परन्तु एक बात ठीक हो रही है । अभी से चर्चा चलने लगी है । हमारे विवाह में अभी पर्याप्त समय है और मैं आशा करता हूँ कि तब तक मैं पिताजी को राजी कर लूँगा ।

"प्रज्ञा ! आओ न, तुम्हें अपना क्लिनिक दिखाऊँ ।"

प्रज्ञा, सरस्वती और कमला तीनों उमाशंकर के क्लिनिक को चल पड़े ।

बरामदे में एक ही कमरा था । वहाँ दवाई-खाना था । फिर उसके साथ का कमरा उमाशंकर ने राय करने का कमरा बनाया था । उस कमरे के पीछे एक अन्य कमरा भी था । वह उमाशंकर ने 'पैथालौजिकल रूम' बना लिया था । उसमें परीक्षण के लिए कुछ यन्त्र लगवा दिये गये थे ।

सबको लेकर उमा अपने राय करने वाले कमरे में दाखिल हुआ तो महादेवी चार डिब्बे मिठाई लेकर निकलते मिली ।

उसने प्रज्ञा को कहा, "यह ले जाओ, मुख मीठा कर लेना । मैं समझ रही थी कि यह लेकर पीछे-पीछे तुम्हारे घर जाना पड़ेगा ।"

"माताजी ! मैं नाराज नहीं हूँ । न ही रूठी हुई हूँ । मैं केवल पिताजी को उनके कठोर व्यवहार का भान कराने के लिए जा रही हूँ ।"

"कमला !" प्रज्ञा ने अपनी ननद को सम्बोधित कर कहा, "माताजी से मिठाई लेकर धन्यवाद कर दो और बधाई दे दो ।"

इसके उपरान्त उमाशंकर अपने क्लीनिक और 'पैथालौजिलक रूम' के सामान और उसके योग की बात समझाने लगा ।

महादेवी उनको छोड़ यह पता करने कोठी के बाहर को चल पड़ी कि उसका पति मिस्टर बोस के घर पर ही है अथवा कहीं अन्यत्र चला गया है ।

परन्तु वह अभी कोठी के फाटक तक ही पहुँची थी कि शिव अपने स्कूटर को हाथ से खींचता हुआ फाटक की ओर आता दिखाई दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ ने पूछ लिया, "स्कूटर खराब हो गया है क्या ?"

"नहीं माँ ! पिताजी मार्केट की ओर जाते मिल गये थे। मैं उतरकर पूछने लगा था कि किधर जा रहे हैं। पिताजी ने कह दिया, 'तुम जाओ। मैं पन्द्रह-बीस मिनट में आता हूँ।'

"माँ, क्या हुआ है ?"

"कुछ नहीं। प्रज्ञा आई है और पिताजी उससे नाराज हो चले गए हैं।"

"तो आ जाएँगे। तुम कहाँ जा रही हो ?"

"यही देखने जा रही थी कि किधर गए हैं ?"

"चलो माँ ! बहन से मिल लूँ। पिताजी का क्रोध दस मिनट से अधिक नहीं रहता। मुझे विश्वास है भोजन के समय तक आ जाएँगे।"

जब शिवशंकर और महादेवी भीतर पहुँचे तो प्रज्ञा, उमाशंकर इत्यादि कोठी के द्वार की ओर जा रहे थे।

"दीदी ! कहाँ जा रही हो ?"

"तो तुम आ गए हो ?"

"हाँ ! आओ भीतर चलो, तुम्हें अपनी परीक्षा की रिपोर्ट सुनाऊँगा।"

"नहीं ! अब हम जा रही हैं। तुम मुझे मिलने आओगे तो मुझे बहुत खुशी होगी। देखो, पिछले मास की दावत की फोटो बहुत बढ़िया बनी हैं। उनमें एक तुम्हारी भी है।"

"तब तो आऊँगा।"

"और एक बात भी है ?"

"क्या ?"

"वह तुम आओगे तो बताऊँगी। परन्तु बहुत मजेदार बात है !"

"तब तो जरूर ही आऊँगा।"

"हाँ !"

प्रज्ञा इत्यादि सब पैदल ही घर की ओर चल पड़ीं।

उमाशंकर, शिवशंकर और महादेवी उनको जाते देखते रहे। जब वे सड़क मुड़कर आँखों से ओझल हुईं तो महादेवी आँखों को रूमाल से पोंछती हुई वापस लौट पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम तो रो रही हो ?" शिव ने पूछा।

"हाँ ! मैं तुम्हारे पिता के व्यवहार पर लज्जित हूँ।"

"तो पिताजी को ऐसा लज्जास्पद व्यवहार करने से रोकना चाहिये था।"

"परन्तु वह मेरे पति हैं। उनको समझाना मेरे बस का रोग नहीं है।"

"परन्तु हमारे पति नहीं हैं। हम तो समझा सकते हैं ?"

"तो ऐसा करो, उमा से राय कर लो। इसे सब कुछ विदित है।" इस समय सब ड्राइंग रूम में आ गये थे। उमाशंकर ने बात बदल दी और पूछ लिया, "आज का पर्चा कैसा कर आए हो ?"

"अपने विचार से बहुत अच्छा कर आया हूँ।"

"माताजी ! भोजन, पिताजी के आने पर होगा क्या ?"

"हाँ ! शिव कहता है कि वह कह गए हैं कि दस-पन्द्रह मिनट तक लौट रहे हैं।"

"हाँ !" शिव ने व्याख्या सहित बता दिया, "पिताजी मार्केट की ओर जा रहे थे। मैंने पूछा कि किधर भागे जा रहे हैं ? वह बहुत जल्दी-जल्दी चल रहे थे। वह कहने लगे, 'तुम चलो। मैं दस-पन्द्रह मिनट में आता हूँ।'

"उन्होंने बताया है कि उन्हें क्रोध चढ़ आया था, अब कुछ शान्त हो रहा है। दस-पन्द्रह मिनट में ठीक हो जाएगा और वह लौट आएँगे। बस, इतना कह वह मार्केट की ओर चल पड़े।"

इस बात पर आशा करते हुए सब ड्राइंग रूम में ही बैठ गये और पिता की प्रतीक्षा करते हुए इधर-उधर की बातें करते रहे।

"यह नगीना तो बहुत समझदार हो रही प्रतीत होती है ?" शिव ने कह दिया।

"तो उसकी समझदारी का कार्ड उसके मुख पर लगा हुआ है ?" माँ ने पूछ लिया।

"माताजी ! वह तो सबके मुख पर होता है। कभी पढ़ने वाला अपनी अज्ञानता के कारण पढ़ नहीं सकता अथवा गलत पढ़ लेता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी बहुत भली-भाँति पढ़ तथा वहाँ लिखे का अभिप्राय समझ लेता है।"

"और तुम उसके मुख पर लिखे को पढ़-समझ गए हो ?"

"माँ ! समझ तो यह आया है कि वह अब सुशील और समझदार हो गई है। तीन महीने में ही अन्तर आ गया है।"

उमाशंकर हँस पड़ा और हँसते हुए बोला, "वह समझदार हुई है अथवा नहीं, यह तो पता नहीं, मगर तुम इन तीन महीने में कुछ अधिक सूझ-बूझ रखने वाले हो गए समझ आये हो ?"

माँ हँस पड़ी। उस समय रविशंकर ड्राइंग रूम में प्रवेश करता दिखाई दिया। उसको देख कर ही महादेवी की हँसी निकली थी। रविशंकर ने ड्राइंग रूम में दाखिल होते हुए कहा, "मैं छुपा हुआ देख रहा था कि वे जाते हैं अथवा नहीं। उनके तीस नम्बर पर घूमते ही मैं छुपे स्थान से निकल आया और इधर को चल पड़ा था।"

अब तो तीनों, माँ और दोनों लड़के भी हँसने लगे थे।

: २ :

प्रज्ञा इत्यादि अभी कुछ ही दूर गई थी कि सरस्वती ने गम्भीर भाव में कहा, "देखो बेटी ! 'जहाँ आगा-पीछा देखे नहीं, लेते पिछला नाम' वहाँ नहीं जाना चाहिए।"

माँ के इस लोकोक्ति को कहने से प्रज्ञा भी गम्भीर हो गई, परन्तु कमला अपने स्वभाववश बोल उठी, "और दूसरों का लाल माथा देख अपना माथा फोड़ लेना चाहिए ?"

सरस्वती ने कहा, "मगर जहाँ बेइज्जती हो, वहाँ जाने से खुद्दारी को ठेस पहुँचती है।"

बात प्रज्ञा ने की। उसने कहा, "माँ ठीक कहती हैं। अपमान किये स्थान पर न जाना ही उचित है, परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि अपने मन में किसी के प्रति द्वेष उत्पन्न होने देना चाहिए। पिताजी अनुभव तथा आयु में हमसे अधिक हैं। इस कारण उनकी बात सदैव शान्तचित्त हो सुननी चाहिए। मानें या न मानें, बात दूसरी है। उसके लिए काल, स्थान तथा हालात निर्णय करते हैं। मैंने उस समय यही ठीक समझा कि वहाँ से चले आना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रही पुन: वहाँ जाने की बात ? वह मैं इस समय नहीं कह सकती। हाँ, इतना समझ गई हूँ कि संसार की अनेक ऊँची-नीची स्थितियों में यह भी एक है।"

"परन्तु भाभी ! यह तो विचार करना ही चाहिए कि इस दुर्घटना में दोष किसका है ?"

"नहीं, इस प्रकार नहीं। विचार करने की बात यह है कि हमारे व्यवहार में कोई दोष तो नहीं है। दूसरे के मनोद्गारों पर चर्चा तथा चिन्तन व्यर्थ है।

"इस समय, मेरे विचार में पिताजी में आसुरी व्यवहार का प्रभाव बढ़ गया है। मेरा अभिप्राय है कि उनके दिमाग में नास्तिक्य पचास प्रतिशत से अधिक हो गया है और आस्तिक्य पचास प्रतिशत से कम रह गया है। यदि कहीं आस्तिक्य शत-प्रतिशत हो जाता तो सम्भव है वह छड़ी लेकर मुझे पीटने लग जाते। तब स्थिति अति भयंकर हो जाती। अत: ईश्वर का धन्यवाद है कि नास्तिक्य शत-प्रतिशत नहीं हुआ।

"मैं समझती हूँ कि हममें आस्तिक्य उभर रहा था। इसी कारण जब भैया ने कहा कि मैं क्लीनिक देखूँ तो मैं तैयार हो गई थी और पीछे माताजी के कहने पर मिठाई लेने से इनकार नहीं कर सकी।

"मेरी आँखें तरल होने लगी थीं, परन्तु यह अवस्था एक-दो क्षण तक ही रही। कारण यह कि एक आस्तिक कभी निराश नहीं होता। उसका आश्रय-स्थान, मेरा अभिप्राय है परमात्मा, स्थिर है। एक आस्तिक यह विश्वास रखता है कि जब भी वह असफल होता है तो उसके किसी कार्य में त्रुटि के कारण ही होता है। अत: उसे सदैव अपनी त्रुटियों की ओर ही देखना चाहिए और उन्हें दूर करने का यत्न करते रहना चाहिए।"

इस समय वे अपनी कोठी के द्वार पर जा पहुँची थीं। सब देखकर हैरान रह गये कि वहाँ अब्बाजान, नगीना की माँ के साथ टैक्सी से उतर टैक्सी वाले को भाड़ा दे रहे हैं। सरस्वती तो उन्हें देख घबरा उठी। कमला के मुख की मुद्रा दृढ़ हो गई थी।

सरस्वती ने समीप पहुँच कह दिया, "आदाब अर्ज़ करती हूँ।"

अब्दुल हमीद क्रोध के घोड़े पर सवार था। उसने सरस्वती के आदाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का उत्तर नहीं दिया। मगर सालिहा अपनी लड़की की ओर देखकर बोली, "और तुम क्या करती हो यहाँ ?"

"अम्मी ! भीतर चलो तो सब दिखा दूंगी जो कुछ पिछले तीन महीने में मैंने किया है ?"

भाड़ा देने के उपरान्त अब्दुल हमीद ने प्रज्ञा की ओर देखा और कहा, "यह मकान पर क्या लिख दिया है। मैं दो मिनट तक समझ ही नहीं सका कि तुम्हारी शरारत यहाँ तक पहुँच गई है ?"

प्रज्ञा ने ड्राइंगरूम में पहुँचते ही घंटी बजाई तो उनका सेवक रमजान आ पहुँचा। प्रज्ञा ने कहा, "जल्दी से कॉफी तैयार कर पहले ले आओ।"

नौकर गया तो अब्दुल हमीद ने कहा, "यासीन को टेलीफोन कर दो कि मैं आया हूँ और रात के प्लेन से लौट रहा हूँ। सीटें बुक की हुई हैं। मैं उससे तुरन्त मिलना चाहता हूँ।"

प्रज्ञा ने टेलीफोन का चोंगा उठाया और दुकान का नम्बर घुमा दिया। सम्बन्ध बना और वहाँ घंटी खड़कने लगी तो प्रज्ञा ने कहा "अब्बाजान ! आइए और बात आप खुद कर लीजिए।"

अब्दुल हमीद आया और चोंगा कान से लगा, जब उधर से बोलने की आवाज आई तो पूछने लगा, "कौन बोल रहा है ?"

"ज्ञानस्वरूप, मौडर्न क्रौकरी ऐण्ड हाउस-वेयर्स।"

"यह किसका नम्बर घुमा दिया है ?" अब्दुल हमीद ने प्रज्ञा को डांट के भाव में पूछा। इस समय चोंगे में आवाज आई, "अब्बाजान ! मैं यासीन बोल रहा हूँ।"

"तो तुम यासीन हो ?"

"जी हाँ। यासीन उर्फ ज्ञानस्वरूप। मैंने दुकान का नाम बदल लिया है।"

"और मकान का नाम भी बदल दिया है ?"

"जी ! तो आप मकान से बोल रहे हैं ? लेकिन अब्बाजान ! आप डांट किसको रहे थे ? मैं तो आपकी डांट सुनने का आदी हूं न ? बस, उसी कारण समझ गया था कि आप हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्दुल हमीद ने कहा, "देखो ! मैं अभी यहाँ पहुँचा हूँ और रात नौ बजे के प्लेन से बम्बई लौट रहा हूँ। मुझे वहाँ बहुत जरूरी काम है। तुम फौरन यहाँ चले आओ। मैं तुमसे मिलने आया हूँ।"

"अब्बाजान ! आ रहा हूँ। अभी दो-तीन मिनट में यहाँ से चल दूँगा।"

इस समय लगभग एक बजा था। प्रज्ञा ने कॉफी सबके लिए प्यालों में डालते हुए कहा, "खाना बनने में कुछ देर थी। हम कहीं खाने के लिए गए हुए थे और वहाँ से बिना खाये ही लौट आये हैं।"

"कहाँ गए थे ?"

"कहीं, किसी आप जैसे भले मनुष्य के निमन्त्रण पर। परन्तु वहाँ से किसी वजह से बिना खाये ही लौटना पड़ा है।"

"तुम लोगों के साथ ऐसा ही होना चाहिए।" अब्दुल हमीद ने कह दिया।

"मगर अब्बाजान ! आपके साथ वैसा नहीं होगा। मैंने रसोईये को कह दिया है कि आपकी मन चाहती डिशेज़ बन जाएँ।"

"अच्छा ! तुम बताओ मोहतरिमा···क्या नाम रख बैठी हो ?"

"सरस्वती।" प्रज्ञा की सास ने कह दिया।

"और सरवर नाम में क्या खराबी थी ?"

"वह एक खाविन्द से छोड़ी हुई बीवी का नाम था।"

"ओह ! तो अब सरस्वती को कोई नया खाविन्द मिल गया है ?"

"हज़रत, नहीं। कहते हैं सरस्वती गैर-शादीशुदा ही थी। उसका एक प्रिय था। वह था ज्ञान और यहाँ वह ज्ञान मेरा पुत्र है।"

"प्रिय का क्या मतलब ?"

"अज़ीज़, प्यारा और आँखों का तारा।"

"और खाविन्द नहीं मिला ?"

"सरस्वती के भाग्य में खाविन्द नहीं है।"

"तो क्या फायदा हुआ है ?"

"फायदा हुआ है ज्ञानस्वरूप जैसा पुत्र।"

"वह तो हमने पैदा किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह पके फल की तरह पेड़ से अलग हो चुका है। इस पर भी उस पेड़ की हर रोज कदम-बोसी करता है, जिससे वह अलग हुआ था।"

"यह सब बकवास है। सुनो, तुम सबको अपने साथ ले जाने के लिए आया हूँ।"

"किस-किसको ?"

"सरवर, नगीना और यासीन को।"

"तो ले चलिए। मैं अपने पुत्र के साथ ही चलूँगी।"

"और खाविन्द के साथ नहीं ?"

"खुदा की कसम खाकर बताइए। कब से खाविन्द के ओहदे से इस्तीफा दे रखा है ?"

खुदा की कसम की बात सुन अब्दुल हमीद कुछ कहता-कहता रुक गया। कुछ विचार कर उसने कहा, "खाविन्द तो अब भी मैं हूँ। मैंने तुम्हें तलाक नहीं दिया था।"

"मगर मैंने आपको तलाक दे रखा है।"

"कायदे कानून से यह नहीं हो सकता।"

"यह तो अदालत बतायेगी कि उसकी सरकार का कानून क्या कहता है। इसी वास्ते कि मैं अब मुसलमान नहीं रही। आपकी शरअ अब मुझ पर हावी नहीं हो सकेगी।"

अब कमला ने कह दिया, "अब्बाजान ! मैं बम्बई नहीं जा रही।"

"और यहाँ किसके पास रहोगी ?"

"भाभी प्रज्ञा के पास।"

"मगर यासीन जाएगा तो उसे भी चलना होगा।"

"मुझे पता है, न तो दादा जायेंगे और न भाभी ?"

"ओह ! तुम उनकी मुहाफिज बन रही हो यहाँ ?"

"मुहाफिज नहीं अब्बाजान ! मैं उनके मन की बात जानती हूँ और कहती हूँ कि वह बम्बई जैसे दोजख में नहीं जायेंगे।"

"मगर हमारा मकान तो बहुत खुली हवा में है।"

"खुली और हवा के वह मायने यहाँ नहीं समझे जाते तो बम्बई में समझे जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहाँ क्या समझा जाता है और वहाँ क्या समझा जाता है ?" अब्दुल हमीद ने पूछ लिया।

"अब्बाजान ! हवा का मतलब यहाँ 'ऐयर' से नहीं लिया जाता। उससे यहाँ ख्यालात का माहौल समझा जाता है। बस, उसी में यहाँ और वहाँ में फरक है। भाईजान यहाँ के माहोल को बेहतर समझते हैं।"

"तब तो पहले उसको समझाना पड़ेगा ?"

"देखिये हजरत !" सालिहा ने अपने खाविन्द को कह दिया, "आप अपने साहिबजादे को समझाइये या न समझाइये। मेरा इससे कोई भी ताल्लुक नहीं। यह मेरी लड़की है। मैं इसे अपने पास रखना चाहती हूँ।"

प्रज्ञा ने वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "इसके भाईजान को आने दीजिए। बात उनसे ही करियेगा। आपके हक-हकूक के ऊपर भी कुछ बंदिश है। वह लाइंतहा नहीं है ?"

इस चुनौती को सुन अब्दुल हमीद क्रोध से उबल पड़ा। उसने कहा, "तुम जैसी बदतमीज औरत से मैं अपने लड़के की शादी मंजूर नहीं करता।"

"और आपने मंजूर कब की है ? आज तक श्वसुर की तरफ से मुझे एक पैसे की भी रवादार नहीं हुई है।"

कमला उठी और टेलीफोन के पास रखी चौकी के पास जा टेलीफोन डायरेक्टरी देखने लगी।

"क्या देख रही हो ?" नगीना की माँ ने पूछ लिया।

"अम्मी ! पुलिस स्टेशन का नम्बर देख रही हूँ।"

"किसलिए ?"

"अब्बाजान को फौजदारी से रोकने के लिए। मगर अभी टेलीफोन नहीं कर रही। अभी तो सिर्फ नम्बर देख रही थी।"

प्रज्ञा की हँसी निकल गई। उसने हँसते हुए कहा, "अब्बाजान ! इस लड़की की तेज रफ्तार से चलने वाली अक्ल की वजह से ही मैं इसे मुहब्बत करने लगी हूँ।"

"मैंने इसके लिए बम्बई में एक रिश्ता देखा है।"

"मैं इसमें दखल नहीं दूंगी। मगर बारात यहाँ दिल्ली में आएगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शादी इसके भाईजान करेंगे ।"

"तो बहुत रुपये पैदा कर लिए हैं उसने ?"

"क्या पैसे वालों की लड़कियों की ही शादी होती है ?"

"हाँ ! अगर दामाद किसी अमीर खानदान का हो तो ?"

"पर अब्बाजान ! वह अमीर कहने का ही तो हो सकता है, जो अपने श्वसुर से बहुत बड़ी दहेज की उम्मीद रखता हो ?"

"तुम कंगलों की बेटी क्या जानो !"

प्रज्ञा हँसी तो कमला भी हँस पड़ी । कमला ने कह दिया, "भाभी ! कंगलों के घर की मिठाई अब्बाजान को खिला दो ।"

'तो ले आओ ।" प्रज्ञा ने कहा ।

अभी तक तो वे कॉफी पी रहे थे । अब सब के सामने प्लेटों में बिस्कुटों के साथ कमला ने बर्फी की एक-एक टुकड़ी रख दी हैं ।

"अब्बाजान ! यह मेरे डिब्बे की है ।"

"तो तुम प्रज्ञा के पिता के घर से आई हो ?"

इस पर प्रज्ञा और सरस्वती भी हँसने लगीं । अब्दुल हमीद ने पूछ लिया, "इसमें हँसने की कौन-सी बात है ?"

उत्तर प्रज्ञा ने दिया, "अब्बाजान और पिताजी में कोई फर्क नहीं दिखाई दिया । एक ने अपने लड़के को कहा था कि मुझे पीट-पीटकर घर से निकाल दे और दूसरे ने डाँट-डपट कर घर से निकाल दिया है । मैं दोनों को एक ही किस्म का अमाल समझती हूँ ।"

इस समय पाचक आया और बोला, "हुजूर ! खाना तैयार है ।"

"क्या बनाया है ?" अब्दुल हमीद ने पूछा ।

"बहनजी ने कहा था चिकन बरियानी ।"

"हाँ ! भूख तो लगने लगी है ।"

सरस्वती ने कहा, "जरा ठहरो ! बाबू साहब दुकान से आ रहे हैं । वह भी खायेंगे ।"

पाचक भीतर चला गया । कमला अब पुनः टेलीफोन के पास जा बैठी थी । पुलिस चौकी का नम्बर उसने एक कागज के टुकड़े पर लिख कर अपने सामने रख लिया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्दुल हमीद ने कहा,"यह लड़की तो हमें हवालात में भेजने लिए के तैयार बैठी मालूम होती है।"

कमला हंस पड़ी। उत्तर सरवर ने दिया, "यह अब मेरी लड़की बन गई है। आप तो इसे यासीन को दे चुके हैं। उसने बीवी बनाने की जगह इसे बहन बना लिया है।"

इस समय कोठी के बाहर मोटर की आवाज आई तो सेवक द्वार की ओर भागा और ज्ञानस्वरूप का ब्रीफकेस उठा उसके पीछे-पीछे ड्राइंगरूम में आ गया।

सरस्वती ने कहा, "रमजान! खाना लगाओ। हम वहीं आ रहे हैं।"

"तो आपने अभी खाना नहीं खाया ?" ज्ञानस्वरूप ने पूछा।

"आइये!" प्रज्ञा ने उठते हुए कहा, "भूखे पेट बातचीत नहीं हो सकती।" सब उठकर खाना खाने के कमरे में चले गये।

खाने के लिए मेज पर प्लेटें लगी थीं। सब बैठ गये और अपनी-अपनी प्लेटों में डिशों में से ले-लेकर डालने लगे। अब्दुल हमीद ने बेयरा को कहा, "तुम बाहर ठहरो। जरूरत होगी तो बुला लेंगे ?"

बेयरा बाहर गया तो अब्दुल हमीद ने बता दिया—"यासीन! मैं तुम सबको बम्बई ले जाने के लिए आया हूँ।"

"वहाँ क्या है ?"

"मैं अपने काम का तुम्हें मैनेजर बनाना चाहता हूँ।"

"मगर मैं आपका तस्करी का काम तो करूँगा नहीं।"

"वह मैंने अलहदा कर दिया है। उस काम का एक अलहदा मैनेजर मुकर्रर कर दिया है। उसी के भाई के साथ नगीना की शादी की बात हो रही है।"

"देखिये अब्बाजान! मेरी दुकान पर सवा लाख रुपये से ऊपर का माल रखा है। नित्य छः-सात हजार की बिक्री होती है। दुकान पर पाँच सेल्समैन हैं और एक मैनेजर है। चार हजार रुपये महीने का खर्चा है। साथ ही यह मकान है और फिर आप अपनी जायदाद से फारखती लिखा चुके हैं। इस सबकी मौजूदगी में मैं वहाँ नहीं जा सकूंगा।"

"मगर यहाँ के इन्तज़ामात मैं कर चुका हूँ। मेरा ख्याल है कि तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंज़ूर करो तो मैं टेलीफोन कर नये मैनेजर को यहाँ बुला सकता हूँ।"

"कौन है वह ?"

"एक है अनवर अली। वह मेरे दूसरे काम का मैनेजर है और अनवर का एक भाई सआदत अली है। उसे यहाँ तुम्हारे काम पर तैनात कर दूंगा। जो कुछ तुम्हें यहाँ से मिलता है, वह तो मिलेगा ही। सिर्फ सात सौ रुपये महीना सआदत को देने पड़ेंगे और तुमको अपने काम का दो हज़ार रुपये महीना दूंगा।"

"अब्बाजान! नहीं। जिस काम से और जिस जायदाद से फारखती लिखाई जा चुकी है, उसमें नौकरी नहीं करूँगा।

"साथ ही मेरी जिन्दगी का नजरिया बदल गया है। मैं समझ गया हूँ कि खाने-पीने से जो कुछ भी ज्यादा हो, वह खुदा के कामों पर खर्च कर देना चाहिए। इसलिए यह जो कुछ मिल रहा है, उससे ज़्यादा पाने की ख्वाहिश नहीं है। मैंने जब सब कुछ खरायत में दे देना है तो फिर उसके लिए नौकरी क्यों करूँ ?"

"तुम सबका दिमाग खराब कर दिया है इस हिन्दू छोकरी ने।" अब्दुल हमीद ने प्रज्ञा की ओर संकेत कर दिया।

उत्तर ज्ञानस्वरूप ने ही दिया, "आप तो खुद ही मुझसे अलहदा हो चुके हैं। अब इसमें मैं जो चाहूँ सो करूँ। मैं अपने खाने से ज्यादा का अपने को हकदार नहीं समझता।"

"तो बकाया किसका है ?"

"परमात्मा, मेरा मतलब है खुदा देता है और उसके नाम पर ही बस खर्च करने का विचार कर रहा हूँ। इस ख्याल के दिमाग में आये पन्द्रह दिन हुए हैं। मैंने इस फण्ड का एक अलहदा खाता खोल दिया है।"

"अच्छा! यह सुन लो। यह नगीना की माँ उसे अपने साथ ले चलने आई है।"

"यह नगीना जाने और उसका काम जाने। मैं इसे मना नहीं करूँगा। हाँ, अगर नहीं जाना चाहेगी तो मैं इसे यहाँ रखने की कोशिश करूँगा।"

इस समय कमला अपने स्थान से उठ खड़ी हुई। अब्दुल हमीद ने पूछा, "भागी कहाँ जा रही हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब्बाजान ! भागी नहीं जा रही । पुलिस स्टेशन पर टेलीफोन करने जा रही हूँ ।"

"किसलिए ?" ज्ञानस्वरूप ने विस्मय में कमला की ओर देख पूछ लिया ।

"जिससे अब्बाजान जबर्दस्ती न कर सकें । मैं यहाँ से जाना नहीं चाहती ।"

"तुम्हें यहाँ मुहम्मद यासीन से शादी के लिए भेजा था । वह कहता है कि उसने तुम्हें बहन बना लिया है । इसलिए तुम्हें बम्बई ले जाना चाहता हूँ ।"

"मगर मैं जाना नहीं चाहती ।"

"और तुम इनकार कैसे कर सकती हो ?"

"यह तो अदालत फैसला करेगी । आपको इस मुल्क के कानून का ज्ञान नहीं है क्या ?"

"मगर तुम यह भी जानती हो अथवा नहीं ?" इतना कहते-कहते अब्दुल हमीद ने अपनी जेब से रिवाल्वर निकाला और एक फायर छत की तरफ कर दिया ।

कमला इस बात की आशा ही कर रही थी । उसे मालूम था कि अब्बाजान अपना रिवाल्वर कहाँ रखा करते हैं । इस कारण उनका हाथ जेब की तरफ जाते ही वह मेज के नीचे हो गई थी और गोली छत की तरफ चली देख वह कमरे से बाहर भाग गई ।

अब्दुल हमीद उसके पीछे भागने के लिए उठा, मगर ज्ञानस्वरूप ने उसे अपनी बाँहों में दबोच लिया और उसे दबाये रखने की कोशिश करने लगा ।

अब्दुल हमीद कह रहा था, "तुम सब यहाँ काफिर हो गये हो । और मैं अपने खून-पसीने से पैदा किये रुपये से काफिरों की परवरिश करना नहीं चाहता ।"

इस वक्त भी ज्ञानस्वरूप ने पिता को बाँहों में दबोचा हुआ था और वह छूटने के लिए छटपटा रहा था । दूसरे सब खाना छोड़ उठ खड़े हुए थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सालिहा खाविन्द को छुड़ाने के लिए ज्ञानस्वरूप पर वार करने लगी तो सरस्वती ने उसकी बाँह पकड़ ली। उन दोनों में हाथापाई होने लगी। प्रज्ञा अपनी सास की सहायता पर जा पहुँची और सालिहा को रोकने में सफल हो गई।

ज्ञानस्वरूप ने अब्बाजान के हाथ से रिवाल्वर छीन लिया। इस हाथा-पाई में एक गोली और चली। वह सामने रखी बिरयानी की डिश को लगी और वह चूर-चूर हो गई। वह चीनी की बनी थी। पिस्तौल छिन जाने पर अब्दुल हमीद बोला, "यासीन ! अब उसे कह दो, पुलिस बुलाने की जरूरत नहीं है।"

: ३ :

कमला ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, "मगर पुलिस तो आ रही है।"

अब अब्दुल हमीद को डर लगने लगा। उसके जी में आया कि वहाँ से भाग जाये। मगर कमला खाने के कमरे के द्वार पर खड़ी थी। बेयरा भी गोलियों की आवाज सुन वहाँ आ खड़ा हुआ था। उसने देखा था कि उसके मालिक ने अपने वालिद के हाथ से पिस्तौल छीन ली है।

ज्ञानस्वरूप के मन में पिता को बचाने का विचार आया, मगर वह निश्चय नहीं कर सका कि उसको क्या करना चाहिए। वह प्रश्न-भरी दृष्टि में प्रज्ञा की ओर देखने लगा तो प्रज्ञा ने कह दिया, "जब पुलिस आ रही है तो आने दीजिए। शेष बात पुलिस के सामने ही हो सकती है।"

"अब्बाजान ! आपने बहुत बड़ी गलती की है जो पिस्तौल निकाल लिया था और फिर गोली चलाकर धमकाया था।"

सब इस घटना पर चिन्तित थे। सरस्वती ने ज्ञानस्वरूप से पूछा, "अब क्या होगा ?"

"अम्मी ! तुम क्या चाहती हो ?"

"ये तुम्हारे अब्बा हैं।"

"ठीक है, अम्मी ! समझ गया हूँ। कोशिश करूँगा।"

इतना कह वह पिता को कहने लगा, "अब्बाजान ! कुछ जेब में है अथवा नहीं ? पुलिस तो पुलिस ही है। जैसे वहाँ तस्करी का माल छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान बचाया करते थे, वैसे ही यहाँ भी हो सकेगा।"

अब्दुल हमीद के माथे पर पसीने की बूंदें दिखाई देने लगी थीं। उसने अपने मन की बात कर दी, "यहाँ मेरी वाकफियत नहीं है ?"

"मैं वाकफियत करा दूंगा।"

अब अब्दुल हमीद कुर्सी पर बैठ सामने गिलास में रखा पानी पीने लगा।

ज्ञानस्वरूप हाथ में पिस्तौल लिए वहाँ अब्बाजान के सिर पर खड़ा था।

सब चुपचाप नाटक का अन्त देखने के लिए कुर्सियों पर बैठ गये। सिर्फ़ कमला और बेयरा दरवाजे में खड़े थे। कमला ने पुलिस को कहा था, "गोली चल रही है। जल्दी आइये।" उसने मकान का नम्बर बता दिया था।

पाँच मिनट में ही पुलिस आ खड़ी हुई। बाहर घण्टी बजी तो खान-सामा रमज़ान बाहर भागा और आधे मिनट में पाँच पुलिस वालों को खाने के कमरे में ले आया।

आगे-आगे सब-इंस्पेक्टर हाथ में पिस्तौल लिए हुए था। आते हुए रमज़ान ने उसको बता दिया था कि खानदान के भीतर झगड़ा हुआ है।

सब-इंस्पेक्टर ने खाने के कमरे में दाखिल होते ही कहा, "हैंड्ज़ अप।" ज्ञानस्वरूप ने पिस्तौल उसको देने के लिए आगे कर दिया।

"टेलीफोन किसने किया था ?" सब-इंस्पेक्टर ने पूछा।

"मैंने किया था।" कमला ने अब भी दरवाजे के समीप खड़े हो कहा।

"क्या मुआमला है ?"

"ये मेरे अब्बाजान हैं और यह मेरी अम्मी हैं। ये कुछ जबर्दस्ती करना चाहते थे। जब मैं मानी नहीं तो अब्बाजान इस पिस्तौल को निकाल मुझ पर हमला करने लगे।

"यह मेरे बड़े भाई हैं। इन्होंने मेरी जान बचाने के लिए अब्बाजान को बाँहों में दबोचा तो एक गोली छत को लगी है और दूसरी की आवाज मेरे टेलीफोन करते वक्त आयी थी।

"मैं जब टेलीफोन कर लौटी थी तो अम्मी के सिर पर भी चोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयी हुई थी और अब्बाजान को भाईसाहब बाहों में दबोचे हुए थे ।"

"हां साहब ! आप क्या कहते हैं ?" थानेदार ने अब्दुल हमीद से पूछा ।

"मैं अलहदा में बयान दूंगा ।"

"तो चलिए थाने में । वहाँ यह हो सकेगा ।"

"यहाँ होना ज्यादा ठीक रहेगा । क्यों यासीन ! क्या कहते हो ?" अब्दुल हमीद ने ज्ञानस्वरूप की ओर देखकर कहा ।

"यह तो इंस्पेक्टर साहब की मर्जी पर है ।"

"तो चलिए ! कहाँ बात करना चाहते हैं ?"

अब्दुल हमीद उठा और इंस्पेक्टर को तथा लड़के को लेकर खाने के कमरे से निकल गया ।

एक मिनट के बाद ज्ञानस्वरूप वापस आ गया और अपनी छोटी अम्मी सालिहा से बोला, "अब्बाजान कह रहे हैं कि बम्बई लौटने के लिए तैयार हो जाओ ।"

वह उठ खड़ी हुई और सब खाने के कमरे से बाहर निकल ड्राइंगरूम में चले आये ।

पाँच मिनट में एक सिपाही आया और ज्ञानस्वरूप को बुला कर स्टडीरूम में ले गया ।

इंस्पेक्टर का ज्ञानस्वरूप को कहना था, "आपके वालिद साहब जो हुआ है, उस पर अफसोस ज़ाहिर कर रहे हैं । आप क्या चाहते हैं ?"

"अगर यह और मेरी छोटी अम्मी यहाँ से अभी चले जाते हैं और आपको यकीन है कि ये फिर इस किस्म की हरकत नहीं करेंगे तो आप जानें और ये दोनों जानें । मैं इससे प्रसन्न रहूँगा ।"

पाँच सिपाहियों को एक-एक सौ रुपये और सब-इंस्पेक्टर को एक हजार रुपया देना पड़ा । सब स्टडीरूम से बाहर चले आये ।

तब तक ज्ञानस्वरूप ने टेलीफोन कर टैक्सी बुला ली । खानसामा सब के लिए चाय ले आया । थानेदार इत्यादि को चाय पिला विदा करने से पहले अब्दुल हमीद और सालिहा को विदा कर दिया गया । तदनन्तर पुलिस गई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सब चले गये तो सरस्वती ने पूछा, "यह हुआ क्या है ? मुझे कुछ समझ नहीं आया ।"

"अम्मी ! समझ तो आया है मगर इसका ख्याल करने से निहायत शर्म महसूस करती हूँ ।" कमला का कहना था ।

प्रज्ञा ने इस घटना का विश्लेषण कर दिया । उसने बताया कि कोई स्मगलर अब्बाजान को राय देने वाला पैदा हो गया है । इन्होंने बताया है कि कोई अनवर अली है जिसे अब्बाजान ने अपने तस्करी के काम का मैनेजर नियुक्त किया है ।

"बस, यह सब उसी की योजना है । शुरू से अन्त तक बलपूर्वक हरण करने का यत्न मानो कमला तस्करी का सोना है । अब पकड़े गए हैं तो पुलिस को ले-देकर छूट गये हैं । यह उनका नित्य का खेल है ।

"और अम्मी ! इसके मूल में है आसुरी स्वभाव । इस संसार में दो स्वभाव के मनुष्य मिलते हैं । दैवी, जो परमात्मा को मानते हैं और उसके बनाये तथा चलाये हुए नियमों का पालन करते हैं । दूसरे हैं असुर स्वभाव वाले । सब-कुछ अपने लिये ही करने वाले । इनके पास जब बल अथवा बल का दूसरा रूप अर्थात् धन आ जाए तो ये समझते हैं कि इनसे ऊपर संसार में कोई नहीं ।"

"बहुत खतरनाक है यह इन्सान का बच्चा !"

"हाँ ! परन्तु इनका अन्त भी बहुत ही बुरा होता है ।"

"मगर खुदा इनको रोक क्यों नहीं देता ?" कमला का प्रश्न था ।

"इसलिए कि परमात्मा ने इन सबको अक्ल दी है और फिर शक्ति और धन दिया है । साथ ही कह दिया है कि इन दोनों महान् शक्तियों का प्रयोग करते हुए यज्ञ करो । यज्ञ का अभिप्राय है दूसरों की भलाई । यदि परमात्मा की दी हुई शक्ति का दुरुपयोग करोगे तो फिर उसका वैसा ही फल पाओगे ।"

"परन्तु इन ताक़तों का गलत इस्तेमाल करते वक्त परमात्मा इनका हाथ क्यों नहीं पकड़ लेता ?"

"इसका मतलब यह होता कि इन्सान ने जो शक्ति और अक्ल अपने पूर्वजन्म के कर्मों से प्राप्त की है, उसे छीन लेता । क्या यह अच्छा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता ?

"देखिए अम्मी ! यह हमारा खानसामा रमज़ान है। यह मेहनत से काम करता है। खाना बहुत स्वादिष्ट बनाता है और चौबीस घण्टे हमारी खिदमत करता है। महीने के उपरान्त हम इसे सवा सौ रुपए वेतन देते हैं।

"जिस दिन इसको वेतन मिलता है, उस दिन शराब पी बदमस्त हो यह किसी लड़की को पकड़ कर मुँह काला करने चल पड़ता है। यदि उसको दिया हुआ वेतन उससे शराब की दुकान पर जाते समय हम छीन लें तो फिर उसका वेतन नहीं दिया ही माना जाएगा। वेतन देने का अर्थ ही यह है कि उसको यह अपनी रुचि अनुसार व्यय करने की स्वीकृति हो।

"हम यह कर सकते हैं कि जब वह पहले वेतन का दुरुपयोग कर यहाँ आए तो उसे नौकरी से निकाल दें। परन्तु पहले किए काम की उजरत तो उससे छीन नहीं सकते।"

कमला को अभी भी सन्तोष नहीं हुआ। उसने कहा, "मगर सरकार यही तो कर रही है ?"

"क्या कर रही है ?"

"जब सरकार कहती है कि धनी लोग अपने धन से गरीबों की उन्नति का मार्ग रोक रहे हैं और वह उनके कामों को 'नैशनलाईज़' कर रही है तो दिये वेतन को वापस लेना ही तो है।"

प्रज्ञा मुस्करा रही थी। वह समझ रही थी कि कमला की बुद्धि का विकास हो रहा है जो वह एक घटना से दूसरी का नाप-तोल कर रही है। सरस्वती को यह तो पता था कि सरकार जब किसी कारण जनता पर टैक्स लगाती है तो एक प्रकार से उसकी कमाई को ही छीनती है। इस कारण वह चुप कर गयी। परन्तु प्रज्ञा ने दोनों में अन्तर बता दिया।

उसने कहा, "देखो कमला ! यह इस प्रकार नहीं, जैसा तुम समझती हो। ऐसा वे सरकारें करती हैं जो परमात्मा को नहीं मानतीं। ये सरकारें पुरस्कार भी अपनी इच्छा पर देती हैं और किसी व्यक्ति से छीनती भी अपनी मर्ज़ी से हैं।

"जब कोई सरकार यह नहीं जान सकती कि क्यों एक व्यक्ति अनायास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही धनवान हो रहा है तो वह समझता है कि उस व्यक्ति ने कहीं चोरी की है अथवा डाका डाला है। ये अधिकारी नहीं जानते कि इस जन्म में कभी-कभी पूर्वजन्म के कर्मफल भी शामिल हो फल देने लगते हैं। वे सरकारी कर्मचारी जब किसी को किंचित्‌मात्र प्रयत्न से अपार फल प्राप्त करता देखते हैं तो यह समझते हैं कि उसने डाका डाला है अथवा कहीं धोखा-धड़ी की है।"

अब फिर सरस्वती के मन में संशय उत्पन्न हो गया। उसने पूछ लिया, "यह भी तो होता ही है कि लोग चोरी करते हैं, डाका भी डालते हैं। फिर कैसे भेद-भाव किया जाए कि यह धन पूर्वजन्म के फल से मिला है और इस जन्म में चोरी, डाका डालने से नहीं मिला।

"ज्ञान के अब्बाजान की बात देख लो। यह यकीनन कहा जा सकता है कि यह चोरी करते हैं। अब तुम यह भी कह सकती हो कि यह पूर्वजन्म के फल से धनी हुए हैं और इनका धन चोरी का है, इसमें कुछ शक नहीं।"

"अम्मी! आप कहती तो ठीक हैं, परन्तु चोरी करते समय वह पकड़े नहीं जाते तो इस कारण नहीं कि उनके कर्मों में बचना लिखा है, बल्कि इसमें कारण यह है कि वर्तमान राज्य-प्रणाली में दोष है।

"वही रमजान के वेतन और शराब पीने का उदाहरण लिया जा सकता है।

"रमजान को वेतन तो उसकी महीना-भर की मेहनत पर मिला है। मगर धन से यदि वह बलात्कार करता है, तो कानून के खिलाफ करता है। इस कारण वह उस वेतन से जो उसे महीना-भर मेहनत करने से मिला है, बलात्कार कर कानून भंग ही करता है।

"यह दोष उस वेतन का नहीं जो उसको हमने दिया है। वरन् यह सरकार का दोष है जो उसे बलात्कार करने से रोक नहीं सकी। इस बलात्कार में रमजान दोषी तो है ही। उसे उसका फल मिलना ही चाहिये, परन्तु यह फल उसका वेतन छीन लेने से सम्बन्ध नहीं रखता। न ही हम वेतन देने वाले अपराधी हैं।"

"तो फिर होना क्या चाहिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अम्मी ! यह हमारी तथा सब देशों की सरकारों को समझ लेना चाहिये कि कितना भी बढ़िया गुप्तचर विभाग और कितना भी बड़ा पुलिस महकमा हो, जनता की संख्या और सामर्थ्य राज्य से अधिक होती है। इस कारण अपराधों को रोकने का सबसे प्रभावी उपाय जनता को शिक्षा देना है। जब तक लोगों के मन में स्वयं अपराध से ग्लानि नहीं उत्पन्न होती, तब तक यह रुक नहीं सकता। इस कारण अपराधों को रोकने का एक ही उपाय है। वह यह कि शिक्षा में धर्म पालन की रुचि उत्पन्न की जाए। इसमें परमात्मा पर विश्वास सबसे बड़ी बात है।

"जब मनुष्य के मन पर यह विश्वास बैठ जाये कि वह कोई भी काम करे, उसको देखने वाला वहाँ कोई सदा उपस्थित होता है और वह उस कर्म का अच्छा अथवा बुरा फल देता ही है तो वह उस कर्म को करने से पूर्व उसके फलाफल पर विचार करेगा ही।

"अम्मी ! यह बिना परमात्मा पर विश्वास पैदा किए नहीं हो सकता। और यह बात वर्तमान सरकारें कर नहीं रहीं। इसमें कारण यह कि प्रायः सब देशों में शिक्षा में वहाँ की सरकारें हस्तक्षेप करती हैं। क्योंकि सरकार अपने को सैक्यूलर कहती है और सैक्यूलर का अर्थ सरकार समझती है कि परमात्मा का स्वीकार न करना। तभी तो अपने भारत देश के संविधान में परमात्मा के अस्तित्व के विषय में एक शब्द भी नहीं।

"संविधान के प्राक्कथन में यह कहा है कि राज्य प्रजातन्त्रात्मक, समाजवादी और सेक्यूलर होगा, परन्तु यह नहीं कहा कि यहाँ परमात्मा को मानने वालों का राज्य होगा।"

"इस पर तो हिन्दू-मुसलमान लड़ पड़ते ?"

"क्यों ? मैं तो समझती हूँ कि हिन्दू-मुसलमान, दोनों परमात्मा को मानते हैं। फिर यह क्यों लड़ पड़ते ?"

बात सरस्वती ने आगे चलायी, "क्योंकि मुसलमान मानते हैं कि 'ला इलाहा इल्लिल्ला मुहम्मद रसूल अल्ला।' "

"परन्तु अम्मी ! मैं तो पहली बात मानने के लिए कह रही हूँ, दूसरी नहीं। दूसरी बात कि कोई गुरू नानक को भव-सागर में जहाज कहे अथवा हज़रत मुहम्मद को कहे, इससे सरकार का सरोकार नहीं होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये, हिन्दुओं में पार उतारने वाले गुरू तो अनेक हैं, मगर वे इसके लिए लड़ते नहीं। मुसलमान क्यों लड़ते हैं ? यह मैं उनके विचारों में दोष मानती हूँ। सुना है पाकिस्तान में कुछ वर्ष हुए लाखों अहमदियों को मार डाला गया था। सिर्फ इसलिए कि वे अपने पीर मुरशिद को पैगम्बर मानते हैं। वे कुरान को मानते हैं, मगर उसका अनुवाद वे दूसरी तरह करते हैं।

"मगर ऐसा हिन्दुओं में नहीं है। मैं आपको बताती हूँ। हमारे एक बहुत विद्वान् स्वामी शंकराचार्य हुए हैं। वह मानते हैं कि इस संसार में परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं। जो हम को भिन्न-भिन्न भेदभाव दिखाई देता है, वह हमारे अज्ञान के कारण है।

"इसके अतिरिक्त एक अन्य विद्वान् रामानुजाचार्य हुए हैं। वे मानते हैं कि प्रकृति और जीवात्मा भी परमात्मा की भाँति सदा रहने वाले तत्त्व हैं। परन्तु किसी भी शंकर के अनुयायी ने आज तक रामानुज के किसी अनुयायी की हत्या नहीं की।

"इसी प्रकार राम-भक्त और कृष्ण-भक्त हैं। शिव को मानने वाले और दुर्गा भवानी को मानने वाले भी हैं। परन्तु ये हिन्दू एक दूसरे की हत्या नहीं करते।

"इसका अर्थ मैं यह समझी हूँ कि झगड़ा परमात्मा को मानने न मानने का नहीं, झगड़ा है रसूल को मानने का।

"रसूल के मानने से सरकारें पृथक् रह सकती हैं। मगर परमात्मा, जो एक वैज्ञानिक तथ्य है, उससे पृथक् होकर सरकार अपनी मूर्खता ही प्रकट करती है।"

सरस्वती यह जानती थी कि प्रज्ञा बात युक्ति-युक्त करती है। उसका जवाब नहीं दिया जा सकता।

: ४ :

पण्डित रविशंकर दिन-प्रतिदिन अधिक और अधिक अस्थिर स्वभाव के होते जाते थे। महादेवी यह तो जानती थी कि यह वृद्धावस्था के कारण है, परन्तु उनको कोई रोकने वाला घर पर न होने के कारण वह कुछ अनिष्ट भी कर सकते हैं, ऐसी आशंका उसके मन में बढ़ रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमाशंकर अपने छोटे भाई शिवशंकर की यह बात सुन कि पिताजी ने उसे कहा है कि वह नाराज हो चले जा रहे हैं, समझ रहा था कि क्रोध शान्त हो रहा है । जिस व्यक्ति को यह समझ आ गया हो कि वह नाराज है तो इसका अर्थ यह होता है कि उसकी नाराजगी कम हो रही है और वह अपनी मानसिक स्थिति को समझने लगा है । क्रोध में तो उन्माद का अंश रहता है ।

इस कारण उमाशंकर ने कहा, "माताजी ! दस मिनट तक यहीं ड्राइंगरूम में ही बैठते हैं । तब तक पिताजी लौट आयेंगे और भोजन उनके आने पर ही करेंगे ।"

इसके उपरान्त उमाशंकर ने बात बदल दी । उसने शिव की पढ़ाई की बात आरम्भ करते हुए पूछा, "अब आगे क्या करने का विचार है ?"

"दादा !" शिव ने कह दिया, "कालेज के प्राध्यापकों का ज्ञान बहुत ही सीमित होता है, और साथ ही उनकी अपनी मनोवृत्ति से रंगा हुआ होता है ।

"इस पर भी मैं एम० ए० में प्रवेश लूंगा । यद्यपि दो वर्ष तक कालेज की चक्की नहीं पीस पाऊँगा । उससे पहले ही मैं जीवन-कार्य आरम्भ कर दूंगा ।"

"और वह, मेरा मतलब है कि जीवन-कार्य निश्चय कर लिया है ?"

"हाँ, दादा ! परन्तु उस पर विचार-विनिमय अभी नहीं किया ।"

उमाशंकर प्रसन्न था, परन्तु इस समय तो वह पिता की प्रतीक्षा के काल को सामान्य करने के यत्न में लगा था ।

इसके लिये बहुत प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी । शिव अभी अपने भावी जीवन की योजना बताने ही लगा था कि रविशंकर ड्राइंगरूम में दाखिल होते हुए पूछने लगा, "तो सब भोजन कर चुके हैं ?"

महादेवी हँस पड़ी ।

"आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ?" उमाशंकर ने मुस्कराते हुए कह दिया ।

"तो तुम समझ रहे थे कि मैं शीघ्र ही लौट आऊँगा ।"

"पर हम तो समझते हैं," महादेवी ने कहा, "आपके भाग जाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कारण ही नहीं था। किसी बाहरी व्यक्ति के घर में आने पर अपने घर को छोड़ जाने में कोई कारण प्रतीत नहीं होता। यह समझ से बाहर की बात है।"

रविशंकर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "मैं नाराज़गी प्रकट कर रहा था। वास्तव में मुझे क्रोध भी नहीं था। योजनाबद्ध ढंग से मैं उसे यहाँ से भगा देने का यत्न कर रहा था। सामने के मोड़ के पीछे छुपा हुआ मैं देख रहा था कि वे जाती हैं अथवा नहीं। जब मैंने देखा कि वे तीनों अपने घर को लौट गयी हैं तो मैं वापस आ गया हूँ।"

इस पर सब हँसने लगे। पिता ने समझा कि पत्नी और लड़के उसकी चतुराई पर प्रसन्न हो हँसने लगे हैं। वास्तव में वे पिता के बचपना पर हँसे थे।

महादेवी ने कहा, "अब चलिये! भोजन ठण्डा हो रहा है।"

सब उठकर खाने के कमरे में चले गए और भोजन करने लगे।

भोजन से जब तृप्त हो गये तो महादेवी ने सेवक से कह दिया, "कॉफी बाहर ड्राइंग रूम में ले आओ।"

सब हाथ धो ड्राइंगरूम में आकर बैठे तो उमाशंकर ने कह दिया, "पिताजी तो सरकारी पेंशन-याफ्ता व्यक्ति हैं। परन्तु मेरी अभी पेंशन नहीं लगी। मैं अभी पेंशन पाने की योग्यता संचय करने का यत्न कर रहा हूँ। इस अवस्था में पिताजी! मैं जरा-जरा-सी बात पर नाराज नहीं हो सकता। इस कारण मैं आज उसके यहाँ से अपमानित कर निकाल दिए जाने के लिए उससे क्षमा माँगने जाऊँगा।"

"मगर आज जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं समझता हूँ दो-तीन दिन ठहरकर मिठाई लेकर जाना।"

"मिठाई तो मैंने उसे दे दी है।" महादेवी ने कह दिया, "मिठाई के लिए जाने की आवश्यकता नहीं।"

"पर पिताजी! मैं तो उससे क्षमा माँगने जाना चाहता हूँ।"

"पर उसका अपमान किसने किया है?"

"पिताजी! जिसने बुलाया था, वह समझता है कि उसको इस प्रकार भगाना अपमान ही था। इस कारण क्षमा माँगने मैं ही जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह कुछ नहीं। मैं जानता हूँ कि तुम क्यों जाना चाहते हो वहाँ। वही तो मेरी नाराजगी का कारण है। वह चहकने वाली बुलबुल ही तो थी जिसके कारण मैं नाराज हुआ था और अब भी हूँ। मैं उसे इस घर में नहीं आने दूँगा।"

"परन्तु पिताजी! बुलबुल तो चहकती ही है। यही तो उसका गुण होता है। इस गुण के कारण उससे नाराज होने की आवश्यकता नहीं।"

"मगर वह मुसलमान है?"

"वह क्या होता है?"

"मुहम्मद गौरी के खानदान के लोग।"

"जहाँ तक मुझे मालूम है उसका दूर-दराज का भी सम्बन्ध मुहम्मद गौरी से नहीं है। गौरी एक पठान कबीले का घटक था और यह बम्बई के खोजा की लड़की है जो पहले हिन्दू थे और पीछे कुछ-एक कारणों से मुसलमान हो गए थे।"

"वह और दुनिया-भर के मुसलमान, गैर मुसलमानों से नफरत करते हैं। इसीलिए मैं उनसे नफरत करता हूँ।"

"मगर पिताजी! वह तो मुझसे मुहब्बत करती है। जिससे मुहब्बत की जाती है, भला उससे नफरत कैसे हो सकती है?"

"मुहब्बत तुम्हें मुसलमान बनाने के लिए की जा रही है।"

"मुझे कैसे मुसलमान बना लेंगे? मैं तो एक हिन्दू माँ के पेट से पैदा हुआ हूँ। माताजी से पूछ लीजिये कि मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान हूँ।"

इस समय सेवक चार प्याले ट्रे में कॉफी के रखकर ले आया।

"कुछ भी हो," रविशंकर ने कॉफी पीते हुए कहा, "मैं तुम्हें उससे विवाह करने की स्वीकृति नहीं दे सकता।"

"मगर मैं आपकी स्वीकृति लेने के लिए विवश हूँ क्या?"

"कानून से तो नहीं, मगर मेरी तुमसे मुहब्बत का भी तो दावा है।"

"तो क्या प्रज्ञा के साथ आपकी नफरत थी जब उसने विवाह करने का फैसला किया था?" महादेवी ने पूछ लिया।

इसका उत्तर रविशंकर विचार करने लगा। उसने विचार कर एक बात कह दी, "प्रज्ञा ने तो अपने विवाह के इन्तजाम की भी बात हमें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरा मतलब है मुझे और तुम्हें बताई नहीं थी। इससे यह पता चलता है कि उसमें और उमा में फरक है। उमा ने तो तुम से पूछ लिया है कि वह क्या करे ?"

"यह बात नहीं पिताजी !" उमाशंकर ने अपने मन की बात बता दी, "प्रज्ञा ने नहीं बताया तो इसमें कारण उसका अपना हो सकता है। वह हमने उससे कभी भी पूछा नहीं और उसने बताया नहीं। क्यों माताजी ! उससे कभी पूछा है कि उसने विवाह चोरी-चोरी क्यों किया है ?"

"नहीं, मैंने कभी पूछा नहीं। इस पर भी मैंने अपने मन में विचार किया है कि मेरे पूछने पर यदि वह यह कहती कि हम उसके इस सम्बन्ध को अकारण पसन्द नहीं करते तो हम क्या कहते ? मुझे उसका यह विवाह पसन्द नहीं, परन्तु इसमें कारण समझ नहीं आया।"

"तो तुम्हें वह विवाह पसन्द नहीं न ?" रविशंकर ने पत्नी से पूछ लिया।

"जी ! पसन्द तो नहीं। मगर क्यों, यह मैं जानती नहीं और अगर वह कहती कि इसी कारण उसने बताया नहीं तो मैं झूठ बोलती नहीं और कारण बता न सकती। इसलिए मैंने पूछा ही नहीं।"

"तो यह दोष उसमें नहीं, तुम में है, जो तुम कुछ कह रही हो और उसका कारण नहीं जानती।"

"यह तो है ही। मैं अपने बहुत से कामों को करने का कारण नहीं जानती।"

"बहुत मूर्ख हो तुम !"

"जी ! इसीलिए तो आपका कहना मानती हूँ।"

"तो तुम नहीं जानतीं कि क्यों मेरा कहा मानती हो ?"

"जी नहीं ! बता दीजिए कि मैं क्यों बिना विचार किए आपकी बात मानती रहती हूँ ?"

"मैं तुम्हारा पति जो हूँ।"

"किसने कहा है यह ? एक ब्राह्मण आज से तीस वर्ष पहले आया था और बहुत से लोगों की भीड़ में मुझे कह गया था कि मैं आपकी पत्नी हूँ। बस, मैं पत्नी हो गई और आप पति हो गये। भला वह कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जो हमारे पूर्ण जीवन का फैसला कर, पचीस-तीस रुपये दक्षिणा ले चल दिया और मुझे आपके अधीन कर गया ?"

"मगर उसमें वेद-मंत्र जो बोले गये थे ?"

"और अगर अब कोई वेद-मंत्र बोलकर कह दे कि मैं आपकी पत्नी नहीं तो फिर आपका कहा मानना छोड़ सकती हूँ क्या ?"

"नहीं, मैं इसकी स्वीकृति नहीं दूंगा।"

"और आप कौन हैं ? आप उस अनपढ़ ब्राह्मण के कहने से ही तो पति बन घूम रहे हैं। आप अब भी अधिकारी क्यों हैं ?"

"तो जाओ, तुम भी जहन्नुम में।" इतना कह रविशंकर उठ खड़ा हुआ।

उमाशंकर ने समझा कि पिताजी फिर वही नाटक करने लगे हैं जो उन्होंने पहले लड़की के साथ किया है। इस कारण उसने पिताजी की बाँह पकड़ ली। बूढ़ा पिता युवा लड़के से बाँह छुड़ा नहीं सका। वह विवश हो पुनः बैठ गया। लड़के ने कहा, "पिताजी ! इस प्रकार तो हम घर से भागेंगे नहीं। तब वापस आने पर लज्जा की बात हो जाएगी। यह तो विचार करिए कि माताजी और हम भी आपका कहा किसलिए मानते हैं ?"

"तो तुम जानते हो कि किसलिए कहा मानते हो ?"

"मैं तो जानता हूँ। इसीलिये आपका कहा मानता हूँ।"

"तो अपनी माँ को बता दो कि वह किसलिए मेरा कहा मानती है।"

"मैं आपको बताता हूँ। इसलिए कि आप मुझे अपना पुत्र समझते हैं और पुत्र का-सा प्रेम करते हैं, मेरे साथ वैसा नाटक नहीं खेलते जैसा प्रज्ञा के साथ खेला है।

"और यदि आप प्रज्ञा के साथ भी वैसा ही व्यवहार करते होते जैसा मुझसे तथा माताजी से कर रहे हैं तो वह भी आपसे पूछ कर विवाह करती।"

"तो विवाह के पहले मैंने कभी उसके साथ द्वेष का व्यवहार किया है ?"

"जरूर किया होगा। यह तो अब पूछने से पता चलेगा कि उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन में क्या था। आप पूछते तो मैं समझता हूँ कि वह बता देती।"

"अच्छा, ऐसा करो कि उससे पूछ कर बताओ। यदि कोई ऐसी बात हुई है जिसका अर्थ यह निकलता है कि मैं उससे स्नेह नहीं रखता तो फिर मैं उसको बदल दूंगा।"

"तो मैं जाऊँ और उससे बात करूँ ?"

"तुम जाओगे तो फिर उस बुलबुल का चहकना सुनने लगोगे।"

"पिताजी ! मैं उसे मना कैसे कर सकता हूँ कि वह अपनी बोली न बोले। यह तो वह स्वभाव से ही बोलती है। मुख्य बात यह है कि मैं उसकी बोली सुनकर अपनी विचार शक्ति खो नहीं रहा। इसकी आप प्रशंसा क्यों नहीं करते ?"

"मगर आज मत जाओ।"

"क्यों ?"

"वह नाराज होगी तो मुझे जली-कटी सुना सकती है ?"

"यह वह एक पिता-भक्त पुत्र के सामने नहीं सुना सकेगी।"

इस प्रकार निरुत्तर हो रविशंकर चुप हो गया।

उमाशंकर पिता की दुर्बलता समझ रहा था। वह युक्ति करना नहीं जानते थे। जब युक्ति की जाए तो यह उठ भाग खड़े होते थे और इस प्रकार घर छोड़ जाने की धमकी देते थे।

आज उसने बलपूर्वक पिता को पकड़कर बैठा रखा था और उनको निरुत्तर कर मना लिया था कि वह प्रज्ञा के घर जा सकता है।

अतः सायं ठीक आठ बजे वह कनाट प्लेस में ज्ञानस्वरूप की दुकान पर जा पहुंचा।

: ५ :

ज्ञानस्वरूप सब कैश गिन सेफ में रखकर और हिसाब-किताब की पुस्तकों को उठवा दुकान से निकलने लगा था कि उमाशंकर उसके सामने जा खड़ा हुआ।

"जीजाजी ! घर जा रहे हैं ?" उमाशंकर ने पूछा।

"हाँ ! पिताजी की बात सुनाइये। वे कब घर लौटे थे ?"

"प्रज्ञा के जाने के पांच मिनट के भीतर ही वह आ गये थे। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके साथ ही ग्रेटर कैलाश की ओर जा रहा हूँ। ले चलेंगे ?"

"यह तो मेरा सौभाग्य होगा कि मुझे आपकी यह सेवा करने का अवसर मिलेगा।"

"तो चलिये।"

दोनों ज्ञानस्वरूप की मोटर गाड़ी में बैठ गये। गाड़ी ज्ञानस्वरूप चला रहा था। उमाशंकर उसके पास अगली सीट पर बैठा था। गाड़ी स्टार्ट होते ही उमाशंकर ने कहा, "मैं आपके घर चल रहा हूँ।"

"सत्य ? अपने पिताजी से पूछकर चल रहे हैं अथवा चोरी-चोरी ?"

"उनके आदेश से ही जा रहा हूँ।"

"यह तो आप बहुत ही मजेदार बात बता रहे हैं।"

"पिताजी की एक बात प्रज्ञा से पूछनी है। इसीलिए आपके घर जाने की स्वीकृति मिली है।"

"दादा ! मैं तो दोनों घरों को एक ही समझता हूँ। सिर्फ हमने फैसला किया है कि सोना, खाना, अलहदा-अलहदा हो। मगर आपके पिताजी इसको मानने में ही नहीं आते।"

"यह तो उनके सत्ताईस वर्ष तक सेवा करने का परिणाम है। सेवा-कर्म में विचार नहीं किया जाता। अब उनकी बिना विचारे काम करने की आदत घर के मामलों में भी चलती है। यहाँ कोई अफसर नहीं। इस कारण वह जो मन आए करते हैं; मगर अपने कामों का युक्तियुक्ति ढंग पर वर्णन नहीं कर सकते। यह वफादारी के भाव से सेवा-कार्य करने का स्वाभाविक नतीजा है।

"हम उनके इस स्वभाव को सहन करते रहे हैं और आपको भी यह करना होगा। तभी आप हमारे घर के प्राणी बन सकेंगे।"

ज्ञानस्वरूप हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "मैं मध्याह्नोत्तर घर गया था और वहाँ प्रज्ञा ने पूर्ण घटना संक्षेप में सुनाई थी। मैंने उसे पहले ही कहा है कि उसने भूल की है जो उठकर चली आई है।"

उमाशंकर ने मुस्कराते हुए कहा, "केवल बैठे रहने से बात नहीं चल सकती थी, प्रत्युत पिताजी को भागने से रोकना भी चाहिए था। हम युवा लोग अपने मन के सन्तुलन को शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं और हमें बूढ़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की, अपना सन्तुलन सुधारने में सहायता करनी चाहिए।"

"पर कैसे ? प्रज्ञा डरती थी कि यदि वह पिताजी की बाँह पकड़कर उनको रोकती तो वह वायलेंस पर उतर आते ?"

"नहीं जीजाजी ! वह ऐसा नहीं कर सकते। कारण यह कि ऐसा उन्होंने नौकरी के काल में किया नहीं। यह उनके स्वभाव में नहीं है।

"देखिए !" बात उमाशंकर ने ही जारी रखी और कहा, "जब वह लौट आये और भोजन कर संतुष्ट हो गये तो मैंने उनको समझाया और उन्होंने स्वीकृति दे दी कि मैं प्रज्ञा तथा आपकी माताजी से मिलकर दोपहर की घटना के लिए क्षमा माँगूं। मैं इसीलिए साथ चल रहा हूँ। प्रज्ञा के सामने ही पिताजी के साथ व्यवहार के लिए साँझी योजना बनायेंगे।"

प्रज्ञा दादा को अपने पति के साथ आते देख विस्मय में दादा का मुख देखती रह गई। उमाशंकर ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं तुमसे क्षमा माँगने आया हूँ।"

इस समय ज्ञानस्वरूप और उमाशंकर ड्राइंगरूम में जा पहुँचे थे। वहाँ सरस्वती और कमला खड़ीं ज्ञानस्वरूप की प्रतीक्षा कर रही थीं। वे भी प्रज्ञा के बड़े भाई को आया देख चकित रह गईं।

"आप यहाँ आने का साहस बटोर सके हैं, इसके लिए धन्यवाद करना चाहिए।"

"माताजी ! इनको रात के भोजन का निमंत्रण दे दीजिए।" कमला ने कहा।

"नहीं कमला ! मैं आप सबको वहाँ भोजन करने के लिए निमंत्रण देने आया हूँ। पिताजी का विचार था कि आप लोग नहीं मानेंगे और मैं कहकर आया हूँ कि मना लूंगा।"

"तो दादा !" बातों का सूत्र प्रज्ञा ने अपने हाथ में लेते हुए कहा, "माताजी को टेलीफोन कर दो कि हम इस दावतनामे को सहर्ष स्वीकार करते हैं।"

"ठहरो प्रज्ञा !" सरस्वती ने बातों में दखल देते हुए कहा, "पहले सब बात सुन लें। पीछे स्वीकृति देंगे।"

"अम्मी ! बात तो वहाँ माता-पिता के सामने ही सुनेंगे। यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यहाँ बात बनाकर भी कह सकते हैं। पिताजी की बात पिताजी के मुख से ही सुननी ठीक रहेगी।"

सरस्वती चुप कर रही। इस पर प्रज्ञा ने कहा, "दादा! टेलीफोन में कह दो कि हम आपका निमंत्रण स्वीकार कर आ रहे हैं।"

उमाशंकर को बता इस प्रकार निश्चय होती देख विस्मय हुआ और वह उठा तथा धन्यवाद करता हुआ टेलीफोन करने लगा।

उधर से महादेवी ही बोली और उसने कहा, "ठीक है! मगर उस लड़की को कह दो कि वह बैंक-ग्राउण्ड में ही रहे। वह स्वयं मत बोले। प्रज्ञा को ही अपनी बात कहने दे।"

"मैं समझती हूँ," महादेवी ने आगे कहा, "यह कमला की हाज़िर-जवाबी ही है जो उनके दिमाग में खुजली पैदा कर देती है।"

चोंगा वापस रखते हुए उमाशंकर ने सब को कहा, "आप अब हमारे घर चलने को तैयार हो जायें। शेष बात वहीं चलकर होगी।"

"ठीक है।" ज्ञानस्वरूप ने कहा, "और मैं यहाँ की घटना का वृत्तान्त भी अब वहाँ चलकर ही बताऊँगा।"

"तो यहाँ भी किसी प्रकार की घटना हुई है?"

"हाँ! बहुत ही भयानक, परन्तु मजेदार।"

"दो परस्पर विरोधी बातें कैसे हो गई हैं?"

"इस बात को प्रज्ञा ही बताएगी। मुझे तो यह बताइए, कितना रुपया क्लीनिक में फूंक चुके हैं?"

"कुछ अधिक नहीं। आपने जितना दुकान पर लगाया है, उतना नहीं।"

"मगर जो अमेरिका में पढ़ाई पर व्यय कर आये हैं, वह भी तो आपके काम में लगा मानना होगा।"

"हाँ! यदि उस सबकी गिनती करूँ, तब आपके यहाँ से अधिक नहीं तो बराबर ही लागत में हो जायेगा। मैंने वहाँ से लौटकर सब का मूल्य लगाया है।

"मैं बी०ए० पास कर पिताजी से पाँच हजार रुपये लेकर गया था। उसमें से अढ़ाई हजार तो हवाई जहाज का भाड़ा ही लग गया था। शेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अढ़ाई हजार मेरी फीस थी। इस कारण दाखिले की तारीख की प्रतीक्षा के दिनों में मैंने सांनफ्रांसिस्को में पार्ट-टाईम काम ढूंढना आरम्भ कर दिया। सौभाग्य से काम मिल गया। तीन घण्टे नित्य सायंकाल टाइपिस्ट का काम करता था। उसमें से कालेज-होस्टल का व्यय और विश्वविद्यालय की फीस, सब मिल-मिलाकर पन्द्रह डालर नित्य के खर्च हो जाते थे। शेष मेरे पास पन्द्रह डालर नित्य बच जाता था। मैंने यत्न लगाकर काम किया तो मालिक प्रसन्न हुए और मैं अपनी पढ़ाई के पाँच वर्ष वहाँ काम करता रहा। बीच-बीच में छुट्टी भी करता रहा था।

इसका परिणाम यह हुआ कि वहाँ से चलते समय मेरे पास तेरह हजार डालर जमा हो गये थे। उनमें से कुछ का मैंने घर के लिए सामान खरीद लिया और कुछ यहाँ बचाकर ले आया हूँ। उसमें से क्लीनिक फिट होने पर भी अभी बहुत कुछ बचा हुआ है।"

जब उमाशंकर ने प्रज्ञा को बताया कि माताजी ने सहर्ष उसके निमंत्रण का समर्थन किया है तो सब चलने के लिए तैयार होने लगे। प्रज्ञा, ज्ञान-स्वरूप और सरस्वती अपने-अपने कमरों में चले गये। कमला ही वहां उमाशंकर के पास बैठी रही।

"कमलाजी! आपको भी तो चलना है?" उमाशंकर ने कहा।

"मेरी तो आपके घर जाने की तैयारी मुकम्मिल है।"

उमाशंकर इस वाक्य में छुपे अर्थ समझ कहने लगा, "मगर उस घर में आपके स्वागत की तैयारी अभी पूर्ण नहीं है।"

"क्या बाधा है?"

"माताजी ने अभी अभी-अभी टेलीफोन में कहा है कि ज्ञानस्वरूप की बहिन को कह देना कि अपनी ज़बान पर लगाम लगाना सीखे। कारण यह है कि तुम्हारे व्यंग पिताजी के मस्तिष्क में खुजली उत्पन्न करने लगते हैं।"

"परन्तु आपके मस्तिष्क में तो खुजली नहीं होती? मुझे तो आपकी अधिक चिन्ता है।"

"परन्तु मैं तो तुम्हें माता-पिता के घर ले जा रहा हूँ। वहाँ पिताजी प्रमुख व्यक्ति हैं। इसीलिए माताजी ने मुझे तुम्हें सचेत करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा है।"

"यह तो ठीक है। माता-पिता के बिना घर की मैं कल्पना नहीं कर सकती और पिताजी के मस्तिष्क की खुजली अवश्य ही विचारणीय है।"

"हाँ! तो अब तैयार हो जाओ। देखो, तुम भी अपनी सबसे बढ़िया पोशाक पहन लो जिससे माताजी तथा पिताजी की खुजली पर मरहम लग सके।"

कमला हँस पड़ी और उठकर अपने कमरे को भागी।

सब को तैयार होने में दस मिनट लगे। कमला सब से अन्त में अपने कमरे से निकली। वह श्वेत खद्दर की सलवार, कुर्ता और ओढ़नी ओढ़े हुए थी। इस श्वेत परिधान में कमला का मूल्यांकन उमाशंकर कर रहा था। अभी तक उसने उसे केवल रँग-बिरँगे रेशमी वस्त्रों में ही देखा था। वह कमला को इस सरल पहिरावे में देख सन्तोष अनुभव करने लगा, परन्तु प्रज्ञा ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "यह तो तुमने स्लीपिंग सूट बनवाया था?"

"भाभी! यह वहाँ पिताजी के मस्तिष्क की खुजली को शान्त करने के लिए पहन लिया है।"

उमाशंकर हँस पड़ा। प्रज्ञा इसका अर्थ नहीं समझी। बात आगे नहीं चल सकी। ज्ञानस्वरूप ने कह दिया, "साढ़े नौ बज रहे हैं। मैं समझता हूँ, चलना चाहिए। वहाँ हमारी प्रतीक्षा हो रही होगी।"

कमला की पोशाक की चर्चा बन्द हुई और सब बाहर निकल आये।

महादेवी का अनुमान ठीक था कि यह कमला का चुलबुला स्वभाव ही था जो उमा के पिता को उत्तेजित करता रहता था। उस रात के खाने में कोई अनिच्छित घटना नहीं हुई और भोजन के समय देश की राजनीति पर चर्चा होती रही।

भोजन समाप्त कर जब सब ड्राइंगरूम में आये तो प्रज्ञा ने कह दिया, "माताजी! यदि मुझे आज के इस सुखद स्वागत का ज्ञान होता तो मैं इस घर से विदा होने के पूर्व आपका और पिताजी का आशीर्वाद प्राप्त करके ही जाती।

"परन्तु मैं बचपना के कारण यही समझ रही थी कि आप मुझे अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी बच्ची समझ डाँट-डपट देंगी। इससे आपकी डाँट-डपट के भय से बता नहीं सकी कि मैं जा रही हूँ और कहाँ जा रही हूँ।

"परन्तु अब मैं समझती हूँ कि यदि ठीक ढंग से अपनी बात बताती तो आपसे अवश्य आशीर्वाद प्राप्त कर लेती।"

बात महादेवी को कही गयी थी, परन्तु उत्तर रविशंकर ने दिया, "हाँ! तुम्हारे व्यवहार ने मन में चंचलता उत्पन्न तो की थी। मैं समझता हूँ कि आज तुम्हारे और ज्ञानस्वरूप के व्यवहार ने उस चंचलता को बहुत सीमा तक शान्त कर दिया है।"

बातों का सूत्र महादेवी ने अपने हाथ में लेते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि आगामी रविवार को मध्याह्न के भोजन के समय आप आइएगा तो उमा के भविष्य पर विचार करेंगे।"

ज्ञानस्वरूप प्रज्ञा, सरस्वती और कमला को लेकर अरुणाचल लॉज पर पहुँचा। उमाशंकर उनके साथ कोठी तक आया था। वहाँ पहुँचते-पहुँचते उस दिन की पूर्ण घटना पर विचार होने लगा। प्रज्ञा ने घटना का विश्लेषण करते हुए कहा, "अब्बाजान भी अपने को दीनदार कहते हैं और हमारे पिताजी भी प्रति मंगल के दिन हनुमानजी पर लड्डू चढ़ाने जा पहुँचते हैं। अब्बाजान का दीन कहता है कि हज करने तक ही खुदा है और पिताजी की ईश्वर-भक्ति हनुमानजी के मन्दिर तक ही है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि दोनों एक ही श्रेणी के महापुरुष हैं।

"मैं जिस प्रकार के परमात्मा का विचार रखती हूँ और आपके मानस पटल पर अंकित कर रही हूँ, वह इन वाला ईश्वर नहीं है। बस, मतभेद का मूल इसी में है।

"यदि ये और इनके भाई-बन्धु परमात्मा को मानते हों तो हम परमात्मा को न मानने वालों में हैं और यदि हम परमात्मा को मानते हैं तो ये दोनों महानुभाव और इनके साथ कोटि-कोटि मानव नास्तिक हैं।"

"बहू!" सरस्वती ने कहा, "कौन ठीक है? ये अथवा तुम?"

"मैं तो यह कहती हूँ कि मेरी मान्यता का आधार युक्ति और बुद्धि है। इन लोगों की मान्यता का आधार श्रद्धा है, जिसे आप लोग एतकाद कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विवाद श्रद्धा और युक्ति में है। मैं श्रद्धा को कम उपयोगी समझती हूँ।

"हमारे देश में एक महात्मा गांधी हो गये हैं और वह कह गये हैं कि एक मन भर युक्ति से एक तोला भर श्रद्धा भारी है, मतलब यह है कि अधिक मानने योग्य है। मैं इसे गलत समझती हूँ।

"होना यह चाहिए कि युक्ति से सिद्ध वस्तु पर श्रद्धा रखो। अभिप्राय यह है कि दृढ़तापूर्वक आचरण करने से कल्याण की आशा की जा सकती है। परन्तु महात्मा गांधी के कहने का अर्थ तो यह प्रतीत होता है कि युक्ति और श्रद्धा परस्पर विरोधी स्थितियाँ हैं। जहाँ विरोध हो, वहाँ दोनों में से एक मिथ्या होगी ही।

"ऐसी अवस्था में भी मैं युक्ति को प्रधानता देती हूँ क्योंकि यह गलत हो तो इसके ठीक होने का द्वार सदा खुला रहता है और श्रद्धा में तो द्वार बन्द रहता है। जब श्रद्धा मिथ्या विचार पर बने तो भयंकर परिणाम उत्पन्न होते हैं।

"श्रद्धा एक बन्द गली है और युक्ति एक खुला राजमार्ग है।"

"तो तुम्हारे पिता अब दलील के काबिल हो गए हैं?" सरस्वती का प्रश्न था।

"आज के उनके व्यवहार से तो यही कहा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आज मध्याह्न के समय दादा उमाशंकर ने पिताजी को समझाया है और उन्होंने बात समझकर हमारा आदर-सत्कार किया है।"

"अम्मी! अक्ल की जीत हुई है।" कमला का कहना था।

"यदि कर्म करने से पूर्व और अन्त में सदैव कुछ बुद्धि का प्रयोग कर लिया जाए तो कठिनाई नहीं रहती।"

: ६ :

उमाशंकर ने घर पहुँच माता-पिता को बताया, "मैं प्रज्ञा और उसके घर के सब प्राणियों को रविवार के दिन मध्याह्न के भोजन का निमन्त्रण दे आया हूँ।"

माता-पिता ड्राइंगरूम में बैठे उमाशंकर की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे जानते थे कि पुत्र प्रज्ञा से सुलह कराने का यत्न कर रहा है। परन्तु पिता का यह अभिप्राय नहीं था कि लड़की और विशेष रूप में लड़की की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ननद पुनः उनके घर में आ उससे युक्ति-प्रतियुक्ति करने लगी। इस कारण उसने उमाशंकर से पूछ लिया, "वहाँ इतनी देर क्या करते रहे हो ?"

"आज प्रातः जीजाजी के घर उनके अब्बाजान और उनकी दूसरी बेगम बम्बई से आये थे। वे लड़की कमला को अपने साथ ले जाना चाहते थे। लड़की ने इनकार कर दिया तो वह जेब से रिवाल्वर निकाल गोली चलाने लगे। पिता-पुत्र में हाथापाई हो गयी। दो गोलियाँ चलीं, परन्तु कोई घायल नहीं हुआ। हाथापाई से निशाना ठीक नहीं बन सका।

"मैं इस पूर्ण घटना का वृत्तान्त सुन रहा था। इसी के सुनने में वहाँ देर लग गई है।"

"तुम जो कुछ करने गए थे, उससे कुछ अधिक कर आये हो और मैं समझता हूँ कि गलत कर आए हो।"

"पिताजी ! मैं माताजी का यही अभिप्राय समझा था। क्यों माता-जी ! आपका क्या मतलब था ?"

"मतलब तो यह नहीं था, परन्तु अब तुम निमन्त्रण दे आये हो तो उस दिन मध्याह्न के भोजन का विशेष 'मीनो' विचार करना पड़ेगा।"

"परन्तु तुमने मुझसे पूछ कर कुछ किया नहीं और न ही यह निमं-त्रण मुझसे पूछ कर दिया है। इस कारण मैं उस दिन भोजन घर से बाहर लूंगा"

"तो पिताजी ! ऐसा करिए, मैं घर से बाहर ही भोजन का प्रबन्ध कर देता हूँ। बताइए, आप कहाँ भोजन करेंगे ? मैं सबके भोजन का प्रबन्ध वहीं कर दूंगा।"

"परन्तु मैं तुम सबसे पृथक् भोजन करना चाहता हूँ।"

"परन्तु हम और प्रज्ञा इत्यादि आपके साथ बैठ कर भोजन करना चाहते हैं और इसी बात का आश्वासन मैं उनको दे आया हूँ।"

"यह मुझसे पूछे बिना तुमने कैसे किया है ?"

"देखिये पिताजी ! आप जहाँ भी जायेंगे, हम सब वहीं भोजन करने पहुँच जायेंगे।"

"पर मैं तुमको बताऊँगा ही क्यों, कि मैं कहाँ भोजन करूँगा।"

"इस पर भी मैं जान लूंगा और आपके पीछे-पीछे हम सब वहाँ जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचेंगे।"

"तो ठीक है करो।"

यह उमाशंकर को चुनौती थी। उमाशंकर इसे इन्हीं अर्थों में समझता था। उसने अगले दिन शिवशंकर से राय की। उसने कहा कि उसकी परीक्षा शनिवार को समाप्त हो रही है और वह शनिवार और रविवार की मध्य रात्रि से ही पिताजी पर पहरेदारी करने लगेगा।

रविवार के दिन शिव प्रातः चार बजे ही स्नानादि से अवकाश पा मकान के बाहर आ बैठा। जब महादेवी शौचादि के लिए बाथरूम में गई हुई थी, रविशंकर कपड़े पहन कमरे से बाहर निकला तो कोठी के गेट पर शिव को खड़ा देख वह विस्मित रह गया। पिता ने पूछा, "यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"आपके साथ प्रातः भ्रमण को जाने के लिए खड़ा हूँ।"

"पर मैं भ्रमण के लिए नहीं जा रहा ?"

"तो किधर जा रहे हैं ?"

रविशंकर बताना नहीं चाहता था, इस कारण लड़के का मुख देखने लगा। बात शिवशंकर ने ही की। उसने कहा, "बताइये पिताजी ! इस समय इतनी सुबह कहाँ जा रहे हैं ?"

"परन्तु तुम मेरे अफसर हो क्या ?"

"मैं तो नहीं हूँ पिताजी, परन्तु आपके अफसर ने मुझे मुकर्रिर किया है ?"

"कौन है वह ?"

"माताजी ! उन्होंने ही कहा था कि अब मैं परीक्षा से अवकाश पा गया हूँ, इस कारण मुझे आपकी देख-रेख करनी चाहिए। आप दुर्बल हो रहे हैं और मैं युवा हूँ। मुझे अपने पूर्ण सामर्थ्य से आपकी सेवा करनी चाहिए।"

"परन्तु तुम्हें किसने बताया है कि तुम्हारी माता मेरी अफसर हैं ?"

"यह संसार का नियम है। सब स्त्रियाँ पुरुषों पर अफसर होती हैं ?"

"मगर मैं तुम्हारी माँ को अफसर नहीं मानता।" रविशंकर ने आवेश में कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उनको क्या मानते हो ?"

"अपनी अर्द्धांगिनी ।"

शिव हँस पड़ा । हँसकर पूछने लगा, "तो आप अपना आधा अंग पीछे छोड़ कहाँ भागे जा रहे हैं ?"

रविशंकर जब निरुत्तर हो गया तो क्रोध से भर गया और डाँटकर बोला, "एक ओर हट जाओ ।"

शिव दोनों बाहें फैला मार्ग रोक कर खड़ा हो गया । पिता ने कहा, "हटो, एक तरफ ।"

इसी समय महादेवी बाहर आ गई, "क्या हो रहा है ?" उसने कमरे का द्वार खोल पिता-पुत्र को ऊँचे-ऊँचे झगड़ा करते देख पूछ लिया ।

"माताजी ! पिताजी कह रहे हैं कि मुझे साथ नहीं ले जायेंगे ।"

"क्यों ? देखिये जी ! इस प्रकार झगड़ा करने से तो नौकर-चाकर आ जायेंगे । भीतर आकर बात करिये ।"

उमाशंकर ने ही तो शिव को पिताजी के साथ जाने को तैयार किया था । वह स्वयं भी कोठी की ड्योढ़ी में खड़ा पिता की और शिव की तकरार सुन रहा था । जब महादेवी कह रही थी कि भीतर आकर बात करें तो उसने भी वहाँ पहुँचकर कह दिया, "माताजी ठीक कह रही हैं । बाहर जाकर झगड़ा करने से कमरे में बैठ फैसला कर लेना ठीक रहेगा ।"

रविशंकर पुनः अपने बेडरूम में चला आया और उसके साथ-साथ महादेवी, उमाशंकर तथा शिव भी अन्दर चले आये ।

रविशंकर ने वहाँ सोफा पर बैठते हुए कहा, "मैं घूमने नहीं जा रहा था ।"

"तो कहाँ जा रहे थे ?" महादेवी ने पूछ लिया ।

"मैं दिन-भर के लिए घर छोड़ रहा था ।"

"किसलिए ?"

"मैं प्रज्ञा इत्यादि से मिलना नहीं चाहता ।"

"क्यों ? उसने आपका क्या बिगाड़ा है ?"

"मेरा मन उसे एक मुसलमान की बीवी देख प्रसन्न नहीं होता ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह उसकी अपनी पसन्द है और मैं समझती हूँ कि वह किसी प्रकार से अयोग्य भी नहीं है।"

"क्या योग्यता है उसमें ?"

"जिस उद्देश्य से विवाह किया जाता है, वह पूर्ण कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि छः-सात महीने में आप एक बच्चे के नाना बन जायेंगे।"

"ओह ! तो नौबत यहाँ तक पहुंच गयी है ?"

"हाँ, पिताजी !" अब उमाशंकर ने माँ की बात का समर्थन करते हुए कहा, "इसके अतिरिक्त एक अन्य भी बात है। आपकी होने वाली बहू पर उसके बाप ने दावा कर दिया है।"

"किसने बताया है ?"

"मुझे उसका फोन आया था और मैं एक वकील को उसे डिफैण्ड करने के लिये कह आया हूँ।"

"क्या दावा किया है ?"

अब सब बैठ गये। उमाशंकर ने कहा, "जिस रात कमला और प्रज्ञा इत्यादि ने हमारे यहाँ खाना खाया था, उससे अगले दिन उसके वारेण्ट की पूर्व सूचना थानेदार ने दी थी। कमला स्वयं भाई के घर से निकल किसी अन्य स्थान पर छिप गयी थी।

"उसने मुझे टेलीफोन पर बताया तो मैंने अपने एक सहपाठी केशव-देव एडवोकेट को कमला की ओर से वकालतनामा दिलाकर कमला की ज़मानत करा दी है। अब वह फिर भाई के घर में आ गयी है और मुकद्दमे की तारीख आगामी वीरवार है।

"कमला के पिता दिल्ली के इम्पीरियल होटल में ठहरे हुए हैं और पेशी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"परन्तु यह सब क्यों किया गया है ?"

"इस कारण कि कमला के अब्बाजान उसका विवाह किसी मुसल-मान से करना चाहते हैं।"

"वह ठीक तो है।"

"मगर कमला कह रही है कि वह अब हिन्दू हो गयी है और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किसी मुसलमान से शादी नहीं करना चाहती।"

"क्यों ? मुसलमान में क्या दोष है ?"

उमाशंकर समझ रहा था कि बुद्धि से और स्वभाव से काम करने में कितना अन्तर है। इस पर भी उसने बातों का सूत्र पकड़े हुए कहा, "वह मुसलमान जिससे उसके अब्बाजान उसकी शादी करना चाहते हैं, कोई प्रत्यक्ष कार्य नहीं करता। वह कट्टर पंजाबी है। तीसरे, वह शरम से शादी करना चाहता है। चौथे, वह बदसूरत है और पाँचवां, वह पढ़ा-लिखा नहीं।

"अपने अब्बाजान का चुनाव उसे पसन्द नहीं। इस कारण अब्बा-जान के घर जाकर वह रहना नहीं चाहती।"

"यह सब बात उसने लिखाई है या तुम्हारे मस्तिष्क की उपज है ?"

"पिताजी ! मालूम होता है कि प्रज्ञा की समझाई हुई हैं।"

"मगर वह नाबालिग है। उसे अपने अब्बाजान का कहा मानना चाहिये था।"

"वकील का कहना है कि वह अपनी मर्जी से बालिग होने तक शादी नहीं कर सकती। मगर अपने बालदैन से की जाने वाली शादी पर प्रति-बन्ध लगवा सकती है।

"उस दिन थानेदार को एक हजार रुपये देकर अब्दुल हमीद छूटे थे, नहीं तो कत्ल करने की कोशिश के जुर्म में वह हवालात में होते। इसीलिये थानेदार नाराज़ है और वह ज्ञानस्वरूप की मदद करा रहा है।'

"वकील को क्या फीस दी है ?"

"अभी प्रारम्भिक कार्यवाही के लिए एक हजार दिया है।"

"और यह धन कौन खर्च कर रहा है ?"

"प्रज्ञा कर रही है और मैं प्रज्ञा की सहायता कर रहा हूँ।"

"क्या सहायता कर रहे हो ?"

"दो दिन की भाग-दौड़ और फिर मोटर में कमला को अदालत में ले जाना और जमानत वगैरह का प्रबन्ध करना।"

"मैं समझता हूँ कि प्रज्ञा ठीक ही कर रही है।" आखिर रविशंकर ने माना। साथ ही उसने कह दिया, "तुम्हें अपनी प्रैक्टिस जमानी है। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकद्दमेबाजी में फंस गये तो सब किया-कराया नाली में बह जायेगा।"

"दोनों बातों का सम्बन्ध नहीं है। दोनों काम चलेंगे और सफलता-पूर्वक चलेंगे।"

इस मुकद्दमे का समाचार सुन रविशंकर नरम पड़ गया था। वह समाचार पत्रों में पढ़ता रहता था कि मुसलमानों का सिविल कोड हिन्दुओं से भिन्न है। वह यह भी जानता था कि हिन्दुओं में स्त्रियों को वे सब रियायतें हासिल हैं जो किसी भी यूरोपियन देश में औरतों को हैं। इससे वह समझ रहा था कि कमला इत्यादि ने नाम बदलकर ठीक ही किया है। यह उसके मुकद्दमे में सहायक होगा।

पिताजी को मौन और बहिन के व्यवहार को उचित मानते देख उसने पूछ लिया, "तो पिताजी! अब आप नहीं जा रहे?"

"कहाँ नहीं जा रहा?" एकदम सतर्क हो रविशंकर ने पूछा। फिर स्वयं बात को स्मरण कर कहने लगा, "मेरे घर रहने और प्रज्ञा के अपनी ननद की मदद करने में कोई सम्बन्ध नहीं।"

"तो आप नहीं मानेंगे? मैं समझता हूँ कि इतनी बहादुर लड़की का आदर-सत्कार करना ही चाहिए।"

"क्या बहादुरी की है उसने?"

"उसने अपने पति के पूर्ण परिवार को हिन्दू घोषित करवा दिया है?"

"कोई कहने से तो हिन्दू होता नहीं?"

"हाँ! हिन्दू तो वे पहले हुए हैं और बिना किसी को कहे हुए हैं। यह तो बहिन के श्वसुर ने जीजाजी और उनकी बहिन नंगीना तथा अम्मी को विवश किया है कि वे अदालत में जाकर अपना हिन्दू होना घोषित करें।"

"मगर वे हिन्दू हुए हैं क्या?"

इस पर महादेवी ने पुनः बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "यही पूछने के लिए तो उसे बुलाया है।"

"बुलाया तो उमा ने है उस लड़की से सम्बन्ध बनाने के लिए। उन्होंने नाम बदले थे, हमें धोखा देने के लिए।"

"यह सब आपकी कल्पनामात्र भी हो सकती है। मैं इसकी सचाई जानना चाहती हूँ। आप हिन्दू किसको समझते हैं, यह बता दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तब मैं देखूँगी कि आपके मापदण्ड से वे हिन्दू हैं या क्या हैं ?"

"अच्छा, ऐसा करो ! मैं नहीं जाऊँगा । मगर तुम ही उसकी परीक्षा लेना । मैं तुम्हारी परीक्षा पर उसे नम्बर दूँगा ।"

शिवशंकर हँस पड़ा और बोला—"यह ठीक है । पर्चा माताजी सेट करेंगी । उत्तर प्रज्ञा दीदी देंगी और उत्तर-पत्र देख नम्बर पिताजी देंगे ।"

"तो यह ठीक नहीं क्या ?"

"बिल्कुल नहीं ।" शिव का कहना था, "आप स्वयं बी० ए० पास, वह भी आज से पेंतीस वर्ष पहले के, एक डब्बल एम० ए० की परीक्षा लेंगे । पर्चा बनायेंगी माताजी जो दसवीं जमायत तक पढ़ी हैं । पिताजी ! यह तो सब मजाक हो जायेगा ।"

"तो कौन परीक्षा ले सकता है ?

"मैं समझता हूँ, कोई भी हमारे घर में नहीं जो प्रज्ञा दीदी की परीक्षा ले सके । हमें तो जो वह कहे मान लेना चाहिए ।"

"इस पर भी प्रारम्भिक प्रश्न तो मैं पूछ ही सकता हूँ ?"

"आपके पूछने पर मैं आपत्ति नहीं कर रहा । आप उससे पूछिए और फिर वह जो कुछ कहे, उसे सत्य मान स्वीकार कर लीजिए ।

"हाँ, कहीं धोखाधड़ी मालूम हो तो उसको पकड़ कर 'ऐक्सपोज़' करिये ।"

कुछ विचार कर रविशंकर बोला—"मेरा एक मित्र है । वह रिटायर्ड प्राध्यापक है । उसे बुला उससे परीक्षा करा लें तो कैसा रहे ?"

"कौन हैं वह ?"

"एक डाक्टर विष्णुसहाय हैं । सन् १९६९ में वह विश्वविद्यालय से सेवामुक्त हुए थे । मेरे साथ हनुमानजी के मन्दिर जाया करते हैं ।"

उमाशंकर ने बात सुगमता से बनती देख कह दिया—"उनके घर पर टेलीफोन है ?"

"हाँ ! उनका लड़का सचिवालय में सैक्रेटरी है । उसके नाम पर टेलीफोन है । नाम है रामसहाय, असिस्टैण्ट सैक्रेटरी विधि मंत्रालय ।"

उमाशंकर उठा और बाहर ड्राइंगरूम में आ गया । उसने टेलीफोन डायरेक्टरी में नम्बर देख डाक्टर विष्णुसहाय को मध्याह्न के भोजन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमन्त्रण दे दिया।

जब उमाशंकर टेलीफोन कर कमरे में आया तो पिता ने पूछा, "डाक्टर साहब मिले?"

"हाँ! वह स्वयं बोल रहे थे। जब मैंने आपका नाम लेकर निमंत्रण दिया तो बिना विचार किये बोले कि वह आयेंगे। यद्यपि उनका घर बहुत दूर है, इस पर भी वह आयेंगे।"

"अब ठीक है।" रविशंकर ने कह दिया, "विष्णुसहाय पर्चा बनायेंगे और स्वयं ही नम्बर देंगे।" रविशंकर ने पत्नी से पूछ लिया, "बताओ जी, अब ठीक है।"

"हाँ! ठीक तो है। मगर मैं समझती हूँ कि विष्णुसहाय केवल 'हाई-कोर्ट ही हैं। उनसे आगे एक सुप्रीम कोर्ट भी है।"

"वह कहाँ है?"

"यह तब बताऊँगी, जब हाईकोर्ट ने उलटा-पुलटा फैसला दिया।"

सब हँसने लगे।

: ७ :

बारह बजे डाक्टर विष्णुसहाय आ गया। रविशंकर अपने मित्र की प्रतीक्षा में ड्राइंगरूम में आ बैठा था। उस समय उमाशंकर भी अपने क्लीनिक को बन्द कर वहाँ आ गया था। शिव तो परछाईं की भाँति पिताजी के साथ ही था। वह पिताजी पर विश्वास नहीं करता था।

प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त शिव पिताजी के साथ-साथ बाहर-भीतर जाता-आता रहा तो रविशंकर ने पूछ लिया, "तुम्हें आज कुछ काम नहीं?"

"काम तो है, परन्तु कल तक जो था, वह अब नहीं रहा। पहले काम की परीक्षा दे चुका हूँ। उसका परीक्षाफल अभी निकला नहीं। इस कारण आज मैं दूसरा काम करने लगा हूँ।"

"क्या दूसरा काम करने लगे हो?"

"वयोवृद्ध पैंतीस वर्ष तक सरकारी नौकरी करते हुए सैक्रेटरी पद का पाँच-छः वर्ष का अनुभव रखने वाले पूजनीय पिताजी की सेवा के लिए नियुक्त हो गया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किसने नियुक्त किया है ?"

"स्वयं नियुक्त हुआ हूँ और उस नियुक्ति का फल अति श्रेष्ठ पाने का यत्न कर रहा हूँ ।"

"मगर मैं तुम्हारी इस सेवा का तुम्हें कुछ भी प्रतिकार नहीं दूंगा ।"

"वह तो मिल रहा है ।" शिव का कहना था, "मेरे खाते में वह प्रतिक्षण जमा हो रहा है ।"

"कितना बैंक में जमा हुआ है ?"

"अभी तो यह नया सेवा-कार्य करते हुए मुझे कुछ घण्टे ही हुए हैं। इसलिए वहाँ बैंक में बहुत कम रकम है। परन्तु महीना समाप्त होते-होते एक बड़ी राशि जमा हो जाने की आशा है ।"

"तुम तो उमा से भी ज्यादा धूर्त हो गये हो ?"

"नहीं पिताजी, वह मुझसे अधिक चतुर हैं। वैसे कमला से विवाह मैं करने वाला था, परन्तु अनजाने में दादा कम्पीटिशन में आ गये और मुझसे बाजी ले गये हैं ।"

"ओह ! तो तुम दोनों उस लड़की पर लट्टू हो रहे थे ? तब तो तुम आपस में लड़ पड़ोगे ।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि लड़कियों से मुहब्बत करना पशुपन है और पशु मादीनों के लिए लड़ा करते हैं ।"

"मगर पिताजी ! हम पशु नहीं हैं। मैं आज ही अपने मन की भावना दादा और दीदी को बताकर उसमें परिवर्तन की बात भी बता दूंगा ।"

"तब तो बहुत मजा रहेगा ! आज ही दंगल हो सकता है ।"

"पिताजी ! आप उस दंगल को देखने की कृपा करेंगे तो आपको पता चलेगा कि किसकी विजय होती है ।"

"मैं समझता हूँ कि आज मेरा एक मित्र यहाँ आने वाला है। मैं नहीं चाहता कि तुम दो साँडों की भाँति लड़कर उसे अपना बलाबल दिखाओ। इस कारण आज नहीं, फिर किसी दिन के लिए यह दंगल स्थगित कर दो तो ठीक होगा ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप जैसी आज्ञा देंगे। परन्तु इसके प्रकट होने में बहुत दिन नहीं लग सकते।"

"ठीक है। आज तो कुछ अन्य बात हो रही है।"

जब डाक्टर विष्णुसहाय आए तो ड्राइंगरूम में रविशंकर और उसका लड़का शिव पहले ही बैठे थे। डाक्टर साहब के आने के दो मिनट उपरांत ही उमा भी आ गया।

महादेवी मेहमानों के लिए भोजन का प्रबन्ध करवा रही थी। विष्णुसहाय ने बैठते ही पूछा, "सैक्रेटरी साहब! कब से हमारी मित्रता है?"

"ठीक याद नहीं। मैं तब शिक्षा-विभाग में एक सुपरिण्टेंडेंट था। तबसे आपसे परिचय और धीरे-धीरे मित्रता हो गई है।"

"मैं बताता हूँ।" डाक्टर विष्णुसहाय ने बताया, "मैंने डाक्टर की उपाधि प्राप्त की थी सन् १९५० में और तब ही आपसे परिचय हुआ था।

"डिग्री प्राप्त कर मैं हनुमानजी के मन्दिर में लड्डू चढ़ाने गया था और आपने मुझे पहचान लिया था। पीछे आप मुझसे पूछने लगे थे कि क्या डाक्टर की उपाधि प्राप्त करने पर भी इस मन्दिर में आने की आवश्यकता है?

"मेरा उत्तर था—हाँ! मैंने कारण भी बताया था। आप समझे अथवा नहीं समझे, पता नहीं; परन्तु हम दोनों में मित्रता बनने लगी। इसे आज बीस वर्ष हो चुके हैं और हम नियमपूर्वक प्रति मंगल के दिन इकट्ठे लड्डू चढ़ाने जाया करते हैं।

"मगर रविशंकर जी! जो बात मैं कह रहा हूँ, वह यह है कि इतनी लम्बी मैत्री के उपरांत आज आपने पहली बार मुझे भोजन पर आमंत्रित किया है। कारण तो टेलीफोन पर ही पूछना था, परन्तु टेलीफोन पर आपका पुत्र था। इस कारण उससे पूछने का साहस नहीं कर सका। मैं तो आपके मन की प्रतिक्रिया जानना चाहता था।

"इसलिए अब पूछ रहा हूँ। यह क्या अवसर है जो इस पढ़े-लिखे किताबों के कीड़े को याद किया है?"

रविशंकर अपने मन की बात बताने ही वाला था कि प्रज्ञा इत्यादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रा गए। उनके साथ ही महादेवी भी बाहर ड्राइंगरूम में ग्रा गई।

ज्ञानस्वरूप ने ग्रपनी सास ग्रौर श्वसुर के चरण-स्पर्श किये ग्रौर फिर कहा, "पिताजी ! ग्राज के निमंत्रण का मैं यह ग्रर्थ समझ रहा हूँ कि ग्रापके मन में हमारे प्रति रोष कम हो रहा है।"

रविशंकर ने ज्ञानस्वरूप के कथन का उत्तर देने के स्थान उनका परिचय ग्रपने मित्र से कराना ग्रारम्भ कर दिया। उसने बताया—

"यह है मेरी लड़की प्रज्ञा; डब्बल एम० ए० है। परन्तु ग्रपने विवाह में किसी बड़े से राय करनी चाहिए, यह इसे विदित नहीं।

"ग्रौर यह हैं इसके पति मिस्टर मुहम्मद यासीन उर्फ ज्ञानस्वरूप; ग्रौर यह हैं प्रज्ञा की सास मुसम्मात सरवर; ग्रौर यह इसकी ननद है नगीना।"

इस समय तक सब बैठ गये थे। पाचक सब के लिए जलजीरा ले ग्राया था ग्रौर सब उससे ग्रपने-ग्रपने लिए लेकर पीने लगे थे। इसके उपरान्त रविशंकर ने विष्णुसहाय का परिचय करा दिया—

"ग्राप हैं डाक्टर विष्णुसहाय एम० ए०, पी-एच० डी०, रिटायर्ड प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय।"

रविशंकर ने एक चुस्की जलजीरे की लेते हुए ग्रागे कहा, "मेरे बरखुरदार उमाशंकर जो पांच वर्ष तक ग्रमेरिका में मैडीसिन पढ़ कर ग्राये हैं, ने ग्रपनी बहिन इत्यादि को ग्रामंत्रित किया था। मैंने उचित समझा है कि प्रज्ञा डब्बल एम० ए० होने के ग्रभिमान को भंग करने के लिए इससे ग्रधिक शिक्षित व्यक्ति को बुला लूं। इस कारण विष्णुजी ! ग्रापको ग्राने का कष्ट दिया है।"

विष्णुसहाय जलजीरे का गिलास हाथ में लिए सुरकियां लगा रहा था। इस परिचय के उपरांत उसने पूछा, "परन्तु रविशंकर जी ! किसी युवक ग्रथवा युवती के ग्रपने पर ग्रभिमान को चूर-चूर करने से ग्रापको क्या मिलेगा ?"

यह प्रश्न तो विष्णुसहाय ने रविशंकर से किया था, मगर प्रज्ञा ने एक प्रश्न ग्रौर कर दिया, "ग्रौर डाक्टर साहब ! यह भी पिताजी से पूछ लीजिये कि कहीं ग्रभिमान का होना भ्रम तो नहीं है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविशंकर ने कहा—"जब तुमने अपना विवाह मुझे और अपनी माँ को बताये बिना किया था तो यह अपने में 'अहं' के होने के कारण नहीं था क्या ?"

"वह तो आज के काल की गतिविधियों का ढंग है । किसी काल में लड़के-लड़कियों के विवाह बाल्यकाल में किये जाते थे । तब उनके लिये निर्णय उनके माता-पिता करते थे । अब मेरा विवाह हुआ है जब मैं पच्चीस वर्ष की हो चुकी थी और पिताजी के दामाद की आयु इस समय अट्ठाईस वर्ष है ।

"इतनी बड़ी आयु के समाज के घटक अपनी बुद्धि का प्रयोग ही तो कर रहे हैं । इसमें वैचित्र्य कैसे आ गया ?

"और हमने अपने माता-पिता से पूछने के विषय में परस्पर राय की थी । हम दोनों की यह राय हुई थी कि विवाह का विषय सर्वथा हमारा निजी है । जो इसे उनके विचार का विषय समझते हैं, वे हम से आकर इस विषय पर बात कर सकते हैं ।"

"परन्तु यह आपके पति के डब्वल नाम क्यों हैं ?" विष्णुसहाय ने बात बदल पूछ लिया ।

उत्तर ज्ञानस्वरूप ने दिया, "भाषा की मधुरता और अर्थयुक्त होने के कारण नाम बदला था । मेरी पत्नी ने कहा कि नाम देश की भाषा में नहीं है । इस कारण मैंने उससे कह दिया कि वह कोई देश की भाषा में नाम का सुझाव दे दे । उसने यह नाम बताया, इसका अर्थ समझाया और फिर इसके अर्थों का अपने नाम के अर्थों से मेल बताया तो मैं मुग्ध हो उठा । मैंने नाम स्वीकार कर लिया ।"

"परन्तु उर्दू भी तो हमारे देश की भाषा है ?"

"उर्दू कोई भाषा नहीं है । इसकी जो लिपि है, वह भी अशुद्ध और अधूरी है । मैं जब दसवीं श्रेणी में पढ़ता था तो एक दिन उर्दू लिपि में 'क्रिया' किरया में अन्तर पूछने अपने अध्यापक के पास जा पहुँचा । उसने बताया कि यह उर्दू की लिखावट में कमी है कि इसमें बहुत कुछ नहीं लिखा जा सकता और यह इस बात के आलम-फाज़िलों का काम है कि इसके दोषों को दूर करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने उनसे पूछ लिया, तो मैं क्या करूं ?

"उसका कहना था, तुम हिन्दी ज़बान सीखो और उसकी लिपि सीखोगे तो फारसी के शब्द भी उस लिपि में लिख सकोगे।

"मैंने कालेज में हिन्दी ले ली और हिन्दी विषय लेकर परीक्षा पास की थी।

"इसलिये मैं जानता था कि देवनागरी लिपि उर्दू से अधिक मुकम्मल और बढ़िया है।

"इस पर प्रज्ञा जी ने बताया कि हमारे देश में एक बहुत पुरानी ज़बान है, जो शायद दुनिया की सब ज़बानों से पुरानी और उनकी माँ है। वह संस्कृत है। जब मेरे नये नाम का सवाल आया तो इन्होंने मेरे इस मौजूदा नाम का सुझाव दिया। मुझे यह पसन्द आया और मैंने मंजूर कर लिया।"

"मगर आपको यह किसने बताया है कि संस्कृत सब से पुरानी भाषा है ? इसकी ग्रामर तो दो सहस्र वर्ष पुरानी है। भाषा तब से ही बनी समझी जानी चाहिये, जब उस भाषा की ग्रामर लिखी जाती है।"

"मगर डाक्टर साहब ! मैंने सुना है कि संस्कृत की ग्रामर अष्टाध्यायी में लिखा है कि यह देवभाषा से निकली है। तत्कालीन समयानुसार उसके संस्कार कर यह संस्कृत बनायी गयी है।"

"हाँ ! यूरोप के फाईलोलोजिस्ट कहते हैं कि यहाँ एक यूरो-इण्डो भाषा थी, जिससे संस्कृत इत्यादि भाषायें निकली हैं।"

"डाक्टर साहब !" प्रज्ञा ने कहा, "यह इण्डो-यूरोपियन भाषा वैदिक भाषा ही थी। वेद भाषा से ही यूरोप की और भारत की सब भाषायें निकली हैं।"

"तो इससे क्या सिद्ध हुआ जो तुम सब ने नाम बदल लिए हैं ?" रविशंकर का प्रश्न था।

"नहीं, मैंने यह नहीं किया। इस ज्ञानस्वरूप नाम के निर्माण में मेरा हाथ नहीं है। ज्ञान और स्वरूप के शब्द तथा इनके लिखने के ढंग में कुछ आकर्षण है। मैंने तो इतना ही किया है कि जो ईजाद किया जा चुका था उसमें से अनुकूल को ग्रहण कर लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पुनः विष्णुसहाय ने बात का सूत्र हाथ में लेकर कहा, "आप तो बहुत अच्छी हिन्दी बोलते हैं और रविशंकर जी कह रहे हैं कि आप मुसलमान की सन्तान हैं।"

"हिन्दी भाषा, मैंने बताया है न कि बी० ए० में ली थी। इस पर भी बोलने में इसका अभ्यास नहीं था। अब पिछले आठ महीने के विवाहित जीवन में मुझे अभ्यास हो गया है। मेरी श्रीमती संस्कृत में भी एम० ए० हैं।"

"और," विष्णुसहाय ने पुनः पूछा, "आप इस बात से सुख अनुभव करते हैं?"

"जी! केवल यही नहीं मेरी माँ सरवरजी ने भी अपना नाम सरस्वती मंजूर कर लिया है। और मेरी बहिन जो पहले नगीना थी, अब अपने को कमला कही जाने से प्रसन्न होती है।"

"तो रविशंकर जी!" विष्णुसहाय का कहना था, "आपको इसमें क्या खराबी मालूम होती है? मियाँ-बीवी राजी तो क्या करेगा काजी? साथ ही मुझे इन साहब की विचार-दिशा में कुछ भी दोष प्रतीत नहीं होता।"

"मगर मजहब का प्रश्न तो है ही?" रविशंकर ने कह दिया।

"वह क्या होता है?" विष्णुसहाय का प्रश्न था।

"जो आप हनुमानजी के मन्दिर में प्रति मंगल के दिन करने जाते हैं?"

"वह तो मैं वहाँ चाट खाने और मिठाई खरीदने चला जाता हूँ। खरीदी मिठाई में से थोड़ी मन्दिर में चढ़ा देता हूँ। वह भी इसलिए कि मन्दिर वाले वहाँ प्रति सप्ताह मेला लगाकर जो उपकारी कार्य करते हैं, उसका प्रतिकार कुछ उनको देना ही चाहिए।"

"और हनुमानजी की मूर्ति?"

"वह तो मिट्टी की बनी हुई है। बचपन में मैं अपने गाँव में कई बना-बनाकर गिराया करता था।"

रविशंकर ने मन में विचार किया कि इस नास्तिक डाक्टर को अपने घर के झगड़े में मध्यस्थ बना उसने भारी भूल की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विचार कर उसने कह दिया, "मित्र ! हमारे कार्यों के बाहरी रूप और उनके नीचे मन की भावना में सदा अन्तर रहता है । इस कारण प्रत्येक कार्य को करने का हृदय में कारण जो कुछ रहता है, वह कार्य रूप से प्रकट नहीं होता । उसको जानने के लिए कार्य करने वाले के मन को खोद-खोदकर पता करना होता है ।"

"और ज्ञानस्वरूप के कार्य का कारण इसके मन में खोदने के लिए आपको बुलाया है । मैं एक मज़हबी आदमी हूँ और इस कारण इनके इस सब कार्य को छलना मानता हूँ । यह मेरी लड़की को इस घर से ले गया है और अब मेरे लड़के उमाशंकर पर हाथ साफ करने का यत्न कर रहा है ।"

महादेवी, उमाशंकर और शिवशंकर रविशंकर की बात पर मुस्करा रहे थे । प्रज्ञा सन्तुष्ट बैठी थी । ज्ञानस्वरूप तो सहज स्वभाव बातचीत कर रहा था, मानो वह दुकान पर ग्राहकों से बात कर रहा हो । आज कमला गम्भीर बैठी थी । वह समझ रही थी कि यह सब-कुछ उमाशंकर के पिता उसे घर से बाहर रखने के लिए कह रहे हैं । उसकी चिन्ता का विषय उसके अब्बाजान का मुकद्दमा था । उसकी हाज़िर जमानत हो चुकी थी और अगामी वीरवार को पेशी थी, जिसमें उसने अर्ज़ी का उत्तर देना था । उत्तर वकील तैयार कर रहा था । उसकी चिन्ता का विषय यह था कि वकील उमाशंकर का मित्र था और उसने ही तय किया था । इस कारण उमाशंकर के प्रयास को डाइनमाईट लगाकर व्यर्थ करने का यत्न किया जा रहा था । वह यह समझ चिन्ता अनुभव कर रही थी ।

विष्णुसहाय बोल उठा, "भाई रविशंकर ! जो कुछ अभी तक पता चला है वह यह है कि ज्ञानस्वरूपजी मज़हबी मनोवृत्ति नहीं रखते और आप मज़हबी मनोवृत्ति रखते हैं । इस कारण दोनों में पट नहीं रही ।

"जो अवस्था मेरी आपके सम्बन्धों की है, यदि ज्ञानस्वरूप भी वैसा ही समझ ले तो जैसे हम दोनों की पट रही है, वैसे ही दामाद-श्वसुर की भी पट जायेगी ।"

"हमारे सम्बन्धों में क्या बात है ?" रविशंकर का प्रश्न था ।

"सर्वथा सरल और स्वाभाविक । हम बाहरी व्यवहार में एक समान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। इसे आप मज़हब कहते हैं और मैं इसे चाट खाना तथा मन्दिर पर खेल-तमाशा देखना समझ रहा हूँ। नाम कुछ भी हो, दोनों के व्यवहार में समानता ही है।

"आप भी मन्दिर में प्रसाद चढ़ाते हैं और मैं भी चढ़ाता हूँ।

"आप इससे मन में सुख अनुभव करते हैं, मैं भी इसको एक मनोरंजन का कार्य समझ सुख अनुभव करता हूँ। इस पर भी हम दोनों समान व्यवहार में उद्देश्य भिन्न-भिन्न हैं। मेरा मनोरंजन होता है और आपकी आत्मा को सुख मिलता है।

"इसी प्रकार आप दामाद का सत्कार-आदर कर सकते हैं और वह भी आपका आदर-सत्कार कर सकता है। दोनों का व्यवहार समान होगा। परन्तु आपके मन में इसके व्यवहार को न पसन्द करते हुए भी दिखावा तो करना ही होगा। ज्ञानस्वरूप मन में क्या समझेगा, यह वह जाने। परन्तु जब तक व्यवहार में समानता रहेगी, आपका सम्बन्ध ज्ञानस्वरूप से ऐसे ही बना रहेगा जैसे हमारी मित्रता है।"

सब बच्चे हँसने लगे। इससे कुछ चिढ कर रविशंकर ने पूछ लिया, "तो आपसे मेरी मित्रता है?"

"बहुत गहरी। परसों मंगल के दिन फिर वहाँ मन्दिर के प्रांगण में मिलेंगे। चाट खायेंगे। कांजी वाले बताशे और दही इमली में सने भल्ले खायेंगे। फिर सवा रुपये का प्रसाद। उसमें से कुछ मन्दिर के लिए और शेष अपने बच्चों का मुँह मीठा कराने के लिए घर पर। यह पिछले बीस वर्ष से चल रहा है। अब भी चलेगा।"

"तो आपके मन में हनुमानजी के लिए श्रद्धा नहीं है?"

"श्रद्धा तो है। एक महापुरुष में श्रद्धा की भाँति। परन्तु महावीरजी मन्दिर में तो हैं नहीं। वह मेरे और आपके मन में ही हैं। मेरे मन में उसका स्वरूप यह है कि बहुत अतीत काल में एक कठिनाई में फँसे महापुरुष राम को इस वीर ने सहायता दी थी। आपके मन में क्या है, यह मैं नहीं जानता।"

"परन्तु मैंने मन्दिर में प्रसाद चढ़ाने के समय जो मन में आकांक्षा की है, वह सदा पूर्ण हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णुसहाय हँस पड़ा और बोला, "और कभी अपनी लड़की के इस सम्बन्ध के विषय में भी कुछ महावीरजी से माँगा है क्या ?"

"माँगा है ।"

"क्या ? यदि बताने में कुछ आपत्ति न हो तो बता दें ।"

"आकांक्षा तो सदा यह की है कि वह इसका कल्याण करें । जिस ओर यह जा रही है, वह उसे वहाँ से बाँह पकड़कर बचा लें ।'

"तो रविशंकरजी ! चिन्ता किस बात की करते हैं ? वह इसका मार्ग कल्याणमय बना देंगे ।

"देखो भाई ! भगवद्गीता में लिखा है, जो-जो मनुष्य जिस-जिस देवता की भक्ति करता है, वह-वह देवता उसे प्राप्त हो जाता है और वह आपको भी प्राप्त होगा ।

"और हाँ, आपने टेलीफोन कराया था कि मध्याह्न का भोजन मिलेगा और अब एक बज रहा है । भूख लग रही है । महावीरजी का आश्रय लेकर भोजन करिये, सब ठीक होगा ।"

सब उठ खड़े हुए । भोजन के लिए डाइनिंगरूम में जाते-जाते विष्णुसहाय ने कहा, "परन्तु एक बात बता दूं । वह भी समझ लेना । वह यह है कि परमात्मा के भक्तों का यह मार्ग नहीं है । ऐसा वहाँ लिखा है कि देवताओं में भक्ति अस्थाई फल वाली होती है ।"

"यह क्यों ?" साथ-साथ चलते हुए रविशंकर ने पूछ लिया ।

"यह इस कारण कि ये देवता भी अस्थाई होते हैं । हनुमानजी नहीं रहे । राम और कृष्णजी भी नहीं हैं । इनकी भक्ति का फल भी नहीं रहेगा ।

"जैसे किसी मित्र की मित्रता अस्थाई होती है, वैसे ही देवता की भक्ति का फल भी अस्थाई होता है ।"

सब खाना खाने की मेज पर बैठ गये । प्रज्ञा सब की प्लेटों में खाने के पदार्थ डालने लगी थी ।

"कुछ लोग," विष्णुसहाय ने आगे कह दिया, "मित्र के निधन के उपरान्त उसकी स्मृति को अपने चित्त में हरा-भरा रखने का यत्न करते रहते हैं । परन्तु मित्र का अपना चित्त भी तो नष्ट होने वाला होता है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविशंकर को हिन्दू फिलौसोफी की एक झलक ही विष्णुसहाय से प्राप्त हुई। उसको समझ आया कि पीर-पैगम्बर अथवा अवतार भी समाप्त हो गये तो उनकी पूजा-पाठ भी स्थाई लाभ करने वाली नहीं होगी। तो किसकी भक्ति करनी चाहिए? इस पर भी अपनी अज्ञानता न प्रकट करने के लिए उसने मौन रहना ही उचित समझा।

विष्णुसहाय ने मुस्कराते हुए प्रज्ञा से पूछ लिया, "परन्तु बेटी! तुमने कुछ तो इन कहे जाने वाले ज्ञानस्वरूप में देखा होगा, जिससे आकर्षित हो तुमने इनको पति मान लिया था?"

"जी! देखा था। इनकी निर्भीक और सौम्य आँखों में तथा इनकी युक्तियुक्त वार्तालाप में परमात्मा का वास समझा था और मैं समझती हूँ कि ठीक ही समझा था। इस कारण अपनी सूझ-बूझ पर मैं गर्व किया करती हूँ।"

"ईश्वर तुम्हारी मनोकामना पूरी करे। यदि जीवित रहा तो आगामी वर्ष अपने जन्मदिन पर तुम्हारी निष्ठा का फूल देखने का यत्न करूँगा।"

इस पर ज्ञानस्वरूप ने अपने घर की बात बता दी, "पिछले मंगल के दिन उमाशंकर जी ने अपने क्लीनिक का उद्घाटन किया था और यहाँ पिताजी ने अपनी लड़की को आमंत्रित किया था। परन्तु वह निमंत्रण-पत्र हम तक नहीं पहुँच सका। कारण यह कि मेरे मन में क्रान्ति उत्पन्न हो गयी थी। मैंने अपना और अपने मकान का नाम बदल डाला था। डाकिये ने पुराने नाम से आया निमंत्रण-पत्र वापस कर दिया। पीछे दादा उमाशंकरजी ने टेलीफोन कर अपनी बहिन को बुला लिया था।

"इस पर पिताजी नाराज हो गये और उनकी लड़की यहां से अनादर पूर्वक लौटा दी गयी।

"आज फिर जब यहाँ भोजन का निमंत्रण मिला तो मेरी अम्मी ने यह शंका प्रकट की थी कि उस दिन वाले व्यवहार की पुनरावृत्ति हो सकती है। यद्यपि बीच में एक दिन हम यहाँ भोजन कर चुके थे, इस पर भी शंका बनी ही हुई थी।

"परन्तु प्रज्ञा जी और मेरी भी यही राय बनी कि जाना चाहिए। हमारे हृदय में किसी प्रकार का द्वेष नहीं। इस कारण हमें किसी दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के मन के भावों का अनुमान अपने मन से ही लगाना चाहिये।

"साथ ही प्रज्ञा जी ने कहा कि यदि कुछ नाराजगी प्रकट की जायेगी तो हमारे मन पर उसका प्रभाव पहले की भाँति ही नहीं होगा। इस कारण अपमान नहीं होगा। मान-अपमान तो मानने से ही होते हैं।

"बस हम चले आये हैं।

"परन्तु डाक्टर साहब! हमारे घर में उसी दिन एक अन्य दुघर्टना; जो इससे भी अधिक गम्भीर है, घटी थी। मेरे अब्बाजान मेरी इस बहिन को अपने घर ले जाने के लिए आये थे। वह इसका विवाह वहाँ करना चाहते हैं जहाँ यह नहीं चाहती। इस कारण इसने अब्बाजान के साथ जाने से इनकार कर दिया। इस पर अब्बाजान ने पिस्तौल निकाल लड़की की हत्या कर देने का यत्न किया। मुझे समय पर समझ आ गया कि अब्बाजान क्या कर रहे हैं। मैंने उनको अपनी बाहों में दबोच लिया और लड़की बच गई। पुलिस आयी, परन्तु अब्बाजान ने कुछ ले-देकर अपनी जान बचायी।

"परन्तु अगले ही दिन उन्होंने मेरे और अपनी लड़की के वारण्ट निकलवा दिये। उनका कहना था कि मैं अपनी बहिन का किसी हिन्दू से किसी अपने लाभ के लिए विवाह करना चाहता हूँ और उसे जबरदस्ती अपने घर पर रख रहा हूँ।

"वह थानेदार, जिसने अब्बाजान से कुछ ले-देकर उनको छोड़ दिया था, मेरे पास आकर बता गया कि हमारे वारण्ट आने वाले हैं।

"मैंने मजिस्ट्रेट के सामने हाज़िर होकर अपनी और अपनी बहिन की जमानत हाज़िर कर दी है। अब हमें उनके दावे का उत्तर इस वीर-वार को देना है।"

विष्णुसहाय हँस पड़ा और बोला, "इसे ही तो मैं परमात्मा के अस्तित्व को न मानना कहता हूँ। मुझे कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि रविशंकरजी जैसे मन्दिर में जाने वाले और आपके अब्बाजान जैसे मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वाले एक ही श्रेणी के व्यक्ति हैं।

"दोनों मज़हबी हैं और नाशवान देवताओं की पूजा करने वाले हैं और दोनों ही खुदा से 'मुन्किर' हैं। इस कारण दोनों ही नास्तिक हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सब गम्भीर हो शिव के पिता का मुख देखने लगे ।

: ८ :

उस दिन रविशंकर के घर तीन बजे मध्याह्नोत्तर तक गोष्ठी चलती रही। समाप्त हुई विष्णुसहाय के एकाएक बातें बन्द कर यह कहने पर कि उसे चार बजे एक स्थान पर काम है, इसलिए वह छुट्टी चाहता है।

ज्ञानस्वरूप इत्यादि भी उठ चलने को तैयार हो गये। महादेवी ने लड़की से पूछ लिया, "अब फिर कब आग्रोगी ?"

"माताजी ! जब आप कहेंगी, चली आऊँगी। मुझे यहाँ तक आने में कष्ट नहीं होता। हाँ, कुछ महीने उपरान्त फिर आपको मेरी सुध लेने आना पड़ेगा।"

"परमात्मा भला करेगा।"

प्रज्ञा इत्यादि मकान से बाहर निकल अपने 'अरुणाचल' लॉज की ओर चल पड़े।

जब ये लोग गये तो उमाशंकर अपने क्लीनिक में जाने से पहले अपने बेडरूम में चला गया, परन्तु वहाँ शिव खड़ा था। बड़े भाई ने उसे देखा तो पूछ लिया, "शिव ! कुछ बात है ?"

"हाँ, दादा ! मैंने कमला से कुछ कहा था जिस पर वह बोली कि वह मेरी बड़ी भाभी है। मैं इसका अर्थ समझने यहाँ आया हूँ।"

"तो यह कोई लैटिन ग्रीक भाषा का वाक्य है, जो इसका अर्थ नहीं समझे ?"

"दादा ! लैटिन ग्रीक तो नहीं, परन्तु इस लड़की से मैं शादी की लालसा करने लगा था।"

"ओह···!" वह छोटे भाई का मुख देखने लगा।

"तुमने उससे क्या कहा था ?" उमाशंकर ने शिव से पूछ लिया।

"यही कि मुझे आप बहुत सुन्दर दिखाई देती हैं। मैं आपके स्वप्न लेने लगा हूँ। इस पर वह बोली, 'तभी तो आपके बड़े भाई ने मुझे आपकी भाभी बनाने का फैसला किया हुआ है।'

"बस, मैं चुप कर गया। तो दादा ! क्या यह सच है ?"

"हाँ···! मगर···।" उमाशंकर मन में कुछ विचार करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ देर आँखें मूंद विचार कर उसने कहा, "देखो शिव! तुम मुझे बहुत प्रिय हो। परन्तु यह महाभारत का काल नहीं जो एक स्त्री पांच भाइयों की पत्नी का काम दे सके।

"इस कारण मैं एक बात कहता हूँ कि यदि वह तुम्हें मुझ पर उपमा देगी तो मैं अपना दावा छोड़ दूंगा। यह आजादी तुमको नहीं, यह उसे है।

"मेरे कहने का मतलब यह है कि यदि वह तुमसे विवाह करना नहीं चाहती तो तुम्हें उसके चरण ऐसे छूने चाहिएँ जैसे माताजी के प्रातःकाल छूआ करते हो। अब जाओ। मुझे एक घण्टा आराम करने दो। तब क्लीनिक में जाने का समय हो जायेगा।"

शिव कमरे से निकल अपने कमरे में जा रहा था कि मार्ग में माँ मिल गई। उसने पूछा, "भाई से क्या कहने गये थे ?"

"माताजी ! कुछ विशेष नहीं। डाक्टर विष्णुसहाय के विषय में ही पूछने गया था।"

इस पर महादेवी की हँसी निकल गई। उसने कहा, "उमा कुछ नहीं जानता। इधर आओ, मैं बताती हूँ।"

दोनों ड्राइंगरूम में आ गए। रविशंकर वहाँ बैठा इलस्ट्रेटिड वीकली पत्र पढ़ रहा था।

महादेवी एक तरफ बैठ शिव को समझाने लगी, "आज से बीस वर्ष के लगभग पहले की बात है कि एक दिन तुम्हारे पिता घर पर आये और कहने लगे कि तुम मेरी हँसी उड़ाया करती हो, हनुमान जी के मन्दिर में जाने के लिए। आज एक एम० ए०, पी-एच० डी० को मैं मन्दिर में जा प्रसाद चढ़ा वहाँ से टीका लगवाते देख आया हूँ।

"मैंने पूछा था, 'तो क्या हुआ ?'

"तुम्हारे पिता कहने लगे, 'हनुमानजी कृपानिधान हैं। उनकी सहायता से ही मैं सैक्रेटरी बन गया हूँ।'

"मेरी हँसी निकल गई और ये श्रीमान् मुझसे कई दिन तक नाराज रहे। उसके उपरान्त ये नियमित रूप से प्रति मंगल के दिन हनुमानजी के मन्दिर पर प्रसाद चढ़ाने जाते रहे हैं। घर आकर इस डाक्टर विष्णु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सहाय की प्रशंसा के पुल बाँधा करते थे।

"आज इनके मित्र की श्रद्धा-भक्ति और मन्दिर जाने का भाँडा फूट गया है। वह तो वहाँ चाट खाने और मिठाई खरीदने जाया करते हैं और यह श्रीमान्, तुम्हारे पिता यह समझते थे कि इन हनुमानजी की कृपा से ही यह छः सौ रुपये महीना वेतन लेने वाले रिटायर होने के समय बाईस सौ रुपये लेते थे।

"उन दिनों हम 'हैवलोक-स्क्वेयर' में रहते थे और आज हम इस आलीशान कोठी में रहते हैं।

"तुम्हारे पूज्य पिताजी समझते हैं कि यह उन्नति महावीर हनुमानजी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ाने का ही फल है।

"मैं जब भी इनको कहती थी कि यह उन्नति इनकी योग्यता के कारण है तो ये मुझे मूर्ख कह दिया करते थे और सदा गवाह के रूप में अपने दूसरे मित्र का नाम ले दिया करते थे।

"आज इनके मित्र इनको बता गए हैं कि उनकी उन्नति और इनकी उन्नति दोनों के अपने-अपने कुछ एक गुणों के कारण थी। उनका हनुमान के मन्दिर में जाने से कुछ भी सम्बन्ध नहीं। मन्दिर का सम्बन्ध तो चाट खाने और मिठाई खरीदने से था।"

रविशंकर का ध्यान माँ-पुत्र में हो रहे वार्त्तालाप की ओर चला गया था। इस कारण उसने अपनी पत्नी के कथन में संशोधन कर दिया। उसने कहा, "देखो शिव! तुम्हारी माँ तुम्हें ठीक बात नहीं बता रही। मैं यह मानता हूँ कि मेरी उन्नति का रहस्य हनुमानजी की कृपा ही है और डाक्टर विष्णुसहाय ने मेरी बात की पुष्टि की है।

"भगवद्गीता में कहा है कि जो-जो भक्त, जिस-जिस देवता की भक्ति करता है, वह उस-उस देवता को पा जाता है और वह देवता उस पर कृपा कर उसे अपने पूर्ण रहस्य बता देता है। बस, यही मेरे साथ हुआ है।"

"क्या हुआ है पिताजी?"

"एक बार की बात बताता हूँ। मैं उन दोनों विधि-मंत्रालय में अण्डर-सेक्रेटरी था। विधिमंत्री ने कुछ भूल कर दी थी और लोकसभा में उस पर भारी नुक्ता-चीनी हो रही थी। मंत्री महोदय बहुत परेशान थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उन्होंने सैक्रेटरी को बुलाया। सैक्रेटरी छुट्टी पर था। उसके स्थान पर मैं गया तो उन्होंने कहा, 'यह वक्तव्य बिल्कुल गलत है। अब लोकसभा में उस वक्तव्य पर मेरी वह हँसी उड़ायी गई है कि मेरा सिर से पाँव तक पसीना छूट रहा है।

'प्रधानमंत्री ने आज मुझे शाम की चाय पर बुलाया है। मैं समझता हूँ कि वह मुझे मंत्री पद से त्याग-पत्र देने के लिए कहने वाले हैं।'

"मैंने उसी समय हनुमानजी का चिन्तन किया और कह दिया, 'श्रीमान्! आपको अपनी भूल स्वीकार कर लेनी चाहिए और कह देना चाहिए, 'टू अर इज ह्यूमन।' साथ ही कह दीजिए कि आप कल लोकसभा में एक वक्तव्य देंगे और मैं आपको वह वक्तव्य बनाकर कल प्रातःकाल दे दूंगा। विश्वास रखिए, सब ठीक होगा।'

"मंत्री महोदय बोले कि तुम वह वक्तव्य पहले दिखाओ, मैं पीछे प्रधानमंत्री को यह कहूँगा।

"मैंने महावीरजी को स्मरण किया और एक वक्तव्य लिख दिया। वह मंत्री महोदय को दिखाया और वह उस वक्तव्य को लेकर प्रधानमंत्री से मिलने चले गए।

"महावीरजी की कृपा से वह वक्तव्य प्रधानमंत्री ने स्वीकार कर लिया और जब अगले दिन लोकसभा में वह पढ़कर सुनाया गया तो पूरा सदन तालियों से गूंज उठा।

"मेरे वक्तव्य का आशय था—'भूल तो सब करते हैं। सदन का कोई सदस्य यह दावे से नहीं कह सकता कि उससे कभी भूल नहीं हुई। मुझसे भी हुई है। मैं सदन से क्षमा चाहता हूँ।

'भूल यह नहीं कि उस स्टेटमेण्ट में कुछ गलत बात थी। उसका तमाम वृत्तान्त मैंने मैम्बरों की मेज पर रख दिया है। उसमें कुछ भी भूल नहीं है।

'इस पर भी भूल यह हुई है कि मैंने आप सबके सामने वह वक्तव्य नहीं दिया था जो अब रखा है। यह मेरी भूल थी और इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।'

"यह उत्तर महावीरजी ने मेरे मन में सुझाया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवशंकर ने कहा, "यह तो ठीक है। परन्तु पिताजी! इसमें हनुमान-जी कहाँ से आ गए ? और फिर यह भी तो है कि ऐसी सफलता अस्थाई होती है। यह मरने के उपरान्त नहीं रहती।"

"रहती तो है। मेरी सफलताओं का ही प्रतीक यह अढ़ाई लाख रुपये की लागत की कोठी है और मेरा इतना बैंक बैलेंस था कि तुम्हारे भाई को मैं अमरीका भेज सका था।"

"मगर आपका यह मकान और दादा की डिग्री तो आपके साथ नहीं जायेंगी। आपको अब आवश्यकता है उस वस्तु की जो इस जीवन के उपरान्त आपका साथ देने वाली है।

"यह कोठी और दादा की डॉक्टरी आपके साथ नहीं जायेगी।"

"नहीं जायेंगी तो न जाएँ। मुझे भविष्य की चिन्ता नहीं। भविष्य किसने देखा है ?"

"परन्तु पिताजी! वह तो है। उसके न मानने से संसार में जो कुछ हो रहा है, उसका भली-भाँति वर्णन नहीं किया जा सकता।"

"तो न हो। मुझे उसके वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। मेरा सम्बन्ध तो अब इस जन्म की प्राप्ति से है।"

"पर जो कुछ वर्तमान में हो रहा है, उसका कोई कारण तो होना चाहिए। अकारण इस संसार में कुछ नहीं होता।"

"देखिए श्रीमान्!" अब महादेवी ने कहा, "कहते हैं कि पंडित जवाहरलाल एक साधारण विद्यार्थी, असफल वकील और असंतुलित मन वाले, चरित्र के शिथिल और बहुत ही मोटी बुद्धि रखने वाले थे। इस पर भी वह पूरे सत्रह वर्ष तक भारत-जैसे विशाल देश के प्रधान-मंत्री बने रहे। यह किसी पूर्वजन्म में किये अच्छे कर्म का फल ही हो सकता है। इस जन्म में तो उन्होंने इस पद के लिए कुछ नहीं किया था।"

"उसने," रविशंकर ने कह दिया, "दस बार देश के लिए जेल भोगी है।"

"परन्तु सावरकर को साठ वर्ष की कैद का दण्ड मिला था। यदि जेल जाने से प्रधानमंत्री बनता है तो सावरकर को प्रधानमंत्री बनाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहिए था। सावरकर, कालेज की पढ़ाई में भी जवाहरलाल से श्रेष्ठ था, परन्तु प्रधानमंत्री बना जवाहरलाल और सावरकर सामान्य व्यक्ति की भाँति ही मरा है। बताइये, यह क्यों हुआ है ?"

"लोगों ने जवाहरलाल को पसन्द किया तो वह नेता बन गया।"

"यही तो पूछ रहा हूँ कि लोगों ने और फिर महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने जवाहरलाल को क्यों पसन्द किया ? योग्यता में तो सावरकर अधिक था।"

रविशंकर हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, "यह तो लोगों से पता करना चाहिए कि वह उन्हें क्यों पसन्द करते थे ?"

"मैं बताता हूँ।" शिवशंकर ने कह दिया, "इस देश में अंग्रेजों ने दो सौ वर्ष तक राज्य किया है। इन दो सौ वर्षों में वे अंग्रेज़ी पढ़े-लिखों को मान-प्रतिष्ठा देते रहे हैं। अंग्रेजी पढ़ों को नौकरियाँ देते रहे हैं।

"परिणाम यह हुआ है कि पूर्ण जाति अंग्रेजी पढ़े-लिखों की दास हो गई है।

"जवाहरलाल पूर्वजन्म के अच्छे अथवा बुरे कर्मों के कारण एक ऐसे व्यक्ति के घर में पैदा हो गए, जिससे उनको शिशुकाल से ही अंग्रेजी में बातचीत करने वाली दाइयाँ मिल गयीं।

"इस कारण जवाहरलाल अच्छी अंग्रेजी बोलने वाले बन गए और सावरकर एक महाराष्ट्रियन परिवार में पैदा हुए जो मराठी बोलते-लिखते तथा पढ़ते थे। वह अंग्रेजी भाषा को हटाना चाहते थे। यह भी पूर्वजन्म के कर्म का फल ही था।"

शिवशंकर ने आगे कह दिया, "पूर्वजन्म तो दोनों का था। जन्म देने वाले को पता था कि भारत में भाषा की दासता व्यापक रूप में होगी। इस कारण नेहरू को पण्डित मोतीलाल के घर में भेज दिया, जो उसे अंग्रेजी दासों का नेता बना सके।"

रविशंकर हँस पड़ा और बोला, "तो परमात्मा के घर में बहुत बड़ा दफ्तर रहा होगा जो वह सबके कर्मों का लेखा-जोखा रखता होगा ?"

"जरूर रहा होगा। कम-से-कम प्रभु के भक्त हनुमानजी से तो बड़ा कार्यालय होना ही चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर सब हँसने लगे। हँसते हुए महादेवी ने कहा, "बिना पूर्वजन्म के कर्मों के एक सामान्य बुद्धि का राजा बन जाये और एक विद्वान् रंक बन जाये, स्वीकार नहीं किया जा सकता।"

"यह सब घटनावश भी तो हो सकता है!" रविशंकर का कहना था।

"हाँ पिताजी! वैसे ही, जैसे हनुमान के मन्दिर में प्रसाद चढ़ाने का सम्बन्ध आपकी उन्नति से है।"

पुनः सब हँसने लगे।

इस पर भी विष्णुसहाय ने यह कैसे कह दिया कि नमाज पढ़ने वाला और हनुमानजी के मन्दिर में नियम से जाने वाला, दोनों परमात्मा को न मानने वाले भी हो सकते हैं। रविशंकर मन में विचार कर रहा था कि जब वह अगले मंगलवार को हनुमानजी के मन्दिर में उससे मिलेगा तो पूछेगा।

मंगल के दिन दोनों मित्र ठीक साढ़े पाँच बजे मन्दिर के द्वार पर मिले। दोनों भीतर जाने लगे तो रविशंकर ने विष्णुसहाय के कंधे पर हाथ रख उसे रोक लिया और पूछ लिया, "डाक्टर साहब! भीतर जाने से पहले मेरा एक संशय निवारण कर दीजिए।"

विष्णुसहाय ठहर गया। रविशंकर ने पूछा, "हम परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं अथवा नहीं?"

"हम अपनी भक्ति कर रहे हैं।"

"और परमात्मा?"

"वह भीतर से बाहर अधिक है।"

"क्या मतलब?"

"मेरे मुख में लार टपक रही है। वह देखो, चाट वाले की दुकान पर भीड़ लगी है। जल्दी-जल्दी प्रसाद चढ़ा आओ, फिर पेट पूजा करेंगे।"

रविशंकर गम्भीर विचार में मग्न विष्णुसहाय के साथ चल पड़ा, परन्तु उसका मन तथा बुद्धि तीव्र गति से कार्य कर रहे थे। दोनों ने मन्दिर में प्रसाद चढ़ाया और फिर एक चाट वाले की दुकान पर जा पहुँचे। दोनों ने चाट बनवाई और खाने लगे। खाते हुए रविशंकर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "चाट बहुत स्वादिष्ट है, परन्तु स्वाद तो इन्द्रियों का विषय है।"

"हाँ, वे इन्द्रियाँ स्वाद मन को बता रही हैं, मन जीवात्मा को बता रहा है।"

"देखो मित्र!" अब रविशंकर ने कहा, "यह ऐसे ही है जैसे कोई किसी वेश्या के पास जाता है और उससे रस प्राप्त करता है। रस प्राप्त करते हुए भी वह रस का प्रयोजन पूर्ण नहीं कर सकता। वासना-तृप्ति के पीछे जैसे सन्तान प्राप्ति की सिद्धि न हो, वैसे ही चाट खाना है। बिना परमात्मा की भक्ति के यह जंचता नहीं।"

विष्णुसहाय हँस पड़ा। उसने हँसकर कहा, "तो ऐसा करते हैं कि चाट यहाँ खाते हैं और फिर कहीं कनाट प्लेस के पार्क में बैठ कर परमात्मा के विषय में विचार-विनिमय कर लेते हैं। यहाँ भीड़-भाड़ में इस प्रकार की चर्चा नहीं हो सकती।"

दोनों ने चाट समाप्त की और फिर कनाट प्लेस की ओर चल पड़े। दोनों के हाथ में प्रसाद के लिफाफे थे।

कनाट प्लेस के पार्क में पहुँच दोनों एक बैंच पर बैठ गये। विष्णुसहाय ने कहा, "हाँ, अब बताओ मित्र! उस भीड़-भाड़ में क्या कह रहे थे?"

"यही कि यदि वहाँ मन्दिर में परमात्मा की भक्ति तथा आत्म-शुद्धि नहीं होती तो फिर हम वहाँ जाते क्यों हैं?"

"शरीर-पालन के लिए। वहाँ जाने का यही उद्देश्य है। परमात्मा अथवा महावीरजी लड्डू नहीं खाते। यह तो एक मेला है। इस प्रौढ़ावस्था में सप्ताह के उपरान्त एक दिन यहाँ दिल बहलाने को चले आते हैं।

"और देखो भाई! तुमने इसकी तुलना वेश्यागमन से की है। यह उचित नहीं है। हाँ, इसकी तुलना भोजन करने से हो सकती है, शेष कुछ नहीं। यदि तुम कुछ वैसा समझते हो तो वह भूल है।

"परमात्मा चिन्तन का विषय है। गीता में कहा है कि ज्ञान प्राप्त करना ही परमात्मा को जानना है। यहाँ आकर और इसी प्रकार नमाज पढ़कर हम ज्ञान-विज्ञान को छू भी नहीं सकते। मैं मानता हूँ कि इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विशाल संसार का ज्ञान ही वास्तव में परमात्मा का ज्ञान है।"

"परन्तु प्राय: वैज्ञानिक नास्तिक होते हैं ?"

"मैं यह जानता हूँ और वास्तव में उनको विशाल संसार के किनारे पर बैठा पत्थर चुन रहा ही मानता हूँ। वे सबकुछ देखते हुए भी नहीं देखते।

"देखो ! मैं बताता हूँ। यह देखो, सामने क्यारी में फूल लगे हैं। कितने सुन्दर हैं और वैज्ञानिक यह देख रहे हैं कि इनका रंग-रूप अति-लुभायमान है। परन्तु क्यों है, वे नहीं जानते। किस प्रकार सामान्य नाइ-ट्रोजन, कार्बन, हाइड्रोजन और आक्सीजन के परमाणु इस विचित्र ढंग से एकत्रित हो गए हैं, वे नहीं जानते। जानना चाहते भी नहीं। इस कारण वे इसके निर्माण करने वाले को नहीं जानते।"

"तो यह कौन जानता है ?"

"मैं समझता हूँ कि यदि हम नित्य एक घंटा-भर मिला करें और इस समस्या पर विचार किया करें तो निश्चय जानो कि तुम भी महावीर के शिष्य बनने के स्थान भगवान् कृष्ण के भक्त बन जाओगे और फिर ज्ञान की खोज में लीन हो जाओगे।"

: ६ :

ज्ञानस्वरूप और कमला दोनों के पृथक्-पृथक् जवाबदावे तैयार किए गए और अदालत में उपस्थित कर दिए गए।

मुहम्मद यासीन उर्फ ज्ञानस्वरूप ने अपने बयान में कहा, "मैंने अपना नाम बदल लिया है। यह इस कारण कि मुहम्मद यासीन अरबी-भाषा का नाम है। अरब मुझे अपने देश का नागरिक नहीं मानता। इस कारण उनकी भाषा में नाम रखने में मुझे कोई कारण समझ नहीं आया।

"मैं हिन्दू नहीं हूँ। हिन्दू कोई मत नहीं है। पेड़-पौधों को परमात्मा की भांति पूजने वाले से लेकर निराकार परमात्मा को पूजने वाले तक सब हिन्दू कहाते हैं। साथ ही आज के हिन्दू प्राय: नास्तिक हैं और मैं परमात्मा के अस्तित्व को मानता हूँ। इस कारण मैं हिन्दू नहीं हूँ।

"मैंने अपना नाम संस्कृत भाषा में रखा है, इसलिये नहीं कि मैं हिन्दू हूँ। संस्कृत विशेष रूप में वैदिक संस्कृत, जिस भाषा में मेरे नाम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द ज्ञान और स्वरूप हैं, वह प्रायः सब इण्डो-यूरोपियन भाषाओं की जननी है। यह हिन्दुओं की बपौती नहीं है। इस कारण मेरा नाम हिन्दू नहीं है। यह वैदिक भाषा का नाम है। इसका किसी मत-मतान्तर से सम्बन्ध नहीं।

"हाँ! मैं मुसलमान नहीं रहा। क्यों? यह मैं इस अदालत में नहीं बताऊँगा। मैं इस अदालत को इस विषय पर जाँच-पड़ताल करने योग्य नहीं मानता।

"मेरा विवाह एक हिन्दू मत को मानने वाले की लड़की से हुआ है, मगर मेरा विवाह सिविल-मैरिज-एक्ट के मुताबिक हुआ है।

"कमला उर्फ नगीना मेरी बहिन है। इसकी माँ और मेरी माँ भिन्न-भिन्न हैं। यह मुझसे बहुत स्नेह रखती है। उसके विचार में मैं उसकी, उसके पिता से अधिक हिफाज़त करने में रुचि रखता हूँ। इस कारण मेरे पास रहती है। जब तक वह चाहे, मेरे घर में रह सकती है।"

कमला के बयान इससे भिन्न थे। उसने बयान दिए—

"मेरा पहला नाम नगीना था। नगीना फारसी भाषा का शब्द है। मुझे यह पसन्द नहीं रहा। इसलिए मैंने यह नाम बदल कर कमला रख लिया है। कमला इसलिए कि कमल एक फूल को कहते हैं। वह मुझे बहुत पसन्द है।

"नगीना भूषण में किसी पत्थर के टुकड़े को कहा जाता है। मुझे यह समझ आया है कि नगीना से कमल एक अच्छी वस्तु है। इसलिए मैंने अपना नाम कमला रख लिया है।

"इसका हिन्दू-मुसलमान से कोई सम्बन्ध नहीं। मगर मैं मुसलमान नहीं हूँ। मेरे ख्यालात इस मजहब से नहीं मिलते।

"मैं इस मजहब की दूसरी बातों के विषय में इस अदालत में बहस नहीं करना चाहती। सिर्फ उन बातों को बताती हूँ, जिस वजह से मैं किसी भी मुसलमान के घर में रहना नहीं चाहती।

"मेरे अब्बाजान कहते हैं कि वह मेरे पिता नहीं अर्थात् मैं अपनी माँ की पहली शादी का नतीजा हूँ। मुझे इसका ज्ञान नहीं। मुझे, जब से होश आयी है, मैं अब्दुल हमीद के घर में उनकी लड़की के रूप में रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रही हूँ। आज से तीन महीना पहले मेरे वालिद अब्दुल हमीद साहब ने कहा कि वह मेरी शादी अपने लड़के मुहम्मद यासीन साहब से करना चाहते हैं। इसलिए मुझे दिल्ली जाकर उनके घर में रहना चाहिए।

"मैंने तब भी कहा था कि वह रिश्ते में मेरे भाई लगते हैं। तब मुझे मेरे जन्म की कहानी बताई गई। इस पर भी मेरा स्पष्ट रूप में कहना था कि मेरे मन में मुहम्मद यासीन के लिए भाई की भावना है, इस कारण मैं उनकी पत्नी नहीं बनूंगी। इस पर भी पूरा परिवार दिल्ली आया और मुझे भाई मुहम्मद यासीन साहब के घर में रख गया।

"मैंने जब अब्बाजान की इस नीयत का वर्णन भाई को बताया तो इन्होंने कहा कि मैं इनके यहाँ बहिन की हैसियत से रह सकती हूँ।

"इसके अलावा आज से एक सप्ताह पहले मेरे अब्बाजान और मेरी अम्मी दिल्ली भाईजान के घर पर आकर मिलीं और मुझे कहने लगीं कि उन्होंने मेरी शादी एक सआदतअली से करने का फैसला किया है, इसलिए मुझे बम्बई चलना चाहिए। मैंने शादी से इनकार किया। इनकार करने में दो वजह हैं। एक तो यह कि वह मुसलमान है और मुस्लिम शरअ से मुझसे शादी करना चाहता है। मुस्लिम कानून में औरत को खाविन्द छोड़ने का हक हासिल नहीं होता और खाविन्द को यह हक हासिल है। इसी वास्ते मैंने सआदतअली से शादी मंजूर न कर, अपने हक हासिल करने के लिए मैंने मुस्लिम मजहब छोड़ दिया है। मगर अभी नाबालिग़ होने के कारण अब्बाजान को हक हासिल है कि मेरी शादी कर दें। इसलिए मैं अब्बाजान के घर में जाकर नहीं रहना चाहती।

"साथ ही सआदतअली के जीवन के साधन मुझे विदित नहीं और मैं अब्बाजान के साधनों की बाबत जितना कुछ जानती हूँ, वह यही है कि उनके साधन, कानून से स्वीकार किये साधन नहीं हैं। इस कारण मैं सआदतअली और अब्बाजान के पास जाकर रहना नहीं चाहती।

"मेरे भाईजान ज्ञानस्वरूप उर्फ मुहम्मद यासीन ने बताया है कि यह मुसलमान नहीं हैं, मुसलमानी शरअ के पाबन्द नहीं हैं। इसलिए मैं इनके घर पर रहना पसन्द करती हूँ।

"अभी तक कहीं भी शादी करने का मेरा इरादा नहीं है। जब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं नाबालिग हूँ, मैं शादी करने से पहले अपनी अम्मी और वालिद साहब की इजाजत लेकर ही करूँगी। बालिग होने पर मैं क्या करूँगी, उसके विषय में इतना ही बता सकती हूँ कि अपने हक-हकूक का इस्तेमाल करूँगी।

"मैं अपने भाई ज्ञानस्वरूप उर्फ मुहम्मद यासीन के घर रहना चाहती हूँ और अब्बाजान अब्दुल हमीद साहब के घर में रहना नहीं चाहती।"

ये बयान न्यायालय में दाखिल किए गए तो अब्दुल हमीद साहब के वकील ने इनकी नकल माँगी। इसके लिए दो महीने की तारीख पड़ गई। मुहम्मद यासीन और नगीना को जमानत पर छोड़ दिया गया।

बयान दाखिल करते समय बहिन-भाई, दोनों न्यायालय में उपस्थित थे। इस कारण दोनों का अब्बाजान से आमना-सामना हो जाना स्वाभाविक था। अदालत में ही कमला ने हाथ जोड़ उनको सलाम-आलेकुम कह दी। अब्दुल हमीद ने उत्तर देने से बचने के लिए मुख मोड़ा तो उधर ज्ञानस्वरूप खड़ा था। उसने हाथ जोड़ आदाब अर्ज कर दी। अब्दुल हमीद ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि मुकद्दमा कर मैंने ठीक ही किया है। तुम दोनों को अक्ल आ रही मालूम होती है।"

"अब्बाजान! मैं भी अक्लमन्दों में शामिल हो रही हूँ और आपकी अनायत ही इसमें वजह है।" कमला ने कह दिया। अब्दुल हमीद ने जब मुख मोड़ा था तो कमला अब्बाजान की पीठ की तरफ हो गई थी। इस पर ज्ञानस्वरूप ने कहा, "अब्बाजान! बहिन की सलाम भी कबूल होनी चाहिए।"

"तो तुम क्या चाहते हो जो दोनों मुझे घेर कर खड़े हो गए हो?"

"यह तो आप बताइये कि आप क्या चाहते हैं? मुकद्दमा आपने किया है। हम तो मुद्दालय हैं।" ज्ञानस्वरूप ने कहा।

"मैं कुछ नहीं चाहता। यह तो नगीना की माँ चाहती है। वही मैं कर रहा हूँ।"

"पर अब्बाजान! जब बयान वकील दर्ज कर रहा था, तब आपके पास बैठा एक व्यक्ति आपसे कुछ पूछ रहा था?"

"हाँ! उसका क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह यहाँ के एक रोजाना अखबार का नुमाइन्दा है। जो कुछ आपने कहा है, वह कल अखबार में छप जायेगा और आपके खानदान का नाम रोशन हो जायेगा। यह बात मुल्क-भर में फैल जायेगी कि बम्बई के एक बहुत बड़े खोजा ने अपनी लड़की पर दावा किया है क्योंकि वह लड़की बाप से तजवीज़ शुदा लड़के से शादी नहीं करना चाहती थी।"

"तो क्या किया जाये?"

"अब्बाजान! इसमें कानून की एक खास, लेकिन बेतुकी बात है। उसके लिए सुप्रीमकोर्ट तक जाना पड़ेगा। वह यहाँ के छोटे हाकिम तय नहीं कर सकेंगे।"

"यह तुम देखो कि तुमको कितनी तकलीफ होगी।"

"मैं अपनी तकलीफ की बात नहीं कह रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि सुप्रीमकोर्ट से फैसला लेते हुए तीन साल लग जायेंगे और तब तक कमला बालिग हो जायेगी। आपका मुकद्दमा अप्रभावी हो जायेगा और सब खर्च हुआ पैसा तथा मेहनत बेकार हो जायेगी।"

"मगर यह तुम्हारे साथ भी तो होगा।"

"मेरे साथ और आपके साथ, दोनों का खर्च एक ही खानदान में से जायेगा। मैं तो आपके रुपये में और अपने रुपये में फर्क नहीं मानता। इसलिये दोनों के खर्च की ही बात कह रहा हूँ। अभी दो महीने की तारीख पड़ी है। तब आपको बयानों की नकल मिलेगी। उससे अगली तारीख तीन-चार महीने की पड़ेगी। इस तरह इस मामूली-सी बात में ही छः महीने निकल जायेंगे। नगीना के बालिग होने में डेढ़ साल रह जायेगा। अब्बाजान! यकीन जानें कि इस मुकद्दमे में आपका मतलब हल होने वाला नहीं है।"

अब्दुल हमीद अपने वकील का मुख देखने लगा। वकील ने कहा, "अगर इस मसलह पर बात करनी है तो मैं समझता हूँ कि आइये, रैस्टोराँ में चलें। वहाँ चाय पीते हुए बात हो सकेगी।"

कमला ने कह दिया, "भाईजान! मैं तो घर लौट रही हूँ। मेरे म्यूज़िक मास्टर के आने का वक्त हो गया है।"

"तो फिर बात कौन करेगा?" अब्दुल हमीद ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानस्वरूप ने कह दिया, "अब्बाजान ! आइये, आपको भी चाय अपने घर पर ही पिला दूंगा । कमला मेरी मोटर में घर जायेगी । आप भी चल सकते हैं और फिर वहीं बात हो जाएगी ।"

अब्दुल हमीद का वकील मुहम्मद असलम हँस पड़ा । हँसते हुए बोला, "यासीन साहब ! मुझे भी चाय की दावत दें तो मैं भी आपकी बातचीत में हिस्सा ले सकता हूँ ।"

अब्दुल हमीद ने कहा, "इस प्रकार नहीं । मैं कल बम्बई चला जाऊँगा । इसीलिए अपनी अम्मी को भी इस गुफ्तगू में शामिल कर लो तो ठीक है । फैसला उसके साथ ही होना चाहिए । मैं तो उसका एजेण्ट हूँ ।"

"क्यों वकील साहब ?"

असलम ने कहा, "मैं अपना बस्ता अपने मुंशी को दे दूं तो आपके साथ चल सकता हूँ ।"

इस तरह अब्दुल हमीद, ज्ञानस्वरूप, कमला और वकील मिस्टर मुहम्मद असलम ज्ञानस्वरूप की मोटर में सवार हो पहले इम्पीरियल होटल में गए, वहाँ से सालिहा बेगम को ले, सब लदे-फदे ग्रेटर कैलाश में अरुणा-चल लॉज में जा पहुँचे । वहाँ प्रज्ञा और सरस्वती इस भीड़-भाड़ को आया देख भौंचक्क रह गयीं । आखिर सरस्वती ने पूछा, "क्यों साहब ! आज भी पिस्तौल साथ लाए हैं ?"

इस समय सब कोठी के ड्राइंगरूम में जा पहुंचे थे । पिस्तौल की बात सुन अब्दुल हमीद हँस पड़ा । उसने पत्नी की ओर देखकर कहा, "तो तुम्हें पिस्तौल से अभी भी डर लग रहा है ?"

"जब हद से ज्यादा अक्लमंद खाविन्द मिल जाए तो उससे डरते रहना ही चाहिये ।"

कमला ने कहा, "अब्बाजान ! आपने तो हत्या की कोशिश कर ही दी थी । वह तो भैया को वक्त पर सूझ गयी और इन्होंने आपको अपनी बाहों में दबोच लिया । वरना आपने तो हम सब का काम तमाम करने का फैसला कर लिया था ।"

अब्दुल हमीद हँस पड़ा और उसने बात बदल दी, "यह यासीन कह रहा है कि मुकद्दमे का फैसला होने में तीन साल लग जायेंगे और तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तक नगीना बालिग हो जायेगी और मेरा दावा फिजूल हो जायेगा ।"

"हाँ ! यह हमारे वकील ने कहा है । उसका कहना है कि आप इस बात का तो इंजेक्शन ले सकते हैं कि बालिग होने तक शादी न कर सके, मगर जहाँ वह शादी नहीं करना चाहती, वहाँ शादी करने का हुक्म कोई अदालत नहीं दे सकती ।"

"मगर शरअ में तो यह है ?"

"होगा । मगर यह अपने मुल्क के कानून के खिलाफ है ।"

"क्यों वकील साहब ? आप क्या कहते हैं ?"

असलम ने कहा, "मैं तो यह कहूँगा कि चाय लेते हुए बात करें तो ज्यादा ठीक रहेगा ।"

अब्दुल हमीद हँस पड़ा । ज्ञानस्वरूप ने घंटी बजाई तो बेयरा आ गया । उसे सबके लिए चाय लाने के लिए कह दिया गया ।

अभी बेयरा चाय नहीं लाया था कि किसी ने बरामदे में लगी घंटी का बटन दवाया । घंटी बजी तो प्रज्ञा उठकर बाहर चली गयी । वहाँ द्वार पर शिवशंकर खड़ा था । प्रज्ञा ने पूछा, "शिव ! कुछ खास काम है ?"

"दीदी ! खास कुछ नहीं । मेरी परीक्षा समाप्त हुई हैं तो मैं खाली हो गया हूँ और इसलिये समय काटने के लिए वाकिफ लोगों के घरों के चक्कर काट रहा हूँ । आज ख्याल आया था कि दीदी के घर की सैर करनी चाहिये ।"

"मेरी राय है कि इस वक्त भाग जाओ । हमारी कोठी में तुम्हारे जीजाजी के अब्बाजान आये हैं और मुकद्दमे की बाबत बातचीत होने वाली है । उनके वकील भी साथ हैं । तुम मेरे घर की सैर किसी दूसरे दिन करने के लिए आना ।"

शिवशंकर हँस पड़ा और बोला, "ठीक है ! फिर किसी दिन आऊँगा ।"

इतना कह वह चल दिया । प्रज्ञा भीतर आयी तो सबके लिए चाय और मिठाई इत्यादि लायी जा चुकी थी और सैण्टर-टेबल पर सजाई जा चुकी थी ।

प्रज्ञा बैठ चाय बनाने लगी तो ज्ञानस्वरूप ने पूछ लिया, "कौन था ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कोई था, पीछे बताऊँगा।"

अब ज्ञानस्वरूप ने अपनी बात कह दी। उसने कहा, "मैं चाहता हूँ कि मुस्लिम सिविल लॉ के कुछ मुकद्दमे सुप्रीमकोर्ट में जायें तो इस विरोधाभास को दूर किया जा सके कि भारत के एक शहरी के मौलिक अधिकार ऊपर हैं अथवा इस्लामी कानून।

"मुसलमान अपने आप तो अपने सिविल कानूनों में तबदीली करायेंगे नहीं। मगर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले कानून में संशोधन का काम दे सकते हैं।"

"तो सुप्रीम कोर्ट का फैसला मुसलमानों के शरअ को भी बदल सकता है?" अब्दुल हमीद ने पूछा।

"हाँ!" ज्ञानस्वरूप ने बताया, "हमारे वकील का कहना है कि जब तक हमारी संसद उस फैसले को रद्द कर कुछ कानून न बनाये तब तक फैसला कानून की हैसियत रखता है।"

"तो इससे कैसे बचा जा सकता है?" अब्दुल हमीद का प्रश्न था।

"यह आपके वकील साहब बतायेंगे।" ज्ञानस्वरूप ने मुहम्मद असलम की ओर संकेत कर दिया।

मुहम्मद असलम ज्ञानस्वरूप द्वारा प्रस्तुत समस्या पर विचार कर रहा था कि यदि सुप्रीम कोर्ट तक बात गई और कोई ऐसा फैसला हो गया कि एक व्यक्ति के मौलिक अधिकार शरअ से ऊपर हैं तो यह मुसलमानों के हक में नहीं होगा। उसने तुरन्त एक सुझाव रख दिया। उसने कहा, "सही दिमाग मुसलमानों को अपनी मर्जी से बात घर में ही तय कर लेनी चाहिए। हकीकत यह है कि कायदे-कानून और धर्म सोसाइटी के अनपढ़ लोगों के लिए होते हैं। अक्लमन्द तो कानून से दूर रहकर अपने मन की बात करने का रास्ता निकाल लेते हैं।

"देखिए! मैं आपको एक मिसाल से समझाता हूँ। सोना विदेशों में सस्ता है। हमारे मुल्क में सरकार ने इस पर टैक्स लगा इसे बहुत मंहगा कर रखा है।

"तो जो मूर्ख आदमी हैं, वे बाजार से सोना आठ-नौ सौ रुपये दस ग्राम का खरीदते हैं और अक्लमंद इसे चोरी-चोरी विदेशों से खरीदकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मंगवा लेते हैं।

अब्दुल हमीद के कान खड़े हो गए। यह उसका धन्धा था। इस कारण वह वकील की बात को समझने के लिए सावधान हो गया।

मुहम्मद असलम ने आगे कहा, "मेरा एक दोस्त समुद्री जहाज से अफ्रीका, नैरोबी से आया है। उसने आने से पहले अपनी कमीज के बटन और स्टड सोने के खरीद लिये। वहाँ तीन सौ रुपये दस ग्राम का दाम है। इन बटनों में पचास ग्राम सोना लगा हुआ था। इसका उसे डेढ़ हजार रुपया देना पड़ा। यहाँ हिन्दुस्तान में उस पचास ग्राम सोने के दाम बने हैं चार हजार रुपये। मैं समझता हूँ कि थोड़ी-सी अक्लमंदी से कानून को ताक में रख उसने लाभ उठा लिया है।

"यही शरअ की बाबत कह रहा हूँ। अगर मुकद्दमा सुप्रीम कोर्ट में चला गया तो यकीनन फैसला नगीनाजी के हक में जायेगा और जो फैसला हो गया, उसको बदलने के लिए कानून, मेरा मतलब है संविधान बदलने की कोशिश करनी पड़ेगी जो बहुत मुश्किल है। तब शायद शरअ रद्द मानी जाएगी। तब सारे मुल्क में बदअमनी भी फैल सकती है।

"अगर आप नगीनाजी से कुछ घर में फैसला कर लें और इसे कुछ ले-देकर राजी कर लें तो शरअ की इज्जत बच सकती है।"

इसमें ज्ञानस्वरूप ने कुछ नहीं कहा। एक बात वह समझ गया था कि असलम कानून में सुराख जानता है। उन सुराखों को बन्द करने में सरकार की मदद नहीं कर रहा, वरन् उन सुराखों में से चोर-उचक्कों को निकल जाने का ढंग बता रहा है। इस पर भी वह जो कुछ कह रहा था, उससे उसे भी लाभ होने वाला था। इसलिए वह चुप था।

अब्दुल हमीद ने बात को समझते हुए पूछा, "तो वकील साहब! मैं तस्करी का सोना कैसे स्मगल कर सकता हूँ?"

"वह तो एक मिसाल थी।" असलम ने समझाया, "कानून की नाक मोड़ी जा सकती है, सुलह सफाई से। मैं अपने एक-दूसरे दोस्त की बात बताता हूँ। एक सरकारी अफसर है। उसकी शादी हो चुकी है और दो लड़के भी हैं। कुछ महीने हुए वह एक पहाड़ी औरत को नौकर बनाकर घर लाया और उसे बीवी बना रखने लगा। मैंने उसे राय दी है, क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जरूरत है पहली बीवी को तलाक देने की ? उसकी बीवी को भी मैंने बताया कि पति के साथ सुलह-सफाई से अपने हक-हकूक महफूज रखने चाहिएँ। तलाक देने पर तो उसकी हैसियत और भी गिर जाएगीं।

"वह मान गई और अब उस अफसर की दो बीवियाँ हैं। एक शादी-शुदा और दूसरी गैर शादी-शुदा। दोनों खुश हैं। मैंने अपने मित्र को समझाया, थोड़ा डिप्लोमेसी से काम लो तो सरकारी कानून को उलांघ सकते हो।"

अब्दुल हमीद ने अपनी बीवी सालिहा से पूछा, "क्यों बेगम ! क्या चाहती हो ?"

"मैं तो यह कहती हूँ कि नगीना से सुलह कर लो और इसे इस्लाम की बरकतें बताकर इसे किसी दीनदार से शादी करने पर राजी कर लो। झगड़ा करने से कुछ फायदा नहीं।"

सरस्वती ने कहा, "तो हजरत ! मुकद्दमा वापस ले लीजिए। इन ईमानदार वकील साहब की बात तो ठीक ही है।"

इस व्यंग को वहाँ बैठा कोई नहीं समझा। असलम ने बात बदल दी। उसने अब्दुल हमीद को कहा, "आप एक चिट्ठी मुझे लिखकर दे दें। उसमें लिखें कि मैंने अपनी लड़की और लड़के से सुलह कर ली है। वे मेरी बात मान गए हैं। इसलिए मैं मुकद्दमा वापस लेना चाहता हूँ।"

"और आपने जो एक हजार फीस पेशगी ली हुई हैं ?" अब्दुल हमीद ने पूछ लिया।

"उसी को तो हलाल कर रहा हूँ। आपने एक हजार मुझ को दिया है। अगर आप अगली पेशी पर अकेले भी आये तो हजार-बारह सौ और खर्च होगा ही। वह सब मैं आपका बचा रहा हूँ।"

ज्ञानस्वरूप हँस पड़ा और बोला, "अब्बाजान ! मान जाइये।"

अब्दुल हमीद ने कहा, "यासीन ! एक कागज लाओ। मैं अभी चिट्ठी लिख देता हूँ।"

"मगर," असलम ने कह दिया, "अपने छपे फार्म पर खत दीजिए। सादे कागज पर लिखा जाली अथवा किसी दबाव में लिखाया माना जा सकता है।"

"तो मैं अपने होटल में चलकर लिख दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

अब्दुल हमीद के मुकद्दमा वापस ले लेने में कारण यह था कि वह समझ गया था कि मुकद्दमे का निर्णय दो वर्ष में नहीं हो सकेगा और तब तक नगीना बालिग हो जाने से माता-पिता से बगावत करने का हक हासिल कर लेगी। उसने रुपया व्यय करना व्यर्थ समझ वकील को लिखकर दे दिया कि वह अदालत में यह लिखकर दे दे कि मेरी अपने लड़की-लड़के से सुलह हो गई है। इसका नतीजा यह हुआ है कि मुझमें और लड़की में शादी के मजबून पर एक राय हो गई है।

यह लिखकर देने के बाद वह अपने पुत्र की दुकान पर जा पहुंचा। उसने लड़के से कहा, "यासीन! मैंने मुकद्दमा वापस ले लिया है।"

"अब्बाजान! अभी तो अदालत ने आपकी अर्जी को मंजूर नहीं किया। अभी तक मेरी और कमला की जमानत कायम है। मैं आज विदेश में जाना चाहूँ तो मुझे पासपोर्ट नहीं मिल सकता। इस कारण जब तक मुझे और कमला को जमानत स मुक्त नहीं किया जाता, तब तक आपका डण्डा सिर पर कायम है।"

"मगर मैंने खत लिखकर दे दिया है।"

"मगर उस पर मैजिस्ट्रेट ने कोई हुक्म तो नहीं दिया?"

"मैं तो तुमको एक तजवीज़ पेश करने आया था।"

"वह आप कर सकते हैं। अगर जमानत रहते वह मानी जा सकी तो मैं मान जाऊंगा।"

"मान तो सकते हो। सुनो! यह कि तुम अपना यहाँ का कारोबार मेरे हवाले कर दो। मैं तुम्हें दस लाख रुपये की पूंजी से बम्बई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक छोटी-मोटी इण्डस्ट्री खुलवा दूंगा।"

"आप यहाँ का काम किसको देना चाहेंगे ?"

"जो भी नगीना से शादी करना चाहेगा। यह कारोबार नगीना के घरवाले के लिए ही था। ख्याल था कि तुम्हारी उससे शादी हो सकेगी। वह तुम दोनों ने मंजूर नहीं की। इसलिए यह कारोबार उस शख्स के लिए है जो नगीना से विवाह करेगा। वह मकान भी उसी के लिए होगा।"

"तो अब्बाजान ! एक बात करिये। आप बम्बई में जो कारोबार मेरे लिए तजवीज़ कर रहे हैं, उसकी लिखा-पढ़ी करा दीजिए। फिर मैं यहाँ का हक-हकूक छोड़ दूंगा।"

"मगर यह तो तुम वहाँ चलकर ही फैसला कर सकते हो ?"

"तो ठीक है। जिस दिन मेरी जमानत 'वैकेट' होगी, उसी दिन मैं बम्बई आऊँगा। जिसने मेरी और नगीना की बीस-बीस हज़ार की ज़मानत दी है, वह यह पसन्द नहीं करेगा कि उसकी नजर से ओझल हो जाऊँ। इस वास्ते आपकी इस तजवीज़ पर विचार तो जमानत उठ जाने पर ही हो सकेगा।"

"तुम यहाँ का काम छोड़ने पर तैयार रहो और मैं वहाँ कारखाने का बन्दोबस्त कर रखूंगा।"

"करिये ! मुझे आपका हुक्म मानने में बहुत खुशी हासिल होगी।"

अब्दुल हमीद ने समझा कि काम बन रहा है। उसने बम्बई जाने से पहले नगीना की अम्मी सालिहा को नगीना के पास छोड़ जाने का फैसला कर लिया।

पिता ने अपनी तजवीज ज्ञानस्वरूप के सामने उसकी दुकान पर की थी और जब इस बात पर वह राजी हुआ कि वह जमानत उठ जाने पर बम्बई में कारोबार के लिए जा सकता है तो अब्दुल हमीद स्वयं बम्बई जाने से पहले सालिहा को अपनी लड़की के पास ज्ञानस्वरूप के मकान पर छोड़ गया।

ज्ञानस्वरूप रात को दुकान से घर गया तो अपनी छोटी अम्मी, नगीना की माँ को वहाँ ड्राइंगरूम में बैठा देख गम्भीर विचार में निमग्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो गया। इस पर भी उसने अम्मी के सामने अपनी कोई बात नहीं कही।

सालिहा ने ही अपने वहाँ आने की बात बता दी। उसने ज्ञानस्वरूप से कहा, "यासीन बेटा! जब तुमने यह मंजूर किया है कि तुम इस काम को नगीना के लिए छोड़ बम्बई जाना मंजूर करते हो तो मैंने मुनासिब समझा कि मैं यहाँ दिल्ली में ही ठहर जाऊँ और किसी नेक दीनदार नौजवान से नगीना की शादी का बन्दोबस्त करूँ और फिर वह तुम्हारे काम को सम्भाल ले।"

"ठीक है अम्मी! यत्न करो। जब तक मेरी और उसकी जमानत है, उसकी शादी नहीं की जा सकती। पीछे यह जहाँ चाहे शादी कर सकती है। इसमें मैं दखल नहीं दूंगा। यह तुम जानो और तुम्हारी बेटी जाने।

"मगर एक बात मैं करूँगा। वह यह कि उस पर तुम्हारी या अब्बा-जान की जबरदस्ती कार्यवाही नहीं होने दूंगा।"

"उसे मैं राजी कर लूंगी।"

"तब मैं इस मामले में दखल नहीं दूंगा।"

मगर रात जब सोने के कमरे में ज्ञानस्वरूप और प्रज्ञा तैयारी कर रहे थे तो बाहर से धीरे से किसी ने द्वार खटखटाया।

"कौन?" प्रज्ञा ने आवाज दी। बाहर से सरस्वती की आवाज आई, "मैं सरस्वती।"

प्रज्ञा ने दरवाजा खोल दिया।

सरस्वती भीतर आई और द्वार बन्द कर दिया। तदनन्तर बैठ कर बोली, "ज्ञान! इस वक्त तुम्हारी छोटी अम्मी कमला के कमरे में भीतर से दरवाजा बन्द किये हुए है।"

"और कमला ने मना नहीं किया?"

"यह मुझे पता नहीं कि क्या हुआ है। घर की खादिमा ने मुझे यह बताया है कि बेटी सो रही थी कि वह उसके कमरे में चली गई और भीतर से चिटकनी चढ़ा ली है।"

"तो अम्मी! जरा दरवाजे से कान लगा माँ-बेटी में प्रेम-प्रलाप होते सुनना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैंने कोशिश की है, मगर कमरे में बिल्कुल खामोशी है। मेरा तो दिल बैठा जा रहा महसूस होता है। किसी खौफनाक हादसे का शुबाह हो रहा है।"

प्रज्ञा कमरे से निकल कमला के कमरे के बाहर चली गई। पीछे-पीछे ज्ञानस्वरूप भी वहाँ जा पहुँचा। दोनों कान लगा सुनने लगे।

बहुत यत्न करने पर बहुत ही धीमी-सी आवाज कमला की सुनाई पड़ी, "अभी चुपचाप सो जाओ, नहीं तो हल्ला कर घर भर को जगा दूँगी।"

इस पर सालिहा की आवाज़ आई, "तो तुम नहीं सोओगी ?"

"अम्मी ! मैं अभी तुम्हारे कमरे में जा सोऊँगी। मुझे आदत है कि मैं पलंग पर अकेली ही सो सकती हूँ।"

"और शादी के बाद भी ऐसा कर सकोगी।"

"यह तब देखूँगी। अभी मुझे इस बात पर गौर करने की फुरसत नहीं।"

"यहाँ मेरे साथ ही सो क्यों नहीं जातीं ?"

"अम्मी, सो जाओ, ज़ब नींद आयेगी तो जाऊँगी।"

इसके बाद भीतर फिर खामोशी हो गई। ज्ञानस्वरूप ड्राइंगरूम से एक कुर्सी उठा लाया और कमरे के द्वार के बाहर रखकर बोला, "प्रज्ञा ! तुम जाकर आराम करो। मैं यहाँ इन्तजार करूँगा।"

"मेरा विचार है कि अम्मी के सो जाने पर वह कमरे से निकलेगी और अपनी अम्मी के कमरे में जा सोने की कोशिश करेगी।"

"मैं यहाँ इसलिए बैठा हूँ कि अगर किसी किस्म की कशमकश की खबर भीतर से आई तो कमला की मदद की कोशिश करूँगा।"

प्रज्ञा अपने कमरे में गई तो सरस्वती अपने लिए एक कुर्सी उठा ज्ञानस्वरूप के पास आकर बैठ गई।

"अम्मी ! आप भी आ गई हैं ?"

"हाँ ! नींद नहीं आ रही।"

मगर इनको बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। आधा घंटा ही बीता होगा कि बहुत धीरे से किसी ने कमरे का द्वार खोला। कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से कमला निकली तो अम्मी और भाईजान को बाहर कुर्सियाँ लगाये बैंठे देख चकित रह गई।

तुरन्त ही उसने उँगली के संकेत से अम्मी और भाई को अपने साथ आने को कहा और तीनों उस कमरे में चले गये, जिसमें सालिहा ठहरी हुई थी।

वहाँ बैंठ कमला ने कहा, "मुझे अपनी अम्मी की हरकत पसंद नहीं आई तो पलंग से उठकर अपने स्टडीरूम की मेज के समीप कुर्सी पर जा बैंठी।"

"क्या किया था उसने ?" सरस्वती ने पूछा।

"मेरे पलंग पर मेरे साथ लेट कर मुझे गले लगा मेरा मुख चूमने लगी थी। मैंने तो यत्न किया था कि सो जाऊँ, मगर अम्मी के प्यार से नींद नहीं आ रही थी। इसलिये पलंग से उठ कुर्सी पर आ बैंठी थी।

"अब वह सोई है तो मैं बाहर निकल इस कमरे में सोने के लिए आई हूँ।"

"ठीक है! अब सोना चाहिए। भीतर से दरवाजा बन्द कर सो जाओ। सुबह चार बजे मिलेंगे, जब तुम पढ़ने आओगी।"

सालिहा जब सोई तो अगले दिन सात बजे उठी। नींद खुलने पर जब उसे समझ आया कि वह वहाँ क्यों है और कैसे है तो हड़बड़ाकर कमला की पढ़ाई की मेज की ओर देखने लगी। वहाँ कुर्सी खाली पड़ी थी।

वह समझ गई कि लड़की उसके कमरे में जा सोई होगी। वह उठ कमरे से निकली तो सेविका सामने से हाथ में ट्रे और उसमें एक प्याला तैंयार चाय का लाती हुई मिली। उसने कहा, "आपके लिए मैं बेड-टी ला रही थी।"

"मैं अपने कमरे में जा रही हूँ। वहाँ ले आना।" सालिहा ने उठते हुए कहा। वह अपने कमरे में गई तो वहाँ पलंग खाली पड़ा था। हाँ, पलंग पर किसी के लेटने के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

सालिहा ने घूमकर सेविका से ही पूछा, "नगीना कहाँ है ?"

"अम्मी! वे सब भाभीजान के कमरे में हैं। अपनी नमाज-बन्दगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अभी-अभी फारिग हुए हैं।"

"कौन-कौन हैं ?"

"बड़ी अम्मी हैं। भाभीजान और भाईजान के अलावा नगीना बहिन हैं।"

सालिहा ने और ज्यादा नहीं पूछा। चाय का प्याला उठा पलंग पर बैठ सुरुकियाँ लेने लगी। चाय समाप्त हुई तो वह अपने नित्य-कर्म में लग गई।

पूजा तथा चर्चा के बाद सरस्वती तथा कमला अपने-अपने कमरों को चल दीं। कमला ने देखा कि उसके कमरे के दरवाजे खुले हैं। कमरा खाली देख वह हँसने लगी।

अब वह अपने कमरे में जा वीणा बजाने लगी। उसे वीणा बजाते हुए आधा घंटा हुआ था कि सालिहा कमरे में आ गई और पूछने लगी, "तो तुम यहाँ भी यह बजाती हो ?"

"हाँ अम्मी ! यहाँ रोज पाँच बजे एक मास्टर सिखाने आता है।"

"उसे क्या देती हो ?"

"भाईजान तीन सौ रुपये महीना देते हैं।"

"ओह ! और यह यहाँ आकर खरीदा है ?"

"हाँ ! नौ सौ रुपये की आयी है।"

"तो तुम्हारे भाईजान इतना कुछ फोकट में खर्च करते हैं ?"

"अपनी बहिन पर खर्च किया हुआ फोकट में होता है क्या ?"

आधा मिनट लगा सालिहा को समझने में और फिर समझकर बोली, "मैं समझती थी कि वह तुम्हें अपनी बीवी बनाने के लिए यह सब खर्च कर रहा है।"

"देखो अम्मी ! अब इस किस्म की बदतमीजी यहाँ नहीं चलेगी। रात जो सुलूक तुम मुझसे करने जा रही थीं, वह एक माँ के सुलूक से कुछ ज्यादा था। उस समय मैंने हल्ला नहीं किया था। मुझे तुम्हारी बात भाभी और भाईजान को बताते हुए शर्म महसूस हो रही थी।

"मगर जब मैं कमरे से बाहर निकली तो अम्मी और भाईजान वहाँ बाहर कुर्सियों पर बैठे मिले। मुझे बहुत शर्म आई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर मैं कुछ खराब बात कर रही थी क्या ?"

"हाँ, बिल्कुल नाकिस बात थी।"

"अच्छा !" कमला ने इस विषय को बदल कर कहा, "अब तुम या तो कुर्सी पर बैठकर सुनो, नहीं तो अपने कमरे में चली जाओ। मैं अपने दिन-भर के काम में लग रही हूँ।"

सालिहा कुछ देर तक तो कुर्सी पर बैठ सुनती रही, मगर उसकी झनन-झन में उसे रस नहीं आया। अभी कमला अभ्यास ही कर रही थी कि वह उठी और अपने कमरे में चली गई।

: २ :

ठीक साढ़े आठ बजे अल्पाहार हुआ। नौ बजे ज्ञानस्वरूप अपनी दुकान को जाने के लिए तैयार हो गया। नाश्ते के बाद ग्यारह बजे तक कमला एक पुस्तक ले पढ़ती रही और फिर साढ़े ग्यारह बजे से साढ़े बारह बजे तक वह प्रज्ञा से संस्कृत सीखने लगी। यह उसकी दैनिक दिन-चर्या थी। दोपहर बाद एक बजे मध्याह्न का भोजन, तदनन्तर एक घंटा आराम और फिर ड्राइंगरूम में बैठ कुछ हाथ से सिलाई-बुनाई इत्यादि का काम करते हुए चर्चा। इस समय कमला समाचार-पत्र पढ़ा करती थी तथा सामयिक बातों पर बातचीत चलती थी।

आज इस समय सालिहा भी ड्राइंगरूम में आ बैठी। एकाएक स्टेट्स-मैन दैनिक में एक लेख पढ़ती-पढ़ती कमला हँस पड़ी। तीनों बड़ी औरतें कमला का मुख देखती रह गयीं।

"भाभी !" कमला ने कहा, "किसी ने यह लेख लिखा है कि इस यूनिवर्स के सितारे सब बहुत ही तेज गति से उड़ते हुए एक केन्द्रीय स्थान से बाहर को भागे जा रहे हैं।

"मैं हँसी इस कारण थी कि हम उनमें से एक जिसे जमीन कहते हैं, पर टिके हुए हैं। अगर कहीं हमारे पाँव इस पर से फिसले तो फिर हम कहाँ उड़ती फिरेंगी ?"

उत्तर प्रज्ञा ने दिया, "यह किसी अज्ञानी वैज्ञानिक का लेख है। आज एक नया विचार पैदा हो गया है।"

"क्या ?" कमला का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि नक्षत्र और तारागण कम से कम हमारी आकाश-गंगा में स्थिर हैं और एक स्थिर गति से कदाचित् किसी बड़े नक्षत्र के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं।

"यही हमारे शास्त्रों में भी कहा है। वहाँ लिखा है—येन द्यौ रुग्रा पृथिवी च दृढ़ा···।

"मतलब यह है कि यह आसमान के सितारे और हमारी पृथ्वी, परमात्मा ने स्थिर कर रखी है और यह प्रलय काल तक स्थिर रहेगी।"

"और प्रलय कब होने वाली है?" सालिहा ने पूछ लिया।

"अभी दो अरब पैंतीस करोड़ साल रहते हैं। मगर उससे बहुत पहले हम इस ज़मीन पर नहीं रह सकेंगे। कारण यह कि यहाँ पेड़-पौधे और फल-फूल सब सूख चुके होंगे। यहाँ जिन्दगी नहीं रहेगी और हमें रहने को कहीं दूसरे नक्षत्र पर जगह मिलेगी अथवा मिल चुकी होगी।"

"ओह!" सालिहा ने पूछा, "इस किस्म की कुफ्र की बातें तुम नगीना को बताती रहती हो?"

"अम्मी! मैं अपने मन से नहीं बता रही। बड़े-साइंसदानों की बात ही बता रही हूँ।"

ये बातें सालिहा के इल्म और अक्ल से बाहर की थीं। इस कारण बात आगे नहीं चल सकी। कमला फिर अखबार पढ़ने लगी।

कमला को वीणा सिखाने वाला मास्टर आ गया और खादिमा चाय ले आई। मास्टर, प्रज्ञा और कमला की अम्मी, कमला तथा प्रज्ञा की सास सैण्टर टेबल के चारों ओर कुर्सियों पर बैठ गए। कमला सबके लिए चाय बनाने लगी।

सालिहा के मस्तिष्क पर इस बात का बहुत गहरा प्रभाव हुआ कि कोई काल ऐसा भी आएगा कि इस जमीन पर फल-फूल, साग-भाजी, अन्न-अनाज नहीं रहेंगे और उनको उड़कर किसी दूसरे सियारे पर ले जाया जाएगा।

वह वहाँ कैसे पहुँचेगी? बस, इसी का भय उसके मन में समा रहा था। वह सायंकाल की चाय पीते हुए और रात के खाने के समय चिंतित मन बैठी रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे इस प्रकार गम्भीर देख ज्ञानस्वरूप ने पूछ लिया, "अम्मी ! अब्बाजान के चले जाने पर उदास हो रही हो ?"

"तुम लड़के होते हुए माँ की हँसी उड़ाने लगे हो ?"

"अम्मी ! इसमें हँसी की क्या बात है ? जबसे मैं आया हूँ तुम एक लफ्ज़ तक नहीं बोलीं। चुपचाप अपने ही ख्यालों में डूबी हुई बैठी रही हो ?"

"हाँ, यह तो है। मगर यह तुम्हारे अब्बाजान से जुदाई की वजह से नहीं है।"

"तब ठीक है। कोई दूसरी बात हो तो हम यहाँ भी पूरी कर देंगे ?"

"क्या पूरी कर दोगे ?"

"जिससे अम्मी खुशो खुर्रम हो जाएँ।"

"नहीं, तुम नहीं कर सकोगे। आज शाम की चाय से पहले तुम्हारी बीवी ने एक निहायत खौफनाक होने वाली वारदात का जिक्र किया है।

"इसने कहा है कि एक जमाना ऐसा आने वाला है जब जमीन के नवातात जल-भुन जाएंगे और यहाँ रह सकना मुश्किल हो जाएगा। तब हमें यहाँ से किसी दूसरे सियारे पर ले जाया जाएगा। बहू कह रही थी कि ऐसा साइंसदान बता रहे हैं।

"मुझे याद है जब पाकिस्तान बना था तो कैसे यहाँ के लोग वहाँ और वहाँ के लोग यहाँ लाद-लाद कर ले जाए गए थे। और जब यहाँ से लाखों-करोड़ों मील दूर ले जाया जायेगा तो कितनी तकलीफ होगी ? बस, यही सोच-सोचकर पसीना छूट रहा है।"

इस पर ज्ञानस्वरूप हँस पड़ा। हँसते हुए वह कहने लगा, "तो अम्मी ! तुमने पूछा नहीं कि यह कब होगा ?"

"कभी भी हो। होगा यह निहायत ही तकलीफ देह।"

"मगर किसको तकलीफ होगी ?"

"किसको होगी ?" सालिहा ने पूछ लिया।

"जो उस वक्त जिन्दा होंगे। जिन्हें उड़ा-उड़ाकर इस जमीन से किसी दूसरे सियारे पर ले जाया जाएगा।"

"तो उनमें मैं नहीं हूँगी क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम कैसे हो सकोगी ? तुम तो कब्र में पड़ी होगी । कयामत के दिन तक तुम, हम सब वहीं सोए रहेंगे ।

"अम्मी ! हम तो इसी ज़मीन पर रहेंगे । हमें कयामत के दिन ही कब्रों से उठाया जाएगा । और हमारे अमालों के मुताबिक हमें बहिश्त या जहन्नुम में भेजा जाएगा ।"

"मगर यह तो तुम्हारी बीवी ने बताया ही नहीं । उसने तो कहा है कि हमको किसी दूसरे सियारे पर ले जाकर बसाया जाएगा ।"

"मगर उसका मतलब उनसे नहीं था, जो कबरों में दफनाएँ हुए होंगे ।

"उस मुसीबत के वक्त जो कुछ भी होगा, वह उस वक्त इस जमीन पर चलते-फिरते खाते-पीते लोगों के लिए होगा । हम कब्र में पड़े लोग तो आराम की नींद सोते रहेंगे ।"

"मुझे इस सबकी न तो याद आई थी और न ही मैंने इस हालत पर कभी गौर किया था ।"

"तो अम्मी, फिक्र छोड़ो । जो कुछ प्रज्ञा ने बताया है, वह हमारे लिए नहीं है । वह उसके अपने लिए हो सकता है । तुम और हम मोमिनों के लिए नहीं हो सकता ।"

ज्ञानस्वरूप का यह कथन संतोषजनक था । मगर सालिहा जब रात को सोने लगी तो एक नई बात उसके दिमाग में चक्कर खाने लगी । कब्र भी तो कोई आरामगाह नहीं हो सकती । वहाँ तो कीड़े-मकौड़े नोच-नोच कर उसको खाने लगेंगे ।

मगर उसी वक्त उसको ख्याल आया कि रूह को कीड़े खा नहीं सकेंगे । इसलिए रूह को तकलीफ भी नहीं होगी ।

इस पर भी इस समस्या पर विचार करते-करते उसे रात के दो बजे के उपरांत नींद आई ।

इस रात भी जब वह सोई तो फिर दूसरे दिन, दिन चढ़े तक सोती रही । सब प्राणी उठ अपने-अपने काम पर लगे हुए थे । ज्ञानस्वरूप और प्रज्ञा इत्यादि प्रातः का अल्पाहार लेने के लिए खाने के कमरे में जा पहुँचे थे । सरस्वती ने खादिमा से पूछा, "छोटी अम्मी कहाँ हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लतीफी ने मुस्कराते हुए कहा, "अम्मी ! उनके कमरे का दरवाजा बन्द है। मतलब यह कि वह सोई हुई हैं।"

"नहीं लतीफी !" प्रज्ञा ने कहा, "जाओ, दरवाजा खटखटा कर जगाकर यहीं ले आओ। उनको बैड-टी पिला देंगे।"

लतीफी यही आज्ञा तो चाहती थी। वह भागी हुई गई और दो मिनट में ही सालिहा नाईट गाऊन में वहाँ आ पहुंची।

ज्ञानस्वरूप ने कहा, "अम्मी ! मेरा दुकान पर जाने का वक्त हो रहा है। इसलिए सलाम करने के लिए अम्मी की याद आई तो पता चला कि आप सो रही हैं।"

"नहीं यासीन ! मैं लतीफी के वहाँ आने से पहले ही जाग दरवाजा खोल चाय का इन्तजार करने लगी थी। यह आई और बोली कि आप सब खाने के कमरे में हैं और यहीं मुझे याद कर रहे हैं। इसलिए यहाँ आ गई हूँ।"

"और अम्मी ! यदि यही रफ्तार चलती रही तो फिर अम्मी रात को जागा करेंगी और दिन में सोया करेंगी।" कमला ने कह दिया।

सालिहा मुस्कराई और एक खाली कुर्सी पर बैठते हुए बोली, "नहीं ! यह नहीं होगा। मैं कल से जल्दी सोया करूँगी। रात तो मैं दो बजे के बाद ही सो सकी थी। आज रात मैं 'स्लीपिंग पिल्ल' ले लूंगी।"

"नहीं अम्मी ! यह ठीक नहीं होगा। उसकी आदत बहुत नुकसान करेगी ?"

"तो क्या किया जाए ? रात-भर तुम्हारी बीवी की बात ही दिमाग में चक्कर काटती हुई तंग करती रही है।"

"तो रात भी," कमला ने पूछ लिया, "अपने मरने की फिक्र करती रही हो ?"

"मरने की नहीं। मगर मरने के बाद कब्र में दफनाए जाने पर कीड़े-मकौड़ों के काट खाने की बात पर कुछ परेशानी रही थी और नींद नहीं आई। जब यह ख्याल आया कि कीड़े तो रूह तक पहुँच नहीं सकते, तब यह सोचना बन्द हुआ और सो सकी थी। मगर यह रात के दो बजे के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद हो सका था।"

प्रज्ञा ने कहा, "अम्मी! रूह तो बहुत सूक्ष्म पदार्थ है। यह कब्र से निकल जाती है।"

"तो ऐसा कुरआन शरीफ में लिखा है?"

"वह तो मैंने पढ़ी नहीं। मुझे अपने धर्मशास्त्र की बात का पता है। वहाँ कहा है कि मनुष्य के मरते ही वह जिस्म से निकल रोशनी की तरफ जाती है।"

"मगर जो कुछ कुरआन में है मैं तो उस पर ही ऐतकाद रखती हूँ।"

"तो अम्मी! कब्र में रहने की तकलीफ आपको तंग नहीं कर रही, यह कुरआन पर ऐतकाद है जो तंग कर रहा है?"

"मगर कुरआन से पहले जो किताबें कही गई हैं, वह तो हजरत बानी-उल-इस्लाम ने रद्द कर दी हैं।"

"तो यह रद्द करना आपको तकलीफ दे रहा था?"

सालिहा कुछ जवाब नहीं दे सकी। इस पर प्रज्ञा ने पुनः कहा, "मगर अम्मी, खुदा भी रहम का खजाना है। वह ऐसा कुछ नहीं करता जो हमें तकलीफ देने वाला हो। इसलिए मैं तो यह समझती हूँ कि मौत सिर्फ इस जिस्म की कैद से छुटकारा दिलाने के लिए आती है। इसके बाद हमारी रूह किसी दूसरे जिस्म में जो माँ के रहम में बन रहा होता है, चली जाती है।

"इसलिए कब्र में कीड़े-मकौड़ों के चाटने की रूह को फिक्र नहीं होती।"

सालिहा अपनी चाय समाप्त कर चुकी थी। वह बाथरूम जाने के लिए चली गई।

उसके चले जाने पर ज्ञानस्वरूप हँसकर अपनी पत्नी से कहने लगा, "यह तुमने एक मुसीबत खड़ी कर दी है।"

"जी नहीं। मैंने इनके दिमाग को एक राह पर डाल दिया है। पहले अम्मी हैवानों की तरह खाने-पीने में ही संतोष करती थीं। अब यह मनुष्यों की भाँति अपनी बुद्धि का प्रयोग करने लगी हैं। मैं इससे खुश हूँ। हमारी यह अम्मी भी अगर इस पथ पर चलती रहीं तो शीघ्र उन्नति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के मार्ग पर चल पड़ेगी।"

हैवानी की बात सुन कमला हँस पड़ी थी। उसने कहा, "परसों रात जब यह मेरे कमरे में आयी थीं और मेरे साथ पलंग पर लेटी थीं तो ठीक कुछ वैसा ही कर रही थीं जो हैवान करते देखे जाते हैं। इसी से घबराकर मैं इनके पास से उठ कुर्सी पर जा बैठी थी।"

"मगर कमला! वह तो अक्ल के प्रयोग से एक ही दिन में उस हालत में आगे निकल गई हैं। रात इनको अब्बाजान याद नहीं आते रहे बल्कि अपना भविष्य नजर आने लगा था। ये बहुत अच्छे लक्षण हैं।

"मैं समझती हूँ कि अम्मी एक दिशा में चल पड़ी हैं। अब मंजिल दूर नहीं। चलने वाले वहाँ पहुँचते ही हैं।"

सब बैठे हँसने लगे। ज्ञानस्वरूप ने अल्पाहार समाप्त किया और दुकान की ओर चल पड़ा।

: ३ :

जब सालिहा स्नानादि से फारिग हो अल्पाहार के लिए खाने के कमरे में आयी, कमला अपनी वीणा पर अभ्यास कर रही थी। सालिहा को आज वीणा पहले दिन से अधिक आकर्षक समझ आने लगी। पहले दिन वह वीणा की झनन-झन पसन्द न कर उठ सरस्वती के पास चली गई थी। आज उसका चित्त उसके पास बैठ सुनने को करने लगा था।

उसने जल्दी में नाश्ता समाप्त किया और हाथ धो कमला के कमरे में उसके समीप जा बैठी।

आज कमला वीणा बजाने के साथ-साथ गाना भी गा रही थी। कुछ देर बजाकर उसने उन्हीं स्वरों में, जिसमें वह वीणा बजा रही थी, गाना आरम्भ किया, "मन के नैना रे।"

इस पद को उसने पाँच-छः बार गाया और फिर झनन-झनन वीणा बजाने लगी।

कमला ने देखा कि उसकी अम्मी उसके सामने चुपचाप आकर बैठ गई हैं। इस पर भी वह बजाती रही। यह राग असावरी था। कुछ देर तक वीणा बजाकर उसने पुनः गाया—"मन के नैना रे! चल पिया के ठौर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस गाने के ये दो ही पद थे। उसने वीणा पर असावरी स्वरों के कई जोड़ और आलाप निकाले और उन स्वरों में ही वह इस पद को गाती रही।

आधे घण्टे में कमला ने भिन्न-भिन्न स्वरों में ये दो ही पद गाए, इस पर भी सालिहा को बदमजा मालूम नहीं हुआ। उसे पदों के बदलते स्वरों से रस आने लगा था।

कमला को बजाते और गाते हुए एक घण्टा हो गया था। उसने अब वीणा घुटनों से उतार भूमि पर रख दी। इस पर अम्मी ने पूछा, "जो तुम गा रही थीं, उसका मतलब क्या है?"

"अम्मी! मतलब को क्या करना है? कानों को इसकी आवाज कैसी लगी है?"

"कल तो तुम केवल बाजा ही बजा रही थीं। मुझे पसन्द नहीं आया। आज इस बजाने के साथ तुम गा रही थीं और मैं तो हैरान इस बात पर हुई हूँ कि तुम्हारी आवाज बहुत मीठी है। मुझे तो वीणा दूसरे बाजों से भी ज्यादा मीठी मालूम हुई है।"

"अम्मी! कलाकंद की तरह मीठी थी या किसी और मिठाई की तरह?"

इस सवाल पर सालिहा सोचने लगी। फिर बोली, "मिठाई तो जबान को लजीज मालूम होती है। मगर यह मिठास कानों को मालूम पड़ी है।"

"इसे स्वर की माधुरी कहते हैं।"

"क्या मतलब?" सालिहा का प्रश्न था।

"अम्मी! आवाज की मिठास को स्वर-माधुरी कहते हैं।"

"देखो नगीना···!"

कमला ने बात बीच में ही रोककर कहा, "अम्मी! नगीना नहीं, मेरा नाम अब कमला है।"

"यही तो मुझे समझ नहीं आ रहा कि यह नाम क्यों बदला है?"

"यह इसलिए कि हमने अपनी तहज़ीब बदल दी है। हम तहज़ीब को सभ्यता कहते हैं। मेरे वीणा के मास्टर कहते हैं कि यह हिन्दू तहजीब है। वह कह रहे थे कि वीणा बजाना भी हिन्दू तहजीब की पैदावार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हिन्दुओं की एक देवी है जिसे कला की देवी कहते हैं। बड़ी अम्मी ने उसी देवी का नाम रख लिया है सरस्वती। उसका एक नाम वीणा-पाणि भी है। मतलब यह कि वह देवी जिसके हाथ में वीणा है।"

"तो तुम हिन्दू हो गई हो?"

"यह अभी फैसला नहीं किया। इन बातों के साथ हिन्दू का कोई ताल्लुक नहीं। यह विचित्र वीणा तो एक मुसलमान रहमान अली भी बहुत अच्छी बजाते हैं। उसके वीणा के ग्रामोफोन रिकार्ड भी बिकते हैं। इस पर भी यह बाजा हिन्दुओं की देवी सरस्वती का कहा जाता है।"

"मगर तुम इसे क्यों बजाती हो? तुम तो एक दीनदार मुसलमान की लड़की हो?"

कमला हँस पड़ी। हँसती हुई बोली, "अब्बाजान की दीनदारी की बात जाने दो। इस पर भी मैं उनको मुसलमान तो मानती हूँ।"

यह सब भाषा सालिहा के लिए नयी थी। वीणा हिन्दुओं की देवी के बजाने का बाजा है, मगर इसे एक मुसलमान बहुत अच्छा बजाता है। इस पर भी बाजा हिन्दवी है और बजानेवाला मुसलमान है।

कमला अपनी अम्मी के मुख पर परेशानी देख रही थी। उसने अम्मी से पूछ लिया, "मगर तुम इसके बजाने के साथ हिन्दू देवी भी बनी हो या नहीं?"

"अम्मी! दोनों का कोई ताल्लुक नहीं। मगर मैं हिन्दू या मुसलमान हूँ, इसका अभी फैसला नहीं हुआ।"

"तो कब फैसला होगा और कौन फैसला करेगा?"

कमला सोचने लगी कि अम्मी को बताये अथवा न। उसने समझा, अब जब नौबत मुकदमे तक पहुँच गई है तो यह बात प्रकट होगी ही। इस कारण उसने इस विषय पर संकेत देने का निश्चय कर लिया। उसने गम्भीर मुख बनाकर कहा, "औरत की शादी के बाद उसकी कौमीयत निश्चय होती है।"

"वह क्या होती है?"

"देखो अम्मी! हमारे देश का नाम है भारत। मतलब इण्डिया। भारत में मुख्य रूप में दो कौमें रहती हैं। एक मुसलमान और दूसरी हिन्दू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दोनों के शादी के कानूनों में फरक है। कुछ खानदानी कानूनों में भी फरक है। अब्बाजान मुसलमानी कानून मानते हैं। इसलिए वह चार शादियाँ कर सकते हैं। दूसरी तरफ प्रज्ञा के पिताजी हैं। वह अपने कौम के कानून से एक ही शादी कर सकते हैं।

"प्रज्ञा भाभीजान ने जब भाईजान से शादी की तो इन्होंने सरकारी कानून से शादी की। इस कानून से कोई मुसलमानी कौम में भी रह सकता है, मगर शादी एक ही कर सकता है। मगर भाभीजान ने भाईजान को अपनी कौम में शामिल कर लिया है। वे अब हिन्दू हैं।

"भाभीजान ने समझाया है कि वे सरकारी तरीके से शादी करने से दोनों कौमों की हद पर खड़े हो जायेंगे। उनको एक तरफ हो जाना चाहिए। इस ख्याल की तस्दीक भाभी के हमला होने ने की है। भाभी अपनी औलाद को हिन्दू कौम में शामिल करना चाहती हैं।

"मैं शादी कहाँ करूँगी, अभी फैसला करना है। जब फैसला हो जाएगा तो पता चलेगा कि मैं मुसलमान कौम में हूँ या हिन्दू कौम में।"

"मगर तुम मुसलमान की औलाद गैर मुसलमान कैसे हो सकती हो?"

"मेरे मास्टर कहते हैं नाम का, बोली जाने वाली ज़बान का, वीणा अथवा बाँसुरी बजाने का कौम के साथ ताल्लुक नहीं।"

"मगर मैंने तो सुन रखा था कि कौमीयत मुल्क में रहने से होती है?"

"थी तो यही बात, मगर जब से इस्लाम और ईसाइयत दुनिया में फैली है, कौमीयत मुल्क के साथ जुड़ी नहीं रह सकी। ईसाई जहाँ जाते हैं, अपनी कौमीयत वहाँ अलहदा बना लेते हैं। ऐसा ही मुसलमान कर रहे हैं।

"हिन्दुस्तान में रहते हुए सब मुसलमानों को हिन्दुस्तानी, मतलब यह है कि हिन्दू हो जाना चाहिए था। उन्होंने दो बातें की हैं। एक तो हिन्दुस्तान का नाम ही बदल दिया है। यह था हिन्दुओं का मुल्क मगर यह हो गया है भारत और उसमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई सब भारती हो गए हैं। इसी से कहती हूँ कि कौमीयत एक छोटा-सा फिरका है।

"मैं अभी तक भारती मुसलमान हूँ, मगर जिससे शादी करूँगी, तब वह हो जाऊँगी जो वह होगा। तब मेरी कौमीयत बदल जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मगर मजहब तो नहीं बदलोगी ? तुम्हारी भाभी ने मुझे वह बताया है कि नाम का मजहब से ताल्लुक नहीं ।"

"मगर भाईजान का मजहब भी बदल रहा है ?"

"कैसे कहती हो यह ?"

"वेद के मजहब को मानने वाले हो रहे हैं ।"

"वह क्या होता है ?"

"वेद बहुत पुरानी चार किताबें हैं । उसमें कुछ बातें लिखी हैं । भाई-जान और बड़ी अम्मी उन बातों को मान रही हैं ।"

"और तुम ?"

"मैं तो शादी के बाद फैसला करूँगी ।"

"यह क्यों ?"

"इसलिए कि मजहब का ताल्लुक शादी से है । इस पर भी मैं एक बात समझ गई हूँ कि मैं खुदा को मानती हूँ । इस घर में हम चारों लोग खुदा-परस्त हैं ।"

"चारों कौन-कौन हैं ?"

"मैं, अम्मी, भाभीजान और भाईजान । एक पाँचवाँ भी आ रहा है मगर वह खुदा को मानेगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता ।"

"और मैं क्या हूँ ?" सालिहा ने पूछ लिया ।

"यह तुम जानो ।"

"मैं तो वही हूँ जो तुम्हारे अब्बाजान हैं ?"

"लेकिन अम्मी ! अब्बाजान तो खुदा-परस्त नहीं हैं ।"

"मगर वह तो कहते हैं कि वह खुदा को मानते हैं ?"

"मैं दावे से कहती हूँ कि वह झूठ कहते हैं । उन्होंने उस दिन, जिस दिन गोली चलाई थी, खुदा के कानून की तलफी की थी । मुझ बेगुनाह को मार देने की कोशिश की थी ।"

सालिह भी उस दिन की गोला-बारी को पसन्द नहीं करती थी ।

पुलिसा वालों को रिश्वत दे, छूटकर जब वे इम्पीरियल होटल में पहुँचे थे तो उसने अपने खाविन्द से कहा था, "हजरत ! यह ठीक नहीं हुआ ? आप तो मेरी ही लड़की को हलाल करने वाले थे ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके पति का कहना था, वह मेरा कहना नहीं मान रही थी।

अब वही लड़की कह रही है कि यह खुदाई कानून के खिलाफ था।

: ४ :

सालिहा के मन में विक्षोभ का आरम्भ हुए एक सप्ताह से ऊपर हो चुका था। फिर एक दिन शिव बहिन से मिलने आया। रविवार का दिन था। प्रज्ञा और ज्ञानस्वरूप सिनेमा देखने गये हुए थे। दोनों अम्मियाँ और कमला ड्राइंगरूम में बैठीं चाय की प्रतीक्षा कर रही थीं।

कमला अपने मन में उत्पन्न क्रान्ति का विश्लेषण कर रही थी। वह जब से दिल्ली में अपने भाई के घर पर आकर रहने लगी थी, तब से वह नित्य भाभी से परमात्मा के विषय में पूछगीछ और फिर उस पूछगीछ पर गौर किया करती थी। बस, इसने ही उसके मस्तिष्क में हलचल और तबदीली पैदा की थी। ऐसा उसको समझ आने लगा था।

सालिहा का कहना था, "मैं इस सब में वजह तुम्हारी बदल रही जबान समझती हूँ। तुम इस विचित्र भाषा के इल्फाज के जंगल में भटक रही हो।

"मुझे भी बहू ने एक शब्द बताया है और कहा है कि इसके मायने पर गौर किया करूँ और मैं भी अपने ऐतकाद से भटकने लगी हूँ।"

कमला मुस्कराई। वह अम्मी की बात सुन रही थी कि किसी ने बरामदे में घण्टी का बटन दबाया। भीतर घण्टी बजी और कमला उठ बाहर देखने चली गयी।

घण्टी बजाने वाला शिवशंकर था। जब कमला आयी तो शिव ने हाथ जोड़ नमस्ते कर कह दिया, "दीदी से मिलने आया हूँ।"

"वह तो घर पर नहीं हैं।"

"कहाँ गयी हैं?"

"भाई साहब के साथ कहीं गयी हैं। ख्याल है कि कोई पिक्चर देखने गयी हैं।"

"कितने बजे के शो में गई हैं?"

"घर से वह सवा दो बजे गयी थीं।"

"मैं तो आपसे मिलने आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, बताइये। क्या काम है ?"

"कुछ दिन हुए जब आप माताजी से मिलने हमारे घर पर आयी थीं तो मैंने आपसे कुछ निवेदन किया था। उसका उत्तर आपने यह दिया था कि आप दादा उमाशंकर जी से बुक की जा चुकी हैं।

"मैंने उनसे पूछा है और उनका कहना है कि आप रेल में अथवा हवाई जहाज में कोई सीट तो हैं नहीं जो कुछ दाम देकर बुक कराई जा सकती है। आप चलती हुई एक खुदमुख्तार रूह हैं।

"इससे उत्साहित हो आपसे पुनः मिलने की इच्छा उत्पन्न हुई है।"

"मतलब यह है कि यदि आपके भाई साहब का कहना ठीक है कि उन्होंने मेरी बुकिंग नहीं की तो आप करवाने का यत्न कर रहे हैं ?"

"हाँ ! आप ठीक समझी हैं।"

"मगर मेरी सीट जिस रेलगाड़ी अथवा हवाई जहाज में है, उसकी मैनेजर हैं आपकी बहिन प्रज्ञा। इससे जगह आरक्षण के लिए वहीं जाना चाहिये।"

"इसीलिए तो उनके विषय में पूछ रहा था। लक्ष्य तो आप हैं, परन्तु दीदी से बात करने आया था।"

"वह तो घर पर हैं नहीं। आप फिर किसी दिन तकलीफ करियेगा।"

"तो कष्ट के लिए क्षमा करें। मैं फिर किसी दिन आऊँगा।"

शिव वहीं बरामदे से ही बाहर को चल पड़ा और कमला मन में एक प्रकार का उल्लास अनुभव करती हुई ड्राइंगरूम को चल पड़ी।

वह मन में यह अनुभव करने लगी थी कि आखिर उसमें कुछ है जिससे खूबसूरत और पढ़े-लिखे दोनों भाई उस पर लट्टू हो रहे हैं। उसे उमाशंकर की बात याद आ गई थी जो उसने पहली दावत के अवसर पर कही थी। उसने कहा था—उसके मुख पर एक अद्भुत तेज है, जिसका अर्थ वह खुदाई नूर समझी थी।

ड्राइंगरूम में वह आयी तो उसकी अम्मी ने पूछा, "कौन था ?"

"भाभीजान का छोटा भाई था। बहिन से मिलने आया था।"

"क्यों मिलने आया था ?" सालिहा का अगला प्रश्न था।

कमला ने कहा, "अम्मी ! उसने वही वजह बता दी जिस वजह से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम मुझे मिलने आयी हुई हो। तुम मेरी अम्मी हो और वह भाभीजान का भाई है।"

"मगर मैं तो एक खास मुद्दा को हासिल करने आयी हूँ।"

"क्या ?"

"कभी किसी वक्त तन्हाई में बताऊँगी।"

"वही तो नहीं जो अभी पहली रात मेरे साथ पलंग पर लेटकर बताने लगी थीं ?"

"वह तो तुम्हारा इम्तिहान ले रही थी कि तुम में कितनी अक्ल आयी है।"

"और फिर उस इम्तिहान का क्या नतीजा है ?"

इस समय ज्ञानस्वरूप, प्रज्ञा और उनके साथ ही शिव ड्राइंगरूम में दाखिल होते दिखाई दिए।

इस कारण अम्मी की अपनी लड़की से बातचीत रुक गई। प्रज्ञा ने भीतर आते ही कमला की अम्मियों से अपने छोटे भाई का परिचय कराना आरम्भ कर दिया।

साढ़े छः बजे का वक्त था। इस कारण इनके आते ही सेविका इनके लिए चाय ले आयी।

प्रज्ञा ने बैठते हुए कहा, "शिवशकर ने बी० ए० की परीक्षा दी है। परीक्षाफल अभी नहीं निकला और आजकल यह बिल्कुल खाली होने से सम्बन्धियों और दोस्तों के घरों के चक्कर काटा करता है। इस सिलसिले में यह एक दिन पहले भी आया था। उस दिन अब्बाजान अपने वकील से साथ यहाँ आये हुए थे और वे दोनों इनसे बातचीत कर रहे थे। आज यह फिर यहाँ आया है।"

कमला इन सब के प्यालों में चाय बनाने लगी थी। वह चाय बनाती हुई मन में विचार करने लगी थी कि क्या भाभी को इस युवक के इस कोठी में पहुँचने का यथार्थ कारण विदित है ? क्या वह इस विषय में इसे उत्साहित कर रही है ? क्या भाभी छोटे भाई को बड़े पर तरजीह देती है ?

इस प्रकार के प्रश्न उसके मन में उठ रहे थे। इस समय प्रज्ञा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव से माता-पिता के विषय में पूछना आरम्भ कर दिया, "माताजी कैसी हैं ?"

"बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट प्रतीत होती हैं ।"

"और पिताजी ?"

"सदा की भाँति इस रिटायर्ड जीवन को किसी काम से भरने के लिए किसी-न-किसी से झगड़ते रहते हैं ।"

प्रज्ञा मुस्कराती हुई पूछती गयी, "और तुम अपने इन खाली दिनों को पूरा करने के लिए आवारागर्दी कर रहे हो ?"

"नहीं दीदी ! ऐसी बात नहीं । आवारागर्दी तो तब होती है जब घूमा-फिरा जाये बिना किसी मतलब के अथवा किसी बुरे मतलब के लिए ।

"मेरा घूमना न तो बे-मतलब है न ही किसी बुरे उद्देश्य से है ।"

इस समय कमला ने प्याला शिव के सम्मुख करते हुए कहा, "भाभी ! इनके यहाँ आने का मतलब मैं बताऊँगी ।"

"तो तुम जानती हो ?"

"केवल उतना ही जितना इन्होंने बताया है ।"

"हाँ, दीदी !" शिव ने कमला के कथन का समर्थन करते हुए कह दिया, "यह बतायेंगी तो भली-भाँति समझा सकेंगी ।"

"अच्छा ? तब ठीक है । चाय पियो और यहाँ से भागो । मैं कल माताजी से मिलने आऊँगी ।"

"हाँ ! माताजी भी तुमसे मिलने की इच्छा कर रही थीं । वह तुम्हारे इस कथन का अर्थ जानने का यत्न कर रही हैं कि मांस खाने से तुम्हारे मस्तिष्क के द्वार खुल गये हैं । यह तुमने एक दिन मुझे बताया था ।"

"तो तुमने यह बात माताजी तथा पिताजी से कह दी है ?"

"यही बात तो थी जिसने मेरे मस्तिष्क में हलचल मचा रखी थी ।"

"पिताजी तो इससे नाराज हो रहे होंगे ?"

"यह तो नहीं कह सकता कि वह नाराज हुए हैं । हाँ, वह यह कह रहे थे कि उनका विश्वास परमात्मा से उठता जा रहा है ।"

"यह पिताजी का दोष नहीं । यह दोष है परमात्मा पर बिना उसके विषय में जाने विश्वास करने का ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हाथ में पकड़े टुकड़े को, बिना हीरे की पहचान के किसी के कहने पर हीरा मान लेने वालों के साथ यही होता है। जब कोई अन्य यह कहे कि उसके हाथ में हीरा नहीं, बिल्लौर का टुकड़ा है तो हीरे के गुणों को न जानने वाला व्यक्ति हीरा फेंक देता है। यही बात यूरोप में ईसाइयों के साथ हो रही है। यही हिन्दू-मुसलमान दोनों के साथ हो रही है। दोनों परमात्मा को मानते हैं, मगर दोनों में से कोई भी परमात्मा के गुण नहीं जानता। इस कारण किसी को यह समझाने पर कि जिसे वह मानता है, वह परमात्मा है ही नहीं, वह परमात्मा को इस प्रकार फेंक देता है जैसे कोई नादान हीरे को फेंक देता है।

"परमात्मा पर उस व्यक्ति का विश्वास कभी भी नहीं हट सकता, जो परमात्मा के वास्तविक रूप को जानता है।"

"तो दीदी ! तुम परमात्मा के वास्तविक रूप को जानता हो ?"

"हाँ ! तभी मैं विज्ञान की पुस्तकें पढ़कर भी परमात्मा को अमान्य नहीं करती। सुनो ! तुम जैसे ज़ाहिलों की भाषा में ही बताती हूँ।"

"पर दीदी ! मैं ज़ाहिल नहीं हूँ ?"

"मैंने तुम्हें ज़ाहिल नहीं कहा। मगर जो भाषा तुम पढ़े हो, उस भाषा के मालिक ज़ाहिल हैं। सुनो—'गॉड इज़ ऑल प्रिवेडिंग इन्टेलिजेण्ट इनर्जी' (परमात्मा एक सर्वव्यापक चेतन-शक्ति है)।"

"पर दीदी ! शक्ति (इनर्जी) कभी भी इन्टेलिजेण्ट नहीं होती ?"

"मगर यह है। दुनिया में उसके समान और कोई नहीं। इसी कारण उसे लासानी अद्वितीय कहते हैं।"

"यह सिद्ध करना पड़ेगा कि वह 'इन्टेलिजेण्ट चेतन है।"

"हाँ ! यह बहुत ही सरल उपाय से किया जा सकता है। तुम तो साइंस पढ़ते हो। भला बताओ, न्यूटन का, गति का प्रथम नियम क्या है ?"

एक क्षण तक शिव ने स्मरण किया और फिर बता दिया। उसने बताया, "नियम यह है कि प्रकृति का कोई भी अंश यदि खड़ा है तो खड़ा ही रहता है और यदि चल रहा है तो एक स्थिर गति से सीधी रेखा में चलता ही रहता है।"

"और यह बताओ कि पृथ्वी चल रही है न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"नहीं।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु सीधी रेखा में नहीं चल रही। इसका अर्थ है कि कोई इसे प्रतिक्षण सीधी रेखा से मोड़ रहा है।"

"हाँ! वह एक अन्य शक्ति है।"

"मगर दोनों का संयोग कौन करता है?"

"अपने आप होता है।"

"अभी तो तुमसे बताया है कि अपने आप कुछ होता नहीं। यह प्रकृति का नियम है।

"और फिर मैं पूछती हूँ कि कौन इन ग्रहों को ऐसे घुमा रहा है कि ये आपस में टकराते नहीं। इसीलिए तो कहती हूँ कि इस प्रकृति, जिसे तुम नेचर कहते हो, से बलशाली और ज्ञानवान् कोई ताकत है जो इनको घुमा रही है और ऐसे घुमा रही है कि मानो किसी बहुत ही कारीगरी से तैल दी हुई मशीन हो।"

"यह हमें नहीं पता कि यह ताकत कहाँ से आई है, मगर यह है।"

"तो सुनो शिव! बिना एक चेतन-शक्ति को सब स्थान पर माने तुम कुछ भी समझ और समझा नहीं सकते।"

"परन्तु यह सीधा प्रमाण नहीं, यह उल्टा प्रमाण कहा जा सकता है?"

"यह सीधा और उल्टा तो आराम से बैठकर समझा जा सकता है। यह अभी समझ लो कि कोई है जो इस जगत् को बनाता है, चलाता है और फिर एक दिन तोड़-फोड़ देगा।"

शिव मुख देखता रह गया। इस पर प्रज्ञा ने एक बात और कह दी, "जो परमात्मा के ऐसे गुणों को जाने-समझे बिना परमात्मा को मानता है, वह उस नादान की भाँति है जो हाथ में हीरा पकड़े हुए उसके गुणों को नहीं जानता और फिर उसे काँच का टुकड़ा समझ फेंक देता है।

"यही बात उन सब लोगों की होती है जो परमात्मा का अस्तित्व केवल श्रद्धावश मानते हैं। जब उनको कोई कहता है कि परमात्मा दिखाई नहीं देता तो नादान व्यक्ति की भाँति हीरे को काँच समझ फेंक देते हैं।"

शिव को समझ आने लगा था कि क्यों उसका पिता परमात्मा पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्वास छोड़ बैठा है ।

बहन-भाई में यह युक्ति-प्रतियुक्ति होती सालिहा भी सुन रही थी । वह विचार करने लगी कि यही मतलब है जब कमला अब्बाजान को कहती है कि वह खुदापरस्त नहीं हैं । वह लड़की का कत्ल करने चला आया था । वह समझ रहा था कि कोई देखने वाला नहीं है । हकीकत में वह खुदा को मानता ही नहीं । झूठ-मूठ ही कह रहा है कि वह खुदा-दोस्त है ।

बात तो प्रज्ञा और शिव कर रहे थे और प्रभाव हो रहा था दोनों अम्मियों पर । वे बहू के मुख पर आश्चर्य में देख रही थीं ।

चाय समाप्त हुई तो शिवशंकर बहिन को नमस्ते कह चला गया ।

"यह क्या कह गया है ?" सालिहा ने कहा ।

"उसने जाते हुए मुझे अपनी ज़बान में सलाम कही है ।"

"जरा बोलकर बताओ, क्या कहा है उसने ?"

"उसने कहा है 'दीदी नमस्ते' । इसका मतलब है—दीदी ! मैं तुम्हारा आदर करता हूँ ।"

कमला से बात तो चाय के बाद ही हुई । आज वीणा बजाने वाला मास्टर नहीं आया था । वह रविवार के दिन छुट्टी किया करता था ।

इस कारण जब ज्ञानस्वरूप और प्रज्ञा उठने लगे तो प्रज्ञा ने कमला से कहा, "कमला ! जरा इधर आओ ।"

वह उठकर भाई और भाभी के पीछे-पीछे उनके कमरे में चली गई । उसे बैठा प्रज्ञा ने पूछा, "यह शिव क्या कह रहा था तुम जानती हो ?"

"भाभी ! पिछली बार जब मैं आपकी माताजी के घर गयी थी तो इन्होंने मुझे कहा था कि यह चाहते हैं कि मैं इनसे शादी स्वीकार कर लूं ।

"इस पर मैंने बताया कि मैं तो इनके बड़े भाई के पास बुक हूँ ।

"उस दिन तो यह चुप कर रहे, परन्तु आज कह रहे थे कि इनके भाईसाहब ने कहा है कि मैं आजाद इन्सान हूँ, इसलिए कोई बुकिंग नहीं । जब तक विवाह नहीं हो जाता, यह प्रबन्ध बदला भी जा सकता है । इससे उत्साहित हो आपके छोटे भाई मुझे अपने फैसले पर पुनरावलोकन करने के लिए कहने आए थे ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक। अब तुम बताओ कि तुम्हारे मन में क्या है और तुम क्या चाहती हो?"

"मैं आपसे जानना चाहती हूँ कि आप मुझे क्या राय देती हैं?"

"मेरी इस विषय में कुछ भी राय नहीं। दोनों भाई मुझे प्रिय हैं। तुम किसी से भी विवाह करो, मेरे तुम्हारे सम्बन्ध में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। तुम मेरी भावज तो रहोगी ही।"

कमला चुपचाप अपने मन में दोनों भाइयों के पक्ष-विपक्ष में विचार करने लगी। अब प्रज्ञा ने कहा, "मैं समझती हूँ कि तुम्हें इस विषय में और आगे पग उठाने से पूर्व कुछ दिन मौन रहकर अपने मन की टोह लेनी चाहिए और दोनों को तुम्हें प्राप्त करने के लिए यत्न करने देना चाहिए।

"अगर तुम्हें कोई बात समझ न आए तो मुझसे आकर पता करना। तब मैं यत्न करूँगी कि तुम्हारे विचारों को दिशा देने में तुम्हारी सहायता कर दूं।"

कमला प्रज्ञा से बात समाप्त करते हुए उठ खड़ी हुई और कहने लगी, "आप ठीक कह रही हैं। इस छोटे साहब के प्रस्ताव से मेरे मन में आह्लाद तो उत्पन्न हुआ है। आह्लाद होने का कारण मैं जान नहीं सकी। मैंने जबसे इन छोटे साहब से यह सब सुना है, तब से ही इस खुशी का कारण जानने का यत्न कर रही हूँ।"

"ठीक है, यत्न करो। और मैं यह राय दूंगी कि अन्तिम निर्णय के पूर्व मुझे बता देना कि तुमने क्या निर्णय लिया है जिससे तुम्हारे जीवन की गाड़ी की पटरी बदलने में सहायक हो सकूँ।"

"तो भाभी! तुम दोनों हालतों में सहायता करोगी?"

"मेरे लिए, मैंने बताया है कि कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा। तुम मेरी भावज तो बनोगी ही।"

कमला इस समस्या पर विचार करने अपने कमरे में चली गई।

: ५ :

कमला की समस्या से अधिक विकट समस्या रविशंकर की थी। अब रविशंकर ने विष्णुसहाय से मिलना अधिक कर दिया था। विष्णुसहाय करोलबाग वैस्टर्न ऐक्सटेन्शन में रहता था। यह उसका अपना मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसका दूसरा लड़का रामसहाय विश्वविद्यालय में प्राध्यापक नियुक्त होने से विश्वविद्यालय कक्ष में एक क्वार्टर में जाकर रहने लगा था। वह अर्थशास्त्र का पी-एच० डी० था और अपने विभाग का प्रमुख बनने का यत्न करना चाहता था। इस अर्थ विश्वविद्यालय के अधिकारियों से सम्पर्क बनाने के लिए विश्वविद्यालय क्षेत्र में रहना आवश्यक था। इस पर भी वह प्रायः पिता से मिलने आता रहता था। इससे उसका सम्पर्क रविशंकर से भी था।

जिस दिन रविशंकर को विष्णुसहाय से मिलना होता था, वह दो बजे मध्याह्न ही घर से निकल पड़ता था और दो स्थानों पर बस बदलता हुआ चार बजे के लगभग विष्णुसहाय के मकान पर जा पहुँचता था। और फिर दो घंटे विष्णुसहाय की संगत में रह रात के आठ बजे घर आ पहुंचा करता था।

महादेवी इससे चिन्ता अनुभव करने लगी थी। यह चिन्ता पति के घर में आने में देरी हो जाने के कारण हुआ करती थी। इस पर भी एक बात का उसको संतोष होता था कि जिस दिन रविशंकर अपने मित्र से मिलकर आता था, वह प्रसन्न रहता था।

शिव प्रज्ञा के घर पर कमला से मिलने अब दूसरे-तीसरे दिन जाने लगा। यह बात ज्ञानस्वरूप की अम्मियों को पता चल चुकी थी कि प्रज्ञा का यह भाई कमला से विवाह की इच्छा करता हुआ आता है। इस बात की सूचना कमला के मास्टर ने ही कमला की अम्मियों को दी थी। पहले तो दोनों औरतों को अटपटा लगा, परन्तु जब उन्होंने प्रज्ञा से यह बात की तो प्रज्ञा ने दोनों का समाधान कर दिया।

प्रज्ञा ने कहा, "दोनों भाई यह जानते हैं कि वे इस विषय में प्रतिद्वन्द्वी हैं।"

"तो वे परस्पर लड़ पड़ेंगे?"

"मुझे इसमें कोई कारण प्रतीत नहीं होता। दोनों जानते हैं कि कमला एक बुद्धिशील प्राणी है। एक जीवात्मा है और उस जीवात्मा की सहायता के लिए उसमें उपस्थित परमात्मा का अनुभव उसे है।"

"इससे क्या होता है?" सालिहा का कहना था, "जब ख्वाहिशात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का जोर होता है तो रूह खुदा की ताक पर रख कर ख्वाहिश पूरी करने भाग खड़ी होती है।"

"अम्मी ! दोनों भाईयों में यह कशमकश चल रही है। दोनों के माता-पिता इनकी दौड़ को दिलचस्पी से देख रहे हैं। वे किसी का पक्ष नहीं लेना चाहते। मगर वे किसी एक को दूसरे से धोखा-धड़ी भी करने नहीं देंगे।

"इस कारण मैं समझती हूँ कि यह मसला कमला को तय करने के लिए छोड़ दिया जाये।"

"और कमला फैसला क्यों नहीं करती ?"

"एक दिन दादा उमाशंकर ने मेरे सामने ही कमला से कहा था कि ठीक यही होगा कि तुम अपने मन में निश्चय कर लो।

"इस पर कमला ने कहा था, पन्द्रह जनवरी १९७२ को मेरा जन्म-दिन है और तब मैं पूरे इक्कीस वर्ष की होने वाली हूँ। उससे पहले तो निश्चय कर ही लूँगी। तब तक आप दोनों भाईयों से अपनी प्रशंसा सुन-सुन चित्त प्रसन्न करने का अधिकार मैं सुरक्षित रखना चाहती हूँ।

"इस पर उमाशंकर ने कहा था कि उसे अपनी नहीं, शिव की मानसिक अवस्था की चिन्ता है।

"दादा का यह कहना था कि शिव ने बी० एस-सी० बहुत अच्छे अंक लेकर पास की है और वह एम० एस-सी० में प्रवेश पाने के लिए उत्सुक प्रतीत नहीं होता। यदि तुम अपना निश्चय बता दोगी तो वह स्थिर चित्त होकर पढ़ाई में लग जायेगा अथवा कुछ काम-धन्धा करने लगेगा। वह अस्थिर चित्त अपने भविष्य के विषय में निर्णय नहीं कर सकता।

"कमला का कहना था कि उसकी यह मनोवृत्ति उसको उसकी दृष्टि में हीन सिद्ध कर रही है, परन्तु जब भी छोटा भाई आता है तो उसकी स्पष्ट और दृढ़ बातों को सुन वह उसे ऊँचे अंक देने लगती है।"

समय व्यतीत हो रहा था कि एक दिन शिवशंकर सायंकाल चाय के समय पिताजी से कहने लगा, "पिताजी ! आप मेरे कारोबार में मेरी कितनी सहायता कर सकेंगे ?"

"किस कारोबार में ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने अंसारी रोड पर एक दुकान भाड़े पर ले ली है।"

"ओह !" रविशंकर के मुख से निकल गया, "कहाँ ? अंसारी रोड पर ? कितने भाड़े पर ली है ?"

"तीन सौ रुपये महीना भाड़ा और पचास हजार की पगड़ी देकर एक पाँच सौ वर्ग-फीट जगह ली है।"

"और यह रुपया कहाँ से आया है ?"

"मेरी मित्र मण्डली बहुत लम्बी-चौड़ी है। मैंने पचास मित्र ढूंढ़े हैं और उनसे एक-एक हजार रुपये की सहायता प्राप्त कर ली है। दो दिन हुए मैं पचास हज़ार नकद पगड़ी की रकम देकर लिखत-पढ़त कर आया हूँ, मगर दुकान में पूँजी के लिए आपसे पूछ रहा हूँ।"

रविशंकर यह एक-एक हजार रुपये की बात सुन भौंचक्क शिव का मुख देखता रह गया। शिव मुस्करा रहा था। पिता के मुख पर अविश्वास की झलक देख उसने कहा, "पिताजी ! कल मैं बढ़ईयों को वहाँ का फर्नीचर बनवाने के लिए ले जा रहा हूँ। यदि आप भी चलकर कुछ सुझाव दे सकें तो बहुत ही आभारी रहूँगा।"

"यह तुम लोगों में क्या फ़ुतूर समा रहा है। प्रज्ञा ने पूछे बिना विवाह कर लिया था और तुम बिना बताये कारोबार करने लगे हो ?"

"पिताजी ! मैं भी तो यह विवाह की तैयारी में ही कर रहा हूँ।"

"तो वह मान गई है ?"

"मानी तो नहीं। यह सब-कुछ उसे मनाने के लिए ही है।

"मैंने अपने जिस-जिस मित्र को वस्तुस्थिति का वर्णन किया और उससे इस कार्य में सहायता माँगी, उसने मेरी सहायता कर दी।

"मैं यही आपसे आशा कर रहा हूँ।"

"मगर यदि मैं इस कार्य में तुम्हारी सहायता करूँ तो एक लड़के से अन्याय करने वाला हो जाऊँगा। मैं तुम दोनों के इस बीवी सम्बन्धी विवाद में निष्पक्ष रहना चाहता हूँ।"

"तो आप दादा की भी सहायता कर दीजिए।"

"परन्तु वह मेरी सहायता माँगता नहीं। उसने अमेरिका में पाँच वर्ष तक मेहनत-मजदूरी कर जहाँ वहाँ की पढ़ाई का खर्च दिया है, वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यहाँ क्लीनिक चलाने के लिए भी जमा किया है।

"मगर पिताजी, यह अमेरिका है नहीं। यहाँ तो समाजवाद है। समाजवाद में भूखमरी रहती है। यहाँ दादा वाला उपाय नहीं चल सकता। इस कारण मैंने मित्रता का आश्रय ले दादा को पराजित करने का उपाय किया है।"

"मगर मैं इसमें सहायता नहीं दूंगा। इसका अर्थ होगा एक लड़के की नाजायज़ हरकत में मददगार बन जाऊँ।"

"पिताजी ! मेरी यह कोशिश नाजायज़ कैसे होगी ? दादा तो इसको जायज़ ही कहते हैं।"

"क्या कहता है ?"

"यही कि हम भाई-भाई जरूर हैं, मगर कमला ऐसा पुरस्कार है कि उसके लिए अपनी-अपनी किस्मत आजमाई करने का हक रखते हैं।"

"मुझे डर है कि तुम दोनों एक-दूसरे से झगड़ा करोगे और एक दूसरे की जान के ग्राहक बन जाओगे।"

"ऐसा क्यों होगा ?"

"औरत के पीछे खून होते देखे जाते हैं।"

"जो ऐसा करते हैं, जाहिल और मूर्ख होते हैं। मैं ऐसा नहीं करूँगा। एक दिन दादा से माताजी के सम्मुख बात हुई थी और दादा ने माना था कि मुझे सत्य व्यवहार से उसे विजय करने की छूट होनी चाहिए।"

"मुझे तुम मूर्खों की बात समझ नहीं आती।"

"हाँ, यह तो है। पर पिताजी ! आ सकती भी नहीं। आपमें और हममें अन्तर है। आप तो अब निपट नास्तिक हैं और हम दोनों भाई परमात्मा में आस्था रखते हैं और कमला भी प्रज्ञा बहन की शिष्या है और परमात्मा पर विश्वास रखती है।"

"अच्छा देखो ! यदि उमा खाली हो तो उसे बुलाओ। मैं आज तुम दोनों को कुछ अक्ल की बात समझाना चाहता हूँ।"

शिवशंकर उठा और बाहर दादा के कमरे में चला गया। उमाशंकर उस समय खाली था। उसने कहा, "चलो दादा ! पिताजी बुलाते हैं।"

उमा ने अपने कम्पाउण्डर से कहा, "कोई आये तो मुझे बुला लेना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कह वह शिवशंकर के साथ ड्राइंगरूम में आ गया।

इस समय महादेवी भी आ गई थी। वह प्रज्ञा के घर गई हुई थी। वह भी दोनों भाइयों को एक ही लड़की से विवाह के लिए प्रतिस्पर्धा करते देख चिन्ता अनुभव किया करती थी। वह प्रज्ञा के सम्मुख कमला को समझा आई थी कि उसे एक नौका में सवारी करनी चाहिए, नहीं तो भवसागर में डूबेगी। कमला ने स्पष्ट कहा था, "मैं अभी नाबालिग हूँ। इसलिए किसी से भी पक्की बात करूँगी तो कानून के खिलाफ करूँगी। इस कारण मैं किसी को हाँ अथवा ना नहीं कह सकती।"

घर पहुँची तो पिता को दोनों लड़कों में निर्णयात्मक बात करने में संलग्न देख वह भी उनकी बात सुनने वहाँ बैठ गई।

रविशंकर ने कहा, "देखो डाक्टर! यह तुम्हारा भाई कमला पर डोरे डाल रहा है।"

"पिताजी! वह क्या होता है?"

"मेरा मतलब है कि यह उसे तुमसे बरगला कर खुद उससे विवाह करने की कोशिश कर रहा है।"

"पिताजी! मुझे मालूम है।"

"इसने तुम्हारा मुकाबला करने के लिए दुकान खोलने का यत्न किया है।"

"मुझे इसने अपनी सब योजना बताई है और उस योजना में मैंने भी इसकी सहायता की है।"

"सत्य?"

"हाँ, पिताजी! इसने पगड़ी के लिए जब पैंतालीस हजार एकत्रित कर लिया तो शेष पाँच हजार मैंने दिया और इसको दुकान दिलवा दी है।"

पिता भौंचक्क उमाशंकर का मुख देखता रह गया। उमाशंकर और रविशंकर दोनों मुस्कराते हुए पिता के कहने की प्रतीक्षा कर रहे थे। आखिर रविशंकर ने कहा, "और यह दूकान खोलकर तम से अधिक धनी बनना चाहता है।"

"मुझे इससे प्रसन्नता होनी चाहिए। मैंने अपने मन को टटोला है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मैं समझता हूँ कि मेरा मन इसे उन्नति करते देख प्रसन्न होगा।

"और यदि यह कमला के साथ विवाह करने में भी सफल हो गया तो पिताजी! मैं छोटी भाभी के लिए बहुत सुन्दर हीरे के टाप्स ले दूंगा।"

"तुम दोनों मूर्ख हो!"

"तो पिताजी! ऐसा करिये, हम मूर्खों को परस्पर निपटने दीजिये और आप हमारी भाँति मूर्ख मत बनिये।"

"मगर यह तो मुझसे दुकान के लिए पूंजी माँगने आया है?"

"यदि आप दे सकें तो उचित ही है।"

उमाशंकर को ऐसी बातें करते देख रविशंकर बोल उठा, "तो जाओ जहन्नुम में। मैं इसकी, तुम्हें पराजित करने में सहायता करूँगा। तुम बड़े गधे हो। यद्यपि गधा तो यह शिव भी है, परन्तु तुम उससे बड़े हो। मैं कमला को इसका घर बसाने में सहायता करूँगा। अभी तक तुम्हारे लिए आने वाले रिश्तों को मैं लारे-लप्पे लगा रहा था। अब मैं उनको साफ उत्तर दूंगा और कह दूंगा कि तुम महामूर्ख हो, मैं तुम्हारी शादी में बैठूंगा भी नहीं।"

पिता को आज कई दिन के उपरान्त फिर नाराज होते देख उमाशंकर मौन हो गया। परन्तु महादेवी ने कह दिया, "यदि आप खुलकर शिव की उमा के खिलाफ सहायता करेंगे तो मैं उमा की शिव के खिलाफ सहायता करूँगी।"

"मैं तुमसे भी लड़ पड़ूंगा?"

"यह तो स्वाभाविक ही है। परमात्मा को न मानने वाला यही कर सकता है, जो आप कह रहे हैं।"

"यह तुम हर बात में परमात्मा को ले आती हो? पूर्ण आयु-भर हनुमानजी की पूजा करता रहा हूँ और तुम मुझे नास्तिक कहती हो। मैं ईश्वर-भक्त को अपना गुरु पीर मानता रहा हूँ और तुम न कभी संध्या-उपासना करती हो, न किसी मन्दिर में नमस्कार करने जाती हो और परमात्मा की ठेकेदार बन गई हो।"

उत्तर महादेवी ने ही दिया। उसने कहा, "जब आप परमात्मा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमों का उल्लंधन करते हैं तो मन्दिर-मस्जिद में जाने से क्या होगा ! राम-राम कहने से क्या होगा ? इससे परमात्मा प्रसन्न नहीं होता। राम का आदेश मानना ही उसकी पूजा करनी कही जा सकती है।"

"मैंने परमात्मा का कौन-सा आदेश नहीं माना ?"

"दोनों पुत्रों में एक का पक्ष लेने की जो बात कह रहे हैं। परमात्मा का नियम है कि कर्म का फल मिलता है। जब तक कोई पाप कर्म नहीं करता, परमात्मा उससे नाराज नहीं होता और आप तो अकारण ही उमा से नाराज हो रहे हैं।"

"तो मैं शिव की सहायता न करूँ ?"

बात उमाशंकर ने कही, "मैंने तो यह बताया है कि इसके व्यवसाय में मैंने पाँच हजार की सहायता दी है। आप भी दे सकते हैं। मैं इसे बुरा नहीं मानता।

"परन्तु मैं अपने को मूर्ख नहीं मानता जो छोटे भाई को अपने साथ दौड़ लगाने की स्वीकृति न दूं।"

"तुम दोनों का दिमाग खराब है।"

"पर पिताजी ! कल आप दुकान देखने तो चलेंगे ?" शिव ने बात बदल दी।

"क्यों उमा ! मुझे जाना चाहिए क्या ?"

"जी ! मैं भी तो देखने जा रहा हूँ।"

इसने बात निश्चय कर दी। रविशंकर शिव की ली हुई दुकान देखने के लिए जाना मंजूर कर बैठा। उमाशंकर ने कह दिया, "पिताजी ! मैं यहाँ से ठीक आठ बजे अपनी मोटर में चलूंगा। आप भी चल सकते हैं।"

: ६ :

अगले दिन उमाशंकर अपनी मोटर में माता-पिता तथा शिव को लेकर अन्सारी रोड वाली दुकान पर पहुंचा। दुकान देखने के लिए प्रज्ञा और ज्ञानस्वरूप पहले ही पहुंचे हुए थे।

बढ़ई वहाँ आया हुआ था। दुकान खोलकर देखी गई और उसकी स्थिति, अवस्था और आस-पड़ोस देखा गया। सबने पसन्द किया।

बढ़ई को फर्नीचर बनाने के लिए नक्शा दे दिया गया तो वह बैठ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर लकड़ी और सामान का अनुमान लगाने लगा।

शिव पिताजी को पृथक् में ले जाकर फर्नीचर पर व्यय होने वाला अनुमानित धन बता रहा था। उसने कहा, "आजकल महँगाई के कारण इस दुकान को सूरत-शक्ल देने में बीस हजार के लगभग लग जायेगा।"

"और तुम्हारे पास जेब में क्या है ?"

"जीजाजी ने अभी पाँच हज़ार दिया है। उन्होंने पगड़ी की रकम में एक हज़ार पृथक् दिया था।"

"यह सब ऋण उतारोगे कैसे ? दुकान को मशहूर होने में चार-पाँच वर्ष लग जायेंगे।"

"पिताजी ! यह ऋण नहीं है। किसी भी मित्र ने तथा सम्बन्धी ने जो सहायता दी है, वह ऋण कह कर नहीं दी। इस पर भी मेरी एक योजना है, जिससे मैं इस सहायता का प्रतिकार दूंगा।"

"क्या ?"

"आप इस सहायता में सम्मिलित हो जाइये तो आपको भी उस प्रतिकार में भागीदार बना लूंगा।"

"मैं कुछ ऐसा विचार कर रहा हूँ कि दुकान के फर्नीचर का सब खर्च मैं दूं। इस पर भी अन्तिम निर्णय तुमसे और उमा से एक बात करने के उपरान्त बताऊँगा।"

"तो कहाँ बात करेंगे ?"

"अभी, यहाँ ही बात करूँगा।"

"तो उसे बुलाऊँ ?"

"हाँ ! और यदि चाहो तो बहिन और बहनोई को भी बुला लेना।"

बढ़ई भूमि पर बैठा फर्नीचर का नक्शा देख-देख सामान का अनुमान लगाता हुआ लिख रहा था और प्रज्ञा, ज्ञानस्वरूप तथा उमाशंकर एक कोने में खड़े परस्पर विचार कर रहे थे कि किस प्रकार शिव की दुकान को विख्यात किया जाये।

रविशंकर तथा शिव दुकान के पीछे के भाग में खड़े बातचीत कर रहे थे। शिव सब को बुलाकर पिताजी के पास ले आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविशंकर ने कहा, "मुझे शिव ने बताया है कि इस दुकान के लिए सबसे अधिक सहायता ज्ञानस्वरूप और उमाशंकर ने दी है। आपने इसे सहायता किस आशा में दी है ?"

उत्तर ज्ञानस्वरूप ने दिया, "पिताजी ! यह प्रज्ञा का भाई है और इसे फलता-फूलता देख हमें प्रसन्नता होनी चाहिये। बस, इस प्रसन्नता की आशा में हम इसको सहायता दे रहे हैं।"

"मगर इसके मस्तिष्क में अपनी पढ़ाई को अधूरा छोड़ इस व्यवसाय में कूद पड़ने का एक उद्देश्य है।"

अब प्रज्ञा ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "पिताजी ! यह हम जानते हैं परन्तु उस उद्देश्य में हम तटस्थ हैं।"

"मुझे कुछ सन्देह हो रहा है कि शिव के पूर्ण प्रयास को कमला की अम्मी उत्साहित कर रही है ?"

"यह हमें विदित नहीं।" ज्ञानस्वरूप ने कहा, "परन्तु यदि यह सत्य भी हो तो उसका इसमें शिव को उत्साह देना सराहनीय ही है।"

"मगर उसका सहायक होना दोनों मूर्ख भाइयों में झगड़ा कराना भी तो हो सकता है।"

"जी !" प्रज्ञा ने कहा, "परन्तु मैं उसे इतना मूर्ख नहीं समझती। कम-से-कम उसका वर्तमान व्यवहार इस प्रकार की मूर्खता वाला नहीं प्रतीत होता।

"यह ठीक है कि संसार में मूर्खों की कमी नहीं है। अतः मेरा विचार है कि शिव का सुखी अथवा दुःखी होना, उन मूर्खों की भीड़ पर निर्भर नहीं करता जो इस नगर में रह रहे हैं वरन् इसकी अपनी बुद्धिमत्ता पर निर्भर करता है।

"अम्मी सालिहा हों अथवा कोई दूसरी हों, वह तब तक शिव को किसी अमल पर लगा नहीं सकेंगी जब तक यह स्वयं वही व्यवहार करने को तैयार न हो।"

अब रविशंकर ने कह दिया, "यदि तुम सब लोग इसके इस काम में सहायक हो रहे हो तो मैंने भी इसमें सम्मिलित होने का निश्चय किया है। मैं यह घोषणा करता हूँ कि आज से दुकान खुलने तक जितना खर्चा होगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मैं करूँगा।"

"शिव !" प्रज्ञा ने कह दिया, "पिताजी के चरण-स्पर्श कर, इनका धन्यवाद करो।"

शिव तो पहले ही यह सजदा करने के लिए तैयार खड़ा था। उसने पिताजी के चरण-स्पर्श कर रहा, "परन्तु पिताजी ! यह उस धन के लिए नहीं जो आप दे रहे हैं। यह तो आपका मेरे इस काम को आशीर्वाद देने के लिए है।"

"शिव ! तुम घर पर आओगे तो अपनी सहायता की पहली किस्त दूँगा और तुम उसके खर्चे का वृत्तान्त बताओगे तो फिर और दूँगा।"

सब वापस ग्रेटर कैलाश को चल दिए।

प्रातः का अल्पाहार लेने के लिए ज्ञान खाने के कमरे में जा पहुँचा। दोनों अम्मियाँ तथा कमला पहले ही वहाँ आ चुकी थीं और प्रज्ञा तथा ज्ञानस्वरूप की प्रतीक्षा कर रही थीं। ज्ञानस्वरूप दुकान जाने के लिए उत्सुकता प्रकट कर रहा था। इस कारण वह शीघ्रता से खाने की मेज पर जा बैठा।

प्रज्ञा सातवें महीने में थी, इस कारण पीछे धीरे-धीरे चली आ रही थी।

ज्ञानस्वरूप ने नाश्ता लेना समाप्त किया और मोटर में सवार हो दुकान को चला गया। उसके चले जाने के उपरान्त सालिहा ने प्रज्ञा से कहा, "तुम्हारा छोटा भाई दिलदार इन्सान मालूम होता है। पचास हज़ार मित्रों और दूसरे रिश्तेदारों से इकट्ठा कर लिया है और अब बाप से भी, जो उससे बिल्कुल रूठा हुआ था, उसने भारी रकम का वायदा ले लिया है।"

"बढ़ई का अनुमान था कि बीस हजार फर्नीचर पर लग जायेगा और फिर उसमें बिक्री के लिए माल भी तो लगाना होगा। मैं समझती हूँ एक लाख उसे मिले तो उसकी नौका पार लग सकेगी।"

सरस्वती ने कहा, "अगर बहिन सालिहा कोशिश करे तो इतना कुछ अब्बाजान से दिला सकती है ?"

"मैं कोशिश तो कर सकती हूँ, मगर वह शर्त लगा देंगे ?"

"क्या शर्त लगा देंगे ?" कमला ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तुम्हारे खाविन्द को मुसलमान हो जाने को कहेंगे।"

"पर अम्मी! कौन है मेरा खाविन्द? मैंने तो अभी शादी नहीं की?"

"करना तो चाहती हो?"

"हाँ, मगर किससे? इसका मैंने फैसला नहीं किया और अम्मी कह रही हैं कि भाभी के छोटे भाई से शादी करूँ।"

"हाँ, तब अब्बाजान मदद करेंगे। केवल उसको मुसलमान हो जाने को कहेंगे।"

"तो उससे पूछा जाये। मुझे वह पूछेगा तो मैं मदद लेने से मना कर दूंगी। पहले जिस किसी ने भी मदद दी है, बिना किसी शर्त के दी है। भाभी बता रही हैं कि भाभी के पिताजी ने भी अपने लड़के से किसी प्रकार की शर्त नहीं की।

"तीन दिन हुए मुझे वह मिले थे और कह रहे थे कि उनके पिताजी मुझसे उनके मिलने आने के कारण सख्त नाराज हैं।

"इस पर भी आज उन्होंने इतनी बड़ी रकम दे दी है।"

"मगर तुम्हारे अब्बाजान उस मिट्टी के घड़े हुए नहीं हैं। वह तो दीनदार हैं।"

"और अम्मी! तुम क्या हो?"

"मैं हवा में लटक रही हूँ। आप लोगों की बात सुन मुसलमान नहीं रही। मगर मन कहता है कि तुम्हारे अब्बाजान की बीवी को उनके मजहब में ही रहना चाहिए।"

"तो मजहब कोई मकान है जो बीवी को अपने खाविन्द के मकान में ही रहना चाहिए?"

सब हँसने लगीं। उत्तर सालिहा ने दिया, "कुछ भी समझो। खाविन्द-बीवी का मजहब एक-दूसरे से मुख्तलिफ नहीं होना चाहिए।"

"अम्मी! मज़हब दिमागी और रूहानी बात है और खाविन्द जिस्मानी बात है।"

बात प्रज्ञा ने बदल दी। उसने कह दिया, "अम्मी! अगर आपको पता चले कि अब्बाजान आये हैं तो उनको इस घर पर आ इस गरीबखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में खाना लेने का दावतनामा दे दीजियेगा।"

"यह तुम खुद ही उन्हें देना। मैं दूंगी तो दो-चार जली-कटी सुना देंगे।"

"तो यहाँ की रोटी से दुश्मनी है, आपसे नहीं ?"

"नाराजगी तो तुमसे है और तुम्हारे घर वालों से है, मुझसे नहीं।"

"और मैं तो अम्मी को कह रही हूँ कि आप अपने घर पर दावत दे दें। मैं अपने घर बुलाने के लिए नहीं कह रही।"

"तो यह घर मेरा है ?"

"इतना ही आपका है, जितना बम्बई वाला घर। वह खाविन्द का है तो यह लड़के का है।"

"मगर ज्ञान मेरे पेट से पैदा नहीं हुआ ?"

"इस पर भी वह आपकी इज्जत वैसे ही करते हैं जैसे अपनी अम्मी की करते हैं।"

"यह उसकी शराफत है।"

"तो अम्मी ! तुम भी शरीफ बन जाओ।" हँसते हुए कमला ने कह दिया।

"चुप रहो। सब तुम्हारी वजह से ही हो रहा है, नहीं तो मुझे छः महीने तक खाविन्द से जुदा न रहना पड़ता।"

"मगर अम्मी ! तुमको मना किसने किया है ?"

"तुम्हारे अब्बाजान ने और तुम्हारी खातिर ही। अगर तुम बम्बई चलने के लिए तैयार हो जाओ तो फिर मैं भी अपने खाविन्द के घर में जा पहुँचूंगी।"

"मगर अम्मी ! जानती हो, मैं वहाँ क्यों नहीं जाती ?"

"क्यों नहीं जाती ? जहाँ तक मुझे समझ आया है तुम प्रज्ञा के दोनों भाईयों के इश्क में फँसी हुई हो। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि तुम दोनों की बीवी एकदम बनोगी।"

"नहीं अम्मी ! यह नहीं हो सकता और सुन लो, मैं बम्बई नहीं जा रही तो इस लगाव के कारण नहीं। मेरे वहाँ जाने और इस लगाव से कोई ताल्लुक नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं वहाँ इसलिए नहीं जाती कि अब्बाजान की पूरी कमाई गैर-कानूनी है और मैं उसमें से कुछ भी लेना नहीं चाहती।

"अम्मी ! जानती हो अब्बाजान ने मेरे और भाईजान के खिलाफ मुकद्दमा क्यों वापस लिया है?"

"क्यों लिया है?"

"इसलिए कि मैंने अपने जवाबदावे में उनकी आमदनी का भण्डा फोड़ने की धमकी दी थी।"

"तब तो उनका तुम्हें गोली मार खत्म कर देना ठीक ही था।"

"मगर अम्मी ! मेरे अमाल अभी मेरी उम्र दराज करने के लिए 'इंजेक्शन' लगाये हुए हैं।"

सालिहा नाराज हो उठ गई। वह खाने के कमरे से निकली तो सरस्वती ने कह दिया, "इसे खाविन्द की याद सताने लगी है।"

"तो अम्मी ! इसे हवाई जहाज का भाड़ा दे दो और बम्बई के लिए बुक कर दो।"

"ज्ञान से आज कहूँगी।"

मध्याह्न का खाना, सायंकाल की चाय और रात का खाना सालिहा ने घर की नौकरानी से कहकर अपने कमरे में ही मँगवा लिया।

रात ज्ञानस्वरूप ने इसका कारण पूछा तो सरस्वती ने पूरी बातचीत सुना दी।

"और कमला ! तुमने यह क्यों कहा कि तुम अपने बयानों में अब्बाजान की आमदन के विषय में बतानेवाली थी?" ज्ञान ने पूछा।

"यही तो मैंने लिखा था। लिखित बयान में तो सिर्फ इशारा किया था, मगर मैं यह तब बतानेवाली थी, जब उनका वकील इस विषय में मुझसे जिरह करता।"

"मैं यह नहीं पूछ रहा। मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि अम्मी को यह सब-कुछ बताने से क्या मतलब था?"

"हाँ, दादा ! यह भूल हो गई है। कहो तो जाकर उनके पाँव पकड़ मुआफी माँग लूँ।"

"नहीं, अभी बैठो। भोजन कर लो। अपना पेट भर लो। भरे पेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

भोजन समाप्त कर ज्ञानस्वरूप कमला को लेकर सालिहा के कमरे में गया और दो मिनट में ही लौट आया। उस समय तक प्रज्ञा और सरस्वती ड्राइंगरूम में आ खड़ी हुई थीं। ज्ञानस्वरूप ने आते ही कहा, "छोटी अम्मी अपने कमरे में नहीं हैं।"

"तो कहाँ है ?"

"उनका सूटकेस भी वहाँ नहीं है।"

"तो भाग गई हैं ?" प्रज्ञा ने पूछ लिया।

"या भगा दी गई हैं ?" ज्ञानस्वरूप ने चिन्ता अनुभव करते हुए कहा।

सरस्वती का कहना था, "मैं समझती हूँ, न भागी है न भगाई गई है। ऐसा मालूम होता है आज उसको तुम्हारे अब्बाजान का खत आया है। वह दिल्ली आज आनेवाले थे। शायद वह इसी समय आ रहे हैं और सालिहा उनको 'रिसीव' करने हवाई-पत्तन पर गई है।"

"मगर अपना सूटकेस ले गई हैं ?"

"यह तो उनके साथ होटल में रहने के लिए हो सकता है ?"

कमला बोली, "कल प्रातःकाल पता चल जाएगा। अगर कुछ पता न चला तो पुलिस में रिपोर्ट लिखा देंगे।"

इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। रात के दस बजे टेलीफोन खड़का। अब्दुल हमीद इम्पीरियल होटल से बोल रहा था। प्रज्ञा ने टेलीफोन सुना तो ज्ञानस्वरूप को कह दिया, "आपके अब्बाजान का टेलीफोन है। इम्पीरियल से बोल रहे हैं और आपसे बात करना चाहते हैं।"

इस वक्त तक सब वहीं ड्राइंगरूम में बैठे इधर-उधर की बातें कर रहे थे।

ज्ञानस्वरूप ने फोन ले सलाम-आलेकुम कही ही थी कि उधर से गालियों की बौछार आने लगी। ज्ञानस्वरूप चुपचाप सुनता रहा। उधर से तीन मिनट तक उसके अब्बाजान कहते रहे और वह चुपचाप सुनता रहा। अन्य दोनों प्राणी उत्सुकता से ज्ञानस्वरूप के मुख पर देख रहे थे। ज्ञानस्वरूप गम्भीर मुख बनाये टेलीफोन सुन रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आखिर ज्ञानस्वरूप बोला, "अब्बाजान ! और कुछ ?"

फिर आधा मिनट तक लगातार कुछ कहा गया और टेलीफोन बन्द हो गया।

ज्ञानस्वरूप ने टेलीफोन का चोंगा रखा और अपनी अम्मी को बताने लगा, "छोटी अम्मी उनके पास पहुँच गई हैं। अब्बाजान दिल्ली में तीन-चार दिन से हैं और कुछ हमारे खिलाफ साज़िश कर रहे हैं।"

"तो मेरा ख्याल ठीक है कि सालिहा भगाई नहीं गई, बल्कि भाग गई है और इस घर के खिलाफ साज़िश करनेवालों से जा मिली है।"

एकाएक ज्ञानस्वरूप को उमाशंकर की याद आई और उसने कोठी का नम्बर घुमा दिया।

टेलीफोन पर रविशंकर आया। ज्ञानस्वरूप न उमाशंकर से बात करने के लिए बुलाया तो उमाशंकर आ गया।

ज्ञानस्वरूप ने वहाँ की पूरी बात बताई तो उमाशंकर ने कहा, "मैं थाने में टेलीफोन करता हूँ। आजकल यहाँ का थानेदार मेरा मरीज है और मैं समझता हूँ कि वह हमारी मदद करेगा।"

"तो दादा, बात करो। मैं इन्तजार कर रहा हूँ।"

साढ़े दस बजे उमाशंकर का टेलीफोन आया। उसने ज्ञानस्वरूप को कुछ बताया तो ज्ञानस्वरूप ने टेलीफोन बन्द कर प्रज्ञा और अम्मी को बताया, "अब्बाजान ने किसी किस्म की रिपोर्ट मेरे खिलाफ पार्लियामेण्ट स्ट्रीट के थाने में लिखाकर मेरे वारण्ट निकलवा दिये हैं। दादा थानेदार को लेकर वारण्ट निकालनेवाले मैजिस्ट्रेट से बात कर पार्लियामेण्ट स्ट्रीट वारण्ट की तामील रुकवाने गए हैं। दादा ने यह भी कहा है कि वह प्रातः छः बजे ही किसी से मिलने जाएगा और मैजिस्ट्रेट की अदालत की कार्रवाई रुकवा देगा।"

रात-भर किसी को नींद नहीं आई। कमला समझ रही थी कि यह सब झगड़ा उसकी वजह से है। इससे वह बहुत परेशान थी। रात-भर वह भूमि पर पलथी मार परमात्मा को स्मरण करती रही।

सोये तो प्रज्ञा और ज्ञानस्वरूप भी नहीं थे, परन्तु वे समय पर स्नानादि कर जब अपने पूजा के कमरे में आये तो कमला और सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वहाँ पहले ही बैठी थीं। कमला अपनी वीणा लिए हुए थी।

ज्ञानस्वरूप उनको देख हँस पड़ा, "अम्मी ! क्या हो रहा है ?"

"तो तुम आ गए हो ?" सरस्वती ने कहा, "मैंने ही इसे आने के लिए कहा है। इसका एक गाना मुझे इस समय याद आया तो मैंने इससे कहा, यह लाकर भाभी को सुनाओ। आज यही हमारी पूजा होगी।"

ज्ञानस्वरूप ने भी अपने मन की अवस्था में यही ठीक समझा। प्राणायाम इत्यादि छोड़ उसने कमला को कहा, "हाँ, तो सुनाओ ! जरा मैं भी देखूँ कि तुमने कहाँ तक इस विद्या में उन्नति की है।"

कमला तो तैयार बैठी थी। उसने भाभी और भाईजान के बैठते ही रामकली की धुन बजानी आरम्भ कर दी।

प्रज्ञा को आज समझ आया कि शुष्क ज्ञान-चर्चा से इस प्रकार की पूजा को लोग क्यों पसन्द करते हैं। जहाँ ज्ञान-चर्चा मस्तिष्क को प्रेरित करती है, वहाँ संगीत के समयोचित स्वर आत्मा का ध्यान केन्द्रित करते हैं।

फिर कमला ने अपने मास्टर से सीखा एक पद इसी राग में गा दिया। उसने गाया—

मोहे लागी लगन हरिचरणन की।
कोटि-कोटि जन गावत गुण तेरे,
है पावत परम पद उनके हरे फेरे,
महिमा तव दर्शन की।
मोहे लागी लगन हरिचरणन की॥

एक-एक पद में वह स्वर विस्तार करती और फिर वीणा बजाती। इस प्रकार एक घण्टा-भर यह कार्यक्रम चला।

जब उसने बन्द किया तो ज्ञानस्वरूप को यह देख विस्मय हुआ कि एक घण्टा पाँच मिनट हो चुके हैं। यह समय कैसे व्यतीत हुआ, पता ही नहीं चला था। उसने कहा, "छः बज गए हैं।"

"यह तो होना ही था। यह भक्ति का रसमय ढंग है। यह प्रज्ञा के ज्ञानयुक्त कथन से अधिक आकर्षक है ?"

"जी ! परन्तु अम्मी ! इसका यथार्थ फल तो उस ज्ञान चर्चा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उपरान्त ही हो सकता है जो इतने दिन तक हम करते रहे हैं। वही कथन अत्यन्त मधुर स्वरों में किया गया है। इनके अर्थ भी वही हैं जिनको समझने का हम पिछले दस-ग्यारह महीने से यत्न कर रहे हैं। उन्हें समझे बिना ये गौण अर्थ ही रहते हैं।

"अब हरि शब्द का अर्थ हम जानते हैं। तभी तो उसके चरणन के अर्थ समझ में आये हैं। अन्यथा महात्मा बुद्ध के पत्थर के बने चरणों में ध्यान चला जाता और परमात्मा का आकार-विकार समझ में आने लगता। हरि की यह मिथ्या कल्पना से लाभ के स्थान हानि हो जाती।"

प्रज्ञा ने ज्ञान की महिमा तथा गुण का वर्णन कर दिया। उसने बताया, "चरण दस उंगलियोंवाले पग नहीं जिन पर कोई मनुष्य भूमि पर खड़ा होता है अथवा चलता है वरन् इसका अर्थ आधार है, जिससे परमात्मा इस जगत् में व्यापक हो सबका संचालन करता है।

"बस! इसी में ज्ञान की महिमा है। परमात्मा का यथार्थ ज्ञान अर्थात् उसके ऋतों का ज्ञान ही मन को प्रेरणा देता है।"

सरस्वती ने कह दिया, "ठीक है। ज्ञान से कहो अथवा इसके मधुर स्वर से कहो, चित्त को इससे शान्ति मिली है।"

इसके उपरान्त चारों अपने-अपने कार्य में लग गए। ज्ञानस्वरूप और प्रज्ञा स्वाध्याय में लग गए थे। सरस्वती और कमला अपने-अपने कमरों में जा विचार करने लगीं कि क्या होनेवाला है। रात के समाचार ने सबको भयभीत कर दिया था और रात-भर जागने पर भी वे किसी स्थिर परिणाम पर नहीं पहुँच सके थे। अब एक घण्टे के इस संगीत ने चित्त को स्थिर और शान्त कर दिया था। कमला ने अपनी एक पुस्तक निकाली और पढ़ने लगी। सरस्वती भी आँखें मूंद अपने ध्यान में मग्न हो गई।

आठ बजे के लगभग उमाशंकर का टेलीफोन आया। उसने बताया, "मेरे एक परिचित ने मुझे गृहमन्त्री से मिलाया है। उसने मेरी बात सुन सी० बी० आई० के चीफ को कार्यवाही स्थगित करने का आदेश दे दिया है और हमारे विरुद्ध सब कागज अपने पास मँगवा लिए हैं।

"गृहमन्त्री ने बताया है कि मुहम्मद यासीन उर्फ ज्ञानस्वरूप के वारंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ग्रेटर कैलाश के थानेदार को तामील के लिए भेजे जा चुके थे। अब उनको वापस मँगवा लिया गया है।"

उमाशंकर ने यह भी बताया, "मेरे एक सहपाठी गृह-मन्त्रालय में हैं। यह उनके परिश्रम का फल है। उन्होंने वचन दिया है कि आपके विपरीत आरोप पत्र निकलवाया जायेगा और उस केस में हुक्म कैसे करवाया गया है, इसका पता किया जायेगा।

"अब मैं मध्याह्नोपरान्त उसी सहपाठी के साथ सी० बी० आई० के कार्यालय में इसकी फाइल देखने का यत्न करूँगा।"

"तो दादा! मैं क्या कर सकता हूँ?" ज्ञानस्वरूप ने पूछा।

उमा का उत्तर आया, "कुछ नहीं। अपनी दुकान पर जाकर शान्त चित्त से काम करिये।"

मध्याह्नोत्तर चाय के समय उमाशंकर ज्ञानस्वरूप की दुकान पर आया और बता गया, "आगामी लोकसभा चुनाव के लिए अब्दुल हमीद ने कांग्रेस को काफी धन दिया है। अब्दुल हमीद की सहायता के प्रतिकार में यह कार्यवाही सरकार को करनी पड़ी है।

"अब निर्वाचनों तक इस कार्यवाही को स्थगित कर दिया गया है। इस समय उच्च पदासीन व्यक्तियों की घिनौनी कार्यवाही का बहुत ही अशुभ स्वरूप प्रकट हुआ है।"

ज्ञानस्वरूप ने उसी समय घर पर प्रज्ञा को टेलीफोन कर दिया और बताया कि तुम्हारे दादा दुकान पर आये हैं और सुखकारक समाचार सुना गए हैं।

अगले दिन ज्ञानस्वरूप को इम्पीरियल होटल से अब्दुल हमीद का टेलीफोन आया। ज्ञानस्वरूप ने आवाज पहचान आदाब अर्ज कर दी।

इसके उत्तर में बाप ने कहा, "मैं तुमसे पाँच मिनट में मिलने के लिए आना चाहता हूँ।"

"जहे किस्मत! आइए, मैं दुकान पर हूँ।"

"बस, यही जानने के लिए टेलीफोन किया था। अब मैं पाँच मिनट में पहुँच रहा हूँ।"

"आइए! मेरे पड़ोस में 'वेंगर रैस्टोराँ' है, वहाँ पर चाय लेते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बात करेंगे।"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानस्वरूप को बहुत प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। अब्दुल हमीद आया और ज्ञानस्वरूप उसे लेकर रैस्टोरां में चला गया। एक कोने में बैठ बैयरा को चाय का आर्डर दिया जा चुका तो अब्दुल हमीद ने कहा, "इस बार भी तुम मुझ पर बाजी ले गए हो।"

"सच ? किस बात में ले गया हूँ ?"

"मैंने तुम्हें कम-से-कम दो साल के लिए जेल में डाल रखने का बन्दोबस्त किया था, मगर तुम मुझसे जबरदस्त साबित हुए हो।"

"अब्बाजान ! मैं कुछ नहीं समझा। मैं तो परसों रात से ही अपने पकड़े जाने की उम्मीद कर रहा हूँ।"

"नहीं ! यह फैसला हुआ है कि अगर वे लोग इन चुनावों में मुकम्मल अक्सरीयत पा गए, जिनके हम मोदी हैं तो फिर हमारी बात सुनी जा सकेगी। इसलिए बिल्ली ने अभी चूहे को थोड़ा उछल-कूद मचाने के लिए तीन-चार महीने की छुट्टी दे दी है। मगर ये चूहे कब तक अपनी खैर मनायेंगे ? इनके लिए कयामत की घण्टी बज चुकी है।"

"अब्बाजान ! इससे आपको खुशी हासिल हो रही है।"

"हाँ, तुमने दीन की जड़ों में डाइनामाइट लगा दिया है। मैंने तो तुम्हारी बीवी की सूरत-शक्ल देखते ही कहा था कि उसे पीट-पीटकर घर से निकाल दो। वह तुमने किया नहीं। अब मैं तुम्हें जेल में डलवा कर उसे भूखे तड़पा-तड़पा कर तुम्हारे घर से भगा दूंगा।"

"और यह आपका खुदा कहता है ?"

"बिल्कुल !"

"तो अब्बाजान ! मैं लाचार हूँ। खुदा से झगड़ा करना मेरी तौफीक से बाहर है।"

"तुम अब भी अपने रवैये को तबदील कर सकते हो। देखो, मार्च सोलह-सत्रह तारीख को चुनाव हो रहे हैं और मुझे यकीन है कि हमारी मदद से सरकार मुकम्मल अक्सरीयत में आ जाएगी और तब से पहले अपने घर को इस गन्दगी से साफ कर दो। वरना...।"

"अब्बाजान ! तब तो आपकी बात गौर-तलब है। मैं देखूंगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अगर मेरे खुदा ने भी यही राय दी जो आपका खुदा आपको दे रहा है तो फिर मुझे वह राय माननी ही पड़ेगी ।"

"हाँ ! और अपने खुदा को भी बता देना कि उसके लिए जहन्नुम ही पनाह की जगह रह जाएगी । काफिरों के खुदा को ही शैतान कहा जाता है ।"

चाय आई तो दोनों पीने लगे । चाय पीते हुए ज्ञानस्वरूप ने अम्मी सालिहा के विषय में पूछ लिया । अब्दुल हमीद ने बताया, "वह आजकल मेरे साथ होटल में रह रही है ।"

"वह भी हमसे नाराज मालूम होती हैं ।"

"वह तो मुझसे भी ज्यादा नाराज है । उसका कहना है कि तुम्हारी बीवी के दोनों भाईयों ने उसकी लड़की पर जादू कर रखा है और वह किसी को भी जवाब नहीं दे सकती । दोनों ही उसकी लड़की से ताल्लुक कायम करने की कोशिश कर रहे हैं ।"

ज्ञानस्वरूप अनुमान लगा रहा था कि उसके अब्बाजान का केन्द्रीय सरकार और सी० बी० आई० पर कैसा दबाव है जो वह इस किस्म की धमकियाँ दे रहे हैं ।

: ८ :

ज्ञानस्वरूप की इस सूचना पर जो उसके अब्बाजान वेंगर में चाय लेते हुए उसे दे गये थे, प्रज्ञा और उमाशंकर में बात हो गई ।

उमाशंकर का कहना था, "मैं पूछता हूँ कि अगर अब्बाजान अपनी शैतानी हरकत में कामयाब हो गए तो क्या करोगी ?"

"कुछ नहीं । चुपचाप पिताजी तथा माताजी की सेवा उनकी वृद्धावस्था में कर पेट भर लिया करूँगी । परन्तु दादा, मैं परमात्मा को इतना अन्यायी नहीं समझती कि वह मुझ-जैसी स्त्री को इस प्रकार का कष्ट दे ।

"मैं तो समझती हूँ कि मेरा पूर्वजन्म भी अतिश्रेष्ठ था । तभी तो मुझे देवतास्वरूप माता-पिता मिले हैं; हीरे के समान स्वच्छ और उज्ज्वल दोनों भाई मिले हैं; पति भी इतना अच्छा मिला है कि वह कीचड़ में कमल ही कहा जा सकता है । यह सब मेरे पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों का ही फल है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और इस जन्म में मैंने अपनी जानकारी में कोई पाप नहीं किया तो फिर मुझे यह सब यंत्रणा किसलिए सहन करनी पड़ेगी ?"

"तुम ठीक कहती हो, परन्तु परमात्मा ने मुझे और तुम्हें बुद्धि तो दी है। यह इसलिए दी है कि हम अपनी सुरक्षा का प्रवन्ध कर लें। मैं आज से ही अपना यत्न आरम्भ करता हूँ।"

"और कमला ने परसों से ही यत्न आरम्भ कर दिया है।"

"वह क्या यत्न कर रही है ?"

"वह कहती थी कि उसे 'टेनिसन' के इस वाक्य पर अगाध विश्वास है कि प्रभु-प्रार्थना में वह शक्ति है, जो संसार में किसी भी अन्य में नहीं हो सकती और वह अब दैनिक नित्य कर्मों से बचा सब समय प्रभु-चिंतन और अपने गुरुमंत्र के सिमरण में व्यय करती रहती है।"

फरवरी मास में प्रज्ञा के लड़का हुआ। प्रसव एक नर्सिंग-होम में कराया गया और पाँच दिन के बच्चे को लेकर प्रज्ञा घर पर आ गई तो सरस्वती और कमला ने बच्चे और बच्चे की माँ का स्वागत किया।

नर्सिंग-होम में सरस्वती जाती और पतोहू का समाचार लेती रही थी। कमला घर पर ही रही थी। जिस दिन अब्बाजान ने उसके भाई को चुनौती दी थी, उसी दिन से उसने अपने ढंग से तपस्या करनी आरम्भ कर दी थी। वह उस दिन से घर से बाहर नहीं निकली थी।

जब प्रज्ञा बच्चे को लेकर आई तो वह कई दिनों के उपरान्त कोठी के फाटक तक जच्चा-बच्चा के स्वागत के लिए आई।

प्रज्ञा जो उसके विषय में सब-कुछ अम्मी से सुनती रही थी, वह इतनी भी आशा नहीं करती थी। इस कारण मोटर से बच्चे को गोदी में लिए हुए जब वह उतरने लगी तो कमला ने बच्चे को गोदी में लेने के लिए हाथ फैला दिए।

प्रज्ञा को विस्मय तो हुआ, परन्तु उसने कुछ कहा नहीं और बच्चे को उसकी गोदी में दे दिया। कमला उसे छाती से लगा भीतर ले गई।

सरस्वती ने ड्राइंगरूम में बैठते हुए कहा, "आज कमला ने अपनी सौगन्ध तोड़ी है और अपने कमरे से निकल कोठी के फाटक तक गई है।"

"अम्मी ! घर में भगवान जो आए हैं।" कमला ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन आये हैं ?" सरस्वती ने न समझते हुए पूछ लिया।

कमला ने सोये हुए शिशु को दिखा दिया, "देखिए ! कैसी मीठी मुस्कान इसके मुख पर छा रही है ?"

"ओह !" सरस्वती ने समझते हुए कहा, "तो यह तुम्हारे भगवान हैं ?"

"इस घर के। यह इस घर की रक्षा के लिए ही आए हैं।"

रविशंकर और महादेवी को विदित था कि प्रज्ञा ठीक ग्यारह बजे नर्सिंग-होम से घर आनेवाली है। इस कारण वे भी अपने मकान से यहाँ आ पहुँचे। उनके साथ शिवशंकर भी था।

उमाशंकर तो नर्सिंग-होम में ही पहुँचा था। वह वहाँ से प्रज्ञा के साथ नहीं आया था। वहाँ से उसे किसी रोगी के घर पर उसे देखने जाना था।

रविशंकर ने ज्ञानस्वरूप की गाड़ी कोठी के बाहर खड़ी देखी तो समझ गया कि प्रज्ञा घर पर पहुँच गई है। उसने महादेवी से कहा, "वह आ गई प्रतीत होती है।"

"हमें आने में देरी हो गई है।"

"नहीं; हम ठीक समय पर ही आए हैं।"

ज्ञानस्वरूप प्रज्ञा को घर पर छोड़ दुकान पर जाने के लिए निकला। उसने अपनी गाड़ी फाटक पर खड़ी कर रखी थी। वह गाड़ी में बैठने जा रहा था कि उसे प्रज्ञा के माता-पिता आते दिखाई दिये।

वह हाथ जोड़ प्रणाम कर उनका स्वास्थ्य समाचार पूछने लगा। रविशंकर ने कहा, "बरखुरदार ! हम प्रज्ञा का समाचार लेने आए हैं।"

"आइये ! वह आ गई है और ड्राइंगरूम में बैठी है। मैं दुकान पर जा रहा हूँ और आपसे आशीर्वाद माँग रहा हूँ।"

"ओह ! तो हम," महादेवी ने कहा, "बच्चे के इक्कीस दिन का होने पर उसका नामकरण-संस्कार करेंगे और तब बच्चे के और उसके साथ बड़ों के दीर्घ जीवन के लिए परमात्मा से प्रार्थना करेंगे।"

"तो बच्चे का नाम आप रखेंगी ?"

"नहीं रखोगे तो तुम ही। परन्तु यह संस्कार हमारे घर पर होगा।"

"यह ठीक है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे घर में कोई शुभ-कार्य किये हुए बहुत दिन हो चुके हैं। मेरा विचार है आठ-दस वर्ष तो हो ही चुके हैं। मैं समझती हूँ कि इस बच्चे के संस्कार से हमारे घर का द्वार भगवान के लिए खुल जायेगा।"

भगवान का नाम सुन ज्ञानस्वरूप हँस पड़ा और बोला, "कमला भी यही कह रही है।"

"क्या कह रही है ?"

ज्ञानस्वरूप हँसता हुआ बिना उत्तर दिये नमस्कार कर बाहर खड़ी मोटर की ओर चल दिया।

महादेवी कुछ न समझती हुई पति तथा छोटे लड़के के साथ भीतर जा पहुँची। कमला ने इनको जाते देखा तो कह दिया, "माताजी भी आ गई हैं।"

प्रज्ञा ने बैठे-बैठे ही हाथ जोड़ प्रणाम कर कहा, "माताजी ! जरा देखिए तो क्या बना है।"

बच्चा अभी भी कमला की गोदी में सो रहा था।

महादेवी ने प्रज्ञा के समीप बैठ बच्चे को लेने के लिए हाथ बढ़ाये तो कमला ने बच्चे को उनकी गोदी में देते हुए कहा, "साक्षात् भगवान का रूप ही प्रतीत हुआ है।"

बच्चा एक बार गोदी बदलने पर रोया और फिर आँखें मूंद सो गया। बात कमला ने ही की, "माताजी ! यह कैसा लगता है ?"

"भगवान की देन उसका ही स्वरूप हो सकता है।"

"मुझे तो साक्षात् परमात्मा ही समझ आया है।"

"सत्य ! तो तुमने उसका साक्षात्कार कर लिया है ?"

"हाँ, परसों रात मुझे उसके दर्शन हुए थे। तभी मैंने भाभी को कहा है कि आप देवकी का पद पा गई हैं।"

"ओह !" रविशंकर के मुख से निकल गया। उसने पूछा, "कमला ! देवकी के विषय में क्या जानती हो ?"

"भाभी ने भगवान कृष्ण और देवकी की कथा सुनाई थी। इसी से कह रही हूँ कि यह भगवान का ही अवतार है।"

रविशंकर मन में विचार कर रहा था कि इस्लामी विचारोंवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब्दुल हमीद के घर में यह लड़की कैसे आ गई है ? इसका कुछ समाधान न पा वह चुप कर रहा।

महादेवी एक तोला वजन की सोने की चेन लाई थी। वह उसने लड़के के गले में डाली तो प्रज्ञा ने कहा, "माँ ! बहुत-बहुत धन्यवाद है।"

"नहीं बेटी ! यह शिष्टाचार की बातें माँ से नहीं की जातीं।"

चाय आई। सबने पी और कमला ने बैठे-बैठे प्रज्ञा के कान में कुछ कहा।

प्रज्ञा ने विस्मय में कमला के मुख पर देखा तो वह मुस्कराकर सबको सम्बोधित कर बोली, "माताजी ! मुझे अपनी गुहा में परसों रात भगवान के दर्शन हुए हैं और वह कुछ बता गए हैं। वह मैं आपको बता देना चाहती हूँ।

"मैं माताजी के घर में इनकी बड़ी बहू बनकर आज से एक वर्ष उपरान्त आऊंगी। यह भगवान का आदेश है।"

शिव अपने स्थान से ऐसे उठा मानो उसे बिच्छू ने डंक मारा हो।

बात कमला ने ही कही। उसने कहा, "भैया ! रुको। अभी सारी बात तो कही ही नहीं।"

"तो वह भी कह दो। क्या मैं यहाँ से निकल जाऊँ ?"

"नहीं भैया ! आप बड़े भाई के शहबाला बनकर उनके साथ आयेंगे।"

"तो यह आज्ञा है ?"

"मैं यह परमात्मा की बात कह रही हूँ। मैं तो संदेशवाहक मात्र हूँ।"

"मुझे," रविशंकर ने कहा, "यह सब-कुछ अटपटा मालूम हो रहा है।"

"पिताजी ! मैं जब वहाँ जाऊँगी तो आपके संशय का निवारण हो जायेगा।"

"परन्तु मैं कुछ कहना चाहता हूँ।" शिव ने कहा।

"सब के बीच में कहेंगे अथवा पृथक् में ?" कमला ने पूछ लिया।

"मैं सब के सामने कहता हूँ कि मैं तुम्हारा अपहरण करूँगा।"

"अपनी बड़ी भाभी का अर्थात् अपनी माँ का ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव का मुख पीला पड़ गया। कमला ने कहा, "माताजी! चिन्ता न करें। आपके यह पुत्र परमात्मा के विधान का विरोध नहीं कर सकेंगे और परमात्मा का विधान है कि वह भाई की बारात में शहबाला बन कर आयेंगे।"

शिव ड्राइंगरूम से निकल गया।

रविशंकर ने उठते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि मुझे लड़के के पीछे जाना चाहिये।"

वह भी लड़के के पीछे-पीछे कमरे से निकल गया। उसे भय था कि शिव कहीं अपना किसी प्रकार से अनिष्ट न कर ले।

रविशंकर के इस प्रकार जाने पर कमला ने ही कहा, "पिताजी व्यर्थ में चिन्ता कर रहे हैं। भाई साहब अपनी दुकान पर जा रहे हैं।"

चाय समाप्त समाप्त हुई तो प्रज्ञा ने भीतर जा आराम करने की इच्छा प्रकट की। इस पर सब उठ खड़े हुए।

ज्ञानस्वरूप को दुकान पर पहुँचते ही सरस्वती का टेलीफोन आया, "किसी को भेज कर शिव का पता करो। वह कमला से रूठकर घर से भाग गया है। उसके पिता किसी प्रकार की दुर्घटना की आशंका करते हुए उसके पीछे-पीछे गये हैं। पता नहीं कि पिता-पुत्र दोनों मिल सके हैं अथवा नहीं।"

"अम्मी! मैं अभी स्वयं उसकी दुकान पर जाकर पता करता हूँ। आप उनके घर से पता करिये।"

सरस्वती ने पहले ही सेवक को रविशंकर के घर पर भेज दिया था। वह बाईसिकल पर गया था और रविशंकर के घर से पता ले आया था कि पिता-पुत्र दोनों में से कोई नहीं पहुँचा। महादेवी तो प्रज्ञा के साथ उसके कमरे में चली गयी थी।

आधे घण्टे के उपरान्त ज्ञानस्वरूप का टेलीफोन आया। टेलीफोन कमला ने उठाया तो ज्ञानस्वरूप ने कहा, "अम्मी को बुलाओ।"

सरस्वती के आने पर ज्ञानस्वरूप ने बताया, "मैं अभी-अभी शिवशंकर की दुकान से होकर आ रहा हूँ। पिता-पुत्र दोनों को वहाँ कॉफी पीते देख आया हूँ। वहाँ उनके साथ बैठ एक प्याला कॉफी का मैं भी पी आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती के मुख से निकल गया, "परमात्मा को धन्यवाद है।"

"अम्मी !" ज्ञानस्वरूप ने हँसते हुए कहा, "मैं प्रज्ञा के पिताजी से पूर्ण घटना सुन आया हूँ। पिताजी का कहना है कि कमला को नर्सिंग-होम में आराम के लिए और पौष्टिक खुराक के लिए भरती करवा देना चाहिए।

"परन्तु मैं समझता हूँ कि चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। सायं-काल घर पर आऊँगा तो शेष बात बताऊँगा।"

सरस्वती को इस बात से सन्तोष हुआ। समीप खड़ी कमला माँ की टेलीफोन पर बात सुन रही थी। उसने माँ को कहते सुना था, "परमात्मा को धन्यवाद है।"

इस कारण यह पूर्ण बात का आशय समझ गयी थी। उसने अम्मी के चोंगा रखते ही कहा, "मैं यही तो कह रही हूँ।"

"क्या कह रही हो ?"

"यही कि चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। सत्य हृदय से परमात्मा की संगत में रहनेवाले से कोई गलत बात होने की आशा नहीं की जा सकती।"

अम्मी कमला को लेकर उसके कमरे में आ गयी थी। वहाँ आसन पर बैठते हुए कमला ने कहा, "सुना है अपनी प्रधानमन्त्री भी एक ब्रह्म-चारी से योग की क्रियाएँ सीखा करती हैं।

"परन्तु उनका योग सांसारिक वैभव-प्राप्ति के लिए है और यह इस सृष्टि का नियम है कि जो-जो जिस-जिसके लिए तपस्या करता है, वह वैसा ही फल पाता है। परन्तु सांसारिक पदार्थ तो नाशवान् हैं। उनकी प्राप्ति स्थाई रूप में नहीं होती।"

"और तुम्हें पति स्थाई रूप में मिल रहा है ?" माँ ने मुस्कराते हुए पूछा।

"यह अभी नहीं कह सकती कि मेरी परमात्मा से योग में स्थिति इस दूरी तक पहुँची है अथवा नहीं। परन्तु अम्मी! मेरा यत्न तो समाप्त नहीं हुआ। वह तो चलेगा ही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ९ :

ज्ञानस्वरूप के घर से कमला का तीक्ष्ण व्यंग सुन शिव का मन झाग की भाँति बैठने लगा तो वह वहाँ से चल दिया। रविशंकर को अपना कर्त्तव्य समझने में दो-तीन मिनट लगे। परन्तु ज्यों ही उसे समझ आया कि उसे लड़के से सहानुभूति प्रकट करनी चाहिए, वह भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। कोठी के बाहर निकल वह विचार करने लगा कि वह कहाँ गया होगा।

यह विचार कर कि वह दुकान पर गया होगा, वह भी बस-स्टैण्ड की ओर चल पड़ा। उसका अनुमान ठीक था। शिव बस-स्टैण्ड पर बस की प्रतीक्षा में खड़ा था। दो-तीन व्यक्ति और वहाँ खड़े थे। वह भी उनमें जा खड़ा हुआ। शिव ने पिताजी से पूछा, "आप कहाँ जा रहे हैं ?"

रविशंकर ने उत्तर देने के स्थान आ रही बस की ओर संकेत कर दिया।

"यह बस तो कश्मीरी गेट को जा रही है।"

रविशंकर ने उत्तर नहीं दिया। उत्तर देने का अवसर भी नहीं था। बस से सवारियाँ उतर रही थीं और चढ़नेवाले चढ़ने लगे थे।

पिता-पुत्र दोनों साथ-साथ बैठे। बस चली तो पिता ने कहा, "इस नयी परिस्थिति पर विचार करने के लिए चला आया हूँ।"

"मैं भी इसलिए चला आया हूँ। मेरे लिए वहाँ सब-कुछ नीरस दिखाई देने लगा था।"

"पर तुमने जो कुछ कहा, वह मैं उचित नहीं समझता। वह एक ब्राह्मण सन्तान के अनुरूप नहीं है।"

शिव के मन में विचार आया था कि क्या वह ब्राह्मण सन्तान है ? कम-से-कम वह ब्राह्मण नहीं है। वह तो एक कुशल वैश्य बनने का यत्न कर रहा था। इस पर भी उसने पिता की बात का उत्तर नहीं दिया। वह उस विषय पर बस में बैठे हुए एक शब्द भी कहना नहीं चाहता था।

आधा घण्टा से ऊपर लगा इनको अपनी दुकान के पासवाले स्टैण्ड पर पहुँचने में। दोनों बस से उतरे और पैदल ही दुकान को चल पड़े।

दुकान के कर्मचारी रामरत्न ने दुकान खोल रखी थी और चपरासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलमारियाँ झाड़ रहा था। अंग्रेज़ी, हिन्दी, उर्दू तीनों भाषाओं की पुस्तकों की बिक्री का प्रबन्ध हो रहा था। इक्का-दुक्का ग्राहक भी आ रहे थे।

जब पिता-पुत्र दुकान पर बैठे तो शिवशंकर ने चपरासी से पानी लाने के लिए कहा।

चपरासी दो गिलासों में जल ले आया। दोनों ने जल पिया तो पिता ने कहा, "लड़कियों का अपहरण करना भले आदमियों का चलन नहीं है।"

"पिताजी ! वह तो क्रोधवश मुख से निकल गया था। उस क्रोध को तो कमला ने एक ही वाक्य से शान्त कर दिया था। वास्तव में पहले भी इस स्थिति का अनुमान मैं लगाया करता था। मैं शिक्षा में दादा से कम हूँ, सूरत-शक्ल में भी उससे उन्नीस ही हूँ। इस पर भी कमला ने मुझे निरुत्साहित कभी नहीं किया। इस कारण मैं समझा करता था कि कुछ मुझमें है, जिस कारण वह मुझे अपने मन की पेंडिंग फाइल में रखे हुए है।

"पिताजी ! यह तो एकाएक की जानेवाली घोषणा पर मेरी प्रतिक्रिया थी। उसने आज बात ऐसे ढंग से की कि मुझे अनुभव हुआ कि सबके सामने लज्जित किया गया हूँ।

"एक क्षण के लिए मेरे मन में यह भी विचार आया था कि उसके मुख पर अपने पूर्ण बल से चपत लगा दूँ, परन्तु जब दादा उसे पत्नी पद देने के लिए तैयार हैं तो मैं उसे ऐसा मानने से कैसे इन्कार कर सकता हूँ ? अतएव मैं वहाँ से चला आया हूँ।"

रविशंकर ने कहा, "देखो शिव ! उसके मुख पर चपत लगाने का अवसर तो अभी भी है। वह इस तरह की यदि तुम मानो तो मैं तुम्हारा विवाह उमा से पहले कर सकता हूँ। जब तक उसके पिता का नियन्त्रण उसके सिर से उठेगा और उसका विवाह होगा, तुम एक सुन्दर बालक के पिता भी हो सकते हो।"

"परन्तु पिताजी ! मुकाबले में रखनेवाली कोई वस्तु भी तो होनी चाहिए।"

रविशंकर ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम्हारी माँ कहा करती है कि परमात्मा की कला-कुशलता मनुष्य बनाने के उपरान्त समाप्त हो गयी है। मनुष्य को बने, यूरोपियन वैज्ञानिकों के कथनानुसार, बीस हजार वर्ष हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चुके हैं और भारतीय विद्वानों के अनुसार तीस-चालीस लाख वर्ष हो चुके हैं। इतने लम्बे अर्से में भी मनुष्य से श्रेष्ठ प्राणी परमात्मा के शिल्पागार में नहीं बना। इससे मैं कहता हूँ कि तुम्हारी पत्नी भी मनुष्य जाति की होगी।

"एक बात और याद रखो। सब मनुष्य एक समान नहीं होते। कोई रंग-रूप में अच्छा है तो कोई दूसरा गुणों में हो सकता है। प्रत्येक में अपने-अपने गुण रहते हैं। यह पुरुष की योग्यता पर निर्भर करता है कि वह अपनी पत्नी के गुणों को उभरने का अवसर दे। उन गुणों में वह दूसरों से श्रेष्ठ हो सकती है।"

शिवशंकर को यह विचार उचित प्रतीत हुआ। उसने कहा, "तो पिताजी! करिए यत्न! इस पर भी विवाह का निश्चय करने के पहले मैं देखूँगा कि कहीं घर में हँसी का लक्ष्य न बन जाऊँ।"

"मैं समझता हूँ कि यह एक सप्ताह में ही हो जायेगा और तुम अपने विवाह का निमन्त्रण अपनी बन रही कुंवारी माता को भी दे सकोगे।"

इस पर दोनों हँसने लगे। जब वे हँस रहे थे, उसी समय ज्ञानस्वरूप वहाँ आ पहुँचा। वह पिता-पुत्र को हँसते देख सन्तोष अनुभव करने लगा था।

उसने कहा, "अम्मी का घर से टेलीफोन आया था कि शिव भैया वहाँ से रूठकर भाग आया है। मैं उसे मनाने आया हूँ, परन्तु आप दोनों को हँसता देख समझा हूँ कि अम्मी को कुछ भ्रम हो गया है।"

"हाँ!" उत्तर रविशंकर ने दिया, "मैं इसके साथ यहाँ एक प्रस्ताव पर विचार करने आया था। वह प्रस्ताव मैंने कर दिया है और इसने स्वीकार कर लिया है।"

"यदि कुछ गुप्त न हो तो बता दीजिए। कदाचित् मैं भी उस प्रस्ताव में योगदान दे सकूँ।"

रविशंकर ने अरुणांचल लौज पर हुई घटना वर्णन कर दी और फिर अपना प्रस्ताव भी सुना दिया। उसने बताया, "मेरे एक मित्र हैं। उनकी लड़की इस समय अट्ठारह वर्ष की हो चुकी है। वह मित्र कई बार उसके लिए किसी लड़के के विषय में पूछ चुका है। शिव कहे तो उस लड़की को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाय पर सायंकाल निमन्त्रण दे दूं ।"

"देखो शिव भैया !" ज्ञानस्वरूप ने कहा, "दिल्ली में भले और सुन्दर लड़कों को बीसियों लड़कियाँ मिल जायेंगी । यहाँ की कोई भी ईंट उठाओ तो नीचे एक-दो सुन्दर लड़कियाँ दिखाई दे जायेंगी ।

"इसमें उन्नीस-बीस का अन्तर ही हो सकता है और मैं समझता हूँ यदि तुम कहो तो इसी रविवार को विवाह रचाया जा सकता है ।"

"तो आप भी कमला के योग्य मुझे नहीं समझते ?"

"मैं ऐसा समझनेवाला कौन हूँ ? मैं तो दुकान पर सुन्दर क्राकरी बेचनेवाला हूँ । यदि एक डिन्नर सेट पसन्द नहीं तो दूसरा दिखा सकता हूँ ।"

रविशंकर और शिवशंकर दोनों हँस पड़े । उत्तर पिता ने दिया, "मैं अभी घर जा रहा हूँ और आशा करता हूँ कि इसकी माँ घर आ गई होगी । मैं उसे कहूँगा कि उस मित्र की लड़की को देखने और शिव को दिखाने का प्रबन्ध करे ।"

रविशंकर की योजना सफल हुई । उसी रात लड़की-लड़के की देखा-देखी हो गयी और रविवार को विवाह की घोषणा कर दी गई ।

अगले दिन सायंकाल जब लड़की के सम्बन्धी शकुन देने आये तो प्रज्ञा, सरस्वती, कमला और ज्ञानस्वरूप भी वहाँ थे और शिव की ससुराल से मिली मिठाई, वस्त्र और रुपयों में से उनको भी उचित भाग मिला ।

प्रज्ञा अभी दुर्बल थी । इस कारण वह एक स्थान पर बैठी ही रही । कमला उसके समीप सोफा पर बैठी हुई थी । प्रज्ञा ने लड़की को देखा तो कह दिया, "शिव बड़े भाई पर बाजी ले गया है ।"

"मुझे इससे प्रसन्नता हुई है ।"

"यह सब माताजी की चतुराई का परिणाम है ।"

रविवार को विवाह हो गया और घर में बहू आ गई । स्वाभाविक रूप में लोग उमाशंकर से पूछते थे, "उमाजी, आप कब घोड़ी पर बैठेंगे ?"

उमाशंकर मुस्कराकर कह देता, "अभी जल्दी किस बात की है ?"

"और शिव को शादी की आप से अधिक जल्दी थी ?"

"जरूर जल्दी रही होगी, तभी तो वह मुझसे आगे निकल गया है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रज्ञा इस विवाह से बहुत प्रसन्न थी। वह समझ रही थी कि शिव के विवाह से दोनों भाईयों में द्वेष नहीं बढ़ेगा।

इस विवाह की सूचना अब्दुल हमीद को मिली। वह आजकल सरकार के सत्ताशील दल को जिताने का यत्न कर रहा था। इस कारण उसका दिल्ली के नेताओं से सम्पर्क गहरा हो रहा था।

ज्ञानस्वरूप को इस तस्कर का सत्ताधारी दल से सम्पर्क सुहाता नहीं था, परन्तु वह राजनीति से पृथक् रहने का यत्न करता रहा था। इसी कारण जब भी वह पिता से मिलने जाता था, वह उनसे कभी नहीं पूछता था कि वह किस काम से दिल्ली आये हैं। उसने बम्बई के कारोबार के विषय में भी कभी नहीं पूछा था।

मार्च १९७१ में निर्वाचन हुए और सत्ताधारीदल पूर्ण बहुमत से लोक-सभा में आ गया। केन्द्र में दो-तिहाई से भी अधिक संसद-सदस्य इस दल के थे।

निर्वाचन का परिणाम निकलने पर अब्दुल हमीद पुनः ज्ञानस्वरूप को मिलने आया। दोनों वोलगा रेस्टोराँ में बैठे चाय लेने जा पहुँचे।

अब्दुल हमीद ने पुत्र से पूछा, "यासीन! अब क्या विचार है?"

"किस बारे में पूछ रहे हैं अब्बाजान?"

"नगीना से शादी की बाबत?"

"मेरी शादी तो हो चुकी है। मेरे घर में लड़का भी हो चुका है।"

"मेरा अभी भी कहना है कि लड़के को लेकर बीवी को घर से निकाल दो। नगीना से शादी कर लो।"

"अब्बाजान! यह गुनाह होगा। मैं यह नहीं करूँगा।"

"वह क्या होता है?"

"झूठ बोलना तो हमारे मजहब में बहुत बड़ा गुनाह माना है।"

"हाँ! मगर गुनाह वह है जो झूठा साबित हो सके। देखते नहीं हो कि सरकार ने निर्वाचनों में क्या कुछ किया है? क्योंकि एक भी हरकत साबित नहीं की जा सकती, इस कारण कुछ भी गुनाह नहीं।"

"अब्बाजान नेक और बद में फर्क करनेवाला हाकिम मेरे भीतर बैठा है। वह गलत नहीं कहेगा। इसलिए मेरा झूठ वहाँ साबित हो जाएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम बेवकूफ हो। सुन लो, अगर तुमने मेरी बात तीन महीने के भीतर नहीं मानी तो तुम जेल में होगे और तुम्हारे मकान पर मेरा कब्ज़ा होगा। तुम्हारी बीवी अपने बाप के घर के बर्तन साफ करती होगी। मैं उसे एक-एक पैसे के लिए मोहताज बना दूंगा।"

"अब्बाजान! आप जो कुछ कह रहे हैं, वह कर सकते हैं। मगर आप मुझे अपनी बीवी के खिलाफ झूठा दावा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते।"

यह मई का दूसरा सप्ताह जा रहा था और लोकसभा 'मिसा' कानून पारित कर रही थी कि जिस किसी पर तस्करी करने का प्रमाण मिले तो उसे बिना मुकद्दमे के दो साल के लिए नजरबंद किया जा सकता है। ज्ञानस्वरूप को मालूम था कि यह कानून पास हो जायेगा। विचित्र बात यह थी कि विरोधी पक्षवाले भी इस कानून को बनाने में सहायता दे रहे थे जबकि इस कानून के दुरुपयोग पर कोई रोक न थी।

बिल पारित हो गया तो राष्ट्रपति ने हस्ताक्षर कर दिये।

इस समाचार के दस दिन उपरान्त ज्ञानस्वरूप दुकान पर बैठा था कि घर से प्रज्ञा का टेलीफोन आया, "आपकी अम्मियाँ और सब बच्चे यहाँ आये हुए हैं। वे ड्राइंगरूम में बैठे हैं।"

ज्ञानस्वरूप का प्रश्न था, "ये लोग किस मतलब से आये हैं?"

प्रज्ञा ने बताया, "अब्बाजान 'मिसा' में पकड़े गये हैं और उनके सारे कारोबार पर ताले लगा दिए गए हैं। उनके बैंक ऐकाउण्ट फ्रीज़ कर दिए गए हैं। बम्बईवाले मकान को भी ताला लगाया गया है। इस कारण पूर्ण परिवार यहां रहने के लिए आया है।"

"प्रज्ञा! मेरी राय है कि इन सबको अभी तो घर पर रहने को — देना चाहिए।"

"जी! मैं यह नहीं कह रही कि मैं उनको स्थान नहीं दे रही। मैं यह कह रही हूँ कि ये लोग झगड़ा करेंगे। हमारी दिनचर्या इनके लिए कुफ्र समझ आयेगी। आपकी सबसे छोटी अम्मी हमीदा तो मुझे संस्कृत की पुस्तक पढ़ते देख नाक-भौंह चढ़ाने लगी थीं।"

"इनको अभी तो खिलाओ-पिलाओ। मैं सायंकाल आऊँगा तो विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर लूंगा ।"

प्रज्ञा ने कहा, "आपकी बहिन कमला कुछ कह रही है ।"

"तो उसे टेलीफोन दे दो ।"

कमला ने कहा, "मैंने भाभीजी की माताजी को कहा है कि मैं उनके घर जाकर रहना चाहती हूँ। उनका कहना है कि आपसे पूछकर आ सकती हूँ ।"

"और उमाशंकर से पूछ कर नहीं ?"

"मैंने यही कहा था कि वह अपने बड़े लड़के से तथा पिताजी से पूछ लें और मेरे लिए एक कमरा खाली करा दें ।

"इस पर उन्होंने कहा है कि मकान उनका है, उमाशंकर का नहीं । इसलिए उमाशंकर मेरे यहाँ आने को रोक नहीं सकता । हाँ, मेरे भाई और अब्बाजान ही रोक सकते हैं। इस कारण उनसे राय कर ही आ सकती हूँ ।"

"परन्तु मुख्य बात तो अब्बाजान की है। उनकी स्वीकृति कैसे लोगी ?" ज्ञानस्वरूप का प्रश्न था ।

"इस विषय में भी आपसे राय करनी है ।"

"मैं सायंकाल जब आऊँगा तो उमाशंकर और उनकी माताजी को भी बुला लूंगा । सब मिलकर विचार कर लेंगे ।"

रात नौ बजे के लगभग ज्ञानस्वरूप आया और उसके बुलाने पर उमाशंकर और महादेवी भी वहाँ आ पहुंचे ।

ज्ञानस्वरूप के आने से पूर्व ही, बम्बई से आये सातों प्राणी खा-पीकर दो कमरों में सोने का स्थान पा चुके थे । वहाँ से आये पाँच बच्चों में से सबसे बड़ा, नगीना की माँ का लड़का था। यह नगीना से छोटा था । नाम था अब्दुल रशीद । वह अपने भाई की प्रतीक्षा में ड्राइंगरूम में बैठा था। ज्ञानस्वरूप आया तो अब्दुल रशीद ने आदाब अर्ज कर कहा, "भाईजान ! मैंने बम्बई के एक वकील से राय की थी । उसका कहना है कि इस पकड़े गये पर एतराज 'सुप्रीम कोर्ट' में किया जा सकता है । इसलिए मैंने यहाँ चला आना निहायत जरूरी समझा है ।

"एक बात और भी है । यह पता चला है कि अब्बाजान यहाँ दिल्ली जेल में लाकर रखे गए हैं । उनसे मुलाकात की सहूलियत के लिए भी हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सबने दिल्ली में आकर रहना मुनासिब समझा है।

"मगर रशीद ! यह मैंने तो पूछा ही नहीं कि तुम यहाँ क्यों आये हो ? एक-दो दिन के लिए ही इस कोठी में रहने का इन्तजाम हो सकेगा। मगर मैं समझ रहा हूँ कि अब्बाजान का मामला एक-आध दिन में सुलझेगा नहीं। इसलिए आपके लिए एक अलहदा मकान लेना पड़ेगा। दिल्ली में मकानों की बहुत किल्लत है। अच्छे मकानों का भाड़ा बहुत ज्यादा होता है।"

"भाईजान !" अब्दुल रशीद का कहना था, "अभी कुछ दिन के लिए तो यहाँ ही हम रहेंगे। मैं कल मैजिस्ट्रेट से अब्बाजान के साथ मुलाकात की इजाजत लूंगा और उनकी राय से बात करूँगा।"

"ठीक है, मैं यही चाहता था। तुम अब्बाजान से मुलाकात कर लो और उनसे इन सवालों का जवाब पता करना। पहली बात यह कि दिल्ली में रिहायश के लिए मकान का भाड़ा और उसमें रहने के खर्चे का प्रबन्ध कैसे होगा ? यहाँ इस मकान में आर्ज़ी तौर पर रह सकते हो, पक्का प्रबन्ध तो अलग करना ही होगा।

"दूसरी बात यह है कि उनको छुड़ाने की अर्जी यहाँ के सर्वोच्च न्यायालय में की जाए या नहीं और अगर की जाये तो किस बिना पर की जाये ?

"तीसरी बात यह पूछनी है कि नगीना अपनी ससुराल जाकर रहना चाहती है। अभी दस महीने तक वह उनके मातहत है। वह इस काल में ससुराल जाने की इजाजत देते हैं या नहीं ?

"चौथी बात है तुम्हारे छोटे भाई-बहनों की। उनकी तालीम में मैं दखल दे सकता हूँ या नहीं ?

"इन चार बातों के बारे में अब्बाजान से पता करना और मुझे बताना। तब मैं तुम्हारी मुनासिब मदद करूंगा।"

"यही मैंने सोचा है। हम सबको एक लम्बे अर्से के लिए यहाँ रहना है तो आपसे अलहदा ही रहना होगा। अम्मी कह रही हैं कि आपकी बीवी जिसके सिर पर सवार हो जाती है, वह मोमिन रह सकता ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मोमिन के मायने जानते हो रशीद ?"

"मुसलमान ।"

"नहीं रशीद ! मोमिन के मायने हैं खुदा पर ईमान रखनेवाला इन्सान । इसमें मुसलमान या किसी मजहब का ज़िक्र नहीं और तुम्हारी अम्मी खुदा से मुन्किर हो गई हैं । इसलिए उसे प्रज्ञा की संगत पसन्द नहीं ।"

: १० :

उसी रात ज्ञानस्वरूप और उमाशंकर में भी बात हो गई ।

उमाशंकर का कहना था, "समस्या यह नहीं कि कमला कहाँ रहे, समस्या यह है कि यह बम्बईवाला परिवार कहाँ रहे ?

"मैं समझता हूँ कि इसके विषय में अपनी दूसरी अम्मियों से राय करिये । इनके लिए मैं मकान ढूंढने में आपकी सहायता कर दूंगा ।

"मैं यह समझता हूँ कि कमला के मार्ग में बाधा न तो आपके अब्बाजान की है, न ही इन बच्चों की । यह उसकी अपनी आयु की है । मैं अपना यह नैतिक कर्त्तव्य समझता हूँ कि उसके बालिग होने से पहले उससे विवाह न करूं ।"

इस वार्त्तालाप का परिणाम यह हुआ कि अब्दुल रशीद को ज्ञानस्वरूप दिल्ली एस० डी० एम० के सामने ले गया । वहाँ उसने अर्जी कर दी कि अब्दुल हमीद से मुलाकात की स्वीकृति मिले ।

वह मिली तो निश्चित दिन सालिहा और अब्दुल रशीद अब्दुल हमीद से मिलने गये ।

वहाँ से लौटने पर अब्दुल रशीद ने कहा, "अब्बाजान ने हमें वह स्थान बताया है जहाँ से हम खानदान के रिहायश के लिए खर्चा पा सकेंगे ।

"दूसरी बात यह है कि मुकद्दमा करना फुजूल है । अपने छूटने की वह खुद कोशिश करेंगे । तीसरी बात यह कि बच्चों की तालीम में आपकी तथा आपकी बीवी की मदद न ली जाये । आखरी बात यह है कि नगीना शादी कर प्रज्ञा के भाई के घर जायेगी तो यह जुर्म होगा । इस कारण वह ऐसा न करे ।"

ज्ञानस्वरूप इस मामले में कोई भी बात गैर-कानूनी करना नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहता था।

एक सप्ताह की भाग-दौड़ के उपरान्त दिल्ली, सिविल लाइन्स में एक कोठी श्रीराम रोड पर मिल गयी, एक हजार रुपया महीना किराये पर। और एक सप्ताह ग्रेटर कैलाश में रहने के उपरान्त उन सब को श्रीराम रोडवाली कोठी में जाना पड़ा। जिस दिन सब लोग जानेवाले थे, उस दिन अब्दुल हमीद का एक पत्र सालिहा को मिला। सालिहा ने अब्दुल रशीद को पत्र दिखाया तो उसने अपने भाई ज्ञानस्वरूप को दिखा दिया। ज्ञानस्वरूप पढ़कर हैरान हो गया। इस पत्र में अब्बाजान ने नगीना के विवाह की स्वीकृति दे दी थी।

जब ज्ञानस्वरूप की दोनों छोटी अम्मियाँ और उनके बच्चे श्रीराम रोड पर चले गये तो ज्ञानस्वरूप ने उमाशंकर को टेलीफोन कर दिया।

टेलीफोन पर रविशंकर मिला। जब ज्ञानस्वरूप ने अपने श्वसुर की आवाज़ पहचानी तो उसने नमस्कार कर दी और उमाशंकर के विषय में पूछने लगा।

"क्या काम है ?"

"कुछ अपने और कमला के विषय में विचार करना है।"

"तो आ जाओ ! वह यहीं कालोनी में एक रोगी को देखने गया हुआ है। जब तक तुम आओगे, वह भी लौट आएगा।"

अतः ज्ञानस्वरूप, प्रज्ञा और कमला रविशंकर के मकान पर पहुँच गये।

उमाशंकर अभी आया नहीं था, परन्तु महादेवी और शिव तथा शिव की पत्नी इनसे मिलने के लिए ड्राइंगरूम में आये हुए थे।

ज्ञानस्वरूप के आते ही रविशंकर ने पूछा, "क्या लोगे ? मैं तो भोजन के उपरान्त दूध लिया करता हूँ।"

"पिताजी !" ज्ञानस्वरूप ने कहा, "हमें तो इस समय दूध लेने का अभ्यास नहीं है। रात के खाने के उपरान्त यदि एक-एक प्याला कॉफी मिल जाये तो बहुत ठीक होगा।"

महादेवी ने पाचक को बुलाकर कॉफी लाने के लिए कह दिया। जब पाचक गया तो ज्ञानस्वरूप ने अपने घर की अवस्था का परिचय दे दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसने कहा, "आज बम्बईवाले सब लोग श्रीराम रोड पर चले गये हैं और मैं अपने कन्धों पर से भारी बोझा उतर गया अनुभव करता हूँ।

"मेरा भाई अपने अब्बाजान से जेल में मिलने गया था और वह मुझे दुकान पर एक चिट्ठी दिखा गया है जो अब्बाजान ने नगीना की माँ को लिखी है। चिट्ठी में लिखा है कि वह नगीना को अपनी मर्जी से शादी की इजाज़त दे दे।

"मैंने यह कहा है कि वह चिट्ठी मुझे दे तो कमला की शादी का प्रबन्ध किसी वकील से राय करने के बाद करूँ। इस पर अम्मी सालिहा ने वह चिट्ठी तो नहीं दी। उसने अपने वकील से राय कर चिट्ठी देने की बात कही है।"

रविशंकर यह बात सुन हँस पड़ा। वह हँसते हुए बोला, "मैं समझता हूँ कि अब्दुल हमीद साहब का ऐतकाद खुदा पर से ऐसे ही उठ गया है जैसे मेरा हनुमानजी पर से उठ गया है। हकीकत यह है कि यह सब झगड़े खुदापरस्तों ने ही मचाए हुए थे।"

इस समय उमाशंकर आ गया। वह मरीज़ को औषधि दवाईखाने से देकर भीतर आया था। ज्ञानस्वरूप इत्यादि को बैठा देख वह प्रश्नभरी दृष्टि में उनकी ओर देखने लगा।

बात प्रज्ञा ने की। उसने बताया, "आज कमला की बम्बईवाली अम्मियाँ और भाई-बहन सब अपने मकान में चले गए हैं। इस कारण मैंने ही अम्मी से कहा था कि हमें यहाँ माताजी को यह खुश-खबरी सुनाने आना चाहिए।

"अम्मी ने कहा कि रात को सब एक साथ चलेंगे।

"जब यह आए तो इन्होंने एक और खबर सुनाई है। इसलिए हम आप लोगों से राय करने आए हैं।"

ज्ञानस्वरूप ने अब्दुल रशीद की दिखाई हुई चिट्ठी की बात बताई तो उमाशंकर ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि यह जुलाई का महीना है। कमला वयस्क होनेवाली है पन्द्रह जनवरी को। अब छः महीने ही तो रह गए हैं। हमें कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए, जिससे कोई कानूनी पेचीदगी उत्पन्न हो जाए। हमें छः महीने और प्रतीक्षा करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए ।"

ज्ञानस्वरूप ने कहा, "इसी बात से डरते हुए मैंने अब्दुल रशीद से वह पत्र माँगा था । उसने कहा है कि वकील से राय कर वह पत्र देगा ।"

इस पर महादेवी ने कह दिया, "तो छोड़ो इस बात को । विवाह ाभी छः महीने बाद होगा ।"

इस पर प्रज्ञा ने कहा, "यह बिल्कुल वैसे ही हो रहा है, जैसे मैं आशा कर रही थी ।"

"क्या आशा कर रही थी ?" रविशंकर ने पूछ लिया ।

"मैं यही आशा कर रही थी कि आप लोग शीघ्र ही आस्तिक हो जाएँगे, परन्तु तब आप लोग अपने को परमात्मा को अस्वीकार करने-वाले कहेंगे ।"

महादेवी इस युक्ति को समझी नहीं । उसने कहा, "प्रज्ञा ! तुम कुछ उल्टी-सीधी बात करने लगी हो । मैं ज्ञानस्वरूप से कहूँगी कि तुम्हें एक-आध महीने के लिए किसी पहाड़ी स्थान पर आराम करने भेज दे ।"

प्रज्ञा हँस पड़ी और बोली, "माताजी ! आप मुझे पागल हो रही समझ रही हैं ?"

"पागल नहीं, परन्तु शिथिल विचारोंवाली ।"

"कैसे ?"

"तो तुम अपने श्वसुर को आस्तिक कैसे कहती हो ?"

"माताजी ! केवल इतना ही नहीं, वरन् जब से पिताजी ने हनुमान-जी के मन्दिर में जाना छोड़ा है, तब से मैं इनको भी ईश्वर-भक्त मानने लगी हूँ ।

"जो कुछ ये दोनों बड़े पहले थे, यह निपट नास्तिकता कही जा सकती थी । जब से पिताजी ने अपना विश्वास हनुमानजी पर से और अब्बाजान ने इस्लामी शरअ पर से उठाया है, मैं समझती हूँ कि ये पर-मात्मा के समीप जा रहे हैं ।

"उसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो है । पिताजी अब अधिक मानवता के अनुयायी समझे जाने लगे हैं और इस्लाम पर अन्धविश्वास रखनेवाले अपनी अक्ल का प्रयोग करने लगे हैं । यह भी मानवता ही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझती हूँ जो सब प्रकार के पूर्वाग्रहों का त्याग कर, बुद्धि का प्रयोग करता हो, वह ही ईश्वर-भक्त होता है। यही परमात्मा हम से आशा करता है।"

"बुद्धियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। यदि परमात्मा बुद्धि का प्रयोग अपनी भक्ति मानता है तो सब की बुद्धियाँ एक समान क्यों नहीं होतीं ?" महादेवी ने पूछा।

"माताजी ! बुद्धियाँ तो एक समान ही हैं। मगर शिक्षा से और अपने पूर्वजन्म के कर्मों के फल से बुद्धियों पर भिन्न-भिन्न रंग चढ़ा हुआ है।

"जब ईश्वर कृपा होती है तो यह रंग उतरने लगता है। इस पर समानता दिखाई देने लगती है।

"समानता इस बात में प्रकट होती है कि हम न्याय-दृष्टि, सत्य-ज्ञान का आभास पाने लगते हैं।

"यही बात मेरे श्वसुर में और पिताजी में होती मैं देखती हूँ। जब तक ये उसे मानते रहे, जिसे ये परमात्मा समझते थे, तब तक ये न तो मेरे मानव अधिकारों को स्वीकार करते थे और न ही कमला के। अब इनको यह भास होने लगा है कि मेरा अधिकार था कि मैं विवाह अपनी रुचि अनुसार करूँ और कमला के विषय में उसके अब्बाजान को भी कुछ ऐसा ही भास हुआ प्रतीत होता है।

"इससे मैं यह समझी हूँ कि ये सत्य अर्थों में ईश्वर-भक्त हो रहे हैं। पहले ये अपने को ईश्वर-भक्त मानते थे, इस पर भी नास्तिक ही थे। अब इनको ईश्वरीय नियमों का ज्ञान हो रहा प्रतीत होता है।"

रविशंकर समझ नहीं रहा था कि वह अब आस्तिक हो रहा है अथवा पहले ऐसा था। इस कारण वह चुपचाप लड़की की युक्ति सुनता रहा।

बात उमाशंकर ने समाप्त कर दी, "मैं समझता हूँ कि कमला के पिता की स्वीकृति लिखित जब तक हमारे हाथ में नहीं आती, तब तक विवाह नहीं होगा। उसके लिए हमें पन्द्रह जनवरी की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

परन्तु अगले ही दिन जेल से एक चिट्ठी मुहम्मद यासीन के नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रजिस्टर्ड डाक से आई। वह चिट्ठी अब्दुल हमीद की थी। उसमें लिखा था—

"पिछले पन्द्रह दिन की जेल ने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं समझ गया हूँ कि मैं गलत लोगों को अपना नेता मान रहा था। इस बात का पूरा वृत्तान्त तो कभी जेल से बाहर आकर बताऊँगा। अभी यह लिख रहा हूँ कि मैंने तुम्हारी अम्मी सालिहा को एक चिट्ठी दी है, जिसमें यह कहा है कि नगीना अपनी मर्जी से शादी कर सकती है। यही तुम्हें इस चिट्ठी में लिख रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि उसने डेढ़ साल से ज्यादा इन्तज़ार की है, यह कम नहीं। तुम उसे कह दो कि मुझे अब कोई ऐतराज नहीं हो सकता।"

ज्ञानस्वरूप ने वह पत्र वकील को दिखाया तो उसने राय दी कि एक कैदी का जेल से कुछ लिखकर भेज देना तब तक प्रमाण नहीं हो सकता, जब तक वह अपने बयान मैजिस्ट्रेट के सामने न दे। इसलिए इस चिट्ठी की बिना पर अदालत में उनको बुलाकर बयान लेने चाहिए।

वकील से राय कर एक अर्जी सब-जज की अदालत में की गई इस पर अब्दुल हमीद को कोर्ट में बुलाया गया और उसके हलफिया बयान हुए। उन बयानों के दूसरे दिन उमाशंकर और कमला की शादी हो गई।

प्रज्ञा का कहना था कि यह आस्तिकता की महान् विजय है।

☐

081
167924

Central Library
167924
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-N आगत संख्या 167924

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।
विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar